PARKASH 1958 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111515

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७) [ पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका ] | [एक प्रति १० आने

111515

फरवरी ७, '५८

सम्पादक

हितैषी जलालपुरी

शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित।

## DID YOU KNOW . . .

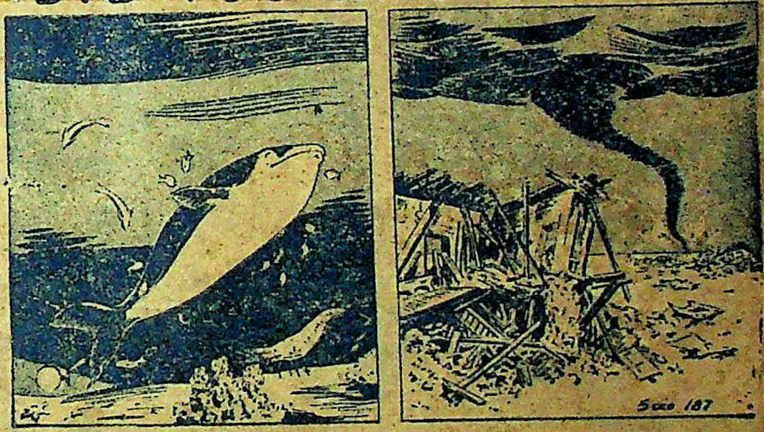

जीव-वैज्ञानिकों का विश्वास है कि बड़ी मछलियों के शरीर में ऐसे धोखा देने वाले स्थान होते हैं जिन में छोटी मछलियां अटक जाती हैं और उनका भोजन बनती हैं।

२. हरीकेन आंधी से टॉर्नेडो आँधी बहुत विनाशकारी होती है।

111515

# THE "Prakash"

Editor: L.C.Hitashi JULLUNDUR CITY.

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत दिनों लन्दन के एक दैनिक पत्र ने आदर्श गृह प्रदर्शिनी का आयोजन किया । इसे देखने ब्रिटेन की साम्राज्ञी और प्रिंस फिलिप आए । इस प्रदर्शिनी में सब प्राप्य आधुनिक साधन संगृहीत थे ।

अमेरिकन वैज्ञानिकों ने लीथियम क्लोराईड के साथ प्रयोग करते हुये चित्र में दीख रहे चौकार बुलबुले एटमिक पावर लेबारे_टरी में निर्माण किये ।

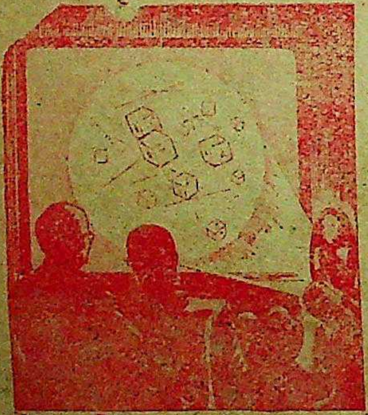

कोलम्बिया निवासी दुनिया में सबसे अधिक खाँड खाते है अर्थात प्रति आदमी १२५ पौंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार हिमाचल पैप्सू भूपाल और हैदराबाद के स्कूलों के लिए स्वीकृत

# प्रकाश

॥ पञ्जाब की एकमात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका ॥

वर्ष ५३ क्रमांक ६४ | जालन्धर ७ फरवरी '५८ | भाग ६ अंक २ हिन्दी

## कहां क्या है

कहानियां

विशाखा श्री सन्त राम पृष्ठ १२
मां की ममता टैगोर २६
वीर क्षत्राणी (जीवनी) २७
बन्धन मुसाफिर मैं और तू २६

कविताएँ

नया निर्माण बुलाता है ! ३
अणुवादी वैज्ञानिक से— ७
गीत श्री प्रभाकर ६
प्रकाश की प्रतीक्षा १०
कुआँरा कीर्तन २२
कांटे मत बोओ ३३
हम चले परीक्षा देने को ३४

लेख

बड़ों के जीवन से शिक्षा ७
मनुष्य का काम मशीनें करेंगी ८
वर्तमान शिक्षा त्रुटि पूर्ण है ११
प्राचीन शिक्षा प्रणाली १४
वर्तमान शिक्षा निस्सार है १८
शिक्षा और गांधी जी १५
शिक्षा सम्बन्धी ऋषी दयानन्द के विचार १६
भारत के महान कवि कालिदास २०
मजाक करने वाला रीछ २२

## नयानिर्माण बुलाता हम को

नर्मदा प्रसाद त्रिपाठी

साथी, जागो, आज नयानिर्माण बुलाता हम को
उठो गगन में आग लग चुकी
जागो क्षितिज में ज्वाल बल चुकी
नई क्राँति की लहर उठी है जग में
देखो यह क्षितिज ज्वला घिर आई
साथी जागो, नया निर्माण—
छोड़ो छोड़ो प्रिय प्रेमियों के बन्धन
देखो देखो दलितों का दारुण क्रन्दन
प्रिय महलों की यह चमक दमक झूठी है
ये चुम्बन, नर्तन, मधुशाला रूखी है
साथी जागो नया निर्माण——
यह कुटियों की लहर महल को खालेंग
यह दलितों को क्रान्ति गगन का छा लेगी
अत्याचारों औ व्यभिचारों में आग लगा
हर कोन में ज्योति सृजन बालेगी
साथी जागो नया इनसान बुलाता है तुम को

सहशिक्षा हानिकारक है। २३
आइए चन्द्र नगर की सैर करें सदाचार २४
पैसे की पूजा (एक विचार) २६
शँतरज खेलने वाली मशीन ३१
चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशस ३८
पँजाब केसरी ला० लाजपतराय ३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# फूल और कांटे

(पाठकों के प्रश्नों के उत्तर)

प्र० शेख अब्दुला को पं० नेहरू ने क्या भारत के विरुद्ध विषैला प्रचार करने के लिए जेल से मुक्त किया है ? —प्रेमनाथ जम्मू

उ०—पश्चिमी देशों पर यह सिद्ध करने के लिए कि नेहरू की डेमोक्रेसी में नागिरकों को भाषण की स्वतन्त्रा कहां तक प्राप्त है ?

प्र०—सुना है कि पाकिस्तानमें एक विवाह टैलीफोन पर ही हो गया है। क्या सच है ? सुशील, मेरठ

उ०—पहिले ऐसे विवाह अमेरिका में होते थे, अब पाकिस्तान में भी होने लगे हैं। आखिर अब पाकिस्तान भी तो उस की मुरीदी में है।

प्र० पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं को क्यों पकड़ा जा रहा हैं ? स्मृति गुप्ता बनारस

उ०—ताकि शरणार्थी बन कर भारत आने की अवस्था में उन्हें खाने पीने और कपड़े का कष्ट न हो।

प्र० राजगोपालाचारी अब हिन्दी के इतने विरोधी क्यों हो रहे हैं ? श्याम सुन्दर देहली

उ० इस लिये कि वह गर्वनर जनरल रह चुके हैं और अंगरेजों और अंगरेजी के प्रतिनिधि है।

प्र० काजगाम नेता नायकर ब्राह्मणों का इतना विरोधी क्यों है ? रामनाथ, रोहतक

उ० इस लिए कि इस जन्म में वह स्वयँ ब्राह्मण घर में पैदा होने के अवसर से वंचित रह गया है।

प्र० सोशलिस्टों का पुरोग्राम क्या है ? रामेश्वर दयाल करनाल

उ०—कोई न कोई स्टण्ट खड़ा करके गिरफ्तार होना, फिर उसका विरोध करना।

# अपनी बोली च

'वडा आदमी' किस नूं आखदे ने ? इस प्रश्न दा उत्तर अज तों १०० वर्ष पहलां एह हुन्दा कि जिसदे विचार उच्चे होन, ओह बड़ा आदमी हुन्दा है। पर अज एस सवाल दा जवाब एह मिलेगा कि जिस दे पल्ले चार पैसे होन ओह है वडा आदमी, चाहे ओस दे विचार किन्ने भी घटिया क्यों न होन ? मनुष्य दे सम्मान नाल पैसे दा ऐना गूढ़ा सम्बन्ध जुड़ गया है कि इह दे बिना किसेदा सम्मान पौना या बड़ा कहौना संभव नहीं रिहा। पसा होवे—ओह चाहे किवें कमाया गया होवे। पर समाज 'च दिनों दिन दृढ़ होरही एस भावना नूं नष्ट करन दी लोड़ ए। कारण एह कि धन तां इक वेश्या जां नर्तकी भी कमा लैंदी है। फेर वेश्या नूं समाज ओह सम्मान क्यों नहीं दिंदा ? ऐस लई कि ओस दी कमाई पवित्र नहीं हुन्दी। पर वढी खोर बलैक मार्किटीए नूँ कोई बुरा नहीं कहंदा हालाँकि ओन्हाँ दी कमाई भी ओनी ही अपवित्र हुन्दी है। एह कमजोरी समाज नूं किनी हानि पहुँचा रही है—इस दा अनुमान साडे नेता नहीं लगा सकदे। हर किसे नूँ अजकल सिर्फ इको फिकर है और ओह इह कि मेहनत कीते बिना वध तों वध धन किवें कमाया जा सकदा है ? एस गल दी किसे नूं न चिंता है न एह जानन दी लोड़ हा कि एस मनोवृत्ति दे नतीजे दे तौरते सामूहिक रूप'च समाज दी किन्नी हानि तो रही है ?

देश 'च वडीआं २ योजनावां बन रहीआं हन—उच्चीआँ २ इमारतां—लम्बीआं २ सड़काँ नहराँ ते पुल, फैक्टरियाँ ते कारखाने नित नवेँ बनदे जा रहे हन पर वास्तव 'च की एह उन्नति दे निशान हन जद कि धन दी लालसा'च दिनों दिन साडा इखलाक हेठां हो हेठाँ (सफा ५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# शिक्षा समाचार

मोगा में जिला शिक्षा सम्मेलन हुआ जिस में केन्द्रीय शिक्षा सचिव डा० श्रीमाली भी सम्मिलित हुए।

पँजाब यूनिवर्सिटी ने सामुदायिक योजना को बी टी के कोर्स में सम्मिलित करने का निश्चय किया है।

आगामी वर्ष हरियाणा में इंजनीयरिंग कालेज खोला जाएगा।

लुधियाना कृषि कालेज के भवन के लिए भारत सरकार ने ६ लाख रुपये का ऋण देना स्वीकार किया है।

लोकल बाडीज के जो स्कूल सरकार ने अपने प्रबन्ध में लिए हैं उनकी सम्पत्ति का कोई मुआविजा उन्हें नहीं मिलेगा।

पंजाब के दो छात्रों कंवर नरेन्द्र जीतसिंह और रवीकुमार ने मरिट स्कालरशिप जीते हैं।

चीन में निरक्षरता निवारण आँदोलन के फल स्वरूप साढे चार करोड़ प्रौढ़ शिक्षा प्रप्त कर रहे हैं।

मैट्रिक एफ० ए० बी० ए० की परीक्षाओं में हिन्दी और पँजाबी में प्रथम रहने वाले छात्रों को ३० ५० ७५ रु० मासिक की छात्रवृत्तियां दी जाएंगी।

मैट्रिक की परीक्षा में सफलता के लिए वर्ष भर में परीक्षार्थी के काम की रिपोर्ट के आधार पर अँक दिए जानेका सुझाव भी विचाराधीन है।

नारायण गढ़ तहसील (अम्बाला) में छटी कक्षा तक शिक्षा निःशुल्क कर दी गई है।

जिला महेन्द्रगढ़ में ८वीं तक शिक्षा निःशुल्क कर दी गई है।

# समाचार सार

—दूसरी पँचवर्षीय योजना के तीसरे वर्ष में ६५० करोड़ रुपये व्यय होंगे।

—हँगरी के प्रधान मन्त्री कादार ने त्याग पत्र दे दिया है।

—मिसर और सीरिया को मिला कर फैडरेटिड रीपब्लिक आव अरेबिया की स्थापना की गई है।

पाकिस्तान ने नहरी पानी का जो झगड़ा खड़ा कर रखा है उस को निबटाने केलिए वर्ल्ड बैंक के मि० इलिफ भारत और पाकिस्तान सरकारों से बातचीत कर रहे हैं।

—अमेरिका भी भूमि उपग्रह आकाश में छोड़ने में सफल हो गया है।

—भारत को वर्ल्ड बैंक ने १० करोड़ रु० ऋण देना मान लिया है।

—जापान भी भारत को १८ मिलियन यैन ऋण में देगा।

—संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिनिधि डा० ग्राहम काश्मीर की समस्या पर भारत और पाकिस्तान में समझौता कराने के मिशन पर आए थे—वह असफल लौट गये हैं।

--रोम के पोपने बर्थ कँट्रोल की निंदा की है

--जर्मनी के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी गैस तैयार की है जो न नजर आती है न उसका कोई स्वाद है न सुगन्धि न रंग किन्तु तत्काल किसी भी जीव को मार सकती है।

---

(४ से आगे) गिरदा जारहा है। पैसे नूं आदमी दे गुणाँ अगे महत्व नहीं दिता जाना चाहीदा। जिस दिन इ गल साडा समझ 'च आ जाएगी ओस दिन सही मैनियां च असीं तरक्की वल पहला कदम वधांगे!

रेलू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पादकीय विचार

## परीक्षा सम्बन्धी नया सुझाव

पंजाब यूनिवर्सिटी का सुझाव है कि मैट्रिक की परीक्षा में बैठने वाले छात्रों के वर्ष भर के काम की रिपोर्ट, जो क्लास-टीचर ने तैयार की हो, को भी ध्यान में रखा जाए। यह सुझाव उत्तम है। स्कूलों में प्रति मास टैस्ट हों। उन में प्राप्त अंकों का पूरा रिकार्ड प्रत्येक छात्र की 'प्रोग्रेस रिपोर्ट' में रखा जाय। मैट्रिक की परीक्षा का परिणाम घोषित करने से पूर्व इस रिपोर्ट को भी ध्यान में रखा जाए।

इस पद्धति के प्रचलन का एक विशेष लाभ यह होगा कि छात्र सारा वर्ष पढ़ाई में रुचि लेने लगेंगे परिणामतः पास पर्सेंटेज काफी बढ़ जाएगी। आशा करनी चाहिए कि इस सुझाव को शीघ्रतिशीघ्र कार्यान्वित किया जाएगा।

## निःशुल्क शिक्षा सम्बन्धी प्रयत्न

पँजाब सरकार पंजाब की जनता को मैट्रिक तक निःशुल्क शिक्षा की सुविधा देने का वचन दे चुकी है। इस सम्बन्ध में उस ने अब तक यह किया है कि कांगड़ा और महेन्द्रगढ़ के जिलों में मिडल तक और अम्बाला की नारायणगढ़ तहसील में छटी कक्षा तक सरकारी स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की है। प्रथम तो अन्य जिलों को छोड़ कर केवल दो जिलों में ऐसी सुविधा देने का निश्चय ही अन्याय युक्त है—फिर केवल सरकारी स्कूलों तक इसे सीमित करना प्राइवेट स्कूलों के लिए नई कठिनाइयाँ पैदा करना है। यद्यपि निःशुल्क शिक्षा का उत्तरदायित्व सरकार का है—तो भी जब तक इस निमान के लिए अभीष्ट धन पास न हो तब तक इस प्रकार के अधूरे प्रयत्नों से बजाए किसी लाभ के हानि ही अधिक होगी।

## हिन्दी तथा पंजाबी के लिए छात्रवृत्तियां

पँजाब सरकार ने मैट्रिक एफ० ए० तथा बी० ए० की परीक्षाओं में हिन्दी और पंजाबी में प्रथम रहने वालों को ३०), ४०) तथा ७५) रु० की छात्रवृत्तियाँ देने की घोषणा की है। यह अच्छा सुझाव है किन्तु यह नहीं बताया गया कि जिन्हों ने एच्छिक विषय के तौर पर हिन्दी और पंजाबी की परीक्षा दी हो क्या वे भी इन छात्रवृत्तियों के अधिकारी होंगे कि नहीं? इस सम्बन्ध में शीघ्र ही स्पष्टीकरण प्रकाशित होना चाहिए।

## राष्ट्रभाषा का विरोध क्यों?

भू० पू० गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचार्य ने उस समय हिंदी के राष्ट्र भाषा बनाये जाने का विरोध नहीं किया जब कि राष्ट्र भाषा का विषय विधान परिषद् में विचाराधीन था। अब जब कि विधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किए तीन वर्ष हो चुके हैं तो आज इस विरोध का उद्देश्य सिवाय इस के क्या समझा जा सकता है कि वह इस का विरोध सत्ता को हथियाने के लिए करना चाहते हैं। अपने निजी स्वार्थ केलिए देश की उन्नति के मार्ग में बाधा डालना उन को शोभा नहीं देता—क्या यह भी उन्हें समझाने की जरूरत है?

## ये बेकारी

पटवारियों के कुछ रिक्त स्थानों के लिए सरकार के पास २० हजार प्रार्थना पत्र पहुँचे हैं। इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि पढ़े लिखे नव युवकों में बेकारी किस हद तक बढ़ गई है। इस भयँकर समस्या को हल करने के लिये कुछ न कुछ अवश्य किया जाना चाहिए आशा है सरकार इस ओर ध्यान देगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अणुवादी वैज्ञानिक से !

श्री प्रकाश दीक्षित

हो सावधान ओ नए प्रयोगों के शिल्पी ।
क्यों शोलों-सी ये आँखें दहकने लगती हैं,
क्यों ये भौंहे रह रह कर तनने लगती है,
क्यों शोषण सी यह नजर बहकने लगती है
दो चार सतर जो कभी विधाता ने लिख दी
तुम पोत रहे क्यों उन पर काली-स्याही हो
गेहूं की भीगी अल्हड़ फसलों खेतों पर,
बरस रहे क्यों बन कर ध्वंस तबाही हो ?
दीवारों के उस ओर न तुम ने देखा है—
नीले नभ में बगलों की पांतें उड़ती हैं,
लहरों के द्रुत कम्पन पर चन्दा थिरक रहा
घन से बिजली की शोख कलाई मुड़ती है !
क्वाँरी आँख-मिचौनी कहीं बहारों की है
तापस चकोर के दल भी खड़े अकेले है
मरमरी मूरतें सपनों पर शासन करतीं—
ये जो मस्त मोर वों के जवान से मेले हैं ।
कहीं पलाशी सुबह कि संध्या शरमीली है
हरी दूब पर यह जो शबनमी बिछौना है ।
इस गीली माटी की सोंधी महक कहीं पर
तारों वाली रातों का जो रूप सलोना है ।
चढ़ती हुई उमर वाले ये काले बादल
पनघट गागर की वह जो शोख कहानी है
गूँज रही जो हलवाहे की बांसुरिया—
वीरानों के मन की मासूम निशानी है ।
यह जो काना-फूसी पवन और फूलों की
भूल अन्तरे नफरत के तुम ने गाए हैं,
बम-बारूदों के ढेरों पर ही बैठ-बैठ
केवल तुम ने शम शानी प्रेत जगाए हैं ?
सौगातें खुशियों की अमन चैन दुनिया का
अणु के बौराए हाथों नीलाम किया है
तवारीख के सफे सफे पर लिखी हुई—
मानव की परिभाषा तक को बदनाम किय है
चाहे जितनी धूल उड़े बादल घिर आएं
अन्धड़ से आकाश नहीं बदला करता है,
ओ नापाक इरादों वाले पागल बहशी—
जुल्मों से इतिहास नहीं बदला करता है ?
लाशों की बस्ती बसे कि इस धुन में दोस्त
टेस्ट ट्यूबों के रँग भले बदल जाएँगे
तुम फसलें बोते चलो कि एटम उदजनकी
मेहनत-कश निर्माणों का सूरज लाएँगे
देखो तहजीबों के झूठे दावेदारो—
विध्वँसों के विरोध में वे कस मचले हैं
सावधान ओ अँधियारे के व्यापारी—
हम देखो नई रोशनी लेकर निकले हैं !
हम गीता लिखने चले कि नए सवेरे की
तुम आओ अपनी शक्तिवान आवाज
मिलाओ
हम फसलें फूलों की बोएं वीरानों में—
तुम सींचो उन को कर हरीभरी पनपाओ

# बड़ों के जीवन से

बड़ा कौन !

रामकृष्ण परमहँस के दो शिष्यों में एक बार विवाद हो गया । सवाल यह था कि दोनों में बड़ा कौन है ? आखिर वे गुरु के पास गए । निवेदन किया कि उन के बीच एक विवाद उठ खड़ा हुआ है और गुरु देव से फैसला चाहते हैं ।

परमहंस ने उत्तर दिया—बड़ी सीधी बात है । तुम्हारे में से जो दूसरे को बड़ा समझे वही बड़ा है । बस ? अब तो उन के विवाद का स्वरूप ही बदल गया । अबतक तो वे मैं बड़ा मैंबड़ा कहते थे । अब एक दूसरे को तू बड़ा तू बड़ा कहने लगे .

(शेष सफा १० कालम २ में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जो काम मानव नहीं कर सकता वह मशीनें करेंगी

[ श्री एस० एन० लेबेदेव ]

प्राचीन काल से लोग तेजी से और ठीक-ठीक गणना करने के लिए अबैकस (गणना पटल जिस में तारों में रँग-बिरँगी गोलियां पिरोयी रहती हैं) का उपयोग करते आ रहे हैं। परन्तु यदि संख्या सैकड़ों हजारों लाखों और करोड़ों तक पहुँचती हो, तो क्या किया जाय ? जब सिर्फ जोड़ने, घटाने की बात न हो, बल्कि भाग देने और गुणा करने तथा अन्य जटिल क्रियाएँ करने की बात हो तो क्या किया जाए ? मानव मस्तिष्क ने इस शताब्दी में गणना की अनेक विधियाँ निकाली हैं, परन्तु वे सब उन चतुरतम मशीनों से कहीं घटिया हैं जिन का अभी हाल में जन्म हुआ है। आधुनिक रेडियो इंजीनियरिंग प्रविधि में तेजी से काम करने वाली इलेक्ट्रानिक गणना विधि शीर्षस्थान में हैं। एक नये विज्ञान का जन्म हुआ है। इसे साइबरनेटिक्स कहते हैं। यह गणित सम्बन्धी समस्याओं के त्वरित समाधान का विज्ञान है।

पहले मौसम सम्बन्धी भविष्यवाणी करने वाला सँस्थान गणना करने, हजारों नगरों और गांवों से आने वाले मौसम सम्बन्धी तथ्यों को एक साथ रखने के लिए सैंकड़ों गणितज्ञ नियुक्त करता था, ताकि आगामी काल, परसों या एक महीने के बाद के मौसम के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सके। यह काम हड़बड़ी में किया जाता था और लगभग किसी हद तक ही ठीक होता था।

इसी लिए मौसम सम्बन्धी भविष्यवाणी प्रायः गलत होती थी। परन्तु अब तेजी से काम करने वाली 'मौसम' सम्बन्धी मशीन विमान चालकों किसानों तथा अन्य लोगों को जिन्हें जरूरत हो, तापमान, वर्षा तूफानों आदि की विश्वसनीय और ठीक-ठीक सूचना देती हैं।

किसी आदमी से शतरंज खेलने के लिए गणना मशीन बनायी जा सकती है। यह मशीन स्वयं तेजी से सब से अच्छी चाल चुन लेगी। क्या यह चमत्कार नहीं है ? क्या यह परियों की कहानी जैसी बात नहीं है कि एक मशीन जो हमारे साथ साथ विदेशी वार्ता सुन रही है उसी जगह अनुवाद कर सकती और यहाँ तक कि उस अनुवाद को टाइप राइटर पर टाइप भी कर सकती है ?

गणितज्ञों के इलेक्ट्रानिक सहायक, गणना मशीनें भिन्न २ प्रकार के अनेक समाधानों का तेजी से परीक्षण करने और उन में से श्रेष्ठ हल को चुनने में सहायता देंगी।

इस प्रकार एक मशीन यह तय कर सकती है कि विमान के पँख का सर्वश्रेष्ठ आकार कौन सा होगा, जेट इंजन, टरबाइन आदि का सर्वाधिक उपयुक्त आयतन क्या होगा। दूसरी मशीन इन तथ्यों के आधार पर मानव की सहायता के बिना ही इन भागों का निर्माण कर देगी।

हमारे देश में इस समय भी ऐसी गणना मशीनें काम करती हैं। देश में गणना-केन्द्र खोले गये हैं। राष्ट्रीय अर्थतन्त्र की सभी शाखाओं में तेजी से काम करने वाली इलेक्ट्रानिक गणना मशीनें व्यापक रूप में राजय करने की व्यवस्था पंचवर्षीय योजना में की गयी है। ऐसी मशीनों के उत्पादन की ओर विशेष ध्यान दिया जायगा जो कारखाना और फैक्टरियों में विपुल उत्पादन लाइनों का नियंत्रण करने में सक्षम हों। ये मशीनें सर्वाधिक जटिल यांत्रिक प्रक्रियाओं का नियंत्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में मनुष्य की सहायता करेंगी। वे कार्य की अनेक विभिन्न बातों पर नियँत्रण रखेंगी तथा उन का तखमीना करेंगी और यदि जरुरत हुई, तो उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान आदमी की सहायता के बिना तत्काल ठीक निर्णय करेंगी।

मशीन की 'स्मरण शक्ति' ऐसी अच्छी होती है कि उसे मशीनी टूल में आदमी का काम आसानीसे सिखाया जा सकता है। इसके अलावा अच्छे श्रमिक के काम को कुछ काल तक देखने के बाद मशीन उस की सर्वश्रेष्ठ और सब से तेज प्रणालियों की नकल करने और अचूक रूप में उन का अनुसरण करने में सक्षम है।

आरम्भ में इन मशीनो द्वारा समाधान प्रदान करने का अनुपात मुश्किल से १००० कार्य प्रति सेकेण्ड था। अब १०,००० प्रति सेकेण्ड तक हो गया है और निकट भविष्य में एक लाख तक पहुंचाया जा रहा है।

गणना मशीनें गणना के काम में तथा थका देने वाले आफिस कार्य में लगे अनेक कर्मचारियों का स्थान ले लेंगी। मानव क्रियाकलाप की सर्वथा बहुमुखी शाखाओँ में प्रयुक्त 'बुद्धिमती' स्वयं-चालित मशीनें सैकड़ों इंजीनियरों और प्रविधिज्ञों को फुर्सत दे देंगी और इस प्रकार हमें उन की सेवाओँ का अन्य स्थानों में जहां प्राविधिक कर्मियों की अत्यधिक कमी के कारण देश को हानि हो रही है लगने का सुयोग मिलेगा।

तेजी से काम करने वाली गणना मशीनों को उद्योग की सभी शाखाओं में ही न लगाया जायगा बल्कि आयोजन के काम में भी उन्हें लगाया जायगा। उदाहरण के लिए रेडियो इँजिनियरिंग उद्योग टेलिविजन और रेडियो के एक करोड़ सेट तैयार करने की योजना बना रहा है। इन में से प्रत्येक सेट में सैकड़ों विशिष्ट कारखानों में बनी हजारों चीजें रहती हैं। गनणा करने वाली मशीने इन चीजों के उत्पादन से सम्बन्धित योजना का तेजी से हिसाब लगा डालें

( शेष सफा १० पर )

# गीत

श्री दिवाकर

बोकर तो देखो बीज मनुजता के,
यदि घृणा उगे तो तुम मुझसे कहना
जिनके यशसे इतिहास समुज्ज्वल है,
तपते-तपते ही उन के दिन बीते,
पर जीवन-संगर में धीरज के स्वर
कालाग्नि पचाकर युग युग तक जीते।
सुख के सागर तक जो ले जाएगी,
सीखो उस दुख की सरिता में बहना,
ये प्रलय घटाएँ जो सिर पर छाईं
कुछ और नहीं अपने कर्मों का फल
साहस का एक झकोरा काफी है,
मत व्यर्थ करो लोचन का लोना जल।
दिनकर का हियतल शीतल करके ही
धरती धरती हरियाली का गहना।
मृगतृष्णा सी यह माया की छाया
तुम छू न सकोगे भ्रम है छलना है,
समता के दीपक कर्मों में बाले—
पथ पर छाया तम तोम निकलना है।
विश्वास विजय की पहली सीढ़ी है
सीखो निष्ठा से डग भरते रहना।
हर आँसू की अपनी फुलवारी है
हर दर्द बना केसर की क्यारी है
महमह महका जिससे जग का आंगन
कुछ और नहीं बस गंध तुम्हारी है।
संसार उसी की पूजा कर पाया
जो सीख गया इस की चोटें सहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रकाश की प्रतीक्षा

(पं० बंशीधर जी हैदराबाद)

खड़ा हुआ हूँ पूर्व दिशा में,
व्याकुल दृष्टि उठाये ।
कब प्रकाश की किरणों से,
जग जगमग हो जाये ॥
दूर दिगन्त भरे लाली से
नव सुषमा बिकसाये ।
नदी तटों की चमकी रेखा,
लहर लहर मचलाये ॥
पत्ता पत्ता हिल हिल नाचे,
पची पची गाये ।
एक अपूर्व हर्ष से सारा,
भूमण्डल भर जाये ॥
अन्धकारमय काला पर्दा,
फटे दूर हो जाये ।
नये रूप में नये रंग में,
दिशा दिशा मुसकाये ॥
बिस्तृत नील गगन, धरती मिल
अपना रूप दिखाये ।
देख देख कर जिस को सीमित,
मन असीम हो जाय ॥

---

( सफा ६ से आगे )

गी कि सम्बद्ध प्रत्येक कारखाने को क्या चीज कितनी बनानी है।

किसी बड़े पुस्तकालयमें कोई किताब खोजने में काफी समय लगता और परिश्रम करना पड़ता है। पुस्तकालयाध्यक्ष की स्मरणशक्ति बहुत अच्छी होनी चाहिए। नयी गणना मशीन "याद रखती है" कि लाखों किताबें कहाँ रखी हैं और तत्काल बता देती है कि उन्हें कहाँ खोजना चाहिए। अधिक समय गुजरने से पहले ही हम जिन्दगी में वे चीजें देखेंगे जो अभी हाल तक हमें असम्भव जान पड़ती थीं। ग्राम पुस्तकालय में कोई भी पुस्तक, यहां तक सर्वाधिक दुर्लभ पुस्तक तक टेलीविजन के द्वारा पढ़ना सम्भव हो जायगा। ऐसा करने के लिए सिर्फ एक निर्धारित सँख्या पर डायल घुमाना होगा जैसे इस समय टेलीफोन करने के लिए किया जाता है और थोड़े समय के भीतर, कुछ मिनटों के बाद ही किसी दूर के बड़े शहर में गणना मशीन वह जरूरी किताब खोज देगी और उसकी विषय-वस्तु ब्राडकास्ट कर देगी। गांव से गये बिना, उसी डायल का उपयोग कर आप आदेश देंगे और सँगीत सुन सकेंगे, या किसी चित्रकार का चित्र देख सकेंगे या फिल्म देख सकेंगे।

तेजी से काम करने वाली गणना-मशीनों की सहायता से ऐसे चमत्कारों का होना अभी हाल में सम्भव हुआ है।

---

## जो मुझ में है।

हुगलीके सरकारी वकील स्व० शशिभूषण बन्द्योपाध्याय एक दिन बैशाख के महीने में दोपहर की कड़कती धूपमें किरायेकी गाड़ी में बैठ कर एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के घर पहुंचे। आवभगत करने के पश्चात उस आदमी ने इन से पूछा— इस भयंकर दोपहरी में आप ने आने का कष्ट क्यों किया ? आप किसी नौकर के हाथ पत्र भेज देते तो भी यह काम हो जाता।

शशिभूषण जी ने कहा—मैंने पहले नौकर को ही भेजने का विचार किया था। और पत्र भी लिख दिया था किन्तु बाहर की प्रचण्ड गर्मी तथा लू देख कर मैं किसी भी नौकर को भेजने का साहस न कर सका। मैं तो गाड़ी में आया हूँ। उस बेचारे को तो पैदल आना पड़ता। उस में भी तो वही आत्मा है जो मुझ में है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# वर्तमान शिक्षा-संगठन त्रुटि पूर्ण है !

[ महामना स्वर्गीय प० मदनमोहन मालवीय जी ]

प्रायः हमारे विद्यार्थियों के प्रति यह शिकायत की जाती है कि उन में से अत्यधिक संख्या कानून पढ़ने की ओर झुकती हैं। परन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि इस में उन का दोष नहीं है अपितु यह उन का दुर्भाग्य है। उन के लिये और कौन से मार्ग खुले है ?

एक समय जापान में अनावश्यक रूप से अधिक संख्या में विद्यार्थी कानून पढ़ने लगे, वकालत के पेशे में कुछ ही दिनों में जगह नहीं रही। जल्दी ही वहां के विश्वविद्यालयों में व्यापार विभाग खोले गये और बहुत से नव युवकों ने वकालत छोड़ छोड़ कर व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया इस प्रकार अपनी तथा देश दोनों की सेवा की।

वर्तमान शिक्षापद्धति पर यह सब से बड़ा लाँछन है—भयानक अवस्था है कि एक भारतीय युवक २० वर्ष तक स्कूल और यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी अपने माता पिता स्त्री, तथा बच्चे स्वयँ अपने लिये भी उचित भरण पोषण के निमित्त धनोपार्जन नहीं कर सकता। वर्तमान शिक्षा संगठन नितांत त्रुटि पूर्ण है और इस में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। सम्पूर्ण वातावरण ही को बदलने की आवश्यकता है। बालक की शिक्षा उसी समय प्रारम्भ होनी चाहिए जब कि वह अपनी माँ के गर्भ में आता है। इसके लिये आवश्यक है कि युवक और युवतियों को माता और पिता बनने से पूर्व शिक्षित बनाया जाय। इंग्लैड की ओर दृष्टिपात करने से मालूम होगा कि वहाँ माता शिक्षिता है, पिता शिक्षित है और पड़ोसी भी शिक्षित है। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति स्कूल की शिक्षा प्राप्त किये होता है। कहीं भी जाइये शिक्षा सँस्थाएं हर जगह चारों ओर कार्य करती सामने आती है। प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में समाचार पत्र और पुस्तक दिखाई पड़ती है। पढ़ने समझने और ज्ञान बढ़ाने की उत्कट इच्छा को सभी प्रकार से बलवती बनाने के लिए प्रोत्सहन दिया जाता है। शिक्षा वहां के व्यक्तियों के जीवन का आवश्यक अंग हो गया है। वहाँ सफलता पूर्वक यह प्रयत्न किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए मां की गोद में खेलने के समय से लेकर मृत्यु पर्यन्त हर एक स्थिति में शिक्षा प्राप्त करने के पूर्ण अवसर प्राप्त रहे। इस प्रकार का वातावरण है, जहां एक अंग्रेज बालक जन्म लेता और बढ़ता है। बच्चों के पालन के स्कूल नर्सरी स्कूल प्रारम्भिक शिक्षा के स्कूल, माध्यमिक शिक्षा के स्कूल तथा औद्योगिक शिक्षा स्कूल आदि सभी संस्थाओं में उस की पूर्णतया देख रेख होती है ! जब वह अन्त में स्कूल छोड़ कर सँसार में पदार्पण करता है तो वह कार्य करने की क्षमता रखता है और उसे अपनी जीविका प्राप्त करने में पूरी सहायता दी जाती है। यदि वह आगे पढ़ने के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश करता है तो वह वहां पर उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सब प्रकार तैय्यारी से जाता है और आशा तथा उच्च ध्येय के कारण प्रस्फुटित रहता है ! भारतीय युवक को भी यदि उन्हीं परिस्थितयों में रख दिया जाय, उसे पर्याप्त अवसर दिया जाय तो यह निश्चिय है कि ज़मीन पर कोई देश ऐसा नहीं है जहाँ के युवक उसे नीचा दिखा सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहानी—

# विशाखा

श्री सन्तराम बी० ए०

बौद्ध ग्रन्थों में जिन सती साध्वी और दान-शीला महिलाओं का वर्णन मिलता है उनमें विशाखा का स्थान निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ है आज कल जिस प्रदेश का नाम उड़ीसा है उसे पहले अंग-देश कहते थे। इतिहासज्ञों का कहना है कि यह प्रदेश मगध के अन्तर्गत था। मगध के महाराजा का नाम बिम्बिसार था। अँगदेश के भद्रंक नामक नगर में विशाखा के पितामह सरोडक और पिता धनंजय रहते थे। एक समय उस नगर में भगवान बुद्ध धर्म-प्रचारार्थ पधारे। तब धनन्जय परिवार सहित उन का शिष्य बन गया। उस समय विशाखा केवल सात वर्ष की बालिका थी, किन्तु इस आयु में ही भगवान बुद्ध देव की मधुर उपदेशावली ने उस के प्राणों में प्रेरणा फूंक दी। विशाखा के कोमल हृदय में सेवा-धर्म का कोमल अंकुर उत्पन्न हो गया। उसके पिता अपार धन-सम्पत्ति के स्वामी थे। इसी से वह अमित भोग कहलाते थे।

मगध के महाराजा बिम्बिसार और कोसल के राजा प्रसेनजित आपस में साले बहनोई थे। कोसल नरेश को एक बार विचार आया कि बिम्बिसार के राज्य में छः 'अमित भोग' हैं और मेरे राज्य में एक भी नहीं।

चलो बिम्बिसार के पास जा कर एक महा-पुण्यवान मनुष्य मांग लाऊं। बिम्बिसार ने जब यह बात सुनी तब उन्होंने उत्तर दिया—मेरे कहने से तो कोई बड़ा श्रेष्ठी यहाँ से वहां जा नहीं सकता।

प्रसेनजित ने कहा—और मैं किसी को ले जाए बिना हटूंगा ही नहीं। तब मगध नरेश ने अपने मँत्रियों से सम्मति ली और सेठ धनँजय को समझा बुझा कर प्रसेनजित के पास भेजा। प्रसेनजित की राजधानी श्रावस्ती थी। परन्तु श्रावस्तीमें मेरा परिवार नहीं समाएगा यह सोच कर धनजय ने राजा की आज्ञा से राजधानी से सात योजन के अन्तर पर साकेत नाम की नगरी बसाई और वह वहाँ रहने लगा।

उस समय श्रावस्ती नगरी में मृगार नामक धनवान जैन सेठ निवास करता था। मृगार के पुत्र पूर्णवर्तन ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जब तक पँचकल्याणी कन्या न मिलेगी तब तक वह विवाह नहीं करेगा। पँचकल्याणी उसे कहते हैं (१) जिस का केश-पाश मयूर-पुच्छ की भाँति चिकना और कोमल हो, (२) जिस का अधरोष्ठ परिपक्व बिम्बफल की भांति सुदर्शन हो, (३) जिस की दन्तावली मुक्ताफल के सदृश शुभ्र, उज्ज्वल, घन-विन्यस्त एवँ समदीर्घ हो, (४) जिस की देह का वर्ण सर्वत्र एक रूप हो और (५] जो बीस सन्तानों की जननी हो जाने पर भी स्थिर यौवना रहे।

मृगार-पुत्र की प्रतीज्ञा के अनुसार वधु का सन्धान करने पर विशाखा में ही ये सब गुण दीख पड़े। इसलिए मृगार ने उसी के साथ विवाह करना स्थिर किया। इस समय विशाखा की आयु पन्द्रह वर्ष की था!

धनञ्जय ने पुत्री के विवाह पर विपुल धन व्यय किया। अपने राज्य में आए हुए सेठ को सम्मान देने के अभिप्राय से स्वयं कोसलाधिपति सैन्य सामन्तगण सहित विवाह में उपस्थित हुए। मृगार ने धनंजय से पहले ही कहला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



भेजा था

"राजा और उनकी सेना बारात में आने वाली है। आप उनका आतिथ्य सत्कार तो कर सकेंगे ?"

धनंजय ने जवाब दिया—"एक नहीं दस राजाओं को बुला लाइएगा।"

राज्य की देख रेख के लिए जितने मनुष्यों की आवश्यकता थी, केवल उन्हीं को पीछे छोड़ कर मृगार भी श्रावस्ती के सभी लोगों को बारात में ले आया। महाजनों के इस दल का स्वागत करने के लिए सभा बन गई। इस सभा की नेत्री स्वयं विशाखा थी। उस का प्रबन्ध इतना अच्छा था कि धनंजय ने इस टिडो-दल बरात को अपने यहां चार मास तक ठहराए रखा उस समय वर्षाकाल था। इस लिए शुष्क काष्ठ न मिलने से धनंजय ने चन्दन की लकड़ी जला कर अभ्यागतों के लिए भोजन बनवाया।

धनंजय ने अपनी बेटी को दहेज में जो कुछ दिया वह भी कुछ कम न था। उस ने अगणित मणि-मुक्ता, कपड़ा-लत्ता, हाथी-घोड़े रथ बहलियां, धन और अन्न दिया। आभूषणों में उस ने सिर पर पहनने के लिए एक कृत्रिम मयूर भी दिया। विभिन्न वर्णों की बहुमूल्य मणियों द्वारा वह शिरोभूषण ऐसे कौशल से बनाया गया था कि उसे देख कर सच्चे मयूर का भ्रम होता जाता था। वायु के प्रवाहित होने पर उस के मुख से केकारव निर्गत होने लगता था! इस प्रकार के कला-कौशल को देख सभी आश्चर्यान्वित हो गए।

जब पिता के मन में विचार आया कि लड़की को गौएं दे। अपने नौकरों से उन्होंने कहा—"जाओ छोटा व्रज अर्थात गोकुल खोल दो। गोकुल में सहस्रों गौएं थीं। वे सब दहेज में दी गईं।

पिता ने पुत्री को इस दहेज से भी अधिक बहुमूल्य दस उपदेश दिए। वे उपदेश प्रहेलिकामयी भाषा में थे. इस लिए उन्हें कोई सहज में नहीं समझ पाता था। विशाखा का ससुर मृगार ओट में खड़ा इन उपदेशों को सुन रहा था। परन्तु इन का अर्थ वह हृदयँगम न कर सका। धनंजय ने पुत्री से कहा—देख बेटी, ससुराल की हो कर, अपने भीतर की अग्नि को बाहर मत निकालना, अर्थात यदि ससुराल वालों में कोई दोश दिखाई दे तो दूसरों के आगे इस की बात न करना घर की गुप्त कथा दूसरों के आगे प्रकट न करना

बाहर की अग्नि भीतर मत लाना अर्थात् यदि पड़ोसी और नौकर आदि ससुराल वालों के सम्बन्ध में उलटी-सीधी बातें कहें तो ससुर प्रभति गुरुजनों से यह न कहना कि अमुक व्यक्ति आप के विषय में यों कहता था।

जो दे उसी को देना अर्थात् कोई व्यक्ति कोई वस्तु मांगने आएं तो उसे तभी देना जब वह लौटा जाने का वचन दे।

जो न दे उसे न देना अर्थात् जो मांगी हुई वस्तु न लौटाए उसे न देना।

जो दे या न दे उन्हीं को देना अर्थात् सगे सम्बन्धी लौटा सकें या न लौटा सकें तब भी उन्हें अवश्य दे देना।

ठिकाने से बैठना अर्थात् सास ससुर प्रभति गुरुजनों को देखकर जहाँ से उठना पड़े वहाँ न बैठना।

ठिकाने से खाना अर्थात् गुरु और भृत्य आदि के खा चुकने के पश्चात निश्चिन्त हो कर खाने बैठना।

(शेष सफा १६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्राचीन शिक्षा प्रणाली की एक झलक

(ले० श्रीबाबू श्यामजी गुप्त, एम० ए० एल० टी, हैडमास्टर डी० ए० वी० हाईस्कूल, आगरा)

यवन राजत्व की आरम्भिक चढ़ाइयों के समय की घटना है, सिन्धपति राजा दाहिर के ऊपर दलबल के साथ मुहम्मद बिनकासिम चढ़ आता है। वे खबर राजपूतों से संग्राम छिड़ जाता है, घमासान लड़ाई होते होते राजा दाहिर रणभूमि की भेंट हो जाता है। फिर भी लड़ाई क्या शाँत हो जाती है ? दाहिर की सेना परास्त होकर छिन्न भिन्न हो जाती है और रानियां अपने सतीत्व की रक्षार्थ चिताकी तय्यारी करती हैं। अब यह विकराल वृत्त गुरुकुल में वास करने वाले राजकुमारों के कर्ण कुहरों में भी पहुंच जाता है, फिर क्या है कर्पूरखण्डकोअग्नि ज्वाला का दर्शन मात्र पर्याप्त है। राजकुमारोंकी भुजाओं का राजपूती रक्त फड़क उठता है। गुरुवर के आगे नतमस्तक होकर जाने का अनुशासन माँगते हैं, गुरुवर आशीर्वचनों के सहित उन्हें विदा करते हैं। राजकुमार राजप्रासादों में पहुँच कर वीर प्रसविनी जननियों की चरणवन्दना कर उचित आज्ञा के लिये खड़े हो जाते हैं। रानियाँ इन सुकुमार कुमारों की भोली प्रतिमाओं को निहार कर आखिर में कहती हैं बेटा ! जाओ प्राणों की जैसे बने वैसे रक्षा करो, भाग कर भी प्राणों को बचाओ।

'भागना' शब्द राजपूती खून की प्रकृति को कभी अनुकूल नहीं पड़ता।

राजकुमार:—यह आपने क्या कहा ? राजपूत का धर्म भाग जाना कहां है ?

माताएं:—तो फिर बेटा क्या करोगे ? धर्म रक्षा कैसे होगी ? आओ हमारे साथ अग्नि में प्रवेश करो।

राजकुमार:—जननी ! क्या आत्मघात करना क्षात्र धर्म है ?

माताएँ—नहीं बेटा ! शास्त्र में क्षत्रियों को आत्मघात करना पाप लिखा है।

राजकुमार:—हम वही करेंगे जो हमारा धर्म है।

माताएः—तुम्हारा धर्म तो रण चण्डी का खप्पर भरना है। पर तुम बालक हो।

राजकुमार:—बस हम युद्ध भूमि में ही जाते हैं—, कह कर छोटे छोटे हाथों में छोटी तलवारें और छोटे छोटे धनुष बाण हाथ में ले निर्भय छाती निकाल कर खड़े होजाते हैं। अँतमें वीर माताएं क्षात्र धर्मोपदेश देती हैं देखो तुम क्षत्रिय हो, समराँगन में दुश्मन को अपनी पीठ मत दिखाना। जाओ क्षात्र धर्म का पालन करो।

वे दाहिर कुमार अब एक क्षण भी यहां न बिता कर युद्धार्थ प्रस्थाण करते हैं और युद्ध स्थली में जा एक बार तो वह शस्त्र प्रहार करते हैं कि दुश्मन के आश्चर्य का ठिकाना नहीं है। दुश्मन इन सिंह शिशुओं के पराक्रम को देख एक बार तो सहम हो जाता है यवन सैन्य कुतूहल में आ जाता है, अनहोना साहस देखता है, और जो सुना था कि क्षत्राणियों के दूध पिये बालक जमीन को हिला देते हैं—आज आंखों से देख रहे हैं। धर्म की बलिवेदी पर चढ़ने को आतुर दश बारह वर्ष की आयु के यह किशोर पुनः यवन दानवों की शस्त्र वर्षा से आखिर कहां तक बचते, वह भी अपने पितृ देव के साथ स्वर्गासन पर पहुँचते हैं। और देश धर्म का यश सदा को समुज्ज्वल कर जाते हैं। भारत के भाग्योदय में भावी वीर कन्याओं और नवयुवकों का ही भाग है उन के लिए वही उच्च पवित्र कर्तव्य परायण प्राचीन शिक्षा विधान बनानेकी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वर्तमान शिक्षा निस्सार है !

[ले—कवि सम्राट श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर]

हमारे देश की आर्थिक दरिद्रता दुःख का विषय है और उस से भी बढ़ कर लज्जा का विषय है हमारे देश की शिक्षा का अकिंचित्करत्व। इस अकिंचित्करत्व ( निस्सारता ) की जड़ में मौजूद है हमारी वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था की अस्वाभाविकता और देश की मिट्टी (भूमि) के साथ उस व्यवस्था का विच्छेद। चित्तविकास के जिस आयोजन को स्वभावतः ही सब से बढ़ कर अपना होना चाहिये था, वही सब से बढ़ कर पराया बना हुआ है—उस के साथ हमारा रस्सी का योग हुआ है, नाड़ी का योग नहीं हुआ इस की व्यर्थता ने हमारी स्वजातीय (राष्ट्रीय) इतिहास की जड़ को खोखला कर दिया है. सारी जाति या राष्ट्र की मानसिक परिवृद्धि को वह बढ़ने से रोक रही है—छोटा बना रही है। देश की अनेक प्रकार की प्रयोजनीय विधिव्यवस्थाओं पर अनात्मीयता (परायेपन) दुःसह भार उसे आप ही दबाये बैठा है, कानूनी अदालती सब प्रकार की सरकारी कार्यवाइयां जिन पर करोड़ों भारत वासियों का भाग्य निर्भर है वे हम करोड़ों भारत-वासियों के लिये बिल्कुल दुर्बोध और दुर्गम है। हमारी भाषा अनिवार्य अशिक्षा के साथ राष्ट्रीय शासन विधि का बहुत बड़ा अन्तर होने से पद-पद पर जो दुःख और अपव्यय होता है उसकी कोई सीमा नहीं ! फिर भी कह सकता हूँ कि पहवाह्य। परन्तु शिक्षा का विषय देश के हृदय की अपनी वस्तु न होना सबसे भी बढ़ कर मर्मान्तिक है। यह चेष्टा लेबोरेटरीमें रासायनिक प्रक्रिया से उत्पन्न किये गये कृत्रिम अन्न से देश का पेट भरने के समान है। बहुत कम पेटों में हों वह पहुँचती है और इसे सम्पूर्णतः खून के रूप में परिणत करने की ताकत कम पाकयन्त्रों में होती है। देश के चित्त के साथ देश की शिक्षा का यह व्यवधान यह दूरी और शिक्षा की अपमानजनक स्वल्पता ने दीर्घ काल तक मुझे वेदना पहुंचाई है। क्यों कि यह मैं निश्चित जानता हूँ कि पराश्रयता की अपेक्षा कहीं भयंकर शिक्षा में परधर्म है इस विषय में मैंने बार बार आलोचना की है।

# शिक्षा और गांधी जी

( ले० महात्मा गांधी )

सा विद्या या विमुक्तये। जिस विद्या से धर्म की रक्षा हो वही विद्या है जो विविध अर्थात आर्थिक सामाजिक और अध्यात्मिक मुक्ति दिलाए। जिस विद्या से हमारी मुक्ति दूर हटती है वह विद्या त्याज्य है वह विद्या राक्षसी है वह विद्या अधर्म है।

## पाठशाला की व्यवस्था

पाठशाला की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि बालक भटकते न फिरें और चरित्रवान शिक्षकों की देख रेख में अपना चरित्र निर्माण कर सकें। हिंदू बालक-बालिका संस्कृत सीखें और गीता पढ़ें मुसलमान बच्चे अरबी और कुरान पढ़ें। सब बालक सुन्दर मजबूत कसदार एक सा सूत कातें और बुनें तथा बुनें भी।

## पाठ्य पुस्तकें

मैं बालकों के हाथ में पाठ्य पुस्तक देना नहीं चाहता शिक्षकों को स्वयं पढ़ाना हो तो भले ही पढ़ें। शिक्षकों के लिए लिए चाहे जितना लिखिए, बालकों के लिए लिखना शिक्षकों को मुर्दा मशीनें बना देना है शिक्षकोंमें चिंतन शक्ति और स्वतन्त्रता का नाश कर देना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफा १३ से आगे

ठिकाने से सोना, अर्थात बड़ों के सोने के पश्चात आप सोना।

अग्नि की परिचर्या करना, अर्थात पति-ससुर प्रभति बड़ों की सेवा करना।

गृहागत देवताओं की अर्चना करना, अर्थात परिव्राजक और अतिथि आधि की विशेष यत्न के साथ अभ्यर्थना और सेवा करना।

विशाखा ने अपने जीवन में इन उपदेशों का अक्षर २ पालन किया।

विशाखा का मृगार निर्ग्रन्थ ज्ञातिपुत्र नामक तीर्थक नग्न सम्प्रदाय का शिष्य हो गया था। विवाह के पश्चात मगार पुत्र-वधु विशाखा को ले कर गुरुदेव की पूजा के लिए गया।

विशाखा ने देखा कि तीर्थक सम्पूर्ण नग्नावस्था में बैठा है। इस से उस ने तीर्थक के प्रति विरक्ति का भाव प्रकट किया। निर्ग्रन्थ ने उस के मन का भाव जान कर मृगार से कहा-तुम इस बहू को अपने घर से निकाल दो। यह बहू कुल-क्षणा है। यह गौतम की शिष्या है। यदि तुम इस को बहिष्कृत नहीं करोगे तो तुम्हारा सर्वनाश हो जायगा।

मृगार गुरुदेव की बात सुन कर डर गया वह बोला—गुरुदेव मेरी पुत्र वधू को क्षमा कर दीजिए। एक दिन एक अर्हन्त भिक्षा के लिए मृगार के घर पर आया। विशाखा अर्हन्त से बोली—आप किसी दूसरे घर भिक्षा के लिए जाइए क्यों कि इस घर के स्वामी पर्युषित अर्थात बासी भोजन करते हैं।

मृगार ने यह बात सुन विशाखा को निकाल देने का संकल्प कर लिया। विशाखा ससुर के संकल्प की बात जान कर दृढ़ स्वर से बोली मैं इस घर में लौंडी नहीं हूँ कि आप जब चाहें मुझे निकाल दें! मेरी रक्षा के लिए मेरे पिता ने इस नगर में आठ सम्भ्रांत व्यक्ति नियुक्त किए हैं! आप उन को बुलवाइए। मृगार ने उन को बुलवा लिया। तब विशाखा ने उन आठ सम्भ्रांत आदमियों को सम्बोधित कर के कहा—मेरे ससुर पर्युषित भोजन करते है अर्थात पूर्वजन्मार्जित कर्मफल के कारण इस जन्म में सुखी हैं। परन्तु इस जन्म में वह कोई दानपुण्य करते नहीं। आप मुझे पितृ-गृह में ले चलिए।

इसी बीच एक दिन रात्रि समय विशाखा आलोक ले कर घरसे बाहर जा रही थी। मृगार ने उसे देख कर इस का कारण पूछा—विशाखा बोली एक घोड़ी ने शावक प्रसव किया है। मैं उसे देखनेजाती हूँ!

तब मृगार बोला—तुम्हारे पिताने तो तुम्हारे लिए घर की आग बाहर ले जाने का निषेध किया है फिर तुम ऐसा क्यों कर रही हो?

विशाखा बोली—मेरे पिता ने निन्दा-कुत्सा इत्यादि को लक्ष्य कर के ही अग्नि शब्द का प्रयोग किया था। उन के उपदेश का अनुसरण कर के मैं घर की बात कभी बाहर नहीं करती हूं।

इस प्रकार कहते हुये विशाखा ने अपने पिता के बताये सभी उपदेशों का अर्थ अपने ससुर को समझाया। अब मृगार का भ्रम दूर हो गया। विशाखा बोली—अब मैं मायके जाती हूँ। इस पर मृगार ने कहा—देवी मुझे अधिक लज्जित न करो। तुम इस घर को छोड़ कर न जाओ!

विशाखा बोली—आप तो तीर्थक - नग्न सम्प्रदाय के मतावलम्बी हैं और मैं विरत्न बुध्द की उपासिका हूं। आप यदि मुझे स्वेच्छानुसार दान देने दें और धर्मोपदेश सुनने की अनुमति दें तब मैं आपके घरमें रह सकती हूं अन्यथा नहीं।

( शेष सफा १७ पर )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगार ने उस की बात मान ली और कोई आपत्ति न की।

बुद्धदेव जब शिष्य-मण्डली सहित कौशल की राजधानी श्रावस्ती मे पहुँचे तब विशाखा ने भिक्षुओं की अभ्यर्थना का प्रचुर आयोजन किया एक दिन विशाखा का निमन्त्रण ग्रहण कर बुद्धदेव शिष्यगण सहित मृगार के घर में भोजन करने गये। भोजन के अनन्तर जब भगवान विश्राम कर रहे थे तब विशाखाने प्रणाम कर और हाथ जोड़ कर कहा—भगवन में कुछ प्रार्थना करका चाहती हूं क्या आप श्रवण करने की कृपा करेंगे ?

बुद्धदेव प्रशाँतोज्ज्वल हास्य के साथ बोले—वत्से तुम्हारी जो अभिलाषा है, वह अवश्य कहो।

विशाखा विनीत भावसे बोली—भगवान मेरी पांच बातें स्वीकार करें।

१ वर्षा-काल में वस्त्राविहीन भिक्षुओं को बड़ा कष्ट मिलता है और उन को वस्त्रविहीन अवस्था में देख कर लोगों के चित में ग्लानि उत्पन्न होती है। इस कारण मै चाहती हूँ कि संघ को वस्त्र दान किया करूँ।

२ श्रावस्ती में बाहर से आने वाले भिक्षु भिक्षा के लिए इधर उधर फिरते है! इस लिए इन को भोजन देना चाहती हूँ।

३ बाहर जाने वाले भिक्षु भिक्षा के लिए पीछे रह जाते है और अपने गन्तव्य स्थान पर देर से पहुंचते है। इस लिए मैं उन के भोजन का भी प्रबन्ध करना चाहती हूं।

४ रोगी भिक्षुओं को उचित पथ्य और औषधि नहीं मिलती। मै चाहती हूँ कि उस का भी प्रबन्ध करूं।

५ संघ के रोगियों की सेवा शुश्रुषा करने वाले भिक्षुओं को भिक्षा मांगने के लिए समय नहीं मिलता। अतएव मै चाहती हूं कि उन के भोजन का भी प्रबन्ध कर दूं।

भगवान ने कहा—हे विशाखा तुम्हें इन बातों से क्या लाभ होगा ?

उस ने उत्तर दिया—हे भगवन वर्षा ऋतु के अनन्तर जब भिक्षुगण भिन्न २ स्थानों से श्रावस्ता में लौट कर आएंगे और आप से किसी मृत भिक्षु के सम्बन्ध में बात करेंगे और आप उसे असाध कर्म त्याग कर साधु जीवन ग्रहण करने वाला और निर्वाण तथा अर्हत पद के लिए यत्नवान बतलाएंगे तथा उस के जोवन की सफलता और निष्फलता का वर्णन करेंगे—तब मैं उन भिक्षुओं से पूछूँगा—हे भिक्षुओ, क्या वह मृत भिक्षु श्रावस्तीमें भी रह चुका है ? और जब मुझे मालूम होगा कि वह पहले यहां रह चुका है तब मैं समझूंगी कि उसने मेरे दिए हुए पदार्थों से अवश्य लाभ उठाया होगा।

इस से मेरा दिल अत्यन्त आनदित और शांत होगा। इस आनन्द और शांति से मेरे चित्त में स्थिरता आएगी। इस स्थिरता से मेरे हार्दिक भावों और पुनीत आध्यात्मिक ताकतों को सम्यक उन्नति होगी उस का विकास होगा।

विशाखा की बात सुन कर भगवान ने कहा—विशाखा तेरा विचार अति उत्तम और पवित्र है। दान के सच्चे अधिकारी को दान देना अच्छे खेत में बीज बोने के समान है। परंतु कुपात्रको दान देना ऊसर भूमि बीज फैंकना है।

दुष्कर्मी दान देने वाले अपने दुष्कर्म के द्वारा सँसार में पाप बढ़ाकर पुण्य का नाश करते है। परँतु विचारपूर्वक दिया हुआ सात्विक दान दानदाता और ग्रहीता दोनों के लिए कल्याणकारी है। (शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# शिक्षा संबन्धी ऋषि दयानन्द के विचार

और जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है देखो वेद में कन्याओं के पढ़ने का प्रमाण—

ब्रह्मचर्य्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् ।
अथर्व० (कां० ११।प्र० २४।अ० ३।मं १८)

जैसे लड़के ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी, अपने अनुकूल प्रिय सदृश स्त्रियां के साथ विवाह करते हैं वैसे (कन्या) कुमारी (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रों को पढ़ कर विद्या उत्तम शिक्षा प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था में अपने सदृशप्रिय विद्वान (युवानम) पूर्ण युवावस्था युक्त पति को (विन्दते) प्राप्त होवे इस लिए स्त्रयों को भी ब्रह्मचर्य और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिये (प्रश्न) क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़े ?

उत्तर—अवश्य। देखो श्रौतसूत्रादि में—

इमं मन्त्रम् पत्नी पठेत्

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढे जो वेदादि शास्त्रों को न पढ़ी होवे तो यज्ञ में स्वर सहित मन्त्रों का उच्चारण और संस्कृत भाषण कैसे कर सके ?

भारत वर्ष की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़ के पूर्ण विदुषी हुई थीं।

यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। भला जो पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो नित्य प्रति देवासुर लड़ाई घर में मची रहे फिर सुख कहां ? इस लिये जो स्त्री न पढ़े तो कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका क्यों कर हो सकें तथा राज कार्य्य, न्यायाधीशइत्यादि गृहाश्रव का कार्य, जो पति को स्त्री और स्त्री को पति प्रसन्न रखना घर के सब काम औरत के आधीन रहना इत्यादि काम विना विद्या के अच्छे प्रकार कभी ठीक नहीं हो सकते।

## सह शिक्षा

विद्या पढ़ने का स्थान एकांत देश में होना चाहिए और वे लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिये। जो वहां अध्यापक पुरुष या भृत्य अनुचर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और लड़कों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पाँच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पाँच वर्ष की लड़की और पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की न जाने पावे।

अर्थात जब तक वे ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी रहें तब तक नारी व पुरुष का दर्शन स्पर्शन एकांतसेवन, भाषण विषय कथा आपस में खेल कूद विषय ध्यान और सँग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उनकी इन बातों से बचावें जिस से उत्तम पढ़ाई शिक्षा शील स्वभाव शरीर और आत्मा से बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढ़ा सकें। पाठशालाओं से एव योजन अर्थात चार कोस दूर गांव व नगर रहे।

सब को तुल्य कपड़े खान पान आसन दिये जायें चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो चाहें गरीब की सन्तान हो सब को तपस्वी होना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * भारतीय बाल सभा *

## बच्चों का भाग

अध्यक्षा-दीदी

सम्पादक-हितैषी

## फुलवाड़ी

(बच्चों के प्रश्नों के उत्तर)

प्र० क्या पत्रिका में रचना छपवाने केलिए इस का ग्राहक बनना आवश्यक है ?

सुदर्शन कुमार; सोनीपत

उ० ग्राहक बनना जरूरी तो नहीं किंतु यदि तुम चाहते हो कि पत्रिका तुम्हारी रचना प्रकाशित कर तुम्हारी सहायता करे तो इस के ग्राहक बन कर इस की सहायता करना भी अपना कर्तव्य समझना चाहिये।

२ सुना है कि पँजाब की मैट्रिक की परीक्षा में प्रत्येक विषय में ३३ प्रतिशत अंक पाने वाले को छात्रवृत्ति मिलती है—क्या यह बात सत्य है अथवा असत्य ?

उ० जान पड़ता है कि किसी ने तुम्हें 'फूल' बनाने का यत्न किया है।

३ क्या गधे के सिर पर कभी सींग हुआ करते थे ! यदि नहीं तो यह उक्ति कैसे प्रचलित हुई। वह वहां से ऐसे गायब हो गया जैसे गधे के सिर से सींग मोहन लाल करनाल

उ० गधे के सिर पर कभी सींग थे या नहीं—इसे जानने की अपेक्षा यह जानना चाहिए कि यह उक्ति कैसे प्रचलित हुई ? अपने हिन्दी के अध्यापक से पूछना।

४ यदि पशु और पक्षी भी बोल सकते तो क्या होता ? —सुशीला

उ० तो शायद मनुष्य का वेजुबान रहना उचित समझा जाता।

५ हलारी और फुच के साऊथ पोल पहुँचने का क्या उद्देश्य था !

—हरिराम लुधियाना

उ. जो ऐवरेस्ट पर पहुचने का था अर्थात जो स्थान अजेय समझा जातारहा है उसे जीतने का महत्वाकांक्षा की पूर्ति।

६ फूल के साथ कांटे लगाने का ईश्वर का क्या उदेश्य था !

जोगेन्द्र सिंह फीरोजपुर

उ. ताकि मनुष्य को आभास हो जाता कि सुख दुख उठा कर ही पाया जा सकता है।

७ संसारमें सब से अधिक निःस्वार्थ प्रेम किस का होता है ! —प्रभजोत कौर अमृतसर

उ; माँ का।

[सभी बच्चे प्रश्न भेज सकते हैं]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत के महान कवि—कालिदास

( ले० श्री कल्याणोव, एम० एस० सी (निरुक्तशास्त्र )

भारत के महान् राष्ट्रीय कवि कालिदास की रचनाओं को डेढ़ हजार वर्षों से कोटि कोटि भारतीय जनता का अनुराग प्राप्त है। भारत की विभिन्न भाषाओं में उन के अनुवाद उपलब्ध हैं। लेकिन कालिदास भारतीय कवि एव नाटककार से भी बढ़ कर एक महान विभूति हैं। विगत डेढ हजार वर्षों के दौरान प्राच्य एवं पाश्चात्य देशों की अनगिनत भाषाओं में अनूदित कालिदास की रचनाएं विश्व-साहित्य की निधि का अंग बन गयी हैं !

कालिदास के जीवन के बारे में कोई प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध नहीं है। सम्भवतः कालिदास पाँचवीं शती में; अथवा शती के पूर्वार्द्ध या मध्य में—अर्थात गुप्तवँशीय शासनकाल में थे; एक ऐसे युग में जिस की विशिष्टता ज्ञानालोक एवँ सांस्कृतिक प्रगति थी और जिसे भारतीय साहित्य एवं कला का स्वर्ण युग कहा जाता है ?

जबकि मोटे तौर पर कम से कम कालिदास के युग का निर्धारण करना सम्भव है इस महान कवि के जीवन चरित्र के बारे में तो कुछ भी निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। अधिकांश गाथाओं और कथाओं में कालिदास को एक गरीब परिवार में जन्मे चरवाहे के रूप में चित्रित किया गया है।

पहले वह अत्यन्त मन्दबुध्दि थे लेकिन बाद में शिव की पत्नी दुर्गा (काली) के वरदान से ज्ञान सम्पन्न हो गये। इसी लिए उन का नाम कालिदास (काली-विनाश की देवी का दास) पड़ा। ऐसी किम्वदन्ती भी प्रचलित है कि राजदरबार की ईर्ष्या और षडयन्त्रों के फलस्वरूप गुप्त रूप में उन की हत्या कर दी गई।

कालिदास भारत के राष्ट्रीय कवि हैं। उन के काव्यों की विषय-वस्तु से, तथा विशेषकर शौर्यकार्यों के वर्णन से यह परिलक्षित होता है कि वह भारतीय ज्ञान-विज्ञान में पूर्णतः पारँगत थे। भारत की मनोरम प्रकृति के प्रति उन का प्रेम तथा भारतीय समाज का वर्णन कालिदास की रचनाओं की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशिष्टताएं हैं।

अपने महान देश के प्रति कवि का उद्दाम प्रेम उन की समस्त रचनाओं की मुख्य विशेषता है जिन में वे मालवा के पर्वतों. नदियों वृक्षों एवं पुष्पों के गीत गाते हैं, क्षुब्ध एवम् भव्य प्रकृति का वर्णन करते हैं; भारत के विभिन्न भागों के अनूठे अथवा सुन्दर दृश्यों का चित्रण उन की समस्त मौलिक छटा के साथ करते हैं अथवा सामाजिक जीवन और परम्पराओं के

शेष सफा २१ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

111515

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफा २० से आगे

विविध पहलुओं का वर्णन करते हैं।

महान शब्दशिल्प नैपुण्य, सुन्दर चित्रमयी पद्य रचना, सुरुचिपूर्ण शब्दचयन, आलंकारिक शैली और कवित्वमय रूपक उन के काव्य की विशेषताएं हैं। उन के काव्य को मूल में पढ़ने से ही उस की महती सुषमा की पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकती है जिस का अनुवाद केवल आंशिक रूप में ही सम्भव है।

शकुन्तला का अंगरेजी अनुवाद १७८९ में प्रकाशित हुआ और इस प्रकार यूरोप को पहली बार भारत के प्राचीन नाटक के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

पंडित नेहरू के शब्दों में इस खोज ने यूरोप के बुद्धिजीवियों में कुछ विभ्रांति पैदा कर दी। समस्त यूरोप में शाकुन्तल का उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। 'शकुन्तला द्वारा' अभिभूत हो गेटे ने 'फाउस्ट' की प्रस्तावना लिखी और विशेष प्रकार के छन्दों में उस का अभिनन्दन किया।

कालीदास की रचनाओं में भारतीय वाङ्मय की समस्त मौलिक विशिष्टताएं पाई जाती हैं। उन की रचनाएं उस सूक्ष्म काव्यकला पर आधारित हैं जिस में निपुणता प्राप्त करना भारत के किसी भी सच्चे कवि के लिए आवश्यक है। कालिदास महान कवियों में हैं। कालीदास की रचनाओं की आर्थिक उल्लेखनीय विशिष्टताओं में उन की काव्यमयी उपमा तथा उन की कवित्वमयी भाषा में निहित गम्भीर अर्थ हैं जिस की अनुभूति पाठक अथवा श्रोता को तुरन्त नहीं होती, वरन् शनैः शनैः होती है ठीक उसी तरह जैसे घण्टा ध्वनि बन्द होने के पश्चात उस की प्रतिध्वनि धीरे धीरे विलीन होती जाती है। काव्यमयी भाषा के इस अन्तर्निहित अर्थ, इस की 'प्रतिध्वनि' की भाषा नवीं शती के अद्भुत अलंकारशास्त्री कश्मीरी कवि आनन्दवर्द्धन ने काव्यस्य आत्मा ध्वनिरिती शब्दों में की है।

महान कवि कालीदास की रचनाओं में हमें प्रत्येक स्थल पर भाग्य के आगे आत्मसमर्पण करने से इन्कार करने और साहस की भावनाएं मिलती हैं। गुप्तकाल की विशेषता यह थी कि विदेशी आक्रमणों के फलस्वरूप स्थापित कुशन शासन को अपदस्थ करने के बाद केंद्रीभूत राज्य का सुदृढ़ीकरण हुआ। गुप्त साम्राज्य की बढ़ती हुई शक्ति ने भारतीय की, सामान्यतया देश भक्तिकी भावना पक्की बनाया। कालिदास के काव्य पर इसका प्रभाव पड़ना अनिवार्य था! उस युग का आदर्श बल और साहस था! और कालीदास के नायक बलवान और साहसी हैं। वे देवताओं को भी चुनौती देने के लिए कृतसंकल्प हैं।

चरित्र एवं मनोबल उनकी नायिकाओं की भी विशेषताएँ हैं। वे ऐसी भीरू नहीं हैं जो कठिनाइयों से पहली मुठभेड़ में ही भाग खड़ी होती हैं, वरन् अत्यन्त स्फूर्ति-सम्पन्न हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# मज़ाक करने वाला रीछ !

क्या आप ने कभी चीते से हाथ मिलाया है। आप कहेंगे कि यह प्रश्न ही मूर्खता पूर्ण है किन्तु ऐसे व्यक्ति भी हैं जो बीस पच्चीस वर्षों में शेरों और चीतों के साथ मिलकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जरा एलफरेड कोर्ट की आत्म कथा पढ़िए—

मैं ने अच्छी तरह ताकीद कर दी थी कि श्वेत रीछ के बच्चे एक वर्ष से अधिक आयु के न हों ? वे सब लकड़ी के बक्सों में बन्द थे। जब उन्हें खोला गया तो हर बक्स में से दो दो रीछ निकले।

वह कम से कम दो साल के थे। उन्होंने बाहर निकलते ही हम पर आक्रमण कर दिया किन्तु लोहे के कांटों से हम ने उन्हें काफी छकाया। तीन बक्सों से ६ रीछ निकले सब के साथ हमें ताकत आजमाई करनी पड़ी। हमें उन के साथ खेलते हुए डर नहीं लगा। मजा ही रहा। चौथे बक्स को ६ मजदूरों ने उठा कर सामने रखा।

तब मैं ने अपने सहायक कोबक को सावधान कर दिया क्योंकि बक्स में एक बड़ा सा रीछ जान पड़ता था। कोबक छब्बीस वर्ष का हृष्ट पुष्ट युवक था। वह हंसने लगा हालांकि इस से पूर्व रीछ के बच्चों ने एक व्यक्ति को पंजा मार कर घायल कर दिया।

अपने जीवन के २५ वर्ष मैं ने हिंसक पशुओं में गुजारे हैं इस लिए मैं पशुओं के स्वभाव और गुणों से अच्छी तरह परिचित हूँ। उन से मुझे एक तरह से प्यार भी है। फिर भी ऐसे जानवरोंसे खतरा सदैव बना ही रहता है। मेरे अपने अनुभव ही कुछ ऐसे हैं कि मुझे बड़ी विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। मेरे कई साथी जख्मी हुए और कई तो जीवन से भी हाथ धो बैठे।

कई तरह के पशुओं को एकत्रित कर के उनका तमाशा दिखानेका जब मैंने निश्चयकिया तो मेरे सम्मुख बहुत सी कठिनाइयां उपस्थित हो गईं। (क्रमशः)

# कुँआरा कीर्तन

( श्री शालिहास सिरसा )

पत्नी, गृह मन्त्री बलवान;
अर्धांगिन औ घर की शान
बीवी; वाइफ, उनके नाम
सब को श्रीमती दे भगवान।
परम पिता तेरी संतान
क्वांरे रंडवे सब इन्सान
कर उन का दुख दूर महान;
बीवी उन को दे भगवान
नहीं मांगता गगन-विमान,
नहीं चाहिये रथ गजयान
एक यही इच्छा बलवान
बी०ए० बीवी दे भगवान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सहशिक्षा हानिकारक है !

[ ले० कु० शान्ति प्रभाकर ]

एक बहिन ने 'सह-शिक्षा' के समर्थन में लिखते हुए बड़ी युक्ति यह दी है कि बहनें इस की प्रबल मांग करती हैं। शायद विलायती रहन सहन में पली बहनें इसकी आवश्यकता को अनुभव करती हुई इसकी मांग करती हों परन्तु वस्तुतः यदि हम विश्व के इतिहास पर दृष्टि डालें तो हमें शीघ्र हमारी ऐसी बहनों की भ्रांति का अनुभव हो जाएगा। सहशिक्षा यहां इस लिए अक्रियात्मिक है कि—

(१) लड़के और लड़की के मानसिक विकास की भूख एक जैसे ज्ञान भोजन से तृप्त नहीं हो सकती ! इन दोनों के निर्धारित पाठ्य क्रम में कई प्रकार का भेद रखे बिना दोनों की विभिन्न आवश्यकताएं पूर्ण नहीं हो सकतीं।

(२) दोनोंको एक साथ शिक्षा देते समय एक जैसा कठोर या नरम व्यवहार नहीं किया जा सकता।

(३) सहशिक्षा से लड़कों में कोमलता लज्जा शीलता आदि स्त्री स्वभाव तथा लड़कियों में साहसकता और कठोरता आदि पुरुष स्वभाव की वृद्धि होगी !

(४) आचार का आदर्श गिर जायगा।

आज मेरी कई सह पाठिनी पठिता एवँ शिक्षिता बहनों के उदाहरण मेरे सम्मुख हैं। यदि उनमें स्त्री स्वभाव सुलभ नम्रता और क्षमा शीलता आदि गुण रहते तो निश्चय ही उनका गृहस्थ जीवन पारस्परिक सहयोग और सहानुभूति का सच्चा रूप पा कर स्वर्ग तुल्य होता परन्तु लड़कों के साथ सहशिक्षा प्राप्त कर के अपने आप को भूल बैठी हैं और बात बात में यही कहती हैं कि हम में और उनमें अन्तर ही क्या है ? वे एम० ए० हों तो हम भी एम. ए. हों। निश्चय ही प्राचीन भारतीय संस्कृति में पलने वाली कन्या को स्त्री स्वभाव के अनुसार ही शिक्षा दी जाती थी और इस लिये वह वैज्ञानिक थी। आज जर्मनी में इसी प्रकार चल रहा है। अतः भारत वासियों को रूसी साम्यवादियों का अन्धा अनुकरण नहीं करना चाहिये। मैं तो अपनी पढ़ने लिखनेवाली बहनों से यही निवेदन करूँगी कि वे पढ़ते लिखते समय भारतीय आदर्श को न भूलें। सच्ची गृह देवी होना ही उन की शिक्षा का फल होना चाहिये। अपनी घर की फुलवाड़ी का फूल भी भला कोई तोड़ कर फेंक सकता है, फिर चिन्ता कैसी ?

विदेशी भाषा का ही प्रश्न नहीं है। विदेशी भाषा द्वारा आने वाले विदेशी संस्कारों की परख करनी चाहिये। अपनी भाषा होते हुए भी विदेशी संस्कारों द्वारा उस का अध्ययन करने से ही वे दोष हम में आ सकते हैं इस से सावधान रहने की आवश्यकता है। सहशिक्षा

शेष सफा २७ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आइये ! चन्द्र नगर की सैर करें

[ श्री एन० ए० वार्वारोव ]

हम चन्द्रलोक में हैं। यह बीसवीं सदी के अन्त की बात है।

वायु-प्रवेश वर्जित मोटर हमें राकेट उतरने के स्थान से तेजी के साथ चन्द्रनगर के प्रवेश द्वार की ओर लिये जा रही है !

क्या चन्द्रनगर का नाम सुनकर आप को आश्चर्य हो रहा है ? इस समय यह नगर नहीं है, परन्तु चालीस साल के भीतर लोग चन्द्रलोक में नगर बसायेंगे। तो इस का स्वप्न आज ही क्यों न देखा जाय ?

हमारी गाड़ी शहर में प्रवेश करती है। शहर के ऊपर कांच की बहुत बड़ी छत है। चन्द्रलोक में वायु का अभाव है, इस लिए नगर चन्द्रमा के ए. ज्वालामुखी में बनाया गया है और उस के ऊपर कांच की छत है। उस बहुत बड़े आच्छादन के नीचे कृत्रिम वायु का सँचार है। कांच विशेष प्रकार का है। वह सिर्फ प्रकाश को ही भीतर नहीं आने देता बल्कि सूर्य की गरम किरणों को रोकता भी है यह सचित ताप रेफ्रीजरेटर चलाने के लिए, वायु को अनुकूल करने और वायु को शुद्ध करने के लिए बनी व्यवस्थाओं के लिए तथा बिजली की बैटरियां चार्ज करने के लिए काम में लाया जा सकता है।

इस सब की जरूरत क्या ? उत्तर यह है कि चन्द्रमाँ 'स्वावलम्बी' हो गया है। उदाहरण के लिए चन्द्रमां में धरती से एक रोटी भेजने में उतना ही खर्च होगा जितना सोने की रोटी बनाने में। इस लिए वहीं विविध प्रकार के उत्पादन की व्यवस्था करना अधिक सुविधाजनक होगा। इस के अलावा चूँकि चन्द्रमाँ में गुरुत्वाकर्षण की शक्ति धरती की अपेक्षा कई गुना कम है, इसलिए मामूली मूली अंजीर के पेड़ के आकार की उगती है और प्याज के अखुवे लम्बाई में दस मीटर तक जाते हैं

सौर तथा पारमाणविक बिजली घर चन्द्र लोक में अल्युमिनियम प्राप्त करने, कांच लगाने चान्द्र खनिज पदार्थों से आक्सिजन और नाइट्रोजन तैयार करने तथा चांद्र रात्रि के समय जो प्रायः एक महीना रहती है, नगर को तापयुक्त रखने में सहायक होंगे। राकेटों के लिए कृत्रिम उपायों से ईन्धन तैयार करना सम्भव होगा। अत्यधिक दूरी वाली अन्तर्ग्रहीय यात्राओं के सिलसिले में चन्द्रमा बीच में उतरने का सुविधाजनक स्थल होगा। इस लिए अन्तरिक्ष की यात्रा करने वाले विमान बनाने के लिए यहां एक बड़ा कारखाना तैयार करना होगा। ऐसा ख्याल किया जाता है कि यह कारखाना (शेष सफा २५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सदाचार

[ आचार्य भद्रसेन जी, अजमेर ]

अपने जीवन को आदर्श जीवन बनाने का सदाचार एक सर्वोत्तम साधन है। बिना सदाचार के जीवन का आदर्शमय तथा सुखी बनना अति दुस्तर ही नहीं, प्रत्युत नितांत असम्भव हैं। इसी लिए संसार में जितने भी धर्म प्रवर्तक या धर्माचार्य हुए हैं, उन्होंने सदाचार पर सब से अधिक बल दिया है। महाराज मनु ने तो सदाचार को ही परम धर्म कह कर पुकारा है। वास्तव में यदि देखा जाए तो धर्म ही सदाचार और सदाचार ही धर्म है। जो लोग आचार से भिन्न केवल चन्द रूढ़ियों;रस्मों तथा रिवाजों को ही धर्म का रूप देते हैं, वे भूल करते हैं। अतः वास्तव में वही सच्चा धर्मात्मा है जो आचारवान है।

सदा सत्य का व्यवहार करना, अपनी इन्द्रियों तथा मन को कुमार्ग गामी न बनाना उन पर विजय प्राप्त करना, जुआ, मद्यपान आदि व्यसनों से दूर रहना, किसी से ईर्ष्या, द्वेष न करना; अपने अन्दर नम्रता, सुशीलता; दयालता उदारता आदि गुणों को धारण करना सत्पुरुषों के जीवन-पथ पर चल कर अपने को भी उन के अनुरूप आदर्शवान तथा पूर्ण पुरुष बनना आदि ही सदाचार कहलाता है। अतः जीवन को सदाचारमय बनाने के अभिलाषी को उपर्युक्त गुणों का अपने जीवन में अवश्यमेव समावेश करना चाहिये।

सत्य का व्यवहार ही सदाचार का मुख्य अंश है सदाचार का अर्थ भी सत्य का आचार है। वास्तव में सत्यका आचार करनेवाला मनुष्य संसार में कभी उन्मार्ग-गामी नहीं बनता सत्यवादी तथा सत्याचारी के ऊपर सदा परमात्मा का वरद् हाथ बना रहता है। प्रभु स्वयँ सत्यस्वरूप हैं। पूज्य बापू जी कहा करते थे। सत्य ही परमात्मा और परमात्मा ही सत्य है अतः सदा सत्य का व्यवहार करना; मानो प्रभु की आज्ञा का पालन करना है।

वास्तव में जहां सत्य है वहां न भय, न शंका न फिक्र न चिन्ता है। सत्य का जीवन निर्भयता का जीवन है इस के विपरीत जहां असत्य है, छल और कपट है [शेषसफा २६पर]

---

सफा २४ से आगे

ईसवी सन् २,००० तक अन्तरिक्ष में यात्रा करने वाले प्रथम विमान बना लेगा।

मैं आप को चन्द्र नगर की सड़कों पर साहस और विश्वासपूर्वक ले गया हूं; क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि यदि धरती के लोग हमारे ग्रह (पृथ्वी) को पारमाणविक युद्ध की सर्वनाशक लपटों में न पड़ने देंगे, तो हम चन्द्र-नगर का निर्माण कर सकेंगे। अन्य समस्त शांतिप्रिय लोगों की भांति हम, सोवियत संघ के व्योम-चालन विद्या से सम्बन्धित लोगों की गहरी दिलचस्पी इस में है कि युद्ध का छिड़ना रोका जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहानी

# मां की ममता

—लेखक—टैगोर—

उस युवक को एक युवती से प्रेम था। युवती ने परीक्षा लेनी चाही; कहने लगी यदि तुम मुझ से सच्चा प्रेम करते हो तो इस का प्रमाण दो। जो चीज मैं मांगू वह ला दोगे?

युवक ने दृढ़ता पूर्वक कहा 'दुनिया के किसी कोने में हो, गहरे समुद्र में हो या आसमान में, मैं तुम्हारे कदमों में लाकर रख दूंगा युवती बोली, 'परीक्षा कठिन है, साधारण दिल वाला मनुष्य इसे नहीं कर सकता।'

युवक ने कहा 'दुनिया का कोई भी व्यक्ति इसे ला सकता है तो उसे मैं जरूर ला दूंगा।'

युवती ने गम्भीरता से कहा 'तो अपनी मां की छाती चीर कर इस का दिल निकाल लाओ।'

कुछ क्षण युवक एक टक देखता रहा। प्रेम ने बड़े २ चमत्कार किये हैं आज एक और होने जा रहा है। 'अच्छा' कहा और छुरी हाथ में लेकर युवक घर की ओर चल पड़ा। मां की ममता रोक रही थी प्रेम आगे धकेलता जा रहा था—

युवक दौड़ता चला आ रहा था; अति प्रसन्न था, पांव धरती पर नहीं पड़ते थे; हाथ रक्त रंजित थे देखता जा रहा था कि कहीं [illegible] न लग जाय। कभी सीधे हाथ पर धरे मांस के लूथड़े को देखता, सोचता उसे कितनी खुशी होगी, मुझ से लिपट जायगी, उस के लिये मैंने अपनी प्यारी मां को समाप्त कर दिया, सब से बड़ा पाप किया, उस माँ को जिसने लाड से पाला था। हां, मगर कुछ नहीं अचानक पत्थर से ठोकर लगी और गिर पड़ा मां का कलेजा हाथ से छूट कर गज भर दूर जा पड़ा झट उस में से आवाज आई 'कहीं चोट तो नहीं आई बेटा! उठो धूल झाड़ डालो!

मां की ममता बोल रही थी।

---

सफा २५ से आगे

वहां भय; शंका लज्जा सभी पीछे लगे रहते हैं। हमें एक दुकानदार से कोई वस्तु खरीदते समय हमेशा यही शंका लगी रहती है कि कहीं इस दुकानदार ने ठग तो नहीं लिया, अधिक दाम तो नहीं ले लिए ऐसा क्यों? इस लिये कि हम जानते हैं कि दुकानदार अक्सर झूठ बोलते हैं। इसी प्रकार रिश्वत ले कर न्याय और सत्य का गला घोटने वाले जज से हमें यह भय रहता है कि कहीं यह प्रति-पक्षी से रिश्वत ले कर और मेरे सच्चे मुकदमे को भी खारिज न करदे, ऐसे अत्याचारण परायण पुरुषों से न केवल दूसरों को भय तथा शंका बनी रहती है, प्रत्युत वे स्वयं भी अपने व्यवहार से हमेशा डरते और शंकित रहते हैं। इसी प्रकार जब कभी भी हम अपने जीवन में असत्य का व्यवहार कर लें तो उस का किसी को पता लग जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
111515

महिलाओं की वीरता की ऐतिहासिक घटना

# वीर क्षत्राणी

[ लेखक— कुमारी कमला चोपड़ा बिलासपुर ]

रणभेरी बज उठी. लोहे से लोहा टकराने लगा, झूंझनूं के विशाल मैदान में मानो विनाश की काली घटा; घिर आई भीषण जनठेल; बगमेल; और गजपेल आरम्भ हुआ। हाथियों की चिंघाड़ मानों नीरव मुस्कराहट थी। भुशण्डी दनादन गोलियाँ छोड़ रही थी और शतघ्नी के गोले छूटने से उल्कापात सा जान पड़ता था। भयंकर मारधाड़ से कान फटे पड़ते थे। पलक मारते ही सैंकड़ों रणप्रिय वीर युध्दाघातों से अपना कर्तव्य पालन कर समर शय्या पर करवट लेते दिखाई देते थे। रणांगन रुधिर-मय हो गया था मानो होली खेली गई हो। निदान भगवान-भुवन भास्कर के विमुख हो जाने से दिवसावसान के समय युद्ध बन्द हुआ। यवन हार गये, राजपूत विजय दुन्दुभि बजाते, प्रसन्न वदन लौटे।

समरांगन एक अद्भुतालय जान पड़ता था। कौए, गिद्ध निर्जीव लाशों का मांस नोच नोच अपनी वर्षों से अतृप्त तृष्णा मिटा रहे थे। रुधिर-निर्झरणियां प्रवाहित हो रही थीं वसुधा लाशाच्छादित हो गई थी। भयानक दुर्गन्धि उठ रही थी। अनेकों माताओं के लाडले पुत्र; बच्चों के पूज्य पिता बहिनों के भाई और स्त्रियों के प्राणधन आज उन से बिछुड़ गये थे। सब मुंडित मस्तक या धड़ रहित थे। देखते ही युगल नयन झीलसे अश्रु सरिताएँ निकल पड़ती थीं, रोम खड़े हो जाते थे, मन संकुचित हो उठता था। पर—

क्या इस संसार को कंपायमान कर देने वाले; इस भीवत्स दृश्य को देख कोई सुखी हो सकता है? क्या कोई इससे अपना मनोरँजन कर सकता है?

हां! आज वह बहुत प्रसन्न थी; आज उस ने भरपेट भोजन किया था। उसे सब लाशें उस के चरणारविंदों पर नतमस्तक दिखाई देती थीं। गिध्द और चीलों का कोलाहल उसे मंगल सूचक वाद्य प्रतीत होता था, नालिकाएं उस के स्वागतार्थ आ र

(शेष सफा ३० पर

---

(सफा २६ से आगे)

के सम्बन्ध में मानचैस्टर के स्कूल टीचर मुर्सेला लिखते हैं 'कुछ लोगों में एक निपुंसक जाति बना देने की प्रवृत्ति दृष्टि गोचर होती है। वह दिन प्रत्येक के लिये बुरा होगा जब कि पुरुष पुरुषत्व और स्त्रियां स्त्रीत्व से काम लेना छोड़ देंगी। उनके शारीरिक और प्रवृत्ति विषयक मौलिक भेदों की उपेक्षा करना अपनी आप अवहेलना करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# तीन कहानियां

## बन्धन

'अम्मी'

'क्या है बिटिया ?' अम्मा ने सिसकते हुए पूछा।

'तुम रो रही हो। क्यों रोती हो अम्मी मुझे सच बताओ।

नहीं तो बिटिया; रोना किस बात का; मैं किस लिए रोती!

नहीं अम्मां! तुम झूठ बोलती हो, तुम रो रही हो। तुम मुझ से छिपाना चाहती हो यह क्या? तुम्हारे हाथों में हथकड़ियां हैं यह कैसा बन्धन है मां! और यह पैरों में क्या है! ओह! तो तुम कैदी हो, परतन्त्र हो, तभी रोतीं हो।

ऐसा मत कह बेटी, मुझे परतन्त्र शब्द से ही भय लगता है, दिल पत्ते की भांति थिरकने लगता है। मैं भी कैसी अभागिन हूं इतने बेटे बेटियां होते हुए भी आज बन्धन में बन्ध रही हूं। प्रसन्नता का बन्धन नहीं, प्रेम का बन्धन नहीं, परतन्त्रता का बन्धन है बिटिया इन लोहे की कड़ियों ने मुझे जकड़ रखा है। मेरा मन जलने लगता है इन को देख २कर।

ओह माँ! मत रोओ मैं इस परतन्त्रता के बन्धर से तुम्हें मुक्त कराऊँगी। तुम घबरारओ मत मां!

—प्रेमलता ग्रोवर, बी०ए० मीडा

## मुसाफिर!

मेरा सफर बहुत लम्बा है और मेरा रास्ता दूर दराज। मैं रोशनी की पहली किरण के रथ पर सवार हो कर आया और बहुत से वीरानों का सफर करता हुआ गुजरा। मेरे पैरोंके चिन्ह कई सितारों पर बाकी हैं।

अपने आप तक पहुंचने के लिए तुझे बहुत लम्बा सफर करना पड़ेगा। एक सीधा सादा नगमा निकालने केलिये बहुत सो पेचोदा रागिनियां सीखनी पड़ेंगी।

मुसाफिर अपने घर पहुंचने की कोशिश में हर बेगाने के दरवाजे पर दस्तक देता फिरता है और मनुष्य को अपने आन्तरिक तीर्थ पर पहुंचने के लिये तमाम बेरूनी दुनियाओं में मारे मारे फिरना पड़ेगा।

मेरी आंखें दूर व नजदीक के तमाम दृश्य देख चुकीं, तब जा कर मैंने अपनी आंखें बन्द कीं और मैं कह उठा—'यहां मैं ने तुझे पा लिया। —टैगोर

## मैं और तू

मैंने समझा—मैं एक तुच्छ बिन्दु हूँ नष्ट होजाने के लिये, लेकिन तूने कहा तू तो समुद्र है, कहां नष्ट होगा! मैंने समझा मैं एक फूल हूँ—मुरझाने के समीप, लेकिन तूने कहा कि तू गुलजार है जिस में खिजां नहीं, फिर तू क्यों घबराता है। मै ने समझा मैं हूँ एक फानी इन्सान जिस को मौत का एक झोंका नेस्त व

शेष सफा २९ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक विचार

# पैसे की पूजा

देहली के बिड़ला मन्दिर में बड़ी भीड़ थी। दूर दूर से श्रद्धालु आये थे। मैंने सुना कि आज जन्म अष्टमी पूजा का विशेष समारोह है। मैं भी चला गया। एक ग्रामीण से जो बहुत दूर से आया प्रतीत होता था, मैं ने पूछा क्यों भाई ! कहाँ से आये हो।

वह बोला—होशियारपुर जिले में एक गांव है माहलपुर, वहाँ से।

मैं ने कहा—इतनी दूरसे इतना धन और समय व्यय कर के आने की क्या आवश्यकता थी ?'

उस ने मेरे चेहरे पर आश्चर्य से दृष्टिपात करते हुए कहा—भला यह भी कोई पूछने की बात है ! मन्दिर में लोग क्यों आते हैं !

मैं ने कहा—पूजा करने।

मैं भी तो इसी लिये आया हूँ—पूजा करने।

किस की पूजा करने ?

आप आर्य समाजी मालूम होते हैं।

शायद आप का विचार ठीक हो। मैं जानना चाहता हूँ कि आप किस की पूजा करने आये हैं।

उस ने शायद यह सोच कर कि उस का तर्क मुझे भी मूर्ति पूजक बना देगा, उत्तरदिया शिव की पूजा करने।

शिव की मूर्ति की।

मूर्ति की नहीं; मूर्ति में व्यापक परमात्मा जिस का नाम शिव भी है—उस की।

मैं ने कहा—मैं इस बात को छोड़ता हूं कि वेद में इस प्रकार की पूजा का विधान है या नहीं और कि जो मूर्ति मन्दिरमें स्थापित है वह परमात्मा के नाम शिव की मूर्ति भी है या नहीं, मैं यह पूछता हूँ कि क्या माहलपुर में कोई मन्दिर है या नहीं।

है तो।

फिर वहां ही पूजा क्यों न कर ली, क्या वहाँ की मूर्ति में परमात्मा नहीं।

परमात्मा तो सब जगह है। यह मन्दिर देखे इस की निराली शान है अनायास दिल इधर खिंच जाता है। हमारे गांव में छोटा सा मन्दिर है इसी लिये तो।

बड़े छोटे मन्दिर में परमात्मा तो बड़ा छोटा नहीं होता। फिर मूर्ति ही की पूजा क्यों करो। यदि मन्दिर की शान ही तुम्हें शहर के एक अशान्त वातावरण में खींच लाई

शेष सफा ३१

---

नाबूद कर देगा, लेकिन तूने कहा 'तू तो दायम कायम है; मौत तेरा क्या बिगाड़ेगी।' मैंने कहा कि मैं क्या हूं मुझे कुछ नहीं सूझता तूने हंस कर उत्तर दिया तू मुजस्सिमे नूर है तुझमें तारीकी कहाँ ? जानबूझ कर आंखे बन्द कर के पड़ा है; आंखें खोल और देख इस दुनिया मे तेरे सिवा और कोई चीज नहीं। मेरे भ्रम दूर हो गये और मैं सन्तुष्ट हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफ़ा २७ से आगे

लुढ़कते हुए सिर उसे गेंद दिखते थे। आज उसे संसार में अपना कुछ भी कर्तव्य न सूझ पड़ता था। केवल सती होना बाकी था। वह प्रसन्न वदनी हंस रही थी।

जिस समय उसके पूज्य पिता, उस के प्रिय हृदयधन और शुकपिक की आवाज को मात करने वाला उस का नन्हा सा पंचवर्षीय पुत्र, यवन समृाट की आज्ञा से उसके सामने निर्दयता पूर्वक वध किये गये थे, उस ने शपथ खाई थी–जब तक वह उन निरपराधों का बदला शत्रु से न लेगी, कभी भरपेट भोजन न करेगी और न हंसेगी। अब उस का प्रण पूरा हुआ यवन हार गये थे! वह सती होने के लिए सजने लगी। आज वह सती होगी और सच्ची क्षत्राणी महारानी 'संग्राम-कुंवर' कहलायेगी।

पर विधाता ने उस के भाग्य में सती होना नहीं लिखा था। एक गुप्तचर ने आ कर उसे सूचना दी—"महारानी! यवन समृाट अभी जीवित है। मृत्यु के भय से वह रणक्षेत्र से भाग गया था। उस ने अवन्ती नगरी से फौज इकट्ठी की है।"

म—'जीवित है?'

गु–'जी हां और प्रभात को वह धावा करने वाला हैं।

म—अच्छा, अब रणांगन ही मेरी चिता होगी; शस्त्र ही मेरे भूषण होंगे। जाओ सैनिकोंको सचेत करदो। जितनी जल्दी होसके हमें चलना चाहिये।

महारानी अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हो, ईश वन्दना कर, बलिष्ठ अरबी तुंग पर सवार हो अपना कार्य करने चलीं। महारानी के सेनापतित्व में रणपीड़ित राजपूतों ने बड़े उमंग से आक्रमण किया। यवनों के पैर उखड़ने लगे, वे एकदम रक्तरंजित हो गये थे। राजपूतों की स्थिति वैसी ही थी जैसी दस बीस पत्तियों में एक फूक। पर वे कदम बढ़ाते ही चले जाते थे

आज वे शपथ खाकर आए थे कि मारेंगे या मरेंगे फिर एक कोमलांगी युवती रमणी को उत्साह पूर्वक लड़ते और शत्रुओं के दांत खट्टे करते देख उन का दिल भी जोश से भर जाता था। वे अपनी चपला सम चमचमाती शोणित असि से इतनी शीघ्रता पूर्वक अरिनाश कर रहे थे कि पता नहीं लगता था कि राजपूत स्फूर्तिमय हैं या स्फूर्ति राजपूतमय हैं।

महारानी के बहुत से वीर काम आये, पर उन्होंने एक बार रिपुदल के मुख से तोबा २ कहलवा ही दिया। इधर केवल डेढ़ सौ सवार थे जिन की सेना नेत्री श्री महारानी संग्राम कुँवर थीं, जिन की रणचातुरी देख राजपूत उत्साह से लड़ते थे। उधर दो हजार यवनों का सेनापति था जो भयभीत हो रणक्षेत्र से भागने की तैयारी कररहा था। निदान महारानी

शेष सफा ३१ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# शतरंज खेलने वाली मशीन

अमेरिका में शतरंज खेलने वाली एक नई मशीन तैयार हुई है, जो खिलाड़ियों को हरा सकती है। लौस एलामौस (न्यू मेक्सिको) स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की प्रयोग शाला के भौतिक शास्त्रियों ने इस मशीन को इस्तेमाल किया है। यह मशीन हिसाब किताब जोड़ने वाली वह मशीन है, जिसे विद्युदणु मस्तिष्क भी कहते हैं।

जब शतरंज का खिलाड़ी अपनी पहली चाल चलता है, तब मशीन को चलाने वाला इस चाल को छेद्द ग फीते पर रिकार्ड कर के मशीन में डाल देत. है। तब विद्युदणु स्मृति कोषों को उक्त चाल सम्बन्धी सब सुचना मिल जाती है। मशीन उस चाल के जवाब में अपनी चाल का संकेत टैलिटाइप मशीन द्वारा देती है।

इस मशीन से वैज्ञानिकों को अपने कुछ खास प्रश्नों को हल करने में काफी मदद मिले गी। इस से इस बात की भी परीक्षा हो जाए- गी कि तर्क वितर्क से युक्त प्रश्नों को इस प्रकार की मशीनें किसी सीमा तक हल कर सकें गी।

---

सफा २९ से आगे

है तो क्यों नहीं दिल खींचने वाली परमात्मा की निराली शान का जलवा देखते; पास ही तुम्हारे पहाड़ हैं चश्मे हैं, फूल हैं। क्या वहां तुम्हारा मन नहीं लगता? कहने को यह शिव या परमात्मा का मन्दिर है लेकिन कौन इसे कहता है भगवान का मन्दिर? सभी बिड़ला का मन्दिर कहते हैं। तुम शिव या परमात्मा की पूजा करने नहीं आये, पैसे की पूजा करने आये हो। हितैषी

सफा ३० से आगे

ने मौका पाया एक ही वार से उन्होंने महावत को मार डाला और भरपूर ताकत से एक वार यवन सम्राट पर किया। तुरन्त वे शत्रुओं के शस्त्र प्रहार से उन के शिर का बायां भाग साफ उड़ गया था एक आंख निकल आई थी एक टांग कट गई थी।

पर धन्य महारानी! वे युक्ति द्वारा घोड़े को सरपट दौड़ाती हुई बाहर निकल आईं फिर धरती पर गिर पड़ीं।

क्षण पश्चात—

वह वीरता और स्वतन्त्रता की आदर्श उपासिका महारानी संग्राम-कुंवर अपने बंधुओं के खून का प्रतिकार ले; सुखपूर्वक नेत्र मून्दे मां वसुन्धरा की गोद में लेट गईं।

क्या हम सब बहिनें इस छोटे से दृष्टाँत से कुछ शिक्ष ग्रहण कर सकें गी?

—रेलवे ने गत वर्ष लोगों के खोये पार्सलों के क्लेमों के भुगतान पर ३ करोड़ रुपया व्यय किया।

—डा० फुच नामक एक अंग्रेज भी साऊथ पोल तक जा पहुंचा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# संसार नेक आदमियों को सहन नहीं करता !

## चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशस की जीवनी से शिक्षा

कन्फ्यूशस कई देशों में गए और चाहा कि किसी शासक की सहायता से सत्ता संभालें मगर उन्हें अपमान मजाक और गुमराही का सामना करना पड़ा । दो बार उन्हें प .ड़ा भी गया । एक बार उन्होंने अपने शिष्यों के साथ ७ दिन के लिए अनशन भी रखा था । एक के बाद दूसरा देश उन्हें 'पागल-पैगम्बर' की भांति छोड़ना पड़ा । 'विशी' में अपमानित हो कर और मजाक का मजमून बन कर मलिका की गाड़ी के पीछे गली कूचों में भागे फिरे । अन्त में उन्हों ने स्वीकार किया कि जनता सीरत को नहीं सूरतको पसन्द करती है । बहुत से व्यर्थ भ्रमण के पश्चात वह अपने गांव 'लू' में आगये । वहां वह पाठशाला के सचालन में लग गये । वह जानते थे कि उन के शिष्य अप्रसन्न हैं इसलिए उन्होंने अपने शिष्य तसेलू को बुलाया और पूछा—

एक पुरानी कविता में कहा गया है—न ही शेर और फकीर हवा में आवारा फिरते हैं । क्या तुम समझते हो कि मेरा सिद्धांत अशुद्ध है- मैं क्यों इस परिणाम पर पहुंचा हूं ?

शिष्य बोला.शायद हमारा चरित्र इतना ऊंचा नहीं कि हम जनता के विश्वास पात्र बन सकें ।

कन्फ्यूशस बोले—ओह ! यदि बड़े आदमी सदैव जनताके विश्वास पात्र बन सकते तो 'पुई' और 'शिचि' का अन्त इसप्रकार क्यों होता ? यदि बुद्धिमान ही जाति के विश्वास पात्र बन सकते तो राज कुमार पीरु का क्यों वध किया जाता ? इस के बाद तसेलो कमरे से बाहर चला गया और तसकिंग आया । उस से भी वही प्रश्न किया गया । उसने उत्तर दिया स्वामी ! आप का सिद्धांत इतना ऊंचा है कि दुनिया सहन नहीं कर सकती । आप इतनी ऊंचाई से जरा नीचे क्यों नहीं आ जाते !

कन्फ्यूशस ने कहा—एक अच्छा किसान अनाज बोता है मगर वह फसल काटने की गारंटी नहीं कर सकता । एक भला आदमी ज्ञान का प्रचार करता है मगर इस बात की परवाह नहीं करता कि इसे सहन किया जाता है या नहीं—तुम महत्वाकांक्षा नहीं रखते ।

इस के बाद तसकिंग चला गया । तब मनहूति आया । उस से भी वही प्रश्न किया गया । उसने कहा—स्वामी ! आपका सिद्धाँत इतना ऊँचा है कि लोग इसे सहन नहीं कर सकते । फिर भी आप को इस का प्रचार करना चाहिए, परवाह नहीं यदि लोग इसे सहन

शेष सफा ३३ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मत बोओ

यदि फूल नहीं बो सकते तो,
काँटे कम से कम मत बोओ !
है अगम चेतना की घाटी;
कमजोर बड़ा मानव का मन
ममता की शीतल छाया में,
होता कटुता का स्वयं शमन
बाधाएं गल कर रह जातीं;
खुल खुल जाते हैं मुँदे नयन
होकर निर्मलता में प्रमत्त
बहाता प्राणों का क्षुब्ध पवन
संकट में यदि मुस्का न सको;
भय से कातर हो मत रोओ

---

सफा ३२ से आगे

नहीं करते। यह एक भले आदमी का प्रमाण है कि वह जनता द्वारा सहन नहीं किया जाता यदि हम दूसरे को ज्ञान न दें तो यह हमारे लिये बदनामी की बात होगी। यदि हम ज्ञान देते हैं और जनता परवाह नहीं करती तो यह उन की बदनामी की बात है जो शासन कर रहे हैं ! क्या बुराई है यदि दुनिया हमें सहन नहीं करती— यह एक भद्र पुरुष का चिन्ह है कि दुनिया उसे सहन नहीं करती।

कन्फ्यूशस मुस्कराये और बोले—

तुम ने ठीक समझा। यदि तुम एक अमीर आदमी होते तो मैं तुम्हारा बटलर (नौकर) होता !

यदि फूल नहीं बो सकते तो
काटे कम से कम मत बोओ
हर सपने पर विश्वास करो,
लो लगा चाँदनी का चन्दन
मत याद करो मत सोचो
ज्वाला में कैसा बीता जीवन
इस दुनिया की है रीत यही,
सहता है तन, बहता है मन
दुःख की अभिमानी मदिरा में
जो जाग सके वह है चेतन
तुम इस में जाग नहीं सकते,
तो सेज बिछा कर मत सोओ,
यदि फूल नहीं बो सकते तो
कांटे कम से कम मत बोओ।
पग पग पर शोर मचाने से
मन में सँकल्प नहीं जमता
अनसुना अचीन्हा करने से
संकट का वेग नहीं कमता
सँशय के किसी कुहासे में
विश्वास नहीं पल भर रमता
बादल के घेरे में भी तो
जयघोष न मारुत का थमता
यदि विश्वासों पर बढ़ न सको
सांसों के मुरदे मत ढोओ,
यदि फूल नहीं बो सकते तो
कांटे कम से कम मत बोओ।

श्रीरामेश्वर शुक्ल अँचल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हम चले परीक्षा देने को !

(महावीर प्रसाद अग्रवाल)

हम चले परीक्षा देने को ।
मन में ले कर कुछ आशाएं,
उर में ले कर अभिलाषाएं
तन में कुछ नव उत्साह लिये;
परीक्षा से लोहा लेने को
कुछ अब तक जो हम कर पाये,
कुछ अब तक जो हम धर पाये;
कुछ याद रहा कुछ भूल रहे;
कुछ अनुभव झूले झूल रहे,
आशा पर नैया खेने को।
कर पायें पार या करें नहीं,
पर पीछे पग भी धरें नहीं,
अब बढ़े, बढ़ें अब हटें नहो,—
चल पड़ें, चलें; अब हटें, नहीं,
हाँ जाँच हमें कर लेने दो ।
लख लें हम में कितना पानी,
कितना पानी जितना पानी,
जब स्वर्ण कसौटी आयेगा;
तब स्वर्ण दमक दिखलायेगा,
हम हटें न आगे बढ़ने दो ।
यह भार नहीं खिलवाड़ अरे,
अब कहो व्यर्थ ही कौन डरे।
हम तो अब घर से निकल पड़े;
परीक्षा के घर पर आज अड़े;
परीक्षा जीवन का अनुभव हो !
हम चले परीक्षा देने को।

# यह विचित्र विश्व !

### ११ मास की कटड़ी दूध देती है

तहसील मोगा के दुनेकी गांव में एक हरिजन की भैंस की ११ मासकी कटड़ी ने दूध देना शुरू कर दिया है। पशुओं के डाक्टर ने परीक्षण किया। दूध ठीक है किन्तु प्रकृति की यह लीला किसी की समझ में नहीं आ रही।

### ८३ वर्षीय बुढ़िया के जुड़वां बच्चे

मैडरिड (स्पेन)का समाचार है कि बिृगिडा गार्शिया सुआरिया नामक क ८३ वर्षीया बुढ़िया ने जिस के पति की आयु ९२ वर्ष है लिओन राज्य के कोरेसिला गांव में जुड़वां बच्चों को जन्म दिया है। उनकी सब से छोटी सन्तान की आयु ४६ वर्ष है।

### १४ वर्ष से सो रहा है

पाल सोवा नामक एक १९ वर्षीय लड़का २० जनवरी १९४४ से सो रहा है। उस का कद ५ फुट ८ इंच हो गया है। यह अमेरिकन बालक शिकागो के निकट रहता है। उस का पालन दूध पर किया जा रहा है उस के माता पिता को एक ७ मास के शिशु जैसी उस की शश्रुषा करनी पड़ रही है

### असली सोना बनने लगेगा

सोना खानों से निकलता है किन्तु रूसी वैज्ञानिकों का विश्वास है कि दूसरे धातों की तरह सोना भी कैमिकल्ज द्वारा बनाना संभव है वे इस सम्बन्ध में अन्वेषण कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## स्वास्थ्य सुधार

### मधु के लाभ

आग से जली हुई जगह पर मधु लगाते रहें लाभ होगा। कुलहाड़ी या चाकू के घाव को खूब साफ कर के शहद का फाया लगा दें और पट्टी बांध दें, घाव मिल जाएगा। कई बार चोट लग जाने से त्वचा के नीचे खून जम जाता है और वहाँ नीला पन पैदा हो जाता है। शुद्ध शहद थोड़ा सा लेकर उस में जरा सी निमक मिला कर उस स्थान पर शनैः २ लेप करें। नील दूर हो जाएगा। जो घाव पुराना होने के कारण नासूर बन गया हो उस के लिए निमक सेंधा और शहद मिला कर उस में बत्ती गीली कर के रखें। भिड़ ने जहां काटा हो वहां तत्काल शहद लगा दिया जाए थोड़ी देर मलते रहने से ठण्डक पड़ जाती है। खालिस शहद का निरन्तर प्रयोग करने से मुटापा दूर हो जाता है। दो तोला शहद गर्म पानी में मिला कर पिएं—शनैः २ मात्रा बढ़ाते जायं। दो बड़े चम्मच शहद में मिला कर दो तीन दिन में पीने से नया खून पैदा होता है।

## गृह विज्ञान

—इमली व पीपल की छाल को जला कर भस्म को गौ के घृत में मिला कर जले हुए स्थान पर लगाने से आराम होगा।

— पत्थर के कोयले को पीस कर सरसों के तेल में मिला कर जले स्थान पर चुपड़ें लाभ होगा

—यदि जले हुए स्थानको तत्काल आग से सेंक दें तो फफोले नहीं पड़ते।

—चाय के दाग सुहागे के पानी से साफ हो जाते हैं।

## बूझिए तो ?

१. हरी भरी भूमि हरे हरे कांटे बताओ नहीं तो खाओ चांटे।

२. मां ऐसा फुटबाल मंगा दो जिस में हो यह सारा! शरबत मिश्री, चवेना और बकरी का चारा।

३. वह जगह बताओ जहां सड़कें हों पर चलने वाला कोई न हो, पहाड़ हों मगर उन पर बर्फ न गिरती हो; नदियां हों पर बहती न हों और न ही वहां आबादी हो।

४. जाड़ों में आता ही नहीं, बस गर्मी में ही आता है। जब वायु चलती है तो अन्तर्धान हो जाता है।

५. लम्बी चोंच पांव भी लम्बा, यह सफेद सफेद पक्षी बेढंगा। खड़ा रहे जो ताल किनारे पानी को टक टक निहारे।

६. हम तुनक मुनक तुम इतने बड़े
हम ने खेल किया तुम रो पड़े

६. एक किले में चोर भरे हैं; रंग गोरा मुंह काला। ज्यों मुँह तुम उनका घिसो किले से होता तुरत उजाला।

८. कभी हमारी दमकती थी कभी हमारा भी था राज, पानी सब को आज पिलाते; मुँह नीचा है आती लाज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंजाब केसरी ला० लाजपतराय

(श्री विजया मेहरा जालन्धर)

पंजाब केसरी ला० लाजपतराय; जिनके चरणों में आज हम अपनी श्रद्धांजलि के पुष्प भेंट कर रहे हैं उन महान व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने अपने जमाने पर हमेशा के लिए मोहर लगा दी है। जब हम उन को स्मरण करते हैं और उन का नाम लेते हैं, तो गौरव के कारण हमारा सिर ऊंचा होता है। आप पूछेंगे कि क्यों ? मैं आप से निवेदन करूंगा कि ला० लाजपत एक बड़े व्यक्ति ही न थे अपितु एक संस्था थे। उन के जीवन को जिस भी दृष्टिकोण से देखें उन की महानता, उन की योग्यता, उन की देश भक्ति और उन के साहस को देख कर हम दंग रह जाते हैं।

उन्होंने अपनी जीवन यात्रा के आरम्भ में आर्य समाज की सेवा की। जिस लग्न, प्रेम जिस श्रध्दा और जिस भाव से उन्हों ने आर्य समाज की सेवा की; कौन सा ऐसा आदमी है जो उन को भूल सकता है ? डी० ए० वी० कालिज के वार्षिक उत्सव पर आपकी अपील को सुन कर धन की वर्षा शुरू हो जाती थी सोशल रिफार्मर होना उन के जीवन का एक पहलू है।

लाला जी एक प्रसिध्द लेखक थे और उनके लेखों के अन्दर वह शक्ति विद्यमान थी जो प्रत्येक व्यक्ति पर प्रभाव डाले बगैर नहीं रह सकती। यही नहीं, लाला जी बहुत उच्च कोटि के वक्ता भी थे और उन के भाषण के अन्दर वह प्रभाव तथा जादू भरा हुआ था कि वे मुर्दों की रूहों के अन्दर जान डाल दिया करते थे। उन की आवाज में शेर की गरज थी, शेर का साहस और इन्सानी दिल की तड़प थी ; जो मनुष्यों के दिलों के अन्दर रूह फूँक दिया करती थी।

इस से भी बढ़ कर लाला जी असली शब्दों में इन्सान थे और इन्सान का दिल रखते थे। एक कवि ने ठीक कहा है—

'फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इस में लगती है मेहनत ज्यादा।'

वह भारतवासियों के दुःख और पीड़ा को देख कर तड़पने लग जाते थे। अगर काँगड़ा में भूचाल आता है तो आप वहां दुखिया नर-नारियों की सेवा कर रहे हैं।

अगर बीकानेर में अक़ाल पड़ता है, तो वहां सहायता के लिए सब से पहले पहुंचते हैं, अगर हरिजनों को ऊपर उठाने का कार्य है तो वही सब से आगे हैं और अगर अनाथ तड़प रहे हैं तो आप उन की चिल्लाहट को

शेष सफा ३७ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफा ३६ से आगे

सुन कर अनाथालय बना रहे हैं।

यही नहीं जब आप ने भारत माता को दासता की आहनी जंजीरों में जकड़े हुए पाया तो आप की आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली और आप ने भारत माता के सामने खड़े हो कर यह प्रण लिया !

पसे मुर्दन भी होगा हश्र में यह ही बयां मेरा ।
मैं इस भारत की मिट्टी हूँ यही कौनोमकां मेरा
मैं तेरा हूँ सदा तेरा रहूँगा बावफा खादिम ।
तू ही जन्नत निशां मेरा तूही नामोनिशां मेरा
अगर यह प्राण तेरे वास्ते ऐ देश न जाएं ।
तो इस हस्ती के तख्ते से मिटे नामोनिशां मेरा

लाला जी ने भारत माता के सामने खड़े हो कर जो प्रतिज्ञा की थी उस को पूरा करने में उन्होंने कसर बाकी न उठा रखी ! वह मांडले के जेलखाने में गए। बड़ी देर जलावतन रहे; एक वर्ष के लिए नहीं, दो वर्ष के लिए नहीं, बल्कि दस वर्ष तक। आप ने स्वतन्त्रता के आंदोलन में कई बार जेल यात्रा की। साईमन कमीशन का स्वागत करते हुए अंग्रेज सार्जेंट के हाथों अपनी छाती पर हंटर खाए। अंगरेज तो उनको और बागी कहा करते थे; परन्तु भारतवासियों ने उनकी योग्यता उन की देशभक्ति और उन की तपस्या के काम की सराहना की और उनको कलकत्ता में आल इण्डिया कांग्रेस के स्पैशल अधिवेशनका प्रधान बनाया। किसी कवि ने ठीक कहा है—

# क्या आप जानते हैं?

१. जर्मन की वानडिक नाय... महिला ८ फुट ४ इँच लम्बी है; उस का तोल ३५ मन २५ सेर है।

२. नालन्दा, तक्षशिला विक्रमशिला तथा वलभी भारत के प्राचीन शिक्षा केन्द्र थे !

३ भारत का पहिला समाचार पत्र बँगाल गजट था।

४. भारत में ८९७३ पत्र पत्रिकाएँ छपती हैं।

५. जालन्धर का सब से पुराना स्कूल मिशन स्कूल है !

६ सांप के कान नहीं होते वह आंखों से सुनता है।

७ रामेश्वर मन्दिर का बरामदा ४००० फुट लम्बा है।

भारत का सब से लम्बा प्लेटफार्म सोनपुर (बिहार प्रांत में) है।

९ समुद्री कीड़ा बुरा वक्त आने पर अपने सब अंग अलग कर देता है और फिर नये पैदा कर लेता है।

१० संसार में ३० लाख स्त्रियाँ ऐसी हैं जिन्होंने जीवन भर कुमारी रहने का निश्चय किया हुआ है।

---

जो पिस जाता है सुरमे की तरह राहे सदाकत में
मुयस्सर चश्मे आलम में उसे एजाज होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हंसते हंसते जीना !

१) परीक्षा देकर सातवीं कक्षा के दो विद्यार्थी हाल से बाहिर आए तो एक साथी ने पूछा—प्रश्न पत्र में जो लिखा है कि वी. पी. द्वारा पुस्तकें मंगवाने के लिए पत्र लिखो वी. पी. किसे कहते हैं ? साथी ने जरा शेखी से उत्तर दिया—अरे बुध्दू ! यह फर्म का नाम है।

२) मोहन ने मित्र से पूछा—परीक्षा में फेल हो गया हूं, पिता जी को तार में क्या लिखूं ?

मित्र ने झट से उत्तर दिया—लिख दो परीक्षा समाप्त।

३) एक कंजूस (दूसरे से) हाय मैं लुट गया

दूसरा—क्यों क्या बात है !

पहला—मैंने लड़के से कहा था कि दो-दो सीढ़ियाँ इकट्ठी चढ़ा कर ताकि बूट कम घिसें पर वह कमबख्त तीन २ चढ़ने लगा और पतलून फाड़ दी।

४) जज (अपराधी से) तुम्हारा कोई गवाह है ?

अपराधी—हजूर; मैं गवाहोंके सामने चोरी नहीं करता।

५) यार; विज्ञान ने बड़ा तँग किया है, कृत्रिम चांद बना दिया है !

तब क्या हुआ !

यदि सूर्य, पृथ्वी भी कृत्रिम बन गए तो दुगना भूगोल याद करना पड़ेगा।

# अनमोल वचन

शराबी ऐसा आदमी है जो अपनी इच्छा के लिए अपने परिवार के विनाश को स्वयं आमंत्रित करता है।

जब तक भोजन की तदबीर से काम चल जाए दवा का नाम न लो।

जिस किसी में शिष्टाचार नहीं उस में सब दोष हैं।

मनुष्य अपने काम से पहचाना जाता है न कि बातों से।

---

६) तुम्हारा लड़का कब आएगा ?

अप्रैल में आने वाला है।

अप्रैल कोई रेल से भी तेज सवारी है क्या ?

७) सुना है तेनसिंह एवरेस्ट पर चढ़ गया था।

तो क्या हुआ ? मेरे पास भी इतनी ऊंची सीढ़ी हो तो मैं भी चढ़ सकता हूं।

८) मालिक (नौकर से] रामू एक कप चाय तो रैस्टारेंट से ले आ।

रामू—जी पैसे !

मालिक—अरे पैसों से तो हर कोई ला सकता है। मजा तब है जो बिना पैसेके लाए।

रामू-[खाली कप मेज पर ला कर रखते हुए]लीजिये।

मालिक—अरे यह तो खाली है।

रामू—जी भरा हुआ तो सब पीते हैं मजा तो तब है जब खाली पिया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाईं ओर से : प्रेजीडेंट आइजन हावर अमेरिका के वाइस प्रेजीडेंट निक्सनके साथ किसी महत्वपूर्ण विषय पर परामर्श करते हुये।

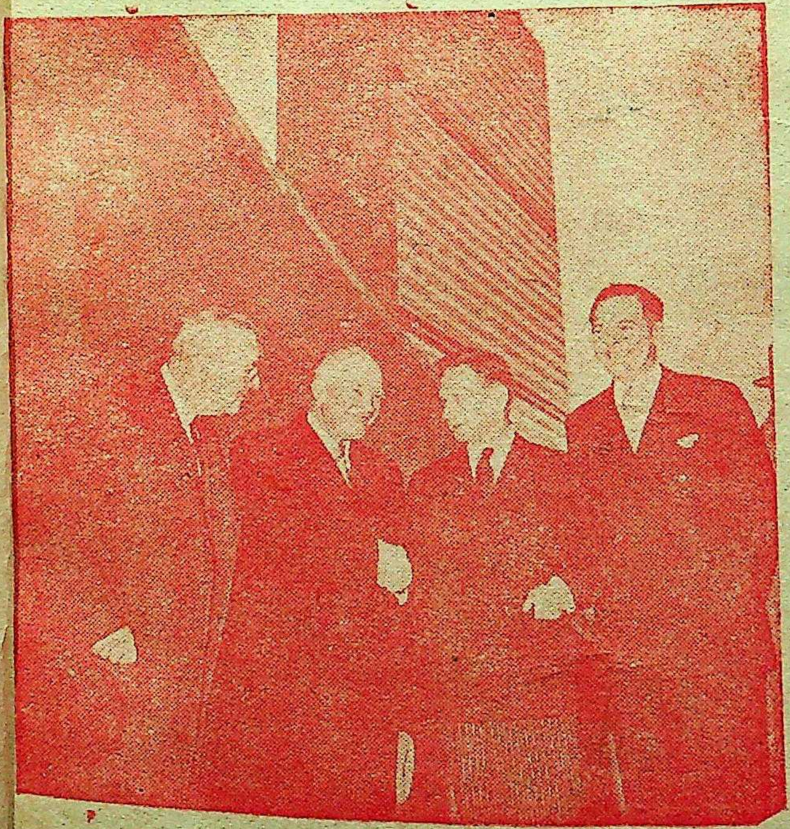

संयुक्त राष्ट्र सँघ के कार्यालय के बाहर बाईं ओर से विदेश मन्त्री डलेस, आइजन हावर, सैक्रेटरी जनरल हैमर्स्कजोल्ड तथा अमेरिकन प्रतिनिधि हैनरी कैबट लाज खड़े विश्व में शाँति स्थापित करने के लिये विध्वंसकारी यन्त्रों को अवैध घोषित किये जाने के प्रश्न पर परस्पर विचार विनिमय करते हुये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रजि० नं० ई० पी० ६०

## सचित्र समाचार

यह है २१ वर्षीय हैवीवेट चैम्पियन फ्लाइड पैटर्सन जिस ने राकी मार्कियनो को पराजित कर ३० नवम्बर '५७ को पुरुस्कार प्राप्त किया।

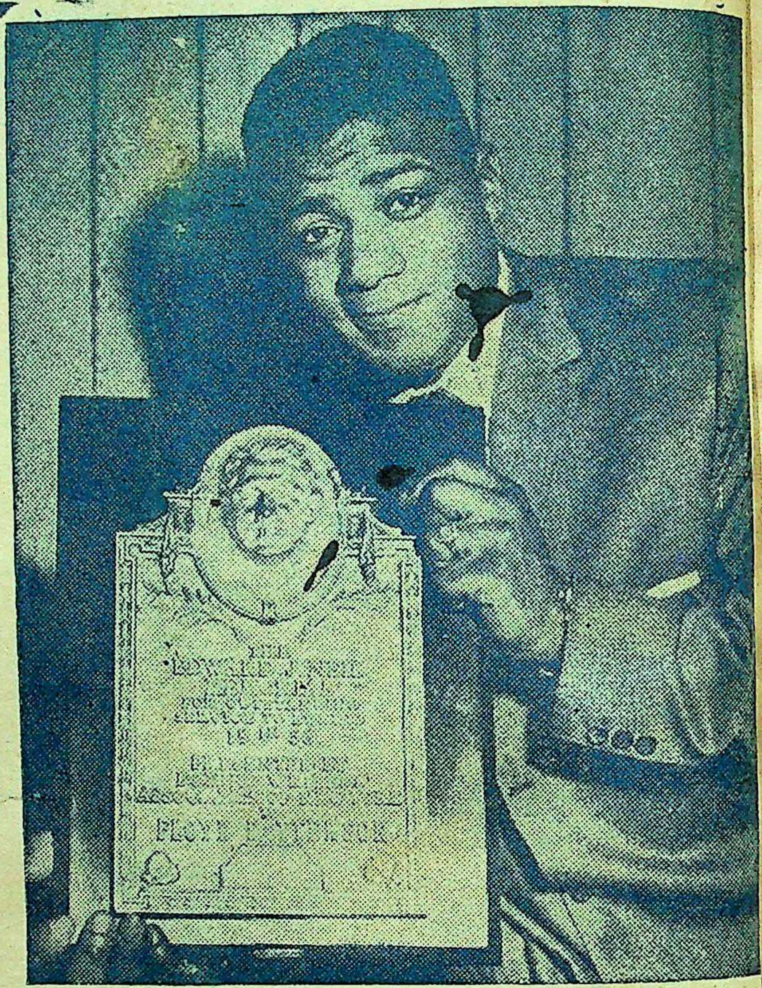

नीचे

खरगोश की औसत उमर ५ साल, भेड़ की १२. बिल्ली की तेरह, कुत्ते और बकरी की पंद्रह, गाय और सूअर की २५, ऊँट और शेर की ४०, हाथी और व्हेल की सौ तथा कछुवे की ३०० और मगरमच्छ की ३५० साल।

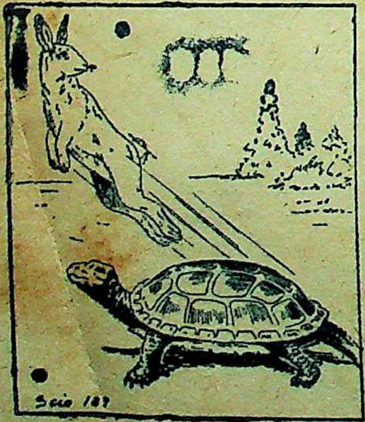

मोटे से मोटे व्यक्ति की आंखों के उपरी परदे में चर्बी नहीं पाई जाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
श्री एल० सी० हितैषी द्वारा वीर मिलाप प्रेस जालन्धर नगर में मुद्रित तथा १३७ चहार बाग, जालन्धर नगर से प्रकाशित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

वार्षिक मूल्य ७)    [ पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका ]    [एक प्रति १० आने

७ मार्च '५८

अमेरिकन उपग्रह १९५८ एल्फा.

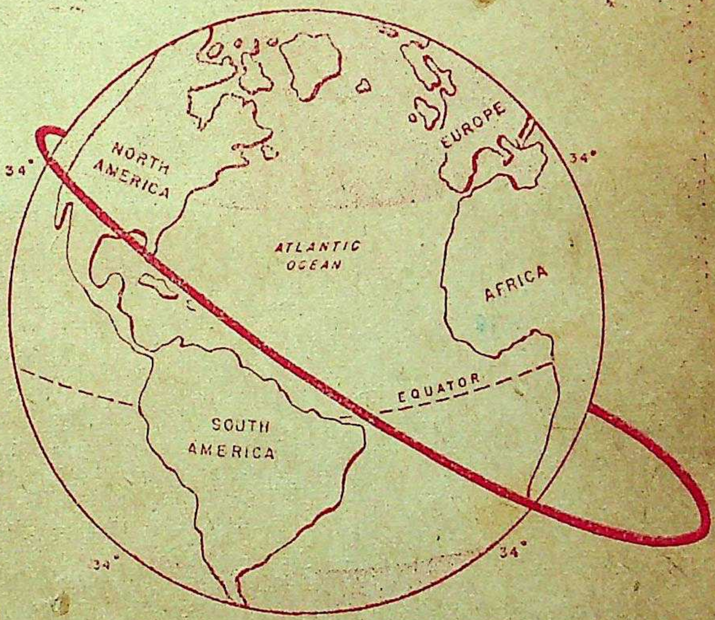


अमेरिका द्वारा छोड़े गए भूमि उपग्रह का आर्बिट शेडिड क्षेत्रों पर से यह नहीं गुजरता। यह ११५.२७ मिनट में विश्व का चक्कर काटता है।

सम्पादक
हितैषी अलावलपुरी

शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित !

# THE "Prakash"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

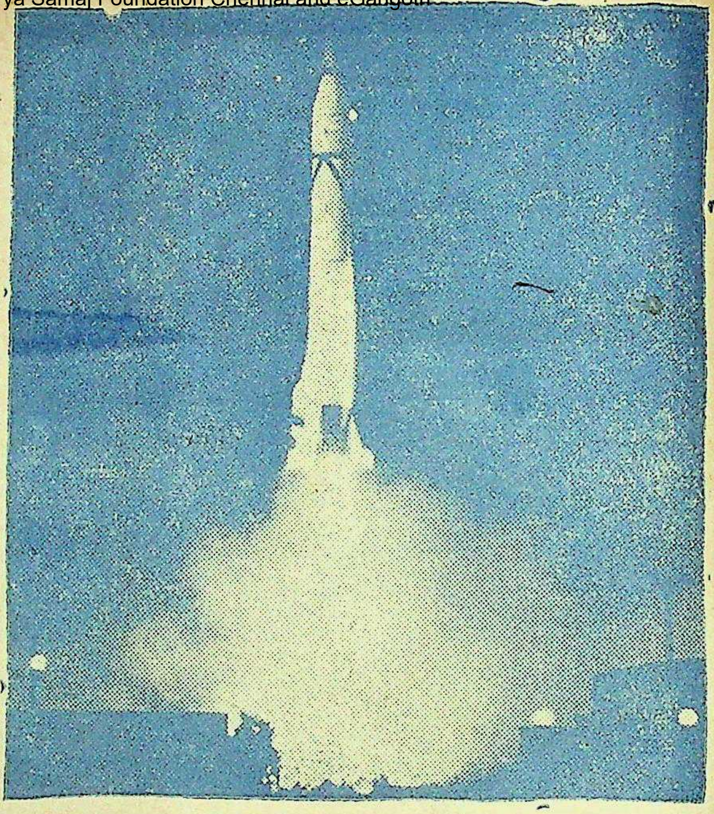

१९५८ एल्फा अमरीकी स्पुटनिक जो ८० इंच लम्बा तथा ६ इँच मोटा और ३०.८ पौंड वजनी है जुपिटर सी राकेट द्वारा केप केनावरेल (फ्लोरिडा) में छोड़ा गया था। यह उसी का चित्र है।

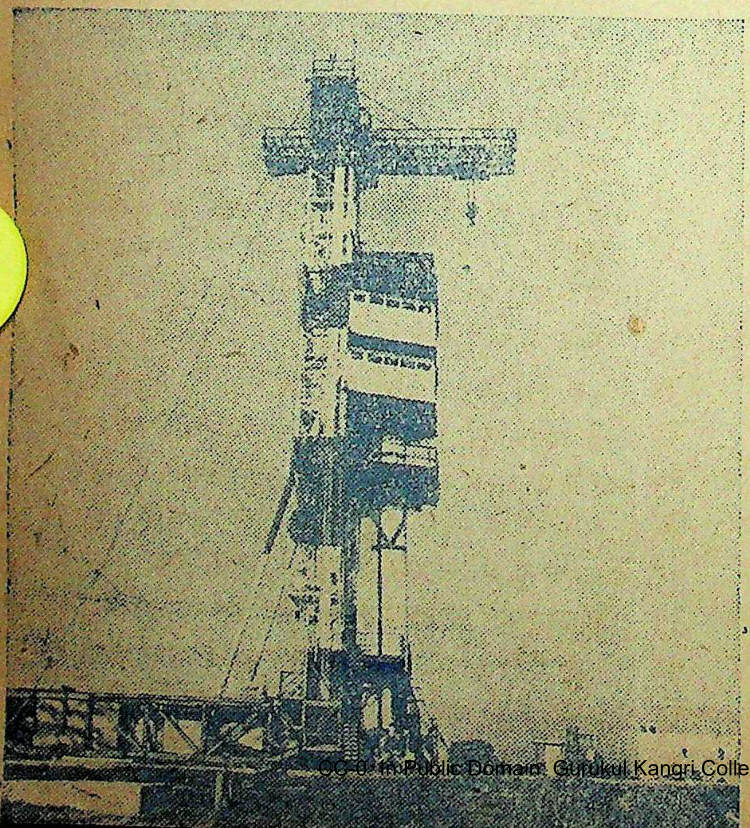

उपग्रह छोड़े जाने से पहले की तैयारी! मल्टी स्टेज वहीकल जिसकी लम्बाई ८२३.३ इँच है उपग्रह का लांचर है। रेडस्टोन मिस्साईल पावर प्लांट जो ६७२.८ इँच लम्बा और ७० इँच मोटा है प्रयुक्त किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब उत्तर प्रदेश, बिहार हिमाचल पैप्सू भूपाल और हैदराबाद के स्कूलों के लिए स्वीकृत

# प्रकाश

॥ पञ्जाब की एकमात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका ॥

वर्ष ५३ क्रमांक ५० | जालन्धर ७ मार्च '५८ | भाग ६ अँक ३ हिन्दी

## कहां क्या है ?

कविताएं

इंग्लिश के वकीलो सोचो — पृष्ठ १८

वीर हकीकत के बलिदान की कहानी — २१

रोशनी आकर रहेगी — २६

शालिहास-हासावलि — २७

उषा आमँत्रण — शालिहास — २८

नाटक कहानी

जादू भरा शब्द — ओसेवा — ३०

बहाना (नाटक) — ज्ञान देव — ८

लेख

भावी सन्तानों का भाग्य — ७

पिता की सम्पत्ति में पुत्री का अधिकार — ११

सच्चा दहेज (वेदानुसार) — ''

स्वतँत्र भारत में अँगरेजी और हिन्दी — १२

टेलिविज़न द्वारा शिक्षा के परीक्षण — १५

भारत के शिक्षा मंत्री मौ० आजाद — १६

मजाक करने वाला रीछ — २०

बड़ों के जीवन से (घटनाएँ) — २४)

होली में मुझ पर क्या बीती — २८

भारतीय वैज्ञानिक — वी रमन — ३२

बड़ा कौन है — ३४

तथा स्थायी स्तम्भः समाचार-सार शिक्षा समाचार, फूल और कांटे, अपनी बोली 'च'

## लाख होवे हार लेकिन

कौन कहता है मिलेगा अन्त में मुझको पराजय ?
कौन कहता मौन वाणी एक दिन हो जायगी ?
और तारे तोड़ने की चाह भी सो जायगी ?
क्या उमंगों की जवानी भी कभी ढल जायगी ?
जिन्दगी की यह रवानी भी कभी गल जायगी ?
एक भी अरमान बाकी फिर जवानी का कहाँ क्षय
गीत मेरे गूँजते हैं इस धरा से आसमाँ तक,
स्वर मुखर, उन्मत्त कण २ हैं मधुरमौसम खिज़ाँ तक
कण्ठ की चीत्कार ने पल-पल हँसी धरती रुला दी
एक ही हुँकार ने पत्थर बनी दुनिया हिला दी,
गा रहा हूँ खोलकर दिल, फिर न मिटने का मुझे भय
जब तलक तारों भरा यह आसमाँ है मुसकरता,
मद भरी मेरी जवानी को कभी ढलना न आता,
चांद आता है नई मस्ती लिए हर रोज दर पर
नव उषा चिर यौवना भी गीत गाती है मधुरतर
है अमर मेरी जवानी, मृत्यु की निश्चित पराजय
जो कमर कसकर चला साधा सदा अपनी डगरपर
आँधियों के बीच खेला और जूझा जिन्दगी भर,
मरण के भी सामने जिसने कि मुँह मोड़ा नहीं
भँवर की गहराइयों में राह को छोड़ा नहीं
लाख होवे हार लेकिन मानता अपनी सदा जय

सम्पादकीय विचार भारतीय बाल सभा बूझिए तो जानें हँसते हँसाते गृह विज्ञान आदि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# शिक्षा समाचार

१ अप्रैल से पंजाब के सरकारी स्कूलों में छटी कक्षा तक फीस नहीं ली जाएगी। जिला गुरदासपुर और अमृतसर के बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों के सरकारी स्कूलों में शिक्षा मैट्रिक तक निःशुल्क होगी! काँगड़ा और महेंद्रगढ़ जिलों के सरकारी स्कूलों में मिडल तक।

२२ फरवरी को भारत के शिक्षा मन्त्री मौलाना अब्दुलकलाम आजाद का देहावसान हो गया।

१ तथा २ मार्च को चण्डीगढ़ में हुई प्रिंसिपलों की एक मीटिंग में सुझाव स्वीकार हुआ कि बी टी और बी० ई० डी० के सिलेबस में परिवर्तन किया जाये।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में १८० इंटर कालेजों को डिगरी कालेज बनाने और ३६० को नये सिरे से आर्गेनाइज करने के लिये १५ करोड़ रुपया केन्द्रीय सरकार ने स्वीकार किया है!

पंजाब सरकार ५८-५६ में १३० लाख रुपये शिक्षा पर व्यय कर रही है।

भारत में ४६ देशों के ४६३ छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

भारत सरकार ने अढ़ाई २ सौ रुपये मासिक की सौ छात्रवृत्तियां आर्टिस्टों को देना स्वीकार किया है।

प्रथम अप्रैल से जम्मू और काश्मीर में समाज शिक्षा के २० केन्द्र खोले जा रहे हैं।

मांग की जा रही है कि (क) पंचायती स्कूलों को भी सरकार अपने प्रबन्ध में ले ले और (ख) प्राइवेट स्कूलों में भी छटी कक्षा तक शिक्षा निःशुल्क हो।

२८ फरवरी को हिसार जिला के सरकारी स्कूलों के क्लासिकल तथा वर्नेकुलर टीचरों की एक मीटिंग हुई जिसमें माँग की गई कि इन टीचरों को सौ-२२० तथा - १२०-१७५ के ग्रेड दिये जाएँ!

२ मार्च को पंजाबी की कवयित्री श्रीमती अमृता प्रीतम तथा हिन्दी के लेखक और इतिहासज्ञ पं० जयचन्द्र विद्यालंकार को चण्डीगढ़ में पंजाब सरकार की ओर से मानपत्र और ग्यारह २ सौ रुपये भेंट किए गये।

# फूल और कांटे

[पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर]

प्र०—पाकिस्तान फिर भारत को धमकियां दे रहा है। इसका उत्तर भारत को क्या देना चाहिए? —सोहन लाल उदय पुर।

उ०—धमकियों के अतिरिक्त पाकिस्तान के पास भारत को देने को और है क्या? उसका ऋण चुकाने को धन तो उसके पास है नहीं रहा भारत द्वारा उत्तर का प्रश्न सो कुत्ते को भौंकता देख कर मनुष्य को भौंकना शुरू नहीं कर देना चाहिए।

प्र०—पँजाब सरकार ने आटे और दाल पर भी बिकरी टैक्स लगा दिया है। क्या यह उचित है?

उ०—शुक्र करो कि उसने धूप और हवा पर अभी टैक्स नहीं लगाया। यदि वह ये टैक्स न लगाती तो मिनिस्टरों के रूप में जो सफेद हाथी पल रहे हैं—वे कैसे जीवित रह पाते?

प्र०—क्या पँजाब की भाषा समस्या हल होगई है?

—अजात सिंह अमृतसर

उ०—जब तक पुनः कोई आन्दोलन शुरू न हो तब तक 'होगई है' यही समझना उचित होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# अपनी बोली 'च

भाग्य कोई चीज है या नहीं ? इस बारे 'च हरेक दी राय वखो वख है। कोई तकदीर 'च विश्वास रखदा हैं ते कोई तकदीर च ! पर कई अजेहे भी हन जेहड़े तकदीर ते तदबीर दोहां ते विश्वास रखदे हन। असीं अपने अखीं अपनी मेहनत द्वारा कईयाँ नू कुझ सालां 'च लखपति बनदियां वेखिया ए ते कई लख पतियाँ नूं गरीब हुन्दियाँ भी। एह तदबीर ते तकदीर दे करिश्मे हन पर साडे जीवन 'च अजेहीआं घटनावाँ रोज घटदीआं हन कि जिन्हां नूं वेख के तकदीर दा कायल होना पैंदा है।

थोड़े दिनाँ दी घटना है कि अम्बाला 'च इक स्त्री ते बिजली डिगी। ओह ते ओसे वेले मर गई पर ओस दी गोदी 'च जेहड़ा बच्चा सी ओह दूर गिर पिया ते बच गिया। फेर रोज गडी हवाई जहाज ते मोटरां दे एक्सीडेंट हुन्दे ने। कई तकड़े स्त्री पुरुष ते मारे जांदे ने पर कोई कोई बच्चा साफ बच जांदा है। एह तकदीर दा करिश्मा नहीं ते की है ?

हुन एस विचार दे लोक बहुत हुन्दे जा रहे ने कि तकदीर हे अवश्य पर निरा तकदीर दे भरोसे ते जीवन नू छड के निकम्मियां नहीं बैठना चाहीदा बलिक पुरुषार्थ भी करना चाहीदा है, फेर गीता 'च भी आखिया गिया ए कि कर्म करना मनुष्य दा कर्तव्य ए ते फल देना भगवान दा कम। इस दा तत एह निकलिया कि सानू बिना फल दी इच्छा दे अपना फर्ज पूरा करन लई कम करदे रहना चाहीदा है, इस दा फल अवश्य मिलदे रहेगा। भाग्य ते विश्वास रखना बुरा नहीं पर पुरुषार्थ तों भी मुँह नहीं मोड़ना चाहीदा तदे सफलता दी आशा कीती जा सकदी ए।

—भाईया रलू

# समाचार सार

—पंजाब सरकार ने अपने नए बजट में दिखाए २ करोड़ ८ लाख के घाटे को इन नए टैक्सों के द्वारा दस लाख के मुनाफे में बदलने का प्रस्ताव विधान सभा में प्रस्तुत किया है :— सेल टैक्स २ पुराने पैसे से ४ नए पैसे अनाजों और दालों पर सौ रु० पर ७५ नए पैसे सेल टैक्स कपास बनौला खली चमड़ा और खालें उन पर भी सेल टैक्स शस्त्रों के लाइसैंस की फीस दुगनी घरेलू बिजली में १० प्रतिशत और अन्य प्रकार की खपत वाली बिजली पर २५ प्रतिशत शिक्षा कर।

—केंद्रीय सरकार के बजट में ३२·८५ करोड़ का घाटा है। कुल आय ७६८·६६ करोड़ और व्यय ७६६·०१ करोड़। नए टैक्सों में १० हजार से ऊपर के गिफ्ट पर एस्टेट ड्यूटी लगेगी। अब यह ड्यूटी एक लाख की सम्पत्तिपर नहीं ५० हजार की जायाद पर लगेगी। आय कर में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया गया ! सीमेंट पर डयूटी २० से २४ रु० प्रति टन हो जाएगी किन्तु स्टेट ट्रेड कार्पोरेशन अब सर चार्ज नहीं लेगी अत: सीमेंट के मूल्य में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा, सैन्य विभाग पर वार्षिक व्यय २७८·१४ करोड़ हो गया है।

—अमेरिकन वैज्ञानिक ५ वर्ष पश्चात् स्पुटनिक में मानव को भेजने और चन्द्र लोक में उतरने में सफल होने की आशा रखते हैं।

—ब्रिटिश वैज्ञानिक जेटा (थर्मो नेकलेयर आटम्स) द्वारा समुद्र से ५ मिलियन सैन्टी ग्रेड टैम्परेचर पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं।

रूस में शराब पीने के विरुद्ध आंदोलन आरम्भ किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# संपादकीय विचार

## मौलाना आजाद का देहावसान

भारत सरकार के शिक्षा मंत्री मौलाना अब्बुलकलाम आजाद का २२ फरवरी को देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु से देश का एक महान व्यक्ति उठ गया है—ऐसा व्यक्ति जो न केवल प्रसिद्ध विद्वन ही था अपितु बेजोड़ देशभक्त अद्वितीय विचारक और अनुकरणीय नेता भी। पंजाबकी कोई समस्या होती उनकी सूझबूझ से वह सदैव सफलता पूर्वक हल हो जाती थी। यदि वह कुछ समय और जीवित रहते तो निःसन्देह पँजाबकी भाषा समस्या को भी अवश्य हलकर लेते। किन्तु उनका ऐसे समयमें संसारसे उठ जाना जबकि उनकी इतनी अधिक जरूरत थी ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति असम्भव है।

## ९वीं कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा

१ अप्रेल से पँजाब के सरकारी स्कूलों में ९वीं कक्षा तक शिक्षा निःशुल्क हो जायेगी। कांगड़ा तथा महेन्द्र गढ़ के जिलों में मिडल और अमृतसर तथा गुरुदासपुर के बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में मैट्रिक तक फीस नहीं देनी पड़ेगी।

कहा नहीं जा सकता कि निःशुल्क शिक्षा सम्बन्धी किए गए पंजाब सरकार के इन प्रयत्नों का लाभ क्या होगा जब कि प्राईवेट स्कूलों के छात्रों को भी ये सुविधाएँ नहीं दी जाती ?

फिर बिजली की खपत पर जो १० और २५ प्रतिशत एजुकेशन सैस लगाया जाता है वह वसूल तो सब से किया जाएगा किन्तु व्यय होगा केवल सरकारी स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था पर ऐसी अवस्था में इस शिक्षा कर को उचित कैसे कहा जा सकता है ? पंजाब सरकार को चाहिए कि शीघ्रातिशीघ्र प्राईवेट स्कूलों में भ निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करे !

## सामाजिक तथा वैयक्तिक

### कु० विजया का शुभ विवाह

'भारतीय बाल सभा' की दीदी कु० विजया बी ए हिन्दी आनर्स सुपुत्री श्री हितैषी सम्पादक प्रकाश तथा पंचायत गजट का शुभ विवाह मि० वेदव्रत एम० एस० सी० आनर्स रिसर्च असिस्टैंट हिमाचल प्रदेश सरकार शिमला सुपुत्र म० गौरी शँकर जी आर्य लवलेस डलहौजी के साथ १५ फरवरी को सफलता पूर्वक हुआ। मिलनी के अवसर पर नगर के सम्मानित व्यक्ति भारी संख्या में मौजूद थे। उन में से राय बहादुर बद्रीदास महाशय कृष्ण व.रेंद्र जी यशजी धर्मवीर जी ला० गुरुदत्त सहगल एडवोकेट आदि के शुभ नाम उल्लेखनीय हैं। बधाई के पत्र तथा तार भेजने वालों में महात्मा आनन्द स्वामी श्री यज्ञ दत शर्मा,मा० सी.पी.एन.सिंह गवर्नर पंजाब आ० ए० एन० भण्डारी चीफ जस्टिस पंजाब हाई कोर्ट स० प्रताप सिंह कैरों पं० अमर नाथ विद्यालंकार पँ० मोहन लाल राब वीरेंद्र सिंह चौ० सूरज मल स० ज्ञान सिंह राड़ेवाला कुँवर महेन्द्र सिंह वेदी डायरैक्टर पब्लिक रलेशन्ज़ के अतिरिक्त ला० अच्छरूराम सहगल भूतपूव जज पंजाब हाई कोर्ट मि०प्रेम सहगल कानपुर मि०विनोद कुमार डिप्टी सैकरेटरी उत्तर प्रदेश सरकार प्रोफेसरओमसागर गवर्नमेंट इन्जनीयरिंग कालेज चण्डीगढ़ के शुभ नाम उल्लेखनीय हैं। संस्कार ५॥ बजे सायँ वैदिक रीति से पँ० बलदेव कृष्ण ने कराया। इस अवसरपर स्त्री पुरुष भारी संख्या में मौजूद थे। बरात स्थानीय राज महल होटल में ठहरी थी। चाय और भोजन की व्यवस्था मिलाप के आंगन में की गई थी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भावी सन्तानों का भाग्य

—ले० कुमारी जयन्ती शाण्डिल्य बी. एस. सी.—

कौन माता ऐसी है, जो चाहेगी कि मेरी सन्तान वर्तमान प्रगति शील युग में किसी से भी पीछे रह जाये ? किन्तु प्रश्न यह उठता है कि मातायें जो अपने बच्चों को इस दौड़ के योग्य बनाना चाहती हैं उन का स्वयं क्या योग्यता होनी चाहिये ?

माताओं के लिए यह नितांत आवश्यक है कि वे आधुनिक काल की कठिनाइयों को समझें और उन्हें ध्यान में रख कर बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करें। बाल मनोविज्ञान ने तो अनेक नवीन बाल शिक्षण पद्धतियों का आविष्कार किया है। उदाहरन के लिए 'मोन्टेसरी' पद्धति को ले लीजिए माताओं के लिए यह अनिवार्य होता जा रहा है कि बाल मनोविज्ञान का ज्ञान रखें।

आज यह बात तो एक दम ही भुला देनी चाहिये कि बच्चे माता की आज्ञा के बिना कुछ करने का अधिकार नहीं रखते है, जो मातायें बच्चों पर अपनी इच्छायें लादेंगी वे उनको स्वाधीन मनुष्य के रूप में उन्नतिशील कभी न पायेंगी। अर्थात गलती करना मनुष्य का स्वभाव है मनुष्य छोटा हो या बड़ा भूल सब से हो होती है ! मनुष्य भूलें कर के ही अनुभव प्राप्त करता है, बच्चों के पूर्ण विकास के लिए उन्हें भूलें कर के अनुभव प्राप्त करने की पूर्ण स्वाधीनता होनी चाहिये।

अमेरिका में दिन प्रतिदिन बाल मनोविज्ञान के आधार पर बहुत से स्कूलों में इसी प्रकार के प्रयोग हो रहे हैं। वहां अध्यापक बच्चों को पढ़ाते नहीं हैं अपितु स्वयँ उन के साथ पढ़ते हैं। जिस ओर बच्चे का मानसिक झुकाव होता है, उसी ओर उन्हें अग्रसर किया जाता है और इस प्रकार उन के स्वाभाविक झुकाव का विकास होने से वे नवीन बातों की खोज कर सँसार की प्रत्येक दिशा में उन्नति कर रहे हैं। विज्ञान साहित्य इंजीनिरिंग चित्रकला वाद्यकला आदि। वहाँ के स्कूलों में इस बात की स्वाधीनता रहती है कि यदि वे अध्यापक की बात को ठीक न समझें तो उसे न मानें। और यहाँ वैदिक आदर्श 'यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोऽपास्यानि' यह ब्रह्मचारी को आचार्य का पहला उपदेश है। बच्चों के दिल में भय उत्पन्न करके उनसे काम कराने का यत्न कभी नहीं करना चाहिए। पढ़ी लिखी भारतीय महिलाओं तक में साधारण प्रथा है कि बच्चों को हौवा भूत बाबा आदि डर दिखाकर उन्हें किसी कार्य करने से रोकती हैं।

अज्ञानवश हम इस प्रकार भय दिखाने के भीषण परिणाम नहीं समझतीं। ऐसी बातों से बच्चों का मानसिक विकास दब कर वे भीरु और डरपोक बन जाते हैं।

माता पिता का एक विशेष कार्य यह भी है कि वह देखें कि जिन बच्चों में उनका बालक रहता है उन का खान पान रहन सहन कैसा है ? जब तक प्रत्येक माता सँतान मात्र की माता नहीं बनती और प्रत्येक बच्चे के दिलको विशाल नहीं बना सकती। भारतीय उन्नति और स्वतन्त्रता के पुजारी सँतानों का भार माता पर है। अतएव राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक है कि देशकी भावी सँतानो के भाग्य की निर्मातृ मातृजाति का बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतसे पूर्णतया परिचित किया जाय जिस से कि वह राष्ट्र रचना के पुनीत कर्तव्य का यथावत पालन कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एकांकी नाटक

# बहाना

( श्री ज्ञानदेव अग्निहोत्री एम०ए० )

पात्र:—

महेश— सेक्रेटेरियट का कलर्क, उम्र तीस वर्ष।

अलका—उसकी पत्नी उम्र पच्चीस वर्ष।

मुन्नी उस की बच्ची, उम्र सात वर्ष।

किशोर महेश का दोस्त, पच्चीस वर्ष!

बड़े बाबू सेकरेटेरियट के बड़े बाबू उम्र चालीस वर्ष।

स्थान—महेश का बाहरी कमरा!

समय—दोपहर।

[ पर्दा उठने पर महेश अपने बाहरी कमरे में कोने वाली खिड़की के पास खड़ा दिखलाई पड़ता है! कमरा मामूली तौर पर सजा है। पूर्व की ओर बाहर जाने का दरवाजा है और सामने वाली दीवार के बीचोंबीच अन्दर जाने का द्वार है जिस पर एक सस्ते किस्म का पर्दा लटक रहा है। बाहर वाले दरवाजे से किशोर का मुस्कराते हुए प्रवेश। उस के हाथ में एक पुस्तक है।]

किशोर—चलो महेश भया।

महेश—(मुड़कर) आ गए किशू कहो भाई पास मिला ??

किशोर—(कुछ गर्व से) किशोर चाहे और उसे पास न मिले यह कैसे हो सकता है?

महेश–इस में क्या शक!

किशोर-और इस में भी कोई शक नहीं कि आप निहायत लीचड़ किस्म के आदमी हैं, महेश भैया!

महेश क्यों, क्या हुआ?

किशोर : हुआ क्या खाक! यानि कि मैं तो सेक्रेटेरियट जा कर आप की अर्जी दे आया, पास ले आया घर से खाना खा आया—और आप हैं कि अपनी केचुल तक न बदल सके।

महेश (अपने कपड़ों को देख कर) ओह अभी तैयार होता हूँ।

किशोर (पुस्तक मेज पर रख कर) महेश भैया बिना ठेले आप कोई काम नहीं कर सकते। (ऊंची आवाज में) भाभी—ओ भाभी।

[मुन्नी का हाथ पकड़े हुए—पर्दा हटाकर अलका का प्रवेश]

अलका : पास ले आये किशू।

किशोर : अजी बिलकुल ले आया, पर महेश भया को तो संभालिये।

अलका : (आग्नेय नेत्रों से महेश को घूर कर) क्यों जी? क्या मतलब है—कपड़े बदलियेगा कि नहीं?

महेश : (कुछ संकोच से) लेकिन मेरी सफेद पैंट और कमीज तो लांडरी गई हैं।

किशोर (शरारत से) तो आज भाभी की साड़ी पहन कर ही चलिये।

अलकाः क्यों जी? अगर बड़े बाबू की विदाई की दावत हो—या किसी यार की पार्टी हो तो बढ़िया धुले धुलाये कपड़े तुम्हारे पास क्या जादू मँत्र से आ जाते हैं।

महेश (डरता डरता) बात यह है अलका कि—।

अलका—(बिगड़ कर) बात मैं खूब समझती हूँ। किशू का सारा महनत बेकार करने की कसम ले ली है आप ने। बेचारा इतनी धूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आप की छुट्टी की अर्जी देने सेकटेरियट गया—भागा भागा पास लाया—और आप—।

महेश-पर इतनी धूप में।

अलका : क्यों जी ? आज धूप हम लोगों को नहीं लगेगी ? तुम्हारी बहानेबाजी म खूब समझती हूं। फ्लू का बहाना कर के लीव लो, बेचारा किशू दुनिया भरका अहसान मोल ले कर पास लाया और तुम फिर उसी बहानेबाजी पर उतर आये।

महेश-भई 'नून शो' में बड़ी तकलीफ होती है।

किशोर मैंने तो पहले ही कहाथा कि पास नून शो का ही मिल सकता है !

अलका-तो घर पर कौन सा आराम मिलेगा। सिनेमाघर में तो फिरभो कूलर लगा रहता है। तीन घँटे चैन से कट जायेंगे।

महेश( निरुतर होकर ) वह तो ठीक है पर मेरी पैंट कमीज।

अलका : (बीच में ही)एक धुली पैंट और एक कमीम मेरे ट्रंक में रक्खी है—तुम्हारे कपड़ों की पहेलियाँ इतनी बार उठो हैं कि मैं पहले से हो उनका हल ढूँढ रखती हूं।

महेश —(जाते हुए) घर से ज्यादा आराम तो मुझे दफ्तर में मिलता है।

किशोर (घड़ी देख कर) जरा जल्दी आना महेशभैया। ठीक १२ बजे है।

अलका किस दर्जे के पास लाये हो किशू।

किशोर-बालकोना का।

अलका-कितने आदमियां का ?

किशार-शायद चार आदमिया का है।

किशार-लीजिए श्यार हुआ जाता है। (पैंट का दानो जेबें देख कर) अर।

अलका-क्यों जा-क्या हुआ।

किशार-जल्दा र [illegible] यह पास कहाँ गया ?

अलका-कहीं गिर तो नहीं गया, किशू।

किशोर भला गिरेग कहां ! (कुछ सोच कर) ओह। याद आया खाना खाकर पैंट बदली थी उस की जेब में रह गया होगा। देखिये, ऐसा कीजिये आप महेशभैया को लेकर रीगल आ जाइये में घरसे पास लेकर सीधा वहीं आऊंगा।

अलका स्वीकृति-सूचक सिर हिलाती है—किशोर तेजी से बाहर चला जाता है।

अलका-जोर से)क्यों जी कपड़े बदल कर सो तो नहीं गये। मैंने कहा हाऊस फुल होने के बाद चलेंगे क्या ?

(महेशका कमीज के बटन बन्द करते हुए प्रवेश )

महेश-तुम तो बस घोड़े पर सवार रहती हो हमेशा अरे, यह किशोर कहां गया ?

अलका-घर गया है, पास लेने। फिर सीधा रीगल आयेगा, आपसे कम भुलक्कड़ नहीं है, आप का दोस्त।

महेश- मुन्नी का हाथ पकड़ कर अच्छा अच्छा चलो जल्दी नहीं तो फिर मुझे दोषी ठहराओगी !

महेश अलका मुन्नी बाहर वाले दरवाजे की ओर बढ़ते हैं तभी नेपथ्य से आवाज आती है महेशबाबू म० बाबू

म०-कुछ घबरा कर) अरे यह कौन मरद आ आनमरा?

अलका-होगा कोई घर निठल्ला जिसे इह दुपहरी में भो चैन नहीं है।

म०- आवाज तो जानी पहचानी मालूम पड़ती है ठहरो देखता हूँ

(खिड़की के पास जाकर झांकता है पलट कर भगवान बचाये यह तो मेरे विभाग के बड़े बाबू हैं।

शेष सफा १४ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# विशाखा

कहानी गतांक से आगे

चरित्रवान दयालु और स्वार्थ रहित दानी ही सच्चा दानी है। उस के सुविशाल दिल में सदैव करुणा का स्रोत प्रवाहित रहता है। वह दान दे कर परम आनन्दित होता है और अपने को कृत-कृत्य समझता है। सच्चा दानी कभी दान देकर पीछे पछताता नहीं। उस का चित परम सुखी और प्रफुल्लित होता है।

भगवान के मुख से पवित्र सात्विक दान का वर्णन सुन कर विशाखा बड़ी सन्तुष्ट हुई और बोली—हे भगवन मेरी एक प्रार्थना और भी है। उसे भी आप कृपा कर सुनें। भिक्षुणियाँ नग्न हो कर सर्वसाधारण स्त्रियों के घाट पर नहाया करती हैं। इस लिए कुलटा स्त्रियां वहां उन की हंसी उड़ाती हैं और कहती हैं—हे युवतियो, इस युवावस्था में सांसारिक वासनाओं का दमन करने से क्या लाभ ? तुम लोग वृद्धावस्था में वैरा य साधन करना। ऐसा करने से तुम्हें लोक और परलोक दोनों का सुख मिलेगा। अतएव भगवन मेरी विनय है कि भिक्षुणियां नग्न हो कर घाटों पर न नहाया करें।

बुद्धदेवने विशाखा का ऐसा कल्याणजनक एवं लोकहितकर प्रस्ताव सुन कर कहा—वत्से, तुम्हारी यह सकल साधु इच्छा पूर्ण हो। मैं आशीर्वाद देता हूं कि क्षुधार्त को अन्नदान तृष्णातुर को जलदान परिश्रांत जनों को आसन दान रोगियों को औषध दान करने की, अर्थात अशन, वसन औषध, पथ्य यथेच्छादान करने की तुम्हारी क्षमता अक्षय हो। दूसरों के दुःखहरण और कुशल वर्धन जैसे सकल पुण्यकार्यों में निरन्तर रत रह कर तुम स्वर्ग में अपने सुकृतों का फलभोग करो।

बुद्धदेव की यह आशीर्वाद वाणी विशाख ने अपने जीवन में सार्थक कर दिखाई। बौध सँघ पर विशाखा का कुछ कम ऋण नहीं। श्रावस्ती के द्वार के सामने नौ करोड़ रुपए दे कर उस ने भूमि ली और दूसरे नौ करोड़ रुपये लगा कर वहां पूर्वाराम नाम का एक बहुत बड़ा विहार बनवाया।

यह विहार दोतल्ला था। ऊपर और नीचे के खण्डों में पांच पांच सौ कमरे थे। विहार की प्रतिष्ठा के समय विशाख ने तीसरी बार करोड़ रुपए खर्च किए। भगवान बुद्ध की सेविकाओं में कोई ऐसी न थी, जो श्रध्दा में विशाख की बराबरी कर सके। इस समय बौद्ध संघ की छः बड़ी भिक्षुणियों में विशाखा की गणना होती है।

विशाखा अपने श्वसुर मृगार को बुध्ददेव के निकट ले गई। मृगार बुद्धदेव की सुमधुर उपदेशवार्ता सुन कर मुग्ध हो गया और विशाखा से बोला—माता ! आज इतने दिन पीछे तुम ने इस हतभाग्य सन्तान का उद्धार किया है।' तबसे विशाखा मृगार-माता नाम से अभिहित होने लगी। विशाखा ने अपने गर्भ से दस पुत्रों और दस कन्याओं को जन्म दिया। इनके फिर प्रत्येक के दस-दस सँतानें हुईं। यह सभी सँतानें बहुत सुन्दर, सबल निरोग एवं चरित्रवान थीं। इतनी संतान की जननी होने पर भी विशाखा इतनी शक्तिशालिनी थी कि मस्त हाथी को सुंड से यदि पकड़ लेती तो वह हिल नहीं सकता था। इस पुण्यवती महिला ने वर्णित वयस में अतुल सुख और सौभाग्य की अधिकारिणी होकर १२० वर्ष की आयु में निर्वाण प्राप्त किया। विशाखा का उज्ज्वल हीरक की भाँति ज्योतिमर्ण्डित हो कर चिरकाल तक बौद्ध शास्त्रों को आलोकित करता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पिता की सम्पत्ति में पुत्री का अधिकार

## वेद इस सम्बन्ध में क्या कहता है ?

वेद के प्रसिद्ध व्याख्याकार आचार्य यास्क ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ निरुक्त के तृतीय अध्याय के ३-५ खण्डों में इस विषय पर बड़ा सुन्दर विचार किया है और वहाँ इस विषय से सम्बन्ध रखने वाले अनेक वेद मन्त्रों को उद्धृत किया है।

ऋग ३। ३१। पहले मन्त्र को उध्दृत कर के उस के अर्थ पर विचार करते हुये यास्क ने लिखा है कि अनेक आचार्य इस मन्त्र से यह परिणाम निकालते हैं कि पुत्रों को भान्ति ही पुत्री का भी अपने पिता की सम्पत्ति में भाग होना चाहिये, पुत्र और पुत्री समान रूप से पिता की जायदाद अर्थात सम्पत्ति के उत्तराधिकारी हैं!

यहां उन्हों ने मनु का मत दिखाते हुए एक श्लोक भी दिया है जिस में कहा गया है कि मनु की सम्मति में पुत्र और पुत्री अपने पिता की सम्पत्ति के समान रूप से ही उत्तराधिकारी है :—

अविशेषेण पुत्राणां दायो भवती धर्म्मतः।
मिथुनानां विसर्गादौ मनुः स्वायं भुवोऽब्रूवीत ॥

यास्काचार्य ने अथर्व १, १७, १ और ऋग १, १२४, ७ मन्त्र को उद्धृत कर के अपना मत यह दिखाया है कि जिन कन्याओं का कोई भाई न हो वे अपने पिता की सम्पत्ति की उतराधिकारी होती हैं।

ऋगवेद के दूसरे मँडल के १७वें सूक्त में एक मन्त्र आता है जिस में उपमा वाक्य द्वारा यह कहा गया है कि पिता के घर में रहने वाली कन्या भाइयों के समान ही पिता की सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी होती है। इस प्रकार इस अंश में तो वेद का अभिप्राय स्पष्ट ही है कि जिस कन्या का भाई न हो अथवा जो कन्या पिता के घर में रहे उसका अपने पिता की सम्पत्ति में अधिकार रहना चाहिये और कई आचार्यों के अनुसार जैसा कि यास्क ने लिखा ऋग ३, ३१, १ में यह उपदेश भी दिया गया है कि सभी कन्याओं का पिता की सम्पत्ति में भाइयों के समान ही अधिकार है।

जैसा कि यास्क ने लिखा है कई आचार्य इस मन्त्र को कन्या के उत्तराधिकार में न लगा कर पुत्र के उत्तराधिकार में लगाते हैं। यदि इस मँत्र के अर्थ में मतभेद हो और यह भी न माना जाय कि पिता की सम्पत्ति में विवाहित कन्या का भी अधिकार होता है तो भी कोई हानि नहीं है और न हो उस अवस्था में कन्याओं के साथ कोई अन्याय ही होता है क्यों कि विवाहित कन्याओं का अपने पतियों की सम्पति में तो वेद की शिक्षानुसार अधिकार रहेगा ही।

### सच्चा दहेज

चितिरा उपवर्हणँ चक्षुरा अभ्यँजनम्
द्यौर्भूमिः कोश आसीद्यवयात्सूर्य्यापतिम् ॥

अथर्व १४. १,६

इस वेद मँत्र में कन्या के माता पिता को सम्बोधन कर के कहा गया है कि उन्हें चाहिए कि जब उनकी कन्या विवाहित हो कर पति के घर में जाने लगे तो उसे दहेज दें।

पर वह दहेज कैसा हो ? 'चिति' अर्थात दिमागी शक्ति उस में गढ़ैले (शेष पृष्ठ सोलह पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमारी भाषा समस्या

# स्वतन्त्र भारत में अँगरेजी और हिंदी का स्थान

(श्री महावीरप्रसाद प्रभाकर बावल)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' स्वर्ग से भी श्रेष्ठ जन्मभूमि भारत माता आज विश्व के स्वतन्त्र देशों में से है और यह राष्ट्र विश्व का एक महत्तम गणतन्त्र राष्ट्र है! आज के विश्व में भारत को ख्याति शान्ति दूत के रूप में प्रतिष्ठित है।

विश्व के त्रस्त मानव की आँखें इसे ही आशा भरी दृष्टि से ताक रही हैं। यह भारत के अध्यात्म का प्रभाव है जिसे विश्व ने पूज्य बापू के रूप में देखा अथवा आज जिसे 'पंचशील के प्राण' नेहरू के रूप में देख रहा है। इस अल्पकालीन समय में भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को कौन भारतीय गर्व की दृष्टि से नहीं देखेंगे। भारत का शान्ति जनीन वाणी पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक फैल रही है।

जहां उक्त रूपेण हमारी छाती गर्व से फूल उठती है वहां कुछ ऐसा भी हो जाता है जो हमारी अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता को धक्का पहुंचाता है। एक जरा सा घटना है कि रूस तथा पौलैण्ड ने भारत से जूते खरीदने चाहे किन्तु माल के घटिया होने पर वह सौदा न हो सका। क्या यह हमारे लिये चुनौती नहीं?

यह तो हुई व्यावसायिक घटना। किन्तु एक अन्य घटना है विदेशों में हमारी भाषा का व्यवहार। सन् १९५४ ई० में भारतीय फिल्म प्रतिनिधि मण्डल रूस गयाथा। वहां उन के स्वागतार्थ आयोजित एक सभा में एक प्रतिनिधि श्री अब्बास ने अपना भाषण इँगलिश में प्रारम्भ किया किन्तु उन्हें एक रूसी श्रोता ने यह कह कर कि अब्बास साहब, भाषण हिन्दी हिन्दुस्तानी में बोलें, इंगलिश में बोल कर गजब न करें उन्हें विस्मित और लज्जित कर दिया।

इस प्रकार की घटनाओं या किसी विदेशी द्वारा यह कहना कि क्या भारत में अपनी कोई भाषा नहीं क्या हमारे अहंभाव को ठेस नहीं पहुंचता। परन्तु हम है, कि दासता की गोदी में पले अपने महत्व को बिल्कुल भूल कर सुने जा रहे हैं। इन बातों को। यही क्यों प्रत्युत उस अँग्रेजी के प्रति आग्रह किये जा रहे हैं कि इसे भारत में वही स्थान प्राप्त हो जो पहले था (शायद वह १९२० ई० के समय को भूल गये।) अँग्रेजी के प्रति दुराग्रह की आवाज भारत के कई कानों में फूट पड़ी है इसका मुख्य केन्द्र दक्षिण में मद्रास है।

बंगाल का लेखक सम्मेलक अथवा पंजाब के मास्टर तारा सिंह भी इस ओर झुक गये हैं किन्तु इस राजनैतिक दावपेच में उन लोगों की अपनी सँकुचितता काम कर रही है तत्वतः इन प्राँतों के जनसाधारण में इस प्रकार का कोई दुराग्रह नहीं, यह अलग बात है कि प्रांतीयता की दुहाई दे कर उन्हें उकसाया जाये। विविध कुतर्कों अथवा आक्षेपों के आधार पर अपना पक्ष स्थापित करते हुए वे भूल जाते हैं कि हम संविधान की अवहेलना कर रहे हैं। जिस मद्रास या अन्यत्र अंग्रेजी के लिये इतना शोर है वहां के आंकड़े बतलाते हैं कि वहां अँग्रेजी शिक्षितों की संख्या कितनी नगण्य है।

मद्रास जन सँख्या ३०००८४६,
शिक्षित २१·८५ प्रतिशत, अँग्रेजी शिक्षित ०.१२%.
पश्चिमी बंगाल जनसँख्या २६१०६२५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शिक्षित १४.१० प्रतिशत अँग्रेजी शिक्षित २.३१%। पँजाब जनसँख्या १६१३४८८१० शिक्षित १५.३८%। अँगरेजी २.२५ ।%

फिर भी अंगरेजी का मोह !

अंगरेजी का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व अब अँगरेजों के साथ विदा ले रहा है। इस का वह प्रभुत्व जो आतँक द्वारा फैलाया गया दिन पर दिन नष्ट होता जा रहा है। स्वयँ लन्दन यूनिवर्सिटी की दृष्टि में अंगरेजी का महत्व घट गया है ! इसे वैज्ञानिक साहित्य का भण्डार बताया जाता है तो उचित ही है किन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि ज्ञान विज्ञान किसी भाषा में बँध नहीं जाते वे तो शुद्ध उर्वर मस्तिष्क की उपज हैं और फिर विज्ञान क्षेत्र में रूस बाजी मार लेगया अतः रूसी भाषा का भविष्य उज्ज्वल है। यदि इसे व्यापक भी माना जाये तो भी इसके भाषा भाषी विश्व में २५ करोड़ बतलाये जाते है जो सचमुच नगण्य हैं !

फिर भी अंगरेजी का महत्व हम स्वीकार करते है किन्तु राजा जी की भांति इसे भारत की आत्मा बेच कर नहीं, या कुंजरू समिति की सिफारिश में अनिवार्यता मान कर नहीं अपितु एक विदेशी भाषा के रूप में जो हमारे लिये सहायक और बढ़ने में हमारी मार्ग दर्शिका हो।

कुछ भी हो अब भारत अँगरेजी का वर्चस्व अधिक सहन नहीं कर सकता अब तो भारतीय भाषा का ही वृहतर भारत का गुरुतर बोझ सम्हालना होगा। सँविधान के अतिरिक्त पू० बापू, स्वामी दयानन्द, ला० लाजपत राय, महामना मालवीय जी प्रभृति महान् विभूतियाँ भी इस बात का निर्णय दे चुकी है।

अब मैकाले की मुँहकाली नीति भारतीय आवरण में अँगरेजीकी दासता नहीँ चलेगी। यह हमारे लिये गौरवास्पद कदापि नहीं कि हम अंगरेजी से अब भी चिमटे रहें। जब संविधान कह रहा है और राजभाषा आयोग निर्णय दे चुका है तथा आयोग की सिफारिशों पर संसदाय सामांत विचार कर चुकी है तब अँगरेजी के लिए दुहाई देना स्वयँ कलंक लेना है। हमारी यह कितनी भूल होगी कि हम हिन्दी के द्वारा अपने अन्तर्प्रान्तीय सम्बन्ध को विच्छिन्न होता देखें अथवा प्रशासनिक कठिनाइयों को मान राजनैतिक गत्यवरोध मान बैठें और फिर मान लें कि हिन्दी के माध्यम से भारतीय शासन शिक्षा अथवा व्यवहार दुष्कर कार्य हो जाएगा। इस प्रकार मानना तो ठीक वही होगा कि हम सन् १६४० ई० में बैठ यह सोचने लगें कि भारत का शासन अंगरेजों के बिना नहीँ चल सकता अतः हे भाई, स्वराज्य ले कर क्या करेंगे।

जिस वस्तु ने भारत को एकता के सूत्र में बांध रखा है और बांधे रखेगी वह है हमारी अपनी भाषा, अँगरेजी नहीँ। प्रेम और ऐक्य के राज्य में बांधे हम भारतीय आज भी—

तत्रैव गंगायमुना त्रिवेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च !

कह कर पुकार रहे हैं—वन्दे मातरम्। यह भेदभ्रम की कल्पना वस्तुतः इस अँगरेजी की देन है, यह अंगरेजी इस अज्ञान की खाई को पाटने के स्थान पर गहरा करती जाएगी। क्या सत्ता लोलुपता का प्रभाव नहीं कि हम अंगरेजी की हिमायत करें। तर्क या सँविधान ही नहीं अपितु भारत की आत्मा राष्ट्र की एक भाषा और एक आत्मा चाहती है, वह अब अतीत के अनुभवों के आधार पर, पुनः अपनी छाती पर दानवता के ताण्डव नृत्य देखना नहीँ चाहती। तभी वह अंगरेजी के मोह को दूर कर विश्व को दिखाना चाहती है कि हम भी अपने पैरों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

( शेष सफा १४ पर )

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सफा ६ से आगे

अलका बड़े बाबू हैं।

महेश—कहीं साहब ने तो नहीं भेजा है।

अलका—साहब क्यों भेजेंगे ?

महेश—शायद मेरी छुट्टीकी सचाई जांचने भेजा हो।

अलका—तो अब क्या होगा ?

महेश—मुन्नी बेटी तुम बाहर जाओ और बड़े बाबू से कह दो जा कर कि पापा डाक्टर के यहां गये हैं !

अलका—क्या कहोगी मुन्नी ?

मुन्नी—पापा डाक्टर के यहां गये हैं।

महेश—शाबाश, जाओ जल्दी।

(मुन्नी का बाहर प्रस्थान)

महेश—(कुर्सी पर बैठ कर) जी चाहता है बड़े बाबू को गोली मार दूँ।

[बड़े बाबू का मुन्ना के साथ हँसते हुए प्रवेश]

बड़े बाबू-किस को गोली मार रहेहो महेश बाबू। अब तबियत तो—

महेश (स्तम्भित सा) बड़े बाबू आप !

बड़े बाबू—मुन्नी बड़ी समझदार बच्ची है महेश बाबू। बोली, हमारे पापा कहते हैं कि वे डाक्टर के यहाँ गये हैं।

महेश—(हकला कर) देखिये बड़े बाबू बात दरअसल यह है कि

बड़े बाबू—अब मुझे क्या समझाते हो महेश बाबू मै तो पहिले ही जानता था।

महेश. जी क्या जानते थे ?

बड़े बाबू—यही कि आप फ्लू को हो सकते हैं महेश पर फ्लू आप को नहीं हो सकता।

---

खड़ा होना जानते हैं, गौरव के साथ जीना चाहते हैं और चाहते हैं देशों के साथ प्रेम से मिल कर बढ़ना।

महेश—जी।

बड़े बाबू (हँस कर) वाह साहब—बहुत खूब, आफिस न आने का यह अच्छा बहाना है जिस को देखो उसी को फ्लू और आज तो आप को फ्लू होना ही था।

उस ईश्वरदास विशनदास वाले मामले की पुरानी फाइलें निकालनी पड़तीं—दुनिया भर की मगजपची करनी पड़ती।

मै—जी बड़े बाबू वह !

बड़े बाबू: मुन्नी बेटी, तुम ने आज बहुत बढ़िया कपड़े पहने हैं। कहां जा रही हो ? हमें भी बतलाओ।

महेश अलका पर एक मतलबभरी निगाह डालता है।

अलका आगे बढ कर मुन्नी को उठा लेती है और अन्दर चली जाती है।

बड़े बाबू: (हंसकर) क्यों महेश बाबू कहाँ की तैयारी है ?

महेश: जी हम लोग डाक्टर के यहां जा रहे है ?

बडे बाबू: डाक्टर के यहाँ ! इतने अच्छे कपड़े पहन कर ?

महेश: फ्लू के दिनों में अच्छे-- यानी कि साफ कपड़े ही पहनने चाहियें।

[बड़े बाबू यों ही मेज पर रखी किताब उठा कर उलटने लगते हैं-- अचानक एक कागज गिर पड़ता है। कागज उठा कर उसे पढ़ते हैं]

बड़े बाबू: तो आप लोग कहां जा रहे थे ?

महे: डाक्टर के यहाँ !

बड़े बाबू: हाँ जी क्यों नहीं—फिल्म देखना भी किसी डाक्टर की दवा से कम है!

(शेष पृष्ठ १६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# टैलिविजन द्वारा शिक्षा के अमेरिका में सफल परीक्षण

हाल ही में अमेरिका में एक ऐसी घटना हुई है जिस से शिक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण की व्यापक सँभावनाएं उत्पन्न हो गई हैं। यह घटना न्यूयार्क नगर में हुई, जहां आम जनता के लिए साहित्य विषय में एक पाठ्यक्रम प्रथम बार टेलिविजन पर प्रस्तुत कियागया। अन्तिम परीक्षा में उत्तीर्ण हो जानेपर इस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले व्यक्तियों को उपाधि प्राप्त कर लेना सँभव है।

इस घटना के निरीक्षक इस निष्कर्ष पर पहुँचे। समय और स्थान की रुकावट अब शेष नहीं रही। कुशल अध्यापक अब इने-गिने कुछ छात्रों के सम्मुख उपस्थित होने के बदले हजारों छात्रों के सम्मुख हो सकते हैं!

क्योंकि टैलिविजन कार्यक्रम के अन्तर्गत पाठ्यक्रम प्रातः ६–३० बजे सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है, इस लिए उच्च शिक्षा सम्बन्धी व्यापक रात्रि कार्यक्रम प्रस्तुत करनेका मार्ग मुक्त हो गया है। व्यापारिक टैलिविजन कार्यक्रम में इस से किसी प्रकार की बाधा पड़ने की सँभावना नहीं, क्यों कि ये कार्यक्रम इस समय प्रसारित नहीं किए जाते।

१९५६ की पतझड़ ऋतु में जब प्रातः कालीन पाठ्यक्रमों की व्यवस्था के सम्बन्ध में कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग और न्यूयार्क विश्वविद्यालय के अधिकारी विचार कर रहे थे, तब इन सब संभावनाओं की बात उन के दिमाग में नहीं थी। उन्हें यदि किसी बात की चिन्ता थी तो वह यह थी कि टैलिविजन द्वारा प्रदान की गई शिक्षा कहीं परीक्षा तथा पारस्परिक सम्बन्ध और आकर्षण से विहीन न सिद्ध हो। क्या पाठयक्रम इतना दिलचस्प और आकर्षक बनाया जा सकता है, जिस से विद्यार्थी इस प्रकार के पाठयक्रम के प्रति आकर्षित हो सकें? या विद्यार्थी कक्षा में बैठकर पढ़ने के प्रचलित ढंग को ही पसन्द करेंगे?

न्यूयार्क विश्वविद्यालय ने इस सम्बन्ध में अपने परीक्षण के लिए अपने ३५ वर्षीय प्रोफैसर फ्लोयड जूली को चुना। कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग ने टैलिविजन कार्यक्रम का खर्च उठाना स्वीकार कर लिया। दोनों ही सँस्थाओं का यह विश्ववास था कि प्रातः ६ ३० बजे इस कार्यक्रम को प्रस्तुत करना अत्याधिक खतरों से पूर्ण है! बहुत संभव है कि कोई भी छात्र इस कार्यक्रम के लिए अपना नाम रजिस्टर्ड नहीं कराए। यह भी संभावना थी कि इस विशुद्ध शिक्षणिक कार्यक्रम को सुनने के लिए आम जनता इतनी सुबह उठना ही पसन्द न करे! संक्षेप में समझा गया था कि प्रातःकाल की साहित्य-चर्चा साहित्य के अनुरागियों को तो आकर्षित कर सकती है, किन्तु प्रश्न यह था कि क्या यह न्यूयार्क की उस जनता को आकर्षित कर सकेगी, जिस के सम्बन्ध में कोई भविष्यवाणी करनी सँभव नहीं है?

२३ सितम्बर १९५७का उक्त पाठ्यक्रम के शुरू करने से पूर्व ही इस प्रश्न का उत्तर शिक्षाशास्त्रियों और टैलिविजन अधिकारियों को मिल चुका था। उन्हें स्वप्न में भी जितनी आशा नहीं था, उस से भी कहीं अधिक पाठयक्रम की सँभावना उत्पन्न हो गई। ग्रीष्म ऋतु में जब इस पाठयक्रम के सम्बन्ध में घोषणा की गई, तब पाठयक्रम के सम्बन्ध में १०'००० व्यक्तियों ने प्रार्थना पत्र मँगाए। इन में से ७५० प्रार्थना पत्रों के साथ ७५ डालर की रजिस्ट्रेशन फीस भी प्राप्त हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सफा १४ से आगे

महेश (घबरा कर) जी ?

बड़े बाबू (महेश की ओर कागज बढ़ाकर) यह लीजिये आप का पास।

बड़े बाबू -जरा गौर से देखिये आज की ही तारीख का और इसी नून शो का है !

म० खिसियाना सा सिर नीचा कर लेता है

बड़े बाबू—(डाक्टर( खूब साहब फ्लू का बहाना कर के आप ने छुट्टी ली और सिनेमा देखने जा रहे हैं। अगर बड़े साहब को मालूम हो जाय कि आपने झूठी दरख्वास्त देकर छुट्टी ली है तो ? तो देखते देखते आप नौकरीसे बाहर हो सकते हैं।

म—घिघिया कर) बड़े बाबू।

बड़े बाबू—सरकारी नौकरी कोई आप के घर की खेती नहीं है।

महेश—तो क्या—तो क्या आप सचमुच साहब से।

बड़े बाबू—तब क्या मैं आपको साफ बरी कर दूंगा !

म—(रुआंसा ) बेमौत मर जाऊँ गा बड़े बाबू। बाल बच्चों वाला आदमी हूँ।

बड़े बाबू - कानून अन्धा होता है महेश बाबू।

म—(पैर पकड़ कर) बड़े बाबू मुझ पर रहम कीजिये।

बड़े बाबू (अलग हट कर) सजा नहीं टल सकती वह आप को जरूर मिलेगी—अभी इसी वक्त यहीं।

म—(न समझने के ढंग पर) जी ?

बड़े बाबू बतौर दँड आप को।

म—(थूक निगल कर) कहिये बड़े बाबू आप रुक क्यों गये।

महेश—बतौर दँड आप को अपने साथ मुझे भी सिनेमा ले चलना पड़ेगा।

म—(आश्चर्य चकित हो कर) आप—आप सिनेमा चलेंगे —पर आप तो दफ्तर।

बड़े बाबू -दफतर। (एक दम अट्टहास करके) आज बड़े बाबू दफतर नहीं जा रहे हैं (कुछ रुक कर) उन्हें भी फलू हो गया है।

म—भौंचका सा बड़े बाबू को देखता है बड़े बाबू ठहाका लगाते रहते हैं। (धीरे धीरे यवनिका गिरती है ! )

सफा ११ से आगे

तकिए आदि की जगह हों 'चक्षू अर्थात चीजों की गहराई में जा कर ध्यान से देखने की शक्ति उस में अंजन अर्थात सुरमा आदि शृँगार की चीजों के स्थान में हो, और द्युलोक तथा पृथिवी लोक के बीच में आने वाले सारे जगत का ज्ञान उस में 'कोशः' अर्थात रुपए पैसे की जगह हों अर्थात माता पिता को चाहिये कि वे अपनी कन्या को दहेज भी दें तो वह ज्ञान का दहेज हो !

---

(१५ से आगे)

इस कार्यक्रम के शुरू होने से पूर्व विश्वविद्यालय को फीस पहुंचगई। इस फीस के फलस्वरूप उक्त पाठयक्रम में भाग लेने वाले ये छात्र अन्तिम परीक्षा में सम्मिलित हो सकते थे।

डा० जूली ने १६वीं शताब्दी की महान रचना स्टेनडाल लिखित दि रेड एण्ड दि ब्लैक के सम्बन्ध में जब अपना प्रथम भाषण दिया, तब ब्राडकास्टिंग कम्पनी को इस कार्यक्रम की सफलता का पता चला।

ब्राडकास्ट के कुछ ही घण्टों बाद नगर के समस्त पुस्तक विक्रेताओं के पास इस पुस्तक की कोई प्रति शेष नहीं बची। बाद में इस बारे में जो [illegible] अनुमान तैयार कियागया उसमें लग भग ७४,००० व्यक्तियों ने भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ※ भारतीय बाल सभा ※

## बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी — अध्यक्षा दीदी

## फुलवाड़ी

(बच्चों के प्रश्नों के उत्तर)

प्र०—मैट्रिक की परीक्षा में इस वर्ष कितने परीक्षार्थी पास होंगे ? श्याम सुन्दर लुधियाना

उ० सवा लाख में से ५०-६० हजार के लगभग पास हो जाए गे ।

२ केवल सरकारी स्कूलों में छटी कक्षा तक शिक्षा निःशुल्क करदेने से क्या लाभ होगा जब तक कि सभी स्कूलों में इस की व्यवस्था नहीं की जाती ? दीना नाथ होश्यारपुर

उ० सरकार यह कहने के योग्य हो गई कि उस ने छटी तक शिक्षा निःशुल्क कर दी है लाभ चाहे विशेष न भी हो ।

३ पंजाब सरकार जो मैरिट स्कालरशिप देती है उसे कौन प्राप्त कर सकता है ?

मनजीत कौर अमृतसर

उ० जिस ने मैट्रिक फस्ट डिवीजन में बहुत अच्छे अंक ले कर पास किया हो और उस के पिता की आय २०० रु० मासिक से कम हो वह उम्मीदवार हो सकता है ।

४. रूस के छात्र तो बड़े चाव से हिन्दी पढ़ रहे हैं किन्तु हमारे अपने देश के कुछ भागों में इस का विरोध किया जा रहा है, इस का क्या कारण है ? –राम कुमार हिसार

उ०—यह विरोध केवल राजनीतिक क्षेत्र के खिलाड़ियों द्वारा सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है ।

५ किस देश के बच्चे अधिक बुद्धिमान हैं ? सन्तोष कुमारी श्रीनगर

६. सभी देशों में बुद्धिमान बच्चे पाये जाते हैं । हां जिन देशों में बच्चों के पालन पोषण और उन की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है उन देशों के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बन जाता है !

७. यदि मैं पंजाब भर में मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम आऊं तो आप क्या पुरस्कार देंगे ? प्रीतम कौर फिरोजपुर

उ०—पुरस्कार तो तुम्हें यूनिवर्सिटी देगी हम तो बधाई ही दे सकते हैं । हां तुम्हारी फोटो छाप देंगे । दीदी

(सभी बच्चे प्रश्न भेज सकते हैं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# इँग्लिश के वकीलो सोचो

(श्री शान्त 'शालिहास')

क्या इंलिशश से आजादी
का पार लगा खेवा है ?
या स्वार्थ साधने को ही
खाया इंगलिश का मेवा है।
भारत माँ का पय पानी पी
बोलें इग्लिश वाणी
इंग्लिश के वकीलो सोचो,
क्या यही देश सेवा है ?
जो तीस कोटि जनता की है
आदरणीया वाणी ।
चालीस कोटि जन समझें
मानें जिस को कल्याणी।
हो राष्ट्र राज्यभाषा वह हिंदी न
और इँग्लिश यह
दो लाख जनों की टोडी
भाषा हो राष्ट्र की वाणी।
अपनी भाषा को नंगी
भूखी कह करें अनाहत ।
गैरों की गोरी मां को
सेवा से करें समाहत।
निज मातृ भूमि निज भाषा,
दोनों जब मां सी पूज्या ।
तो क्या कर्तव्य तुम्हारा सोचो
भारत सुत निदित !
केवल कलर्क समझें बस
बाबू जिस को बोलें।
जन भारती की अमृत धारा
में जहर घोलें ।
जिस मुक्त देश की हो;
यदि ऐसी राष्ट्र भाषा ।
तो मौर्ख्य कालिमा को
कैसे वह राष्ट्र धो ले।
भारत की आम जनता;
नहिं क्लर्क बाबू सारी ।
अब तक न उसने समझी;
गिट पिट की यह बिमारी।
जनता के द्वारा जनता पर
उस की ही जुबां में ।
होती है जो हकूमत,
जनता को होती प्यारी ।
भारत की एकता के
टुकड़े किए हैं जिस ने ।
भारत की एकता को,
क्या साध वह सकेगी ?
जो देश में न जन्मी,
जनता जिसे न समझे
आजाद हिन्द में क्या,
भाषा वह चल सकेगी ।
जन भाषा जन तन्त्र देश
में चलती सदा रही हैं ।
यह कैसा जन तन्त्र कि
जिस में भाषा हो गैरों की?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भारत के शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद

## जिन का देहावसान २२ फरवरी को हो गया

बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि मौलाना आजाद का जन्म मक्का में हुआ था। उन के पूज्य पिता एक बहुत बड़े धार्मिक नेता थे जो १८५७ की गड़बड़ में अरब चले गये और मदीना के निवासी बन गए। होनहार बिरवान के होते चीकने पात। छोटी उमर में ही यह नजर आगया था कि मौलाना बड़े हो कर कुछ बनेंगे। पहले उन्होंने मदीना में अरबीकी शिक्षा पाई और फिर छोटी आयु में ही मिश्र की अलअजहर विश्व स्कूल में प्रविष्ट हो गए। अल्प आयु में ही उन्होंने अरब देशों की यात्रा की और अभी छोटे ही थे कि भारत आ गए। अमृतसर के अखबार वकील के सम्पादक भी रहे। उन दिनों वह कविता भी करते थे। उन की एक कविता पढ़ कर मौलाना शिबली को उसने मुलाकात का शौक हुआ और जब उन्होंने मौलाना आजाद को देखा तो यह मानने के लिए तैयार न हुए कि एक नवयुवक ऐसी उत्तम कविता लिख सकता है।

बलकान की प्रथम लड़ाई ने मौलाना को राजनीति की ओर आकर्षित किया! ब्रिटेन की रेशादवाविर्यों ने उन्हें हमेशा के लिए अंग्रेज के खिलाफ कर दिया। हिंदुस्तान आकर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ बगावत का झगड़ा लहरा दिया गया! १९१२ में उन्होंने एक साप्ताहिक अलहलाल जारी किया। पत्र के लेखों ने भारत भर में मौलाना के ज्ञान के झण्डे गाड़ दिये। १९१४ में प्रथम महायुद्ध छिड़ गया। उस समय भी अलहलाल छपता था। इस के निडर और स्वतन्त्र लेखों को अंग्रेज सरकार सहन न कर सकी। अखबार बन्द कर दिया गया और मौलाना को नजर बन्दी में डाल दिया गया। १९२१ में जब महात्मा गांधी ने पहली बार सविनय अवज्ञा का आंदोलन आरम्भ किया तो मौलाना साहब गिरफ्तार हुए। उन्होंने चीफ प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट की अदालत में जो वक्तव्य दिया, वह ऐतिहासिक महत्व का है। इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि वह कितने दृढ़ हृदय के थे। मौलाना ने अपने बयान में कहा—यदि स्वदेश प्रेम अपराध है तो मैं अपराधी हूं। या तो आप मुझे अधिक से अधिक दण्ड दें; या फिर स्वयँ इस कुर्सी से उठ जायें जो आप से देश भक्ति की भावना को कुचल देने की माँग करती है।

महात्मा गांधी मौलना साहब का बहुत सम्मान करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मजाक करने वाला रीछ

(गतांक से आगे)

प्रथम तो जितने पशु उस समय हमारे पास थे वे सरकस बनाने केलिए काफी न थे । कुछ नए जानवर खरीदना आवश्यक था; मेरा विचार था कि शेर बाघ, सफेद और काले रीछ तथा कुत्तों को एक साथ ही दर्शकों के सम्मुख पेश किया जाए। कम आयु के बाघ मुझे मिल गए। शेर के एक दर्जन बच्चे भी मैं ने लन्दन से खरीद लिए। दो तिब्बती रीछ भी मिल गए अब उत्तरी ध्रुव के सफेद रीछ प्राप्त करने का प्रश्न था।

यह बाजार में इतनी सरलता से नहीं मिल सकते। आखिर नार्वे के एक व्यापारी को लिख कर सफेद रीछ के १० बच्चे मैंने मंगा लिए।

बक्स को खोलने से पूर्व हमने आत्म रक्षा के लिए लोहे के काँटे पकड़ लिए थे। ज्यों ही बक्स के एक तरफ की तख्ती जरा सी ढीली हुई बक्स फट पड़ा। अन्दर से पूरी आयु का एक रीछ निकला। उसने बाहिर आते ही हम पर आक्रमण कर दिया। इसे देख कर मैं बुरी तरह चौंका। इतना डर मुझे आज तक किसी जानवर से भी न हुआ था। इस का कारण यह था कि वह बिजली की सी तेजी के साथ मुझ पर झपट पड़ा। एक ही झटके में वह मुझे ६–७ गज पीछे धकेल गया। कट घरे की सलाखों के सहारे खड़े हो कर मैं अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगा किन्तु रीछ के वार से बचने का अवसर मिलता ही न था। मैंने कई बार लोहे का कांटा उस के शरीर में गाड़ दिया। फिर भी रीछ मुझ पर पूरे उत्साह से आक्रमण किये जा रहा था। उस समय कोबक ने मेरी सहायता की। उस ने पूरी शक्ति से रीछ पर चोट की। वह जमीन पर लुढ़क गया यदि वह मेरी सहायता को न आता तो रीछ मेरे टुकड़े २ कर देता। क्षण भर पश्चात ही रीछ फिर उठ कर खड़ा हो गया। इस बार वह कोबक पर झपटा। वह दौड़ कर सलाखों के सहारे खड़ा हो गया। रीछ को रोकने की हिम्मत उस में न थी। मैंने एक भारी तिपाई उठा कर रीछ के सिर पर दे मारी किन्तु तब तक वह कोबक की एक रान चीर चुका था। तिपाई की चोट न सह कर रीछ जमीन पर गिर पड़ा। अवसर पा कर कोबक तख्तों के पीछे छिप गया। रीछ पुनः खड़ा हो गया और कोबक को पकड़ने के उद्देश्य से लकड़ी के तख्तों पर जा पहुंचा। तख्ते एक दूसरे के ऊपर रखे गए थे। रीछ का बोझ न सह कर तख्तों का चबूतरा नीचे गिर पड़ा।

रीछ उठ कर मुझ पर झपटा ! मैं ने एक हाथ में कांटा और दूसरे में डण्डा ले लिया। रीछ तीर की तरह मुझ पर टूट पड़ा। कोबक

शेष सफा २२ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# वीर हकीकत के बलीदान की कहानी

(श्री शान्त शास्त्री शालिहास)

आओ तुम्हें सुनायें बलिदान की कहानी
बालक की बल कहानी ।
छोटासा था हकीकत बालक निरीह मानी
कच्ची उमर थी उसकी था किंतु पूर्ण ज्ञानी ।
मकतब में जब गया वह पठनार्थ छात्र बनकर
यवनों के सँग पढ़ता था फारसी के अक्षर
कुछ दिन हुए अभी थे दुर्गाष्टमी कि आई
कुंकुम तिलक लगाया बालक ने हर्षदाई
खुश २ गया हकीकत मकतबमें पुस्तकें ले
उस दिन घटी वहांपर अद्भुत नई कहानी
माथे पै देख टीका अज्ञान दुष्ट संगी;
उपहास करके बोले पेशानी क्यों है रँगी
किसने है ईंट मारी या अक्ल तेरी मारी,
चुप सह गया हकीकत था चोट पर करारी
आखिर विनय से बोला दुर्गा को आज पूजा
है उस खुशी का द्योतक यह रंग आता बूझ
उपहास फिर लगे सब करने ले नाम दुर्गा
दुर्गा के भक्त को उस ने बनाया मुर्गा
देवी का सह सका न अपमान जब वह भारी
बोला हमारी दुर्गा है फातिमा तुम्हारी
इतने में मौलवी भी थे आ गए वहां पर
सब दुष्ट मिलके बोले कि फातिमा निरादर
इसने किया है सब के ही सामने यहांपर
मारो निकालो इसको मकतबसे हैयह काफिर
काजी के पास उसको फिर बांध ले गए वह
काफिर ने फातिमा को दी गाली कह गए वे
काजी ने लाल आंखें करके दहाड़ मारी
काफिर को मौत देदो गर्दन पै रख कटारी
मां बाप सुनके दौड़े ले फूल सी बहू को
बोले बखश इसे दो हमदो के ले लहू को
मिन्नत समाजतों के ही बाद फैसला यह
मुल्लां व आलिमोंने सादिर किया कि गर यह
कर ले कबूल काफिर इसलाम को हृदयसे
तो जान बख्श देंगे इस कीं सभी तरह से
बोला कड़क हकीकत बस चुप करो ए काजी
भगवान के हैं बंदे सब यक्सां हिंदू गाजी
मेरा कसूर क्या है क्यों धर्म निज बिसारूं
है आत्मा अमर यह कर घोषणा पुकारूं
बदलूं न धर्म को मैं, चोला बदल यह सकता
सिर काट लो भले ही चोटी न काट सकता
इन्साफ का कुनाटक खेला गया वहां फिर
इस्लामी तेगने जब काटा निर्दोष का सिर
मां बाप रोते धोते पहुंचे भटकते दिल्ली
पागल समझ जिन्हें थी जनता उड़ाती खिल्ली
कहते हैं बादशाह ने इस जुल्म की कहानी
कानों से जब सुनी तो आँखों में आया पानी
उन को तो दे दिलासा कुछ धन भी दे पठाया
काजी व उसके संगी सबको तुरत बुलाया
शाही हुक्म हुआ कि जमुना के पार भेजो
उन को इनाम देंगे इसमें शरीक थे जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


सफा २० से आगे

मेरी सहायता को न पहुंच सकता था। यदि रीछ एक बार भी मुझे पकड़ लेता तो मेरा बच निकलना सम्भव न था। रीछ ने एक गज की दूरी पर आ कर अपने पँजे फैलाए ताकि मुझे अपनी लपेट में ले ले। मैंने सारी शक्ति लगा कर उस के मुंह पर डण्डे का वार किया निशाना ठीक बैठा था।

नाक पर चोट लगने से रीछ लड़खड़ा कर रीछ जमीनपर गिर पड़ा। उसके मुंहसे खून बहने लगा। उस के हाथ पांव अकड़ गए। मारना न चाहते हुए भी उसपर प्राण घातक वार करना पड़ा था इस के सिवाय चारा ही न था।

रीछ के शव की जांच करने पर पता चला कि वह मादा थी। इस के पश्चात दूसरी मादा रीछ को मैंने सरकस के खेल खिलाने का यत्न नहीं किया। मेरे पास इस समय ८ सफेद रीछ थे जो काफी थे। इनके अतिरिक्त २ सफेद काली धारियों वाले रीछ; दस शेर और शेरनियां चार चीते और कुछ बड़े कुत्ते भी थे! मुझे अपने खेल के लिए केवल १८ पशु चाहियें थे। मेरे पास २६ हो गए थे। इस से लाभ यह हुआ कि मैं अपने काम के योग्य जानवरों को चुन सकता था।

रीछों में एक रीछ जोकर का काम करता था। शेर और चीते मुझ से इतना डरते थे कि मेरे चाबुक की एक ही फटकार पर और मेरे जोर से चिल्लाने पर वे मेरी ओर ताकने लगते थे। ११ शेर और चीते मेरे चाबुक की तरफ देखते रहते! जिस ओर मैं जाता उस ओर उन की दृष्टि भी जाती थी। ज्योंही रीछ जँगले में आए शेरों ने मेरी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया, और अपने स्थान पर जाने की बजाए रीछों पर हमला कर दिया। सभी शेर और चीते रीछों पर झपट पड़े।

उन्होंने एक रीछ को मार डाला, मजाक करने वाला रीछ सलाखों के ऊपर चढ़ कर गुस्से से गुर्राने लगा। अन्त में कई मास के प्रयत्न के पश्चात मैं इन सब जानवरों को एक साथ सरकस के शो में सफलता पूर्वक पेश करने में सफल हो गया।

---

जमुना में उनकी किश्ती मझधार में डुबा कर
इन्साफ कर दिखाया; पदशाह ने बराबर
जैसा किया था पाया फल वैसा ही उन्हों ने
पर कर दिया हकीकत का यश अमर उन्होंने
हर माघ पंचमी को हम याद उसकी करते
होते शहीद जो हैं कभी [illegible] मरते

# रूस में नारी

सोवियत शोध संस्थानोंकी प्रयोगशालाओं में ६०,००० महिलाएं वैज्ञानिक का काम करती हैं!

दस लाख से अधिक महिलायें स्कूलों में शिक्षण कार्य कर रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

# पराजिता

—कु० सुदर्शन खोसला प्रभाकर—

मां मुझे नींद आ रही है—अ: अ: बच्चे ने अपनी मां की ओर निराशा भरी दृष्टि से घूर कर कहा और आँखें मीच लीं।

मां जानती थी यह नींद क्षणिक नहीं यह मौत की नींद है जो बच्चे को उस से निष्ठुरता पूर्वक छीन कर दूर ले जा रही है। वह चीख उठी—

बेटा मत सोना—मेरे लाल! लेकिन वह सो गया—एक गहरी नींद में एक अटूट नींद में!

फिर उस ने इधर उधर देखा—कफन का टुकड़ा पाने के लिए—पर वहां पेवन्द लगी धोती के सिवा कुछ न था। वह सोचने लगी क्या उसे भी शैया की तरह त्याग करना होगा अपनी धोती के एक भाग से पुत्र के शव को ढकना होगा—पर वह अर्ध-नग्न हो जाएगी—तब लाज की दीवारें जिन में वह वर्षों से सिकुड़ती आ रही है टूट फूट जाएँगी नहीं वह ऐसा नहीं करेगी। पर बिना कफन के वह अपने पुत्र को कैसे यमुना में बहा दे।

वह देर तक अन्धियारी रात को शून्य दृष्टि से घूरती रही।

प्रातः उषा की पहली किरण ने एक पुल के नीचे उस दुखिया पर अपनी करुणा भरी दृष्टि फैंकी जो अपने पुत्र के शव पर अपने अश्रु प्रातः के शबनम की भांति फैंक रही थी! उस के लिये शायद वह चमकीली किरण रात के अन्धियारे से भी अधिक मलिन हो चुकी थी। वह सोच रही थी—अतीत की घाव से भरी बातें।

पाकिस्तान के भयंकर तूफान ने उस के सब सम्बन्धी उस से छीन लिये थे, वह निरीह थी एकदम निराधार। एक बच्चा उसकी छाती से चिपटा था—जो उस के पति का एक मात्र चिन्ह था।

एक २ कर के पांच वर्ष निकल गये—उस ने बहुत खोज की परन्तु उसे इतनी बड़ी दुनिया में अपना कोई नजर न आया। उस के पास एक पैसा भी न था जिस से वह अपना पेट पालती या कोई धन्धा करती। वह अशिक्षिता थी कुछ भी न जानती थी—हार कर भिक्षावृत्ति अपना कर जीवन यापन करने लगी। फिर एक दिन उसे भिक्षा मांगते लज्जा नहीं आती थी—वह चुपचाप सड़क के किनारे अपनी फटी साड़ी में लिपटी सी खड़ी हो जाती। पास से गुजरते लोगों को चमकती दृष्टि से देख कर अभ्यस्त शब्द कह डालती—ईश्वर तुम्हारा भला करे—एक पैसा देते जाओ। (२६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बड़ों के जीवन से

## क्या आप यह कहना चाहते हैं ?

एकबार सुकरात अपने दोस्तों से गप्पें लड़ा रहे थे इतने में ही एक उज्जड दोस्त ने महात्मा सुकरात को सब के सामने ही एक लात मारी। सुकरात चुपचाप रहे। चुपचाप यह अपमान सहते देख कर उन के दोस्त को बड़ा आश्चर्य हुआ ! उन्होंने सुकरात से इस का कारण पूछा।

सुकरात ने उत्तर दिया—क्या आप यह कहना चाहते हैं कि अगर कोई गधा मुझे लात मारे तो मैं इन्साफ के लिए अदालत में जाऊं। दोस्तों की बोली बन्द हो गई।

## भाई जान नाराज न हो !

एक बार देशाटन करते हुए सिक्खों के प्रथम गुरु नानक मक्का पहुंचे। थक कर वे आराम करने के लिए काबे के सामने सो गये संयोग से उन के पैर काबे की ओर थे। उसी समय कुछ मुसलमान उधर आये। काबे की ओर पैर फैलाये देख कर उन्होंने ठोकरों से नानक को जगाया और बोले- तू पवित्र स्थान का अपमान करता है और खुदा के घर के सामने पैर फैलाता है ?

गुरु नानक ने लेटे लेटे उत्तर दिया; भाई जान ! नाराज न हो। मेहरबानी कर के जिस ओर खुदा न हो उसी तरफ मेरा पैर कर दो।

यवनों का जोश ठण्डा हो गया।

## तुझे ईश्वर से मिला दूं।

एक युवक दीनबन्धु श्री एण्डरूज से बोला—यदि आप मुझे ईश्वर के दर्शन करा दें तो मैं समझूं आप का ईश्वर सच्चा है।

श्री एण्डरूज बोले—अवश्य मैं तुझे ईश्वर से मिला दूंगा। वह युवक को लेकर शहर के बाहर चल दिये। आलीशान मकान बाग-बागीचे पीछे छूटते जा रहे थे ! युवक आश्चर्य चकित था कि वे कहां जा रहे हैं।

श्री एण्डरूज ने एक टूटी झोंपड़ी के दरवाजे पर रुक कर अन्दर झांका। एक बीमार बच्चा खटिया पर लेटा था और बूढ़ा बाप इन की सेवा कर रहा था। एण्डरूज बोले—ये दोनों ही भगवान हैं। इनकी सेवा करना सच्ची भगवद्भक्ति है।

## भारत भूमि बांझ नहीं है ?

बम्बई की एक सभा में बहुत से विद्वानों को आमन्त्रित किया गया था। लोकमान्य तिलक भी उन में से एक थे। उन्होंने भी उस सभा में अपना भाषण दिया। सभा समाप्त हो जाने पर सभा के सभापति महोदय ने (जो कि एक पारसी सज्जन थे। कहा—मि० तिलक आप अपनी योग्यता का समुचित उपयोग नहीं कर रहे हैं; आप की जैसी प्रतिभा सम्पन्न बुद्धि तो ऐतिहासिक अन्वेषण के लिये विशेषतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयुक्त है ।

यदि आप इस ओर अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगावें तो संसार प्रसिद्ध कीर्ति प्राप्त कर सकते हैं। इसे छोड़ कर आप राजनीति के दल दल में क्यों पड़े हैं।

राष्ट्रीयता के आदि गुरु लोकमान्य तिलक ने कहा—भारत भूमि बाझ नहीं है । स्वराज्य हो जाने पर मेरे जैसे हजारों विद्वान हो जायेंगे। इस समय जो आवश्यक कार्य है वह यह है कि हम में से प्रत्येक अपने देश की सहायता के लिए आगे बढ़े और अपनी समस्त योग्यता और अपना सर्वस्व स्वराज्य की प्राप्ति में लगा दे ।

मालूम है सब कुछ !

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर और गिरीशचन्द्र विद्यारत्न पैदल ही एक दिन कालना गांव की ओर जा रहे थे! प्रसन्नचित्त वार्तालाप करते हुए आगे बढ़ रहे थे कि राह किनारे एक 'मोटिया' को गठरी पर बदहवास पड़ा देख कर ठिठक गये । गांव के लोग दूर से ही मृतप्राय 'मोटिया' को देख रहे थे ; पास कोई नहीं आ रहा था। ईश्वरचन्द्र 'मोटिया' की ओर बढ़े, तो गाँव के लोग चिल्ला उठे—सावधान। अछूत है; उसे हैजा हो गया है।

दस्त और कै से मोटिया लथपथ था । मक्खियां भिनभिना रही थीं। लोग नाक दबा कर दूर से निकल जाते थे। एक बून्द पानी के लिये तरस रहा था ।

विद्यासागर के मुंह से निकल गया—अगर हमारा भाई या पुत्र इस दशा में होता तो ?

विद्यासागर ने गिरीशचन्द्र की मदद से उस अछूत रोगी को कंधे पर उठा लिया। गाँव के लोग चिल्ला उठे—अरे यह क्या ! कुल को कलँकित क्यों कर रहे हो! ब्राह्मण कुल को क्यों गिरा रहे हो ? यह अछूत है ।

ईश्वरचन्द्र ने सीधा सा जवाब दिया—मालूम है सब कुछ, यह मानव है हमारा भाई है, भाई। और मोटिया को ले कर आगे बढ़ गये। मील डेढ़ मील कन्धे पर उसे ढोते हुए कालना गांव पहुंचे। निरन्तर उस की सेवा सुश्रुषा की। मलमूत्र, कपड़े धोते रहे।

दिन भर की भक्ति भरी सेवा के बाद मानव का भाई मानव भला चगा हुआ और ईश्वर चन्द्र ने चैन की सांस ली।

मेरा सर्वोत्तम उपहार।

आइजन हावर अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गये, तो उन्हें देशभर से लाखों उपहार मिले। इन उपहारों में एक मामूली झाड़ू भी थी ! भेजने वाले ने लिखा था—आपने अपने भाषण में कहा था कि यदि मैं चुना गया तो मेरा काम राज्यतन्त्र में व्याप्त गंदगी को साफ करना होगा। मुझे विश्वास है कि मेरा यह नन्हा उपहार आप को सदा आप के उस वचन की याद दिलाता रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


उसे याद है पहली बार भिक्षा मांगते उसे कितनी लज्जा आई थी लेकिन बच्चे की भूखी आंखों की करुणा ने उसे सड़क के किनारे खड़े होने के लिये विवश कर डाला था और जब वह पहली बार कुछ व्यक्तियों को गुजरते देख कर धीरे से कह उठी—

एक पैसा देते जाओ—मेरा बच्चा मर रहा है। तो-तो एक युवक कितनी धृष्ठता से उसे घूर कर कह उठा- वाह ! तुम्हें तो किसी की रानी होना चाहिए था। तब उस का दिल फटने सा लगा था—वह कांप उठी थी और कुछ देर बाद जब अश्रुपूर्ण दृष्टि ऊपर उठाई तो किसी ने भद्दा सँकेत कर दिया था उस समय उसकी दशा अजीब थी। वह राह भूले व्यक्तिकी तरह बुरी तरह से घबरा गई थी।

लेकिन आज, आज उसे मांगने में लज्जा नहीं आती उसे लोगों की घृणित बातें सुनने की आदत पड़ गई है। शायद बच्चे की ममता ने उसे सब कुछ सिखा दिया है। उसने दुनिया की चोटें खाने के लिये दिल को पत्थर बना डाला था—और आंखों के पानी को दृगों के किसी कोने में सुरक्षित छिपा लिया था—लेकिन आज पुत्र की मृत्यु पर-वह फिर से फूट पड़ा था उस का दिल भी पिघल कर बह चला था।

प्रति दिन उस नन्हें पुल के ऊपर का कोलाहल उसे सँगीत की भाँति मादक लगता था—लेकिन आज उस पुल पर पावों की

# रोशनी आकर रहेगी !

भाग्य की टूटी लड़ी में जोड़ कर विश्वास;
हार को मैं ने बनाया हर कदम पर जीत।
क्या हुआ जो जिन्दगानी में विकलता है;
और पीड़ा में दुखी इन्सान पलता है;
रोशनी आ कर रहेगी इस अन्धेरे में;
एक क्षण को हार जाना भी सफलता है।
इसलिए ही ले हृदयमें ज्योति का सम्बल,
गा रहा हूँ मौत में भी जिन्दगी के गीत।
यही सही मुझको न मंजिल का पता मालूम,
और मेरे पांव फूलों से अधिक मासूम,
मुस्कराहट तक हुई है होंठ से नाराज।
किंतु मैं फिर भी रहा हूँ आँसुओं में झूम
आज पथकी मुश्किलों से क्यों डरूं बोलो ?
लग रहा है जब मधुर तूफान का संगीत
चाह मंजिल की जिन्हें, वे रुक नहीं पाते !
आपदा के सामने वे झुक नहीं पाते,
नियति कितना ही दबाये आदमी को पर
चिन्ह जीवन के कभी भी लुक नहीं पाते,
राह हो प्रतिकूल कब परवाह है उन को,
हो विधाता भी भले ही भाग्य के विपरीत

---

चोटों में उसे अपने अन्तिम अरमान पिसते हुए लग रहे थे। वह रो रही थी—रोये जा रही थी-अपने भाग्य पर निष्ठुर संसार पर और सब से अधिक अपने बच्चे की गहरी नींद पर जो उसकी चीखें सुन कर उठ नहीं रहा था।

(शेष सफा २७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सफा २६ से आगे

आखिर वह पागलों की तरह उठी–अपने बच्चे को उठाया तथा जमुना के किनारे २ चल पड़ी–वह अपने बालक को एक सुन्दर सा बिछौना देना चाहती थी जिस में वह सुख से सो सके। वह सोचती जा रही थी–याचनाओं से लड़ती जा रही थी— पर फिर भी वह पराजिता थी—जो सदा २ के लिये हार चुकी थी लुट चुकी थी—लेकिन फिर भी वह आगे ही आगे बढ़ती जा रही थी।

आखिर एक जोर की ठोकर लगी–जो शायद जीवन की ठोकरों से भी भयानक थी–उस का बच्चा यमुना की तूफानी लहरों में जा रहा था। वह चिल्ला उठी–

मेरे लाल ! यह वस्त्र तो लेते जाओ और उसने अपनी फटी धोती उतार कर यमुना में फैंक दी। यमुना की लहरें अट्टहास कर उठीं मान पर ममता की विजय हो चुकी थी। शव दूर बहुत दूर चली गई थी–उस के पीछे धोती निर्जीव प्राणी की तरह बाँह फैलाये उसकी ओर बढ़ गई–वह एकाएक हंस पड़ी–जोर से 'ठीक है मेरे बच्चे को लपेट ले सम्भाल ले पर तू बहुत पीछे है–मैं आती हूँ ठहर जा मेरे लाल ! और पागलों की तरह वह यमुना में कूद पड़ी एक हल्की आहट के साथ सब कुछ समाप्त हो गया।

प्रकृति चुप थी। जमुना की तूफानी लहरें अब भी चादरें बना २ गिर रही थीं–लेकिन दूर बहुत दूर एक पराजिता का निर्जीव शरीर किसी को बाहों में समेटने के लिए अनजानी मंजिल की ओर बढ़ रहा था।

# शालिहास हासावलि

## आधुनिक शिक्षा (चौपदे)

'मैट्रिक' मरने से बचे; बी. ए. बने बेहाल
एम. . मरणासन्न हैं यह शिक्षा का हाल

हम कहें क्या वास्तविक शिक्षा इसे !
या कहें दौर्बल्य की भिक्षा इसे ?
चाहने ऐनक लगे जब छात्र ही
उचित कहना अन्धता दीक्षा इसे।

जो बना दे अन्ध; नर को नेत्र से।
जो सिखाई जाती हो बस वेत्र से।
कहना है 'शिक्षा' उसे करनी प्रबल
देखना, भारत में शिक्षा क्षेत्र से ॥

जो न मन के ही लिए उपयोगी है
जो न तन के ही लिए उपयोगी है।
लाख बेकारों को सँख्या रो रही—
जो हैं शिक्षित; किन्तु तन मन रोगी हैं॥

हाथ का उपयोग जिस में है नहीं।
माथ का उपयोग जिसमें है नहीं ॥
साथ वह जीवन का कैसे दे भला–
आधुनिक शिक्षा में बल वह है नहीं

बीस साल पढ़ते रहे, गिना न दिन औ रात
निज भाषा में किंतु हा। कर सकते न बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# होली में मुझ पर क्या बीती ?

श्री सरोज मुलतानी झज्जर (रोहतक)

स्वतन्त्र भारत में हमारे लिए होली का त्योहार भी विशेष महत्व रखता है। देश की आर्थिक दशा दयनीय हो जाने के कारण इस की महत्ता शिथिल होती जा रही है। स्वतन्त्रता से पूर्व इस त्योहार पर सहस्रों रुपये व्यय कर के इस की महत्ता का प्रमाण दिया जाता था। आर्थिक विषमता के कारण आबाल-वृद्ध आज इस पर्व को समुचित ढंग तथा विविध रंग से नहीं मना सकता; बच्चे को जो रंग एक आने में सुलभ तथा दो दिन के लिए पर्याप्त होता था वही आज आठ आने में भी दुर्लभ हो गया है अतः सर्वसाधारण-जन इस ओर से उदासीन हो जावें तो कोई आश्चर्य नहीं।

निज भाषा भूषा तजी तजा गेह का नेह
फिर भी पेट न भरसकें इस शिक्षा पर खेह
मैट्रिक में आंख पर ऐनक चढ़ी,
और बी० ए० तक हुए बेहाल हैं।
एम० ए. में पीठ झुक, बन गई कमान
पिचक कर बन गए गुफा से गाल हैं।
और 'वाइफ' बन्ध गई पल्ले कि जब
हो गई लाइफ भी इक जंजाल है।
आज के शिक्षित युवक को देख
ज्ञात होता; हिन्द क्यों कँगाल है?
—शालिहास

किन्तु मानव मस्तिष्क बड़े २ आविष्कार कर रहा है, अग्नि वायु, जल, आदि देवता माने जाने वाले देव भी उस की आज्ञा तथा निर्देश पर हाथ बांधे खड़े हैं। आज वही खोपड़ी बिना रंग के होली भी खेलने में समर्थ हो गई है।

गत वर्ष मैं रैनक बाजार जालन्धर में से गुजरता हुआ बस्ती शेख अपने घर जा रहा था कि इतने में एक अधेड़ आयु व्यक्ति ने अत्यन्त दीनभाव में प्रार्थना की कि बाबू जी जरा तकलीफ करना....। यह बोरी जरा हाथ लगा कर उठवा दीजिए। मैं ने उस महापुरुष की आयु तथा भार की ओर साधारण दृष्टि से देख कर हाथ लगवा देना ही उचित समझा।

एक बोरी ही थी; मैंने दोनों हाथों से उठवाने का प्रयत्न किया, बोरी के भीतर छिपे बैठे लड़के ने एक दम हू हा कर दिया; मेरे होश इस बेजान बोरी में जान आने से गुम हो गए; मैं एक दम पीछे की ओर सरका, इधर उधर दुकानों पर बैठे दुकानदार तथा तमाशाई लोग खिलखिला पड़े। मैं लज्जित होकर मुँह लटकाए अपने मार्ग की ओर अग्रसर हुआ। सोचता गया कि बिना मूल्य के होली का रंग भी खूब चढ़ा है। परन्तु अब किसी को बोरी नहीं उठवाऊंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


क्रमागत

## उषा आमन्त्रण

(श्री शान्त शास्त्री शालिहास सिरसा)

ऊषा अबीर बरसाती है।
कर दिया व्योम का उर रंजित
पल भर में मधुर, सहज सँचित
उंडेल दिया सौंदर्य कलश—
अपना औदार्य दिखाती है
ऊषा अबीर बरसाती है।
फूलों पर बिखरी ओस बिन्दु
मानों हैं शोणित शोण बिन्दु!
क्या चांद विरहिणी रात ही तो
नहिं रुधिर अश्रु ढरकाती है
ऊषा अबीर बरसाती है।
सरिता स्रोतों का स्वच्छ सलिल
कर रही ऊषा क्यों रक्त कलिल?
रंजित कर सारे अग जग को
क्या क्राँति पुकार सुनाती है
उषा अबीर बरसाती है!

(१०)

दिन धीरे २ उगता है।
अब शेष नहीं है रात रही,
लक्ष्य स्थल भी है दूर कहीं
यह सोच उठा जागृत यात्री
डग भरने में नहीं रुकता है।
दिन धीरे धीरे उगता है।
शिशुओं को नीड़ों में छोड़ा
ले 'प्रिय' को संग निकला जोड़ा
चिड़ियों का, बैठा खेतों में
अब दाना दुनका चुगता है
दिन धीरे धीरे उगता है
प्रिय से मिलने को आज विकल
मैं होता जाता हूं चंचल।
अब शीघ्र मिलूं 'प्रिय' से निश्चय
यह विरह, बहुत चिर सुगता है।
दिन धीरे धीरे उगता है। क्रमशः

## आप नहीं जानते कि

रोशनी एक जगह से दूसरी जगह झट पहुंच जाती है किन्तु इस की रफ्तार भी नियत है और वह है १ लाख ८६ हजार मील प्रति सैंकण्ड! राईफलकी गोली की गति लगभग १०९३ गज प्रति सैकण्ड है। चूंकि रोशनी तत्काल एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुच जाती है इस लिए शताब्दियों तक यही समझा जाता रहा कि रोशनी की रफ्तार नापी नहीं जा सकती किन्तु आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे भी नाप कर इस की उपरोक्त रफ्तार मालूम कर ली।

गत ३ हजार वर्षों में केवल भूकम्पों में १ करोड़ तीस लाख व्यक्ति मरे हैं!

सर्प एक छटांक से १० मन तक वजन का होता है। इस की लम्बाई डेढ़ बालिशत से ले कर १५ गज तक होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहानी

# जादू भरा शब्द

( श्री वी० ओसेवा )

लम्बी सफेद दाढ़ी वाला ठिगना बूढ़ा बेंच पर बैठा अपने छाते से बालू पर कुछ रेखायें बना रहा था !

जरा खिसक जाइये, उधर आते हुए पावलिक ने कहा और बेंच के किनारे बैठ गया।

बूढ़े ने मुड़ कर बच्चे के क्रोध से लाल चेहरे को देखा और कहा -

क्या बात है ? कुछ गड़बड़ है क्या ?

परवाह न कीजिये। आप को इस से क्या वास्ता ! बूढ़े को तिरछे निहारते हुए पावलिक ने पूछा।

मुझे कुछ वास्ता नहीं; लेकिन तुम चीख रहे थे, रो रहे थे और किसी से झगड़ा कर रहे थे....

हां, कर तो रहा था। लड़के ने नाराजगी के साथ बुदबुदाते हुए कहा। मैं बहुत जल्द घर से सदा के लिये भाग जाऊंगा।

'भाग जाओगे ?'

हां ! और इस के लिये सिर्फ लेनका जिम्मेदार है। पावलिक ने मुट्ठियां बांध लीं और कहता गया। अभी मैं ने उसकी खूब मरम्मत की है। मुझे अपना एक भी रंग नहीं देती, जब कि उसके पास बहुत से हैं।

नहीं देती ? लेकिन क्या वह ऐसी बात है जिस से तुम घर से भाग जाओ ?

बात इतनी ही तो नहीं है, दादी ने सिर्फ एक गाजर के लिए मुझे रसोई घर से खदेड़ा, और वह भी भीगे पोतने से, पोतने से....'

पावलिक के नथुने बोल रहे थे और वह रुआँ सा हो गया था।

यह मामूली बात है। बूढ़े ने कहा ! एक आदमी तुम्हें झिड़कता है; दूसरा तुम्हारे साथ अच्छा सलूक करता है।

मेरे साथ कोई अच्छा सलूक नहीं करता पावलिक ने जोर से कहा। मेरा भाई नाव चलाने जाता है। वह मुझे अपने साथ नहीं ले जाता मैंने उस से कहा अच्छा हो कि मुझे भी ले चलो। मैं सब जगह तुम्हारे साथ साथ रहूँगा। मैं डांड हटा कर रख दूंगा और खुद नाव में बैठ जाऊंगा।

इतना कहते हुए पावलिक ने बेंच पर घूँसा मारा और खामोश हो गया।

तो तुम्हारा भाई तुम्हें साथ नहीं ले जाता।

लेकिन आप क्यों सवाल पर सवाल पूछे जा रहे हैं ?

अपनी दाढ़ी सहलाते हुए बूढ़े ने कहा।

शेष सफा ३१ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



सफा ३० से आगे

मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ। एक जादूभरा शब्द है।

पावलिक गर्दन उठा कर बूढ़े को देखने लगा। उस का मुंह खुला हुआ था और आँखों में उत्सुकता थी।

मैं तुम्हें वह शब्द बता दूँगा! लेकिन याद रखो। इसे शांति के साथ कहना चाहिये और जब तुम यह शब्द कहो; तो जिस से कह रहे हो; सीधे उसे देखते रहो। याद रखो, मुलायम ढँग से बोलो और सीधे उसे देखते रहो—'

वह शब्द क्या है?

बूढ़ा झुक कर अपना मुंह लड़के के कान के पास लेगया। उसकी कोमल दाढ़ी पावलिक के गाल को छू रही थी। उस ने फुसफुसाते हुए कुछ कहा और इस के बाद जोर से कहा:

यही जादूभरा शब्द है। लेकिन यह बात याद रखो कि इसे किस तरह कहना चाहिए।

'कोशिश करूंगा' पावलिक ने मुस्कान बिखेरते हुए कहा। मैं अभी ऐसा करूँगा। वह उछल कर खड़ा हो गया और घर की तरफ भागा।

लेना मेज के पास बैठी कोई ड्राइंग बना रही थी। हरा नीला और लाल रंग उस के सामने रखे थे।

जब उस ने पाविलक को देखा, तो जल्दी जल्दी उन्हें अपनी तरफ समेट लिया और उन के ऊपर अपने हाथ रख लिये।

बूढ़ा झूठ कह रहा था। लड़के ने सोचा इस से वह खीझ गया। भला ऐसी लड़की जादूभरे शब्द को क्या समझेगी।

पावलिक धीरे धीर अपनी बहन की तरफ गया और बांह पकड़ कर हिलाई। उस ने मुड़ कर देखा। उस की ओर निहारते हुए लड़के ने नम्रता के साथ कहा-

· लेना, मेहरबानी कर के एक रँग मुझे दे दो।

लेना भौचकी सी आँखें फाड़े ताक रही थी। उस ने मुट्ठी खोल दी और हाथ उठाते हुए कुछ अचकचा कर कहा-

तुम कौन सा रंग चाहते हो!

नीला, पावलिकने संकोच के साथ कहा।

उस ने रँग ले लिया; अपने हाथ में लिए रहा और कुछ देर तक कमरे में इधर-उधर टहलता रहा!

इस के बाद बहन को लौटा दिया। उसे किसी रँग की जरूरत न थी। वह तो बस जादूभरे शब्द की बात सोच रहा था।

मान लो कि मैं दादी के पास जाऊं। वह इस समय खाना बना रही है। वह मुझे बाहर निकल जाने को कहेगी या नहीं?

पावलिक ने रसोई घर का दरवाजा खोला। (सफा ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भारतीय वैज्ञानिक सी० वी रमन

## जिन्हों ने लेनिन पुरस्कार जीत कर भारत की ख्याति में वृद्धि की है !

जिन लोगों ने सँसार में भारत की ख्याति फैलाई है; उन में माने हुए भौतिक विज्ञान शास्त्री तथा नोबल पुरस्कार विजेता डा० चन्द्र शेखर वेंकटरमन भी हैं। उनका कार्यक्षेत्र विज्ञान है और १९३० में नोबल पुरस्कार जीत कर उन्होंने विज्ञान के संसार की नजरें भारत पर केन्द्रित करा दीं। अब फिर उन्हों ने राष्ट्रों के बीच शांति सवर्धन के लिए लेनिन पुरस्कार प्राप्त कर भारत की ओर सब की दृष्टि आकृष्ट की है।

यह महान् सम्मान प्राप्त करने वाले का विचार है कि उन्हें शायद निम्न कारणों के लिए इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। प्रथमतः वह विज्ञान के क्षेत्र में काम करते हैं, दूसरे वह अपने वैज्ञाकिक ज्ञान को फौजी उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल में नहीं लाते। तीसरे वह हमेशा रचनात्मक उद्देश्यों की जगह अन्य चीजों में विज्ञान का दुरुपयोग किये जाने के विरुद्ध जोरदार ढंग से आवाज उठाते हैं और फिर वह तमाम जनगण के मध्य मित्रता और पारस्परिक सद्भाव बनाने का जोरदार समर्थन करते है। स्वयं डा० रमन के अनुसार एक और कारण यह है कि उन की मातृभूमि भारत ने हमेशा से दृढ़तापूर्वक और [illegible] में शांति [illegible] किया है।

डा० रमन के लिए तीन बातें बहुत ही विशेष रही हैं। वे ये हैं : अपने काम में सफलता। यह उन्हें बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध हुई है और इस ने उन्हें सदा अपार आनन्द प्रदान किया है। अन्य दो को वह दो स्वतन्त्रताएं का नाम देते हैं और वे हैं इच्छा अनुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता और नापसंद का काम न करने की स्वतन्त्रता।

डा० रमन की आयु ६९ साल की है; फिर भी वे स्फूर्ति से काम करते हैं और जरा भी विश्राम नहीं करते। वस्तुतः वह काम और विश्रान्ति के बीच भेद नहीं करते। वह निरंतर खोज कार्य सँग्रहालय;प्रयोगशाला बगीचा और प्रकाशनों के साथ व्यस्त रहते हैं। उनके पास एक बढ़िया पुस्तकालय, दिलचस्प संग्रहालय, फूलों के अनगिनत पौधे और बढ़िया वर्कशाप है। और निश्चय ही सब से महत्वपूर्ण स्थान उन के निजी कर्मचारियों के दल का है जो उत्साही है और हमेशा मुस्कान साथ लिए रहते हैं।

डा० रमन के विचार में सँसार में शान्ति बढ़ाने में वैज्ञानिकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय है। उन की धारणा है, [illegible] राजनीतिज्ञ अपनी निर्धारित भूमिका

शेष सफा ३६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पँजाबी बुझारतें

(१) मां जम्मी पहिलां
बापू जम्मियां पिच्छों
बापू ने अख मटकाई
विचों दादी निकल आई
२ बीजो रोड़ जम्मे झाड़
लगे निम्बू खिड़े अनार
३ आड़ भमाड़ मेरी मासी बसदी
जद मैं जावां खिड़ खिड़ हसदी
४ हरी सी मन भरी सी
नाल मोतियां जड़ी सी
लाला जी दे बाग विच
दुशाला लई खड़ी सी
५ हरी हरी लाल लाल
मियां करे हाल हाल
६ इक कुड़ी दे ढिड 'च तेड़
७ तखानी, लोहारी संद मिले
मिले जफीयां पा के
खोह दाढ़ी पट मुच्छां
छडे नग बना के
८ साकाँ दे घर साक आए
मिले जफीयां पा के,
खोह दाढ़ी पट मुच्छां
घल्ले नंग बना के !
९ उच्चे टिब्बे सिर मुनाया
रुढ़दा रुढ़दा घर नूं आया
१० इक बात करतारो पावे

# हंसते हंसते जीना

नौकर—बीबी जी, डाक्टर साहब आये हैं ?

मालकिन—(झुंझला कर) चाहे कोई भी आये, उस से कह दो कि मेरे सिर में दर्द हो रही है; मैं नहीं मिल सकती !

जज—(चोर से) तुम ने इस भले आदमी की जेब क्यों काटी थी ?

अपराधी—यह देखने के लिए कि मेरी कैंची तेज है या नहीं !

रमेश—वह देखो सामने कबूतर बैठा है, या कबूतरी !

महेश—यह जानने का एक ही उपाय है

रमेश—वह क्या ?

महेश—थोड़ा दाना डाल कर देख लो यदि वह खागया तो समझो कबूतर है और यदि खा गई तो समझो कबूतरी है ।

---

सुन वे भाई हकीमां
लकड़ियां चों पानी कढ़ां
चुक बनावां ढीमां ।
११ हरी डण्डी सुरख बाणा
बख्त पियां चूरण खाना ।
१२ लाल सूहो पोटली
मैं वेख वेख खुश होई ।
हथ लगा ते पिट्टन लगी
नी अम्मां मैं मोई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बुढ़िया चूल्हे से गरम गरम केक निकाल रही थी।

पौत्र दौड़ता हुआ उस के पास गया और दादी के गले में अपनी बाहें डाल कर उसका झुर्रियों भरा चेहरा अपनी ओर कर लिया और उस की ओर देखते हुए फुसफुसा कर कहा -

'दादी; मेहरबानी कर के थोड़ी सी केक मुझे दो।

दादी सीधी हो गई। उस की एक एक झुरी में; उस की आखों और मुस्कान में जादू भरा शब्द चमक रहा था।

गरम केक, गरम केक चाहते हो, मेरे छौने! सब से बढ़िया पूरी केक को उठाते हुए उस ने कहा -

पावलिक खुशी से और दादी के गालों पर चुम्बनों की वर्षा करने लगा।

जादूगर! जादूगर! बूढ़े की याद कर पावलिक मन ही मन कह रहा था।

भोजन के समय पावलिक ऐसा शांत था जैसा कभी न रहता था। उस का भाई जो कुछ कहता; उसे शांति के साथ सुनता।

जब उस के भाई ने कहा कि वह नाव चलाने जाएगा तब पावलिक ने हल्के से उस का कन्धा छूते हुए नम्रता के साथ कहा -

मेहरबानी करके मुझेभी साथ ले चलिये।

भोजन करने वाले सभी लोग अचानक मौन हो गये। भाई ने अपनी भौंह ऊपर उठाई और मुस्कराया।

ले जाओ, बहन ने अचानक कहा। इस से तुम्हें कोई परेशानी न होगी।

मेहरबानी करिये, पावलिक ने अनुनय के साथ कहा।

उस का भाई खूब जोर से हंस पड़ा, पावलिक की पीठ थपथपाई; उस के बाल सहलाये और कहा -

अच्छा मुसाफिर! तैयार हो जाओ।

जादूभरा शब्द सहायक रहा। उसने फिर काम किया।

भोजन समाप्त हुआ। पावलिक उछल कर खड़ा हो गया और उस बूढ़े की तलाश में दौड़ा। लेकिन बूढ़ा अब वहां न था। बेंच खाली पड़ी थी। वहां उस ने बस कुछ समझ में न आने वाली लकीरें खिंची हुई देखीं जो बूढ़े ने बालू पर छाते से बनाई थीं!

### बड़ा कौन है?

जिसे कोई दुःखी न कर सके, जिस का कोई अपमान न कर सके; जिसे आवश्यकता नहीं कि कोई आकर मनाए, जिसे इस बात की परवाह नहीं कि कोई उसे आगे बिठाए, जिस के दिल में बदले की भावना नहीं, क्लेश नहीं, जो शत्रु का भी बुरा नहीं चाहता जिसे क्रोध नहीं सताता, जिसकी वाणी में मिठास, आंखों में सहानुभूति की चमक और मुख पर तेज है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गृह विज्ञान

वस्त्रों के दाग दूर करने के उपाय

दाग निकालने की विधि निम्न प्रकार है क्रम इस प्रकार है क्रमशः—किस चीज का दाग ? किस कपड़े पर ? किस से दूर होगा;

(१) स्याही सूती नींबू और नमक—

दाग को नीबू और नमकसे गोला कीजिए और धूप में डाल दीजिए। साबुन के फेन से धो डालिए।

स्याही रंगीन कपड़ा और नम.. अमोनिया साल्फाइड—

दाग पर अमोनिया साल्फाइड लगाइये और पानी से धोइये। नींबू का रस लगाइये।

२ चाय सूती कपड़ा बोरेक्स और उबलता हुआ पानी—

दाग पड़ी हुई जगह पर बोरेक्स लगाइये और उस पर उबलता हुआ पानी डालिए! यदि दाग ताजा हो तो ठण्डे पानी से भी निकल जाता है।

३ डामर, रेशमी सूती और ऊनी पेट्रोल—

जरासा पेट्रोल निकाल कर दाग पर लगा दीजिए। डामर उस में घुल जाएगा। उस के बाद पानी और साबुन से धो डालिए।

४ तेल, घी और मक्खन रेशमी, ऊनी और सूती—

गरम पानी और साबुन गरम पानी और साबुन से धो डालिए।

५. खून रेशमी, ऊनी और सूती कुनकुना पानी और अमोनिया—

कुनकुने पानी में अमोनिया की कुछ बून्दें डाल कर उसमें दाग पड़े हुए कपड़े का हिस्सा धो डालिए।

६. बूट पालिश (काला) रेशमी; सूत तेल

दाग पर मसलकर लगाइए. कुनकुने पानी और साबुन से धो डालिए।

बूट पालिश (कत्था रंग) रेशमी ऊनी और आक्जेलिक एसिड और अमोनिया—

आक्जेलिक एसिड लगा कर अमोनिया लगाइये। दो तीन बार इसी तरह लगाइये।

७ मूत्र सूती सौफ सायट्रिक एसिड—

कुनकने पानी और साबुन से धोइये। स्पंज से एसिड लगाइये।

---

देहाती—सूर्य किस ओर से उदय होता है ?

शहरी—यह तो मूर्ख आदमी भी बता सकता है।

देहाती—तभी तो मैं तुम से पूछ रहा हूँ।

अध्यापक—विटामिन सी किस चीज में अधिक होता है।

विद्यार्थी जी लाल मिर्चों में।

अध्यापक मूर्ख कहींका मिर्चों में भी कहीं विटामिन होते हैं।

विद्यार्थी मिर्चों का एक चम्मच मुंह में डालकर देखिये सी सी निकलती है कि नहीं ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# होली

आई है आज होली फिर से आने दो
रँग भरी प्यालियों को जिंदगी में लाने दो
रंग ऐसा हो पक्का जो उम्र भर न छूटे
इन्सान इन्सान में प्रीति नई लाने दो।

सफा ३० से आगे

अदा करते रहे। अब वैज्ञानिकों को और ज्यादा सक्रिय भाग विशेष उत्तरदायित्व के साथ वहन करना है क्योंकि असल में ये विज्ञान के ही फल हैं जिन का दुरुपयोग किया जा रहा है।

सर्वोपरि डा० रमन की देशभक्ति और साथी वैज्ञानिकों के और भावी पीढ़ियों के प्रति प्यार असीमित है तथा उस पर कोई शंका नहीं कर सकता। यह इस तथ्य से देखा जा सकता है कि उन्हों ने अपने सारे जीवन की आय जो लाखों रुपयों की होगी, बँगलौर नगर के रमन अनुसँधान संस्थान के अन्दर वैज्ञानिक अनुसंधान के विकास के लिए अर्पित कर दी है और उन्हें आशा है कि एक दिन आयोग जब यह अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बन जायेगा। लेनिन पुरस्कार लेने तथा पुराने दोस्तों से जिन से वह १९२५ में अपनी प्रथम सोवियत रूस यात्रा के दौरान मिले थे, अपने सम्पर्कों को ताजा बनाने के लिए डा० रमन शीघ्र मास्को जायेंगे।

# फारम ४

[स्वामित्व तथा अन्य बातों का विवरण]

१. प्रकाशन का स्थान : जालन्धर
२. प्रकाशन का समय : प्रत्येक मास की ७
३से६ मुद्रक, प्रकाशक : लाल चन्द हितैषी
सम्पादक तथा स्वामी का नाम

| | |
|---|---|
| जाति | भारतीय |
| पता | १३७ चहार बाग जालन्धर शहर |

मैं लाल चन्द हितैषी घोषणा करता हूं कि जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास हैं उपर्युक्त विवरण ठीक है। तिथि १-३-५८ हस्ताक्षर लाल चन्द हितैषी (प्रकाशक)

# ख्याल

वीर को आन का; कायर को जान का; नाविक को तूफान का, गायक को तान का, कंजूस को मेहमान का, मुसाफिर को सामान का; औरत को गुमान का; विद्यार्थी को इम्तहान का, गरीब को पकवान का, अमीर को शान का, भिखारी को दान का, व्यापारी को नुकसान का भक्त को भगवान का, मुसलमान को कुरान का; किसान को लगान का, पंछी को उड़ान का शराबी को सुरापान का; प्रोफेसर को बखान का कवि को स्वाभिमान का।

स्नेहिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

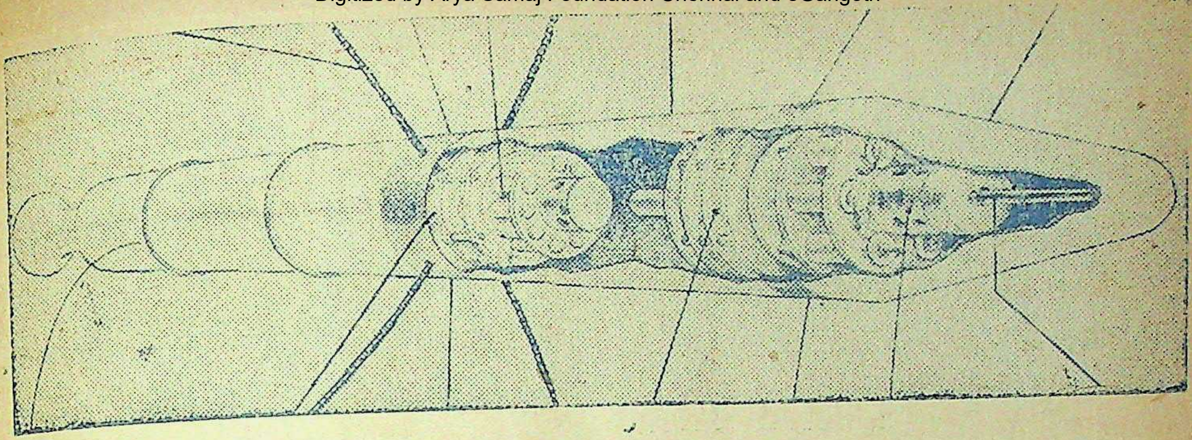

ऊपर--अमेरिकन स्पुटनिक १९५८ ल्फा का मान चित्र।

सामने— शिपिंग पोर्ट ऐटम प्लांट का कंट्रोल रूम। यहां अणु शक्ति से बिजली पैदा की जारही है।

नीचे— ये हैं गौरवान्वित तीन अमेरिकन वैज्ञानिक जिन्हों ने १९५८ ल्फा उपगृह के निर्माण में सहयोग दिया। एक दूसरे उपग्रह का प्रेस कान्फ्रेंस में प्रदर्शन करते हुए! बाईं ओर से डा० विलियम एच पिकरिंग; डा० जेम्ज वान एलन तथा डा० वर्नेहर वान वरौन।

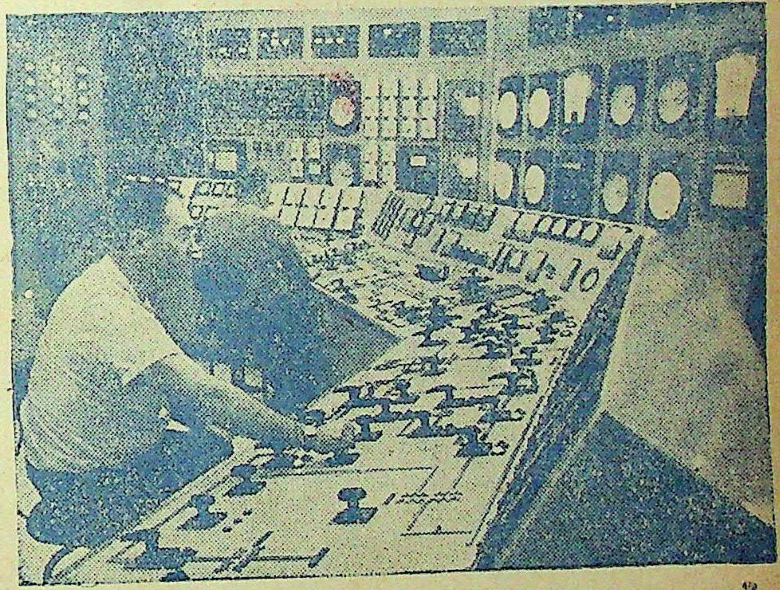

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


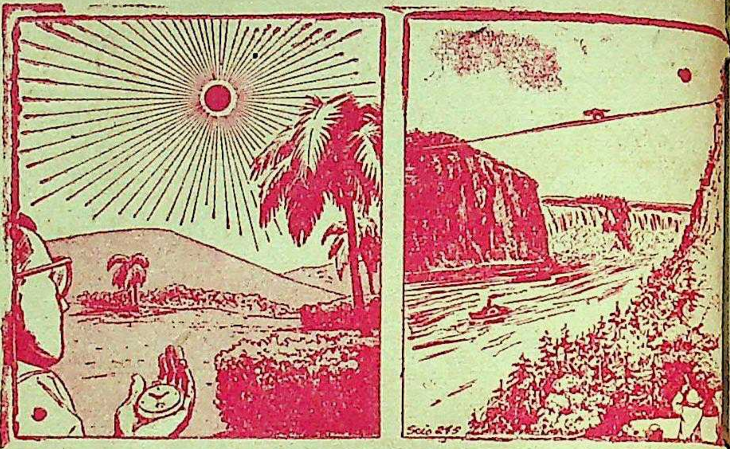

१. सूर्यग्रहण अधिक से अधिक ७ मिनट ४० सैकण्ड तक रहता है। यह एक्वेटर पर संभव है। ७१७ से अब तक बीस जून १६५५ को ७ मिनट आठ सैकंड तक ग्रहण लगा जो फिलिपाइन्ज में देखा गया !

२. जीन फ्रांक्वायस गरेवलेट नामक फ्रांसीसी ने ३ इँच मोटे रस्से पर ११ सौ फीट लम्बी न्यागरा प्रपात को १६० फीट की ऊंचाई से ३० जून अठारह सौ ५६ में पार किया।

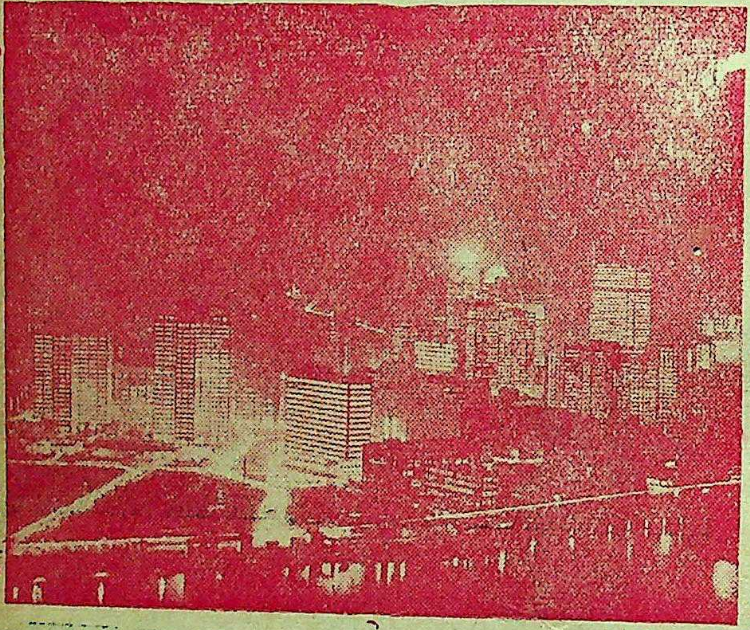

पैनिनस्लवानिया के पि
बर्ग नगर में अणुशक्ति से पै
की गई बिजली से नगर प्रकाशि
है।

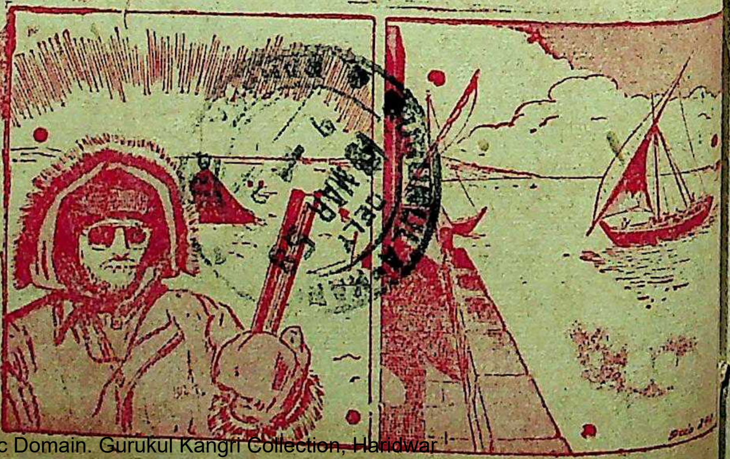

१. अमरीकी वैज्ञानिकों ने एन्टार्कटिक का तापमान नापा है जो शून्य से एक सौ दो दर्जा फार्नहाइट कम है।

२. कैस्पियन सागर नहीं वास्तव में दुनिया की सबसे बड़ी झील है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

वार्षिक मूल्य ७ ]    [ पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका ]    [ एक प्रति १० आने

७, एप्रिल '५८

सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी

शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित !

जो कुछ कर मरते है !

विली पोस्ट नामक अमेरिकन उड़ाके ने १६३३ में १५ जुलाई से दुनिया के गिर्द पहली बार विनी मेई वायुयान में ११५ घण्टे ३६ मिनट और ३० सैकण्ड में ४८ हज़ार फीट की ऊँचाई पर उड़ते हुए चक्कर काटा। वह आक्सीजन के अभाव और वायु मण्डल के दबाव का मुकाबला करने के लिए एक विशेष सूट पहने हुए है। उस की मृत्यु ३५ में एक दुर्घटना में हुई।

THE "Prakash"

JULLUNDUR CITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## ★ सचित्र समाचार ★

**सामने**

सोने के रंग का यह कैरेट हीरा सँभवतः विश्व का सब से कीमती है इसका मूल्य २८०० डालर प्रति कैरेट है ।

**ऊपर**

१८७५ में बना 'गरेवविले' स्टीम इजंन जो विश्व का प्राचीनतम औटोमोबाईल है अभी तक अच्छी चालू हालत में बृटेन में मौजूद है ।

**सामने**

घना राज्य के अमेरिका में प्रथम राजदूत डेनियल एहमलिंग चेंपमैन राष्ट्रपति आईजनहावर को अपने नियुक्ति पत्र प्रस्तुत करने के पश्चात वार्तालाप करते हुए ।

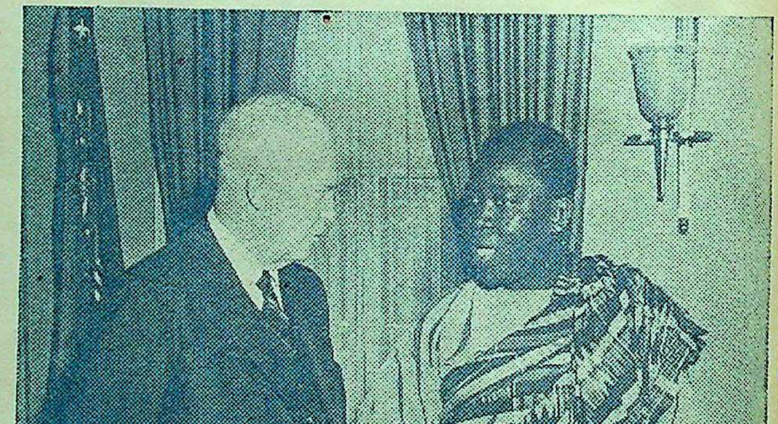

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब उत्तर प्रदेश, बिहार हिमाचल पैप्सू भूपाल और हैदराबाद के स्कूलों के लिए स्वीकृत

# प्रकाश

॥ पञ्जाब की एकमात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका ॥

वर्ष ५३ क्रमांक ५१ | जालन्धर ७ एप्रिल '५८ | भाग ६ अँक ४ हिन्दी

## ★ कहां क्या है ? ★

कविताएँ
- उठो हिन्द के हे सपूतो — पृष्ठ ११
- चलो समय के साथ — १६
- दो मुक्तक — १०
- सियासी माहिया — २१
- उषा आमंत्रण — २५
- चार मुक्तक — ३१
- नई आवाज़ हूँ — ३४

कहानियां
- सोने का वृक्ष — १२
- पिकनिक का प्रसाद — २६

लेख
- चीनी यात्री फाहियान की भारत यात्रा — ६
- राष्ट्र के भावी नागरिक — ८
- मनोवैज्ञानिक शिक्षण — १६
- हमें भविष्य बुला रहा है — १८
- मानवता को नहीं बेचूँगा — २०
- धर्म का सार — २१
- असफलता से सफलता की ओर — २३
- कृत्रिम उपग्रह कैसे उड़ता है ? — २४
- भारत पर पहला विदेशी आक्रमण — २८

तथा स्थायी स्तम्भ यथा फूल और कांटे, अपनी बोली 'च शिक्षा समाचार, समाचार सार, सम्पादकीय विचार आदि

## ★ कांटे प्यासे हैं ! ★

कांटे प्यासे है कलियो, दिल चीर दो
अपना खून बहा उनके हित नीर दो

फूल और कांटे मधुबन के मीत हैं
कोमलता-कटुता के दोनो गीत हैं
दोनों रस लेते अपने अनुराग में
दोनो की मनमानी न्यारी प्रीत है
बसन्त के नाते ही कलियो धीर दो
कांटे प्यासे हैं कलियो दिल चीर दो

पहन कँटीला हार डार लहरा रही
उपवन के हित फाग-राग बिखरा रही
शान्ति शान्ति पाती है उनकी छांह में
जीवन को मस्ती अपने पहिरा रही
मधु के प्याले नहीं हृदय की पीर दो
काँटे प्यासे हैं कलियो दिल चीर दो

काटों की कटुता बदलो निर्माण में
प्राण डाल दो तुम अनगढ़ पाषाण में
पाषाणी काया का हो उपयोग भी
बसे प्यार की छांह निठुर उस प्राण में

भावी कलियों के हित युद्ध समीर दो
कांटे प्यासे हैं कलियो दिल चीर दो

—जयदेव 'कमल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ★ अपनी बोली 'च ★

भूत प्रेत बारे अन्ध विश्वास साडे देस दे अनपढ़ लोकाँ 'च ही नहीं पश्चिमी देसां दे पढ़े लिखे लोकां 'च भी मौजूद है; ते ओह भी साइंस दी ऐनी उन्नति दे एस युग 'च। इस गल ते मत भेद चलिया आ रिहा ए ते शायद अगे भी चलदा रहे कि सच-मुच भूत-प्रेत नाँ दा कोई चीज है भी या एह कोरी कल्पना या वहम ई ए? भूत प्रेत'च विश्वास रखन वाले थुआनूँ अजेहीआँ अपने नाल या दोस्तां मित्रां नाल बीतियां घटनावां सुनानगे जिन्हां ते विश्वास करन नूं जी न मनदियाँ होयाँ भी कदे २ ओहनाँ व्यक्तियां नूँ झूठा समझना मुशिकल हुन्दा ए। अजेहे शख्स भी मिलनगे जेहड़े भूत-प्रेत अखीं वेखन दा दावा करदे हन। सानूँ भी अजेहे कई आदमीआं नूं मिलन दा मौका मिलिया ए जिन्हाँ भूत-प्रेत सम्बन्धी अपने नाल बितियां घटनावां सुनाईयाँ पर सानूं ओहनाँ घटनावां दे सच होन ते विश्वास नहीं आया। बेशक एह कहना भी मुशिकल ए कि ओह आदमी झूठे होनगे। भूत-प्रेत होन या न होन—एहनां बारे अन्धविश्वास दा होना बड़ा हानिकारक ते खतरनाक जरूर ए।

इक ताजी घटना ए कि पठान कोट लागे किसे पिंड 'च इक पति-पत्नी बारे ओहनां दे रिश्तेदाराँ नूँ भूत-प्रेत दे प्रभाव हेठ होन दा विश्वास हो गया ते ओह झाड़-फूँक करन वाले नूँ ओहनां दे इलाज लई सद लियाए। ओस पहलां लोहे दे सँगल नाल दोहां नूँ कुटिया ते फेर लाठी नाल। भूत-प्रेत ते पता नहीं ओहनां चों निकले कि नहीं पर दोहाँ दे प्राण अवश्य निकल गए। एस तरह दो मनुखां नूं जिन्दगी तों हथ धोना पिया ते ओस झाड़-फूँक करन वाले नूं भी शायद कानून दा डण्डा जीवित न छडे। एस घटना तों असीं एस नतीजे ते पहुंचदे हां कि एस गल दी लोड़ है कि लोकाँ नूं हर तरह दे अन्धविश्वासां तों मुक्त कीताजाए ताकि इहनां करके हो रहे अनर्थ नूं रोकिया जा सके।

—भाईया रेलू

## ★ फूल और कांटे ★

★ [पाठकों के प्रश्नों के उत्तर] ★

प्र०—डा० ग्राहम ने काश्मीर के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट सुरक्षा समिति को दी है उस पर अब क्या कार्यवाही होगी? —दाना नाथ जम्मूँ

उ०—सुरक्षा समिति की मीटिंग में दोनां पक्षों को सम्मति प्रगट करने का अवसर दिया जाएगा, और इस रिपोर्ट पर वाद विवाद के पश्चात कोई प्रस्ताव पास हो जाएगा।

प्र०—पूर्वी पाकिस्तान में गवर्नर द्वारा मुख्य मँत्री को डिसमिस करने और फिर गवनर के डिसमिस किए जाने आदि का जो तमाशा हुआ उसमें आप किस परिणाम पर पहुंचे है?

—महेश चन्द्र कलकत्ता।

उ०—इस परिणाम पर कि पाकिस्तान में अन्न, वस्त्र और कोयले आदि का अभाव तो था ही किन्तु अब अल्लाह के फज़ल से इन का भी अभाव हो गया है: कानून; शराफत; असूल न्याय नियँत्रण और सहिष्णुता।

प्र०—यदि पँजाब में गणतँत्र है तो जनता के विरोध की उपेक्षा कर असैम्बली भवन के निर्माण का निश्चय क्यों किया गया है?

—कमला देवी अम्बाला

उ०—गणतन्त्र नहीं षड़-यन्त्र' कहना सत्य के अधिक निकट होगा।

—★—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ★ शिक्षा समाचार ★

—१ अप्रैल से छठी कक्षा तक सरकारी स्कूलों में शिक्षा निःशुल्क कर दी गई है।

—११ हजार लोकल बाडीज़ स्कूल सरकार ने अपने प्रबन्ध में लिए हैं। इनपर २ करोड़ रुपये से ऊपर व्यय हो चुके हैं। कुल १६ हजार स्कूल हो गए हैं।

—१ अप्रैल से पंजाब में कुछ हाई स्कूल हायर सैकण्डरी स्कूलों में बदल जाएँगे।

—लुधियाना के इँजनीयरिंग कालेज के ३ छात्रों ने कई दिन से भूख हड़ताल कर रखी है।

—पँजाब विधान सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि दूसरी भाषा पँजाब में सच्चर फार्मूले के अनुसार ४वीं श्रेणी से और लड़कियों को ६टी कक्षा से और पैप्सू के स्कूलों में तीसरी कक्षा से पढ़ाई जा रही है। दूसरी भाषा में फेल होने वाले छात्रों को अगली श्रेणी में चढ़ाया जा रहा है। हिन्दी रिजन में गुरुमुखी की पढ़ाई अनिवार्य स्कूल में ५वीं कक्षा से पढ़ाई जारही है।

पं० पन्त के एक वक्तव्य के अनुसार रिजनल फार्मूले की शिक्षा सम्बन्धी धाराओं को राष्ट्रपति ने स्वीकृति देने से इन्कार नहीं किया।

—हिमाचल प्रदेश के स्कूलों में मैट्रिक तक शिक्षा निःशुल्क कर देने का प्रस्ताव टैरिटोरियल कौंसिल में पास हो गया है।

—कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय की संसद के निम्न सदस्य बनाए गए हैं श्री पाटिल आयंगर स्वीकार लोक सभा, जस्टिस टेकचन्द इ. ल. तेजा सिंह; डा० ए सी जोशी, डा० के. एल कृष्णन डा० सूर्य कान्त, डा० बी पी पाल, श्री आर सी खन्ना, रा० ब० सोहन लाल और गोस्वामी गणेश दत्त।

## ★ समाचार सार ★

—३ अप्रैल को पं० नेहरू ने चण्डीगढ़ में विधान सभा के भवन की नींव रखी। इस पर एक करोड़ रुपये से ऊपर व्यय आने का अनुमान है और इसका सारे राज्य में विरोध हो रहा है।

—रावी नदी के अपना मार्ग बदलने से १०२७६ एकड़ भूमि पाकिस्तान में चली गई है

—पँजाब में भीख माँगना अपराध घोषित कर दिया जाएगा।

—रूस ने प्रयोगात्मक विस्फोट बन्द कर देने की घोषणा की है।

—प्रथम अप्रैल को भारत की वायुसेना ने सिलवर जुबली मनाई।

### परिवर्तन

अफकार नामक एक प्राचीन नगर में किसी समय दो विद्वान रहते थे। उनके विचारों में बड़ी भिन्नता थी; वे एक दूसरे की विद्या की हंसी उड़ाते थे क्योंकि उनमें से एक आस्तिक था और दूसरा नास्तिक। एक दिन दोनो बाज़ार में मिले और अपने अनुयाइयों की उपस्थिति में ईश्वर के अस्तित्व पर वाद विवाद करने लगे। विवाद समाप्त होने पर वे एक दूसरे से विलग हो गए। उसी शाम को नास्तिक मन्दिर में गया और मूर्ति के सामने सिर झुका कर अपने पिछले पापों के लिए क्षमा याचना करने लगा। ठीक उसी समय दूसरे विद्वान ने भी जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता था अपने ग्रन्थ जला डाले—क्योंकि वह अब नास्तिक बन गया था। —खलील जिबान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ★सम्पादकीय विचार★

## माध्यमिक शिक्षा प्रणाली

इस वर्ष से कुछ हाईस्कूल हायर-सैकण्डरी स्कूलों में परिवर्तित हो रहे हैं कुछ आगामी वर्ष हो जाएँगे और शेष निकट भविष्य में। इस परिवर्तन के परिणाम स्वरूप लाखों रुपयों पर पानी फिर जाएगा और लाभ कुछ होगा नहीं, क्योंकि इण्टर का पहला वर्ष हाई स्कूलों के साथ जुड़ जाएगा और कालेज ३ वर्षीय डिगरी कालेज बन जाएँगे। फल स्वरूप हाई स्कूलों का व्यय बहुत बढ़ जाएगा और यूनिवर्सिटी को इण्टरकी परीक्षा से होने वाली आय से वँचित होना पड़ेगा। इस परिवर्तन से न तो शिक्षित नवयुवकों की बेकारी खत्म होगी और न आधुनिक शिक्षा की त्रुटियां ही दूर होंगी।

## फिर अंगरेजी

इस वर्ष से अँगरेज़ी को पुनः छटी कक्षा से अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाये जाने का निश्चय हो गया है। हम नहीं कह सकते कि ऐसा निश्चय करने की शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों को क्या आवश्यकता आपड़ी? सँभवतः यूनिवर्सिटी एजुकेशनका स्तर बहुत निम्न हो जाने के कारण ही अपना पहला निश्चय बदलने पर उन्हें विवश होना पड़ा है। किन्तु एक विदेशीय भाषा के सहारे हम कब तक राष्ट्रोत्थान के स्वप्न लेते रहेंगे? जब तक कि हम अपनी राष्ट्र भाषा को उसका उचित स्थान नहीं देते तब तक हम देश को ऊँचा नहीं उठा सकते।

## प्राईवेट स्कूलों की समस्या

सरकार ने अपने स्कूलों में छटी कक्षा तक शिक्षा नि:शुल्ल करके प्राईवेट स्कूलों के लिए एक बड़ी विकट समस्या उपस्थित कर दी है और वह यह कि वे जीवित कैसे रहें? यदि वे शुल्क न लें तो व्यय कैसे पूरा हो और लें तो सरकारी स्कूलों के मुकाबले में कैसे ठहर पायें?

पँजाब सरकार से आग्रह किया जा रहा है कि वह या तो प्राईवेट स्कूलों में भी निःशुल्क शिक्षाकी व्यवस्था करे या फिर अपना यह अदूरदर्शितपूर्ण पग वापिस ले ले।

## हिमाचल में मैट्रिक तक निःशुल्क शिक्षा

हिमचाल टैरिटोरियल कौंसिल ने अपने क्षेत्र के स्कूलों में मैट्रिक तक शिक्षा निःशुल्क कर देने का प्रस्ताव पास कर दिया है। हिमाचल में स्कूलों की संख्या बहुत थोड़ी है फिर भी इस निश्चय से भारी आर्थिक बोझ सरकार पर आ पड़ेगा और सँभवतः अब विद्यार्थियों की संख्या भी बहुत बढ़ जाएगी। तब या तो और स्कूल खोलना अनिवार्य हो जाएगा या फिर क्लासों में छात्रों की सँख्या अपरिमित हो जाएगी जिसका परिणाम इसके सिवाय और क्या होसकता है कि व्यवस्था बिगड़ जाए और शिक्षा का स्तर निम्नतम हो जाय।

## सरकारी पुस्तकें

पँजाब सरकार ने स्कूलों की पुस्तकें छापने का उत्तरदायित्व तो अपने ऊपर ले रखा है किन्तु उन की सप्लाई समय पर नहीं होती। इसका परिणाम यह है कि छात्र-छात्राओं को परेशान होना पड़ता है। क्या इस शिकायत को दूर करने का प्रयत्न किया जाएगा?

## अफ्रीका के ग्राहक नोट करें

कि जिन्हें शुल्क के बिल भेजे गए थे वे अपना बकाया शुल्क शीघ्र भेज दें। जिसे पत्रिका जारी न रखनी हो वह पिछला बकाया भेज कर सूचित कर दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# चीनी यात्री फाहियान ने भारत में क्या देखा ?

यह सर्वसम्मत बात है कि गुप्तकाल भारतीय राजनीति, साहित्य, चित्रकला आदि संस्कृति के सभी अंगों की उन्नति की दृष्टि से असाधारण रूप से आगे बढ़ा हुआ था। प्रथम चन्द्रगुप्त ने जिस गुप्त साम्राज्य की नींव डाली उसके उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त ने दिग्विजय द्वारा उसका विस्तार किया और समुद्रगुप्त द्वितीय ने उसका अधिक विस्तार तो किया ही साथ ही अच्छे शासन और कलाओं के प्रोत्साहन द्वारा देश को हर प्रकार से सुखी और समृद्ध बनाया। चीनी यात्री फाहियान बौद्ध धर्म के ग्रंथों और गाथाओं की तलाश में जिस समय भारत में आया, उस समय चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के नाम से राज्य कर रहा था। विक्रमादित्य की उपाधि चन्द्रगुप्त को विदेशी आक्रान्ताओं को परास्त करने के उपलक्ष्य में मिली थी। इतिहास लेखकों का मत है कि चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का राज्यारोहण ३७५ ई० में हुआ। फाहियान ने भारत में ४०५ ई० में प्रवेश किया। फाहियान ने भारत में घूम कर जो कुछ देखा उसे हम गुप्तकाल की समृद्ध दशा का चित्र समझ सकते हैं।

चीनी यात्री ने गुप्तों की राजधानी पाटलिपुत्र का बहुत ही उज्ज्वल चित्र खींचा है। अशोक के बनाए हुए महलों को देख कर वह इतना चकित हो गया, उसने लिखा कि वे महल मनुष्य के बनाए हुए मालूम नहीं होते। अशोक के वश में जो दैवी शक्तियां थीं महलों को उन्होंने ही बनाया होगा! पाटलिपुत्र के अतिरिक्त मगध के अन्य नगरों को भी फाहियान ने बहुत प्रशंसा की है। उसने वर्णन किया है कि वे शहर बड़े भी हैं और सुन्दर भी। नागरिक लोग धनी और प्रसन्न हैं। उसने लिखा है कि वे लोग मुझे धर्म मार्ग पर चलने के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हुए प्रतीत हुए।

यात्रियों के लिये स्थान-स्थान पर विश्रामालय बने हुए थे। रास्ते बहुत अच्छी हालत में थे। शहरों में धर्मार्थ चिकित्सालयों की उत्तम व्यवस्था थी। चिकित्सालयों के बारे में फाहियान ने लिखा है: इन में सब तरह के निर्धन और आश्रयहीन रोगी आते हैं, उन्हें तरह-तरह की बीमारियां होती हैं। उनकी भली प्रकार शुश्रूषा होती है। योग्य चिकित्सक उनका इलाज करते हैं! उन्हें आवश्यकतानुसार भोजन और औषध दिए जाते हैं। इस प्रकार उन्हें पूरा आराम दिया जाता है। रोगमुक्त होकर वे चिकित्सालय से चले जाते हैं। इतिहास लेखक विन्सेन्ट स्मिथ ने इस वर्णन का उल्लेख करके सम्मति दी है कि यह संदिग्ध बात है कि उस समय संसार में कहीं अन्यत्र भी चिकित्सा की इतनी सुन्दर व्यवस्था थी। यह व्यवस्था ईसाइयों की अर्वाचीन सेवा सम्बन्धी संस्थाओं का पूर्वरूप थी जिससे दानशील नागरिकों के चरित्र की उच्चता तो प्रतीत होती ही है, अशोक का अद्भुत प्रतिभा का भी परिचय मिलता है, सदियों पश्चात तक जिसका उत्तम प्रभाव देश पर बना रहा।

मालवा प्रदेश की समृद्धि देखकर फाहियान बहुत प्रभावित हुआ। उसको वहां प्रकृति के वैभव लोगों के सौम्य स्वभाव और शासन की मधुरता ने अपनी ओर आकृष्ट किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# राष्ट्र के भावी नागरिक

लेखकः डा० त्रिलोकी नारायण दीक्षित

राष्ट्र के यह भावी नागरिक हैं, इन पर देश की, भारत माता की, हम और आप की निगाह लगी हैं, आइये इन से आप का परिचय करायें। आज की कली कल के फूल के रूप में खिल जायेगी। आज ये अल्प वयस्क हैं कल जब हम और आप इस संसार से विदा हो जायेंगे तो ये हमारा आप का स्थान लेंगे। इस लिए इनसे अपरिचित रहना उचित नहीं।

देखिए रास्ते से चलिए। इस रास्ते का नाम महात्मा गांधी मार्ग है। पहले इसे माल-रोड कहते थे। इस चौराहे पर हलवासिया मार्किट की छाया में इस चिलकती धूप में फटी मैली नेकर नंगे बदन, बड़े २ बालों वाला, दुर्बल और कुछ लम्बा लड़का जो सुबह से चटपटे मटर, बढ़िया मटर, गरमागरम मटर, चिल्ला रहा है। इस का नाम जगन्नाथ है।

इसी जगह यह रोज खोंचा लगाता है। सुबह से शाम तक वह जब इतनी शक्ति के साथ मटरों का विज्ञापन करता है तब कहीं उसे धेली आठ आने मिलते हैं। वह,उसकी विधवा बीमार मां और छोटी बहन इस कमाई में पेट भरते हैं, उत्सव मानते हैं, दवा लाते हैं,कोठरी का किराया देते हैं, लकड़ी कपड़ा खरीदते हैं। सुबह से शाम तक उनका इसी तरह इस राज-मार्ग पर बीत जाता है। प्रातःकाल वह रात का बचा हुआ खाना खा कर आता है और फिर सायंकाल खोंचा बिक जाने पर घर में खाना नसीब होता है। दस वर्ष की कच्ची अवस्था में जब बड़े बड़े धनाढ्यों के लड़के लाडले ही बने रहते हैं; यह सर पर पेट का बोझ लादे हुए भूख से लड़ने में लगा रहता है। रास्ते पर बढ़िया बढ़िया कपड़े पहन कर आते जाते लोगों को देख कर उसका मन मसोस कर रह जाता है। वह भी साफ अच्छे कपड़े पहनने का अभिलाषी है लेकिन समाज के संगठन का अभिशाप तो इन्हें नहीं बढ़ने देता। माता ने नाम जगन्नाथ भले ही रख दिया था पर जगन्नाथ का आज तक जूते पहनने का शौक पूरा न हुआ। उसका दिल रोज न जाने कितनी तमन्नाओं की समाधि बन जाता है। देखिये सोचिये जगन्नाथ कितना बड़ा इन्द्रिय संयम करता है, कितना बड़ा योगी है। ऐसे उदाहरण आपको देशमें सैकड़ों नहीं करोड़ों मिलेंगे।

दूर मत जाइये यह देखिए इधर दसुआ है जैसा नाम वैसा काम। माता-पिता ने इसका नाम 'दास' रखा और प्यार में वह दसुआ हो गया है। देखिये फूल खिलने के पहले मुरझाया जा रहा है। उम्र है चौदह वर्ष की पर मालूम पड़ता है केवल १० वर्ष का। गाल बंगाल की खाड़ी बन रहे हैं। यह गर्मी भर हाथ में झोला, डोल, लोटा में पानी लेकर सबको पानी पिलाता फिरता है। एवज में एक पैसा पा जाता है। परन्तु वह भी सबसे नहीं। कुछ उसे अठन्नी दिखा कर कहते हैं एक पैसा काट लो बाकी पौने आठ आने दे दो। उसको दिन भर में २०-२१ पैसे से ज्यादा कभी नहीं मिले। शाम को जब वह अन्धी माता से कहता है कि माँ आज चार आदमी यों ही पानी पी गये नहीं तो चार पैसे और होते तो उसकी माँ कहती 'जाने दो तुम को पुण्य होगा उस जन्म में मिलेगा। देखिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिन्दुस्तान के गरीब कितने संतोषी और आशा-वान है। उस जन्म में भी धनी बननेकी लालसा उन्हें इस भुखमरी में भी नहीं छोड़ सकी। और पुण्य ? न जाने उनके उस पुण्य का हिसाब कौन मुनीम लोग रखेंगे ?

खैर जाने दीजिये। कहाँ तक आप यह देखेंगे सोचेंगे। जरा अपने बाईं ओर देखें यह अन्ध ६-७ वर्ष का बालक है। इसके जन्म की एक कहानी है। इसकी मां कहारिन थी अपने शहर में माता पिता के साथ रहती थी। चार घर चौका बरतन करती था। एक घर के बाबू की निगाह उस पर पड़ गई। दोनों के पांव फिसल गए। गर्भवती हो जाने पर उसने बाबू से कहा। उनका दिल दहल उठा। छः महीने की मेडिकल लीव लेकर घर चले गए। उसके माता-पिता ने घर से निकाल दिया। निराश्रित वह लखनऊ पहुंची। वहां एक अस्पताल में बच्चा हुआ और मर भी गया। तभी से उसका दिमाग खराब हो गया। भीख मांग कर पेट भरती है। बरामदों में सो रहती है। एक दिन वह रात को सो रही थी जाड़े के दिन थे। दुकानों को ताकने वाले दो पहाड़ी उसके पास आए। जगाया और बलात प्रसंग किया। नौ मास बाद यह बालक जन्मा वह भी अँधा लेकिन खैर वह दिन भर में चार छः पैसे मांग ही लाता है! किसी तरह दोनों नरक के कीड़ों का सा जीवन बिता रहे है! दिन भर यह इसी जगह दे अल्लाह के नाम पर दे राम के नाम पर कह कर पैसे के लिए हाथ फैलाए रहता है। पास से निकलने वाले बाबू लोग उस दिन कह रहे थे वह साला क्या दुनियाँ को बेवकूफ बना रहा है राम और अल्लाह दोनों के नाम पर सब को चकमा देकर पैसे लेता है! उनमें से कुछ ने उसे मुसलमान कहा, कुछ ने हिन्दू पर भाई मेरा तो ख्याल है कि वह न तो हिन्दू है न मुसलमान। उसकी जाति है भुखमरी उसके पिता है दरिद्रनारायण।

अब इधर देखिये। जी हां इस गांधी मार्ग के बाईं ओर। यह काफी हाऊस है। इसमें बाबू लोग दिन भर जमे रहते हैं। जैसे मधुमक्खियां शहद के छत्ते में! एक गया नहीं कि दूसरा आया यहां ये बाबू लोग आंखें ठन्डी पेट गरम जेब खाली करने के लिए आते हैं। इसी के सामने यह साइकिल स्टैन्ड है ठेकेदार को इन बाबू लोगों की बदौलत बड़ी लम्बी आमदनी होती है! तभी वह मनाता रहता है कि खुदा करे कि राष्ट्र के इन भावी नागरिकों को काफी पीने की लत और बढ़े। इसी ठेकेदार के यहां ८,६ छोकरे काम करते हैं! मैं सभी को तो नहीं जानता पर वह ६-१० साल का जो सांवला सा दुबला पतला बड़ी बड़ी आँखों वाला लड़का दिखाई देरहा ह उसे मैं जानता हूँ! वही है जुम्मन जिसे दिखाने के लिए मैं ने आपको इधर तकलीफ दी! तो जुम्मन यहां बाबू लोगों की साईकिल रखता है उनको साइकिल के नम्बर देता है। जुम्मन का घर ठेकेदार के पास है जुम्मन के वालिद रमजान कोई आठ महीने बीमार रह कर इन्तकाल कर गए। रमजान की बीमारी में उसकी औरत ने ठेकेदार से ५० रुपया कई किस्तों में दवाई के लिए उधार लिए। जुम्मन सात मास से नौकरी करके उस कर्ज को भुगता रहा ह। जुम्मन देखने में लड़का सीधा लगता है पर है बड़ा होशियार! बाबू लोगों से पाये हुए पैसों में से वह रोज चार छः आने बचा लेता है

(शेष सफा १० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और मां को लाकर देता है। यह बेईमानी उस के पेट की आग ने सिखाई। जुम्मन ने पहले पहले दिन जब इकन्नी दबा ली थी तब दिन भर उसका दिल धड़कता रहा कि कहीं यह चोरी खुल न जाय। लेकिन अब तो उसे बिल्कुल डर नहीं है। ऐसा न हो कि जुम्मन की हिम्मत खुलती जाये और एक दिन वह नामी चोर हो जाय।

अब इधर देखिये। काफी हाउस के सामने तिरंगी पताका लगी हुई नए माडल की कैसी सुन्दर कार रुकी हुई है। उस का नम्बर है १६८०। शायद किसी मिनिस्टर की कार है। उनके अतिरिक्त और कौन नये माडल की कार इस्तेमाल करेगा इस मँहगाई में? इससे साफ सुथरे कपड़े पहने हुए लड़के उतर रहे हैं ये— मिनिस्टर के लड़के, लड़के नहीं सुपुत्र हैं। इनके बाप ने किसी जमाने में लाठा जूता खाया था तपस्या की था। तभी मिनिस्टर हो पाये और उनके लड़के आज इस जनताकी पसीने की कमाई पर खरीदा हुई कार पर चढ़े घूम रहे हैं! ये भी अपने बाप; नहीं श्री मान पिता जी की तरह बड़े आदमी होंगे। इस लिए कि भारतवर्ष का यह तरीका है कि जिस का बाप बड़ा आदमी है उसके लड़के भी बड़े आदमी बनते है और जो गरीब भूखों मर रहा है जो पैसे पैसे के लिए हमारी और आप की घुड़कियां सहता है वह और उसके लड़के चोर बदमाश और जेबकट निकलते हैं। अभी जब बस स्टेन्ड पर एक लड़का जेब काटता हुआ पकड़ा गया। तो त्रिपुन्ड लगाये हुए एक पंडित जी चिल्ला उठे अच्छा यह तो हमारे मुहल्ले का लड़का है। इसका बाप भी तो साला जेब काटता है। बबूल से बबूल ही तो निकलेगा। तो हां ये मिनिस्टर के सुपुत्र हैं। इन्हें अच्छी से अच्छी तालीम, अच्छा खाना, अच्छा रहना सभी नसीब है। बड़े २ अफसर इनकी खुशामद करते हैं। बड़े २ उद्योगपति इन की वर्षगांठ पर इन्हें तोहफा में मोटर कार भेंट करते हैं। बड़े आदमी की भेंट भी बड़ी न हो तो क्या? जिस पार्टी या दावत में यह पहुंच जाते हैं उस में स्वार्थी और पेशेवर खुशामदी लोगों में इन्हें अपनी मेज पर लेजा कर बैठाने की होड़ लग जाती है। आप ही बताइये ये बड़े आदमी न बनेंगे तो क्या बनेंगे? जुम्मन जो दिन भर पैसे चुराने की नीयत से ठेकदार की आंखों में धूल झोंकता है। चोरी करता है धोखा देता है। लेकिन जुम्मन का क्या दोष? उसकी स्थिति ही ऐसी है। चोरी बेइमानी धोखेबाजी झूठ बोलना तो हमारी संस्कृति का रीढ़ बन गई है। हमारे देश में जिस के पास पैसा है वही बड़ा आदमी है। यह कोई नहीं देखता कि पैसा कहां को और कैसी कमाई का है। इस लिए सब लोग पैसा जुटाने में लगे हैं चाहे वह चोरी से हो चाहे चोरबाजारी से। फिर जुम्मन तो केवल पेट भरने के लिए चोरी करता है। उसे पेट भर खाना दीजिये और वह अपने परिश्रम से अपने पैरों पर खड़ा रहने योग्य बन जाय वह कभी चोरी न करेगा। लेकिन हम, हमारा राष्ट्र, राष्ट्र के बेचारे सेवक, या नेता जो जुम्मन तथा उसके करोड़ों भाइयों को चोर, डाकू और जेबकट बनाना चाहते हैं। पैसे के आधार पर बने हुए समाज में देश के भावी नागरिकों की यह दुर्दशा होती है। जिस के पास पैसा है वह बड़ा बनेगा उसके सुपुत्र सितारे हिन्द बनेंगे और जो गरीब हैं

शेष सफा ११ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# उठो हिन्द के हे सपूतो

(श्री उदयभानु 'हँस')

उठो हिन्द के हे सपूतो ! उठो तुम,
उठो क्रांति के अग्रदूतो ! उठो तुम,
घने घोर तूफान में घिर रहे हो,
तनिक देख तो लो कहां गिर रहे हो,
अभी तक वृथा घूमते फिर रहे हो,
पकड़कर कुशा सिन्धु में तिर रहे हो,
अरे, इस पतन को सहारा बना लो,
उठो हर लहर को किनारा बना लो।
नहीं रोकते प्रीत के गीत गाओ,
बड़े चाव से मानिनी को मनाओ,
मगर वीर-कर्तव्य मत भूल जाओ,
समय आ पड़े तो बिगुल भी बजाओ
सदा वीरता की निशानी यही है
जवानो ! तुम्हारी जवानी यही है।
महानाश के मूल आधार हो तुम
सदा नवसृजन के समाचार हो तुम
महारुद्र के घोर अवतार हो तुम
धधकते हुए लाल अँगार हो तुम
उठो इस तरह उठ रही आँधियां हों
गिरो इसतरह गिर रही बिजलियाँ हों
न भूलो कि इस जातिके प्राण हो तुम
इसी देश की वीर सँतान हो तुम
उमड़ता हुआ एक तूफान हो तुम
प्रलय हो प्रलय का समाधान हो तुम
वही रूप फिर याद करना पड़ेगा
रगों में नया खून भरना पड़ेगा।
तम्हें शीघ्र ही अब सँभलना पड़ेगा
समय के नहीं साथ चलना पड़ेगा
तुम्हें तो समय को बदलना पड़ेगा
सुनाई पड़ेंगी विजय की पुकारें
तुम्हें देख कर खिल उठेंगी बहारें
उठो फूट के पात्र को फोड़ डालो
अभी भेद की शृङ्खला तोड़ डालो
भटकते दिलों को पुनः जोड़ डालो
समय की प्रबल धार को मोड़ डालो
विषैली विषमता मिटाते चलो तुम
सभी को गले से लगाते चलो तुम।
चलो चित्त में विश्व की प्रीति लेकर
सदा राम के राज्य की रीति लेकर
सुकवियो ! उठो राष्ट्र की नीति लेकर
महाचार्य चाणक्य की नीति लेकर
कहीं पर तुम्हारी न यात्रा रुकेगी
सफलता तुम्हारे चरण में झुकेगी।
स्वयँ जाग कर दूसरों को जगा दो
अभी नाव को तुम किनारे लगा दो
उठो इस धरा को गगन तक उठा दो
नहीं तो गगन को धरा पर झुका दो
नई नींव खोदो नए घर बनाओ
नई रागिनी में नए गीत गाओ

---

मुहताज हैं उनके बच्चों के लिए बेईमानी चोरी व धोके बाजी के बाजार खुले हैं। हमारे हिन्दुस्तान के कितने सरल और सुगम रास्ते बने हुए हैं जो जिस वर्ग में आता है उसी रास्ते पर चला जाय।

अच्छा अब इधर देखिये। यह क्या? आप इतने से ही ऊब गए हैं। यह तो कुछ नहीं है। मैं तो यह चाहता था कि राष्ट्र पिता के नाम पर बने हुए महात्मा गांधी मार्ग पर उस बढ़ते हुए व्यभिचार अनाचार दुराचार भ्रष्टाचार के पूरे चित्र दिखाऊँ। राष्ट्र के उन भावी नागरिकों विकासमान विकृत स्वरूप को दिखलाऊँ लेकिन शायद आप का मन खट्टा पड़ गया। देश 'ऐसे उदाहरणों' का महान एलबम है। अच्छा फिर किसी दिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


★कहानी

# सोने का वृक्ष

गांव के सब से बड़े जमींदार दयाल सिंह से उस दिन जो लोग मिलने आये उनमें एक अमेरिकन, दूसरा जर्मन और तीसरा हिन्दुस्थानी था जिसका नाम रतननाथ था। चौथी एक ब्रिटिश महिला थी जिसने बहुत ही सुरीली और कर्ण प्रिय आवाज में अपने तिरछे हुए सुनहरे बालों को एक तरफ झटकते हुए और अपना बिल्ली-नुमा करंजी आंखों को मटकाते हुए कहा, 'माई नेम इज लुई मारगरेट मैरी।'

ब्यालीस साल की उमर के ठाकुर दयाल सिंह आम जमींदारों से कुछ और बढ़चढ़ कर 'दिल वाले' तो थे ही साथ ही बड़े मजेदार आदमी थे। बड़ी दिलचस्प बातें करते थे और थोड़ बहुत लिखे पढ़े भी थे, वह लुई मारगरेट मैरी की बात पर मुस्कराते हुए उन्होंने पूछा आप शायद तीन लड़कियां मिलकर तीन बनी हैं—लुई, मारगरेट और मैरी। एक तो आप हैं और बाकी दो कहां रह गईं ?

नो—नो—नो। लुई मारगरेट मैरी जल्दी से बोली—ये तीन अलग २ गर्ल्स का नेम नाहीं है। हम 'अलोन' लुई मारगरेट मैरा है। तुम हमारे फ्रेंडस का माफिक ओनली मैरी कह सकता है।

बहुत खूब। ठाकुर साहब जैसे उछल पड़े बोले—तुम्हारा नाम कुछ भी होता मैं तुम्हें मेरी कहता ही लेकिन इसके लिये कुछ वक्त जरूर लगता। पर तुम्हारे नाम ने ये मुश्किल भी दूर कर दी थैंक्यू।

इस के बाद ठाकुर साहब मैरी ही से बातें करने में ऐसे लग गये कि वे अन्य लोग काफी देर तक अपने आने का कारण न बतला सकें। अलबत्ता अचानक मैरी ही कहने लगी, हम लोग सोना बनाता है, हम भी बहुत अच्छा गोल्ड मेकर है और हमारा साथी लोग भी—।

अगर कोई जादूगर अपने जादू के बल से सोनेको औरत बना दे तो वह औरत विश्वास-पूर्वक दुनिया की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी से भी कई गुणा अधिक सौंदर्यशाली होगी। आखिर गजब ही तो है कि फिलहाल वह कोई औरत नहीं, बेहूदे से रंग का एक ढेला है या किसी ने बढ़िया सा कौशल दिखाया तो पीट पाट कर जेवर बना डाला लेकिन वह जेवर और सोना हसीन औरत पर भी हकूमत कर सकता है। औरतों पर ही नहीं मर्दों पर भी। वह औरत मर्द किसी को भी बीच बाजार नंगा कर सकता है, कत्ल कर सकता है या और कुछ— चूंकि मैरी के मुंह से सोने की बात सुन कर ठाकुर साहब के कान खड़े हो गये और तब उन लोगों के आने का कारण पूछा।

उन्होंने बताया कि वे अपने २ मुल्क के प्रसिद्ध सोना ढालने वाले कुशल कारीगर हैं। वे यह सिद्ध कर सकते थे कि जिस तरह कुछ लोगों के विश्वास के मुताबिक दुनिया की हरएक चीज में ईश्वर है वैसे ही दुनिया की हर एक चीज में सोना है। उनमें से कोई औरतके पसीने में सोने की मौजूदगी साबित कर चुका है तो कोई आलू बुखारे की गुठली से सोना निकाल चुका है और कोई उल्लू के पट्ठे की बीट से सोना बना चुका है और साबित कर चुका है कि इसी लिए देवी लक्ष्मी जो जो कि सोने की देवी है उनकी प्रिय सवारी उल्लू है और इस लिये लक्ष्मी जी को उलूकवाहिनी कहा गया है। तभी तो इन्सानों में जो इन्सान-नुमा उल्लू होते हैं उनके पास सोना अधिक होता है।

मैरी ने एक बार फिर तिरछे हुए बालों को झटका दिया। एक बार फिर आंखें मटकाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



और बोली—हम पानी से सोना निकाल चुका है मगर वह सोना बहुत महंगा पड़ता है। इस वास्ते हमने पानी से सोना निकालना बन्द कर दिया है।

अरे वाह, ठाकुर साहब के मुंह में पानी आ गया लेकिन इस पानी का मजा उस पानी के मजे से बहुत अछूता था जो मैरी को उनके साथ देखते ही उनके मुंह में आया था और तब मैरी को प्रायः भूल कर ठाकुर साहिब ने उन लोगों के आने का खास कारण पूछा।

उन्होंने बताया कि वे लोग और उन के करीब दो दर्जन और साथी सारी दुनिया में एक वृक्ष की तलाश में निकले थे जिसके पत्तों के अर्क से सोना तैयार किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि ठाकुर साहब की फुलवारीकी पश्चिमी ओर जो एक अजीबोगरीब वृक्ष है उसके बारे में उन्हें शक है कि हो सकता है कि वही वृक्ष वह हो।

ठाकुर साहब की फुलवारी की पश्चिमी ओर एक अजीबोगरीब वृक्ष था जो कहीं नजर नहीं आता था।

उन लोगों ने ठाकुर साहब से इजाजत मांगी कि वह उन्हें उस वृक्ष के पत्तों से सोना बनाने का प्रयोग करने का अवसर दें। ठाकुर साहब ने बड़ी खुशी से इजाजत दे दी।

उनकी प्रार्थना पर ठाकुर साहब ने प्रयोग शाला प्रारम्भ करने और सोना बनाने वालों के रहने के लिये अपना एक वीरान मकान भी दे दिया और वे लोग शहर से प्रयोग की उपयोगी मशीनें और अपना समान लाने के लिये चले गये लेकिन मैरी को ठाकुर साहब ने रोक लिया।

मैरी को कोई एतराज नहीं हुआ। वह रुक गई और सारा दिन ठाकुर साहब को सोना बनाने की कहानी सुनाती रही और उनके जिस्म से सोना निकालने का प्रयास करती रही। लेकिन ठाकुर साहब के जिस्म में सोना बिल्कुल नहीं था। उन्होंने सारा सोना तिजोरियों में बन्द कर रखा था। वहाँ से सोना निकाल लेना नई २ आई हुई मैरी के लिए बहुत मुश्किल था क्योंकि उनकी तिजोरियों में जो सोना बन्द था वह आदमियों के पसीने से निकला गया था और दुनिया की कोई शिक्षादीक्षा दुनिया का कोई विज्ञान या दुनिया का कोई बड़े से बड़ा सोना बनाने या निकालने वाला विपुल भण्डार भी आदमियों के पसीने से निकला हुआ सोना जो तिजोरियों में जा चुका हो फिर वापिस नहीं निकाल सकता। चाहे कोई जर्मन स्वर्ण विशेषज्ञ प्रयोग करे या अमेरिकन या हिन्दुस्थानी और मैरी तो एक अँग्रेज स्वर्ण विशेषज्ञ थी और वह भी एक मामूली सी औरत।

रात के दस बजे, वे लोग आवश्यक मशीनें स्वर्ण बनाने की दवायें और दूसरा सभी प्रकार का समान लेकर लौट आये।

ठा० स० बड़ी तत्परता से उन की बाट जोह रहे थे। उन्होंने उसी वक्त उनसे प्रयोग प्रारम्भ करने के बारे में पूछा। उन्होंने बतलाया कि इस वक्त तो वे सिर्फ यही करेंगे कि उस वृक्ष के पत्ते पीस कर पानी में डाल देंगे और प्रयोग तो सुबह शुरू होगा।

ठा० सा० के वीरान मकान के कमरे स्वर्ण निर्माताओं के लिये सजा दियें गये थे और वे लोग मैरी को साथ लेकर वहा से चले गये थे!

दूसरे दिन सवेरे ही स्वर्ण निर्माण का प्रयोग शुरू हो गया। सिर्फ ठा० स० को प्रयोग शाला में बैठने की अनुमति दी गई और वह सिर्फ मैरी की सिफारिश पर। एक सप्ताह तक प्रयोग जारी रहा।

शेष सफा १४ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


इस बीच में ठाकुर साहब को पता चला कि यह काम अत्यन्त भयङ्कर, खतरनाक और मुश्किल है। पत्तों के अर्क में एक सुर्ख रंग की दवा मिलाते वक्त जर्मन विवेषज्ञ ने उन्हें बताया था कि इस वक़्त यह मिश्रण फट भी सकता है और एक मिनट के बाद हम सब के सब या तो जलभुन कर बिल्कुल मौत के मुँह में समा सकते है या प्रयोग के सफल होने के बहुत समीप पहुंच सकते हैं। लेकिन मिश्रण फटा नहीं और वह कामयाबी की मंजिल के बहुत समीप पहुंच गये।

इसके बाद ठीक आठवें दिन ठा० सा० की नजरों के सामने उस आश्चर्यजनक वृक्ष के पत्तों का रस तरह २ के रंग बदलता हुआ और कई प्रकार की नालियों और टयूबों से गुजरता हुआ चमकदार सोने का छोटा सा टुकड़ा बन गया। ठा० सा० ने सोने की जांच कराई और बतलाया कि सोना बहुत शुद्ध था और उसका वजन एक तोला था।

इस खुशीमें ठा० सा० ने स्वर्ण निर्माताओं को दी एक शानदार पार्टी के दौरान उन्हें यह विश्वास हो गया कि उन्हें मैरी की मुहब्बत भी प्राप्त हो चुकी है। उन्हें उनकी मुहब्बत की घटनाओं से पूर्ण और अनुभवी आंखों ने स्पष्ट बता दिया कि मैरी के आंखों के इशारे उनके इरादों को पूर्ण करने वाले थे मानो वे आंखें कह रही हों कि ठा० सा० अब मैं आपकी हूँ।

कामयाबी के दूसरे दिन सोना बनाने वालों ने ठा० सा० से व्यापारकी बातें करनी शुरू कर दीं और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि साझेदारी ठीक नहीं। अच्छा तो यह हो कि ठा० सा० वह वृक्ष इन सोना बनाने वालों को एक बड़ी कीमत लेकर बेच दें। उस वृक्ष के लिए उन्होंने लाखों रुपये के ऐसे 'आफ़र' दिये कि ठा० सा० के मुँह में अब 'तीसरे मजे' का पानी आ गया। सम्भव भी यह था कि वे 'हां' भी कर देते कि उसी वक्त उनके मुख्य निजी सचिव ने जिसका नाम बँशीधर था और जिसे वक्त जरूरत के लिए ठा० सा० ने खिड़की की ओट में खड़ा किया हुआ था खिड़की की सलाखों के पीछे से कसकर आंख दबाई और ठा० सा० उठकर बाहर चले गये।

उन्होंने बंशीधर से बातें कीं और बंशीधर ने राय दी कि सोने की उस खान को बेचना बहुत बड़ी मूर्खता होगी। सोना बनाने वालों से यह बात करनी चाहिये कि वे सोना तैयार करें मगर सारा खर्च (लागत) ठा० सा० देंगे और सारे सोना बनाने वाले विशेषज्ञों को योग्य व उचित पारिश्रमिक दिया जायेगा। लेकिन ठा० सा० ने जब सोना बनाने वालों को यह फैसला सुनाया तो वे बिगड़ उठे। हिन्दुस्थानी सोना बनाने वाले से लेकर जर्मनी के सोना बनाने वाले तक सब के सब नाराज हो गये। यहां तक कि मैरी ने भी मुंह फुला लिया। वह देर तक मुंह फुलाये बैठी रही लेकिन जब उस की नजरें ठा० सा० की नजरों से टकराईं तो उसकी आंखें मुस्करा उठीं और ठा० सा० न उसे जोरों का आंखों इशारा किया और वे दोनों उठ कर बाहर चले गये।

बाहर जाकर ठा० सा० ने मैरी से एक अलग दूसरे व्यापार की बातें की और यह व्यापार तय हो गया कि अगर मैरी अपने साथियों को मेहनताने पर काम करने पर राजी कर देगी तो ठा० सा० उसे २५ हजार रुपये नकद इनाम देंगे। और हमेशा के लिए तयार हुए सोने का दो प्रतिशत उसे दिया करेंगे। दो तीन दिनों तक

(शेष सफा १५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मैरा अपने साथियों को समझाती रही तब कहीं उसके साथी इस शर्त पर तैयार हुए।

ठा० सा० ने एक और शानदार पार्टी दी। पार्टी के दौरान में रतननाथ ने कहा—ठा० सा० सोना बनाने के यह खर्चे कोई मामूली नहीं; शुरू शुरू में करीब दो लाख रुपये आपको अपने पास से निकालने होंगे।

रतननाथ की बात में ठा० सा० को अपनी बेइज्जती महसूस हुई और उन्होंने बड़े तीखे शब्दों में उत्तर दिया, "मिस्टर रतननाथ पानी पत्तों और जड़ी बूटियों में छिपे सोने का ज्ञान आप बहुत जानते हैं लेकिन दुःख तो यह है कि एक हिन्दुस्थानी होते हुए भी आपको यहां के जमींदारों की मैली कुचैली धोती और फटी पुरानी बनियानों के पीछे छिपे सोने का अन्दाजा नहीं ?'

माफ कीजियेगा, मैंने किसी और ख्याल से यह बात नहीं कही थी। रतननाथ ने अपनी गलती मान ली।

ठा० सा० दो लाख रुपये का इन्तजाम कर पाये थे कि खुफिया दफ्तर का कोई अफसर उनके पास आ गया और उसने ठा० सा० को बताया कि वह वृक्ष सरकारी सम्पत्ति घोषित कर दिया जावेगा। बीस हजार रुपये नकद देकर उससे छुटकारा पाया गया और उसने ठा० सा० के सामने ही हकूमत को रिपोर्ट लिखी कि यह बात सौ प्रतिशत गलत है कि ठा० दयाल सिंह की फुलवारी में पश्चिम दिशा में लगे वृक्षों से सोना निकाला जा सकता है। दरअसल ठा० सा० उस से सोने (नींद) की कोई बीमारी की दवा बना रहे थे और खबर यह फैल गई कि वे सोना (स्वर्ण, कँचन) बनाने की तयारी कर रहे हैं। यह अफवाह शरारतपूर्ण और बिल्कुल निरा-धार है।

ठा० सा० बहुत खुश हुए और अब तो उन्होंने खुफिया दफ्तर के उस अफसर के स्वागत में एक शानदार प्रीतिभोज देदिया।

दो लाख रुपयों का प्रबन्ध हो गया और बँशीधर के साथ अमेरिकन, जर्मन और हिन्दुस्थानी स्वर्ण निर्माता लोग बम्बई, कलकत्ता और मद्रास से सोना बनाने वाली अच्छी दवाइयाँ और बड़े २ यँत्र खरीदने चले गये लेकिन मैरी जमानत के तौर पर ठा० सा० के पास छोड़ दी गई। हालांकि ठा० सा० का ख्याल था कि दो लाख रुपये में मैरी काफी महंगी है लेकिन उन्हें विश्वास था कि स्वर्णनिर्माता लोग पुनः वापिस आवेंगे और उनके साथ उनकी निजी सचिव बंशीधर भी था और फिर ठा० सा० काफी ज्यादा होशियार आदमी भी थे। खुफिया महकमे का वह अफसर आया तो एक मुसीबत बनकर मगर उन्होंने उसे कृपालु बना लिया था और उसे दो हजार रुपये माहवार पर जिसमें एक माह की तनख्वाह पेशगी लेकर वह स्वर्णनिर्माताओं पर नजर रखने के लिये और वक्त जरूरत पर धोखे बाजों को पुलिस वालों के हवाले करने के लिये नियुक्त कर दिया गया था। वह एक साधु का वेश बनाकर स्वर्ण निर्माताओं और बंशीधर के साथ चल पड़ा थ

इस खुशी में ठा० सा० ने एक और पार्टी दी जिसमें सिर्फ मैरी को ही दावत दी गई थी।

करीब एक माह बाद वे स्वर्ण विशेषज्ञ दवाइयां यंत्र आदि पूर्ण सामग्री लेकर वापिस आ गये। ठा० सा० की तरफ से एक और पार्टी के बाद सोना बनाने का काम जोरशोर से शुरू हो गया। अब मैरी ठा० सा० के साथ अधिक देर न रह पाती। उसका अधिकतर समय अपने साथियों के साथ प्रयोगशाला में ही व्यतीत होता। ठा० सा० को इस बात का बहुत दुःख तो था ही लेकिन ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


वस्तु सोना थी जिसने ठा० सा० के इस मलाल को सोने के एक भारी शील के नीचे दबा दिया ।

लेकिन उसी दिन रात को ठीक बारह बजे एक अत्यन्त भयंकर धमाका हुआ । सारा गांव उस भीषण धमाके की आवाज की ओर दौड़ पड़ा । ठा० सा० के वीरान मकान के चारों तरफ हाथ को हाथ न सूझने वाला स्याह धुआँ फैला हुआ था ।

ठा० सा० समझ गये कि सुर्ख रँग की दवा डालते समय भट्टियाँ फट गईं । धुआँ काफी देर तक फैला रहा और जब धुआं छटा तो वहां न ठा० सा० का वीरान मकान था न प्रयोगशाला ही, न यँत्र थे, न सोना था और न स्वर्ण विशेषज्ञ ही । वहां न तो खुफिया दफ्तर का अफसर था न दो लाख रुपये थे और न उनके ब्यालीस वर्षीय दिल की प्रेयसी मैरी ही थी ।

ठा० सा० काफी देर तक अपने वीरान मकान के खण्डहर के सामने खड़े आंसू बहाते रहे। लेकिन खड़े ही खड़े उन्होंने यह फैसला कर लिया कि जहां उनके अढ़ाई लाख रुपये बर्बाद हो गये वे कुछ रुपये और व्यर्थ खर्च कर देंगे और उन अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्ध स्वर्ण विशेषज्ञों की याद में एक समाधि बनायेंगे ।

समाधि बननी शुरू हो गई और दो माह के भीतर ही समाधि बन कर तैयार भी हो गई । जिस दिन समाधि बनकर तैयार हुई ठा० सा० ने शहर के प्रमुख रईसों और आदरणीय प्रमुख व्यक्तियों को एक शानदार पार्टी दी लेकिन एका-एक उस पार्टी में दो बिन बुलाये मेहमान शामिल हो गये जिन्हें देखकर ठा० सा० की आंखें खुली की खुली रह गईं ।

वे मेहमान थे रतननाथ और मैरी जिन की गर्दन शर्म से झुकी हुई थी लेकिन बड़ी हिम्मत करके रतननाथ ने गर्दन उठाई और कहने लगा

हम सब चोर थे ठा० सा० ! हममें से कोई स्वर्ण निर्माता नहीं था । अमेरिकन भी चोर था, जर्मन भी चोर था, खुफिया महकमे का बनावटी अफसर भी लोफर था और यहाँ तक कि आपका निजी सचिव बंशीधर भी चोर बना लिया गया था । हम आपकी दौलत लूटकर आपका मकान डायनामाइट से उड़ाकर भाग तो निकले थे लेकिन मैं आपके उन उच्चकोटि के आदर्शों और हमदर्दी से भरी हुई सहानुभूति से गद्दारी न कर सका । आपको धोखा देकर न भाग सका था । क्योंकि आपके उदार हृदय ने हमारी स्मृतियों में इतनी शानदार समाधि बना डाली कि आपके पवित्र आदर्शों के किले को मलियामेट करने के लिए मेरे पास कोई डायनामाइट नहीं था । मेरे साथियों ने मेरा और मैरी का मजाक उड़ाया है और हमें अपनी कम्पनी से निकाल दिया है लेकिन मैं आपको अपने हिस्से के ब्यालीस हजार रुपये लौटाने आया हूँ क्योंकि मैं लाख बार चोर सही परन्तु मैं हिन्दुस्थानी हूं । जिसने विश्वास किया उसके साथ विश्वासघात नहीं करूंगा ।

और लुई मारगरेट मैरी अपने तिरछे हुए सुनहरा बालों को झटका दिये बगैर ही और अपनी बिल्ली जैसी करंजी आँखें मटकाये बगैर बोली—और हम भी अपना फाट् टी टू थाऊजेन्टस रुपी रिर्टन करता है । ठा० सा० इस वास्ते कि हम बहुत बड़ा पाकेट मार और चोर तो है मगर आफ्टर आल हम औरत है । और एक औरत तुम्हारा माफिक फेदफुल आदमी से फ्राड कैसे कर सकता है ?

उस वक्त ठा० सा० को ऐसा लग रहा था जैसे अनुभवी स्वर्ण विशेषज्ञों ने दस पौंड ही नहीं बल्कि दो तीन मन सोना तैयार कर लिया हो और उस सोने से ठा० सा० ने दो शानदार कंचन काया सी विशाल मूर्तियां प्राप्त कर ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ★ चलो समय के साथ ★

उठो पलटता है युग करवट, बजा निराला साज
अब जीवन में साम्य चाहिये, दुनियाँ की अवाज
आज झोंपड़ी वक्ष तानकर करती है हुँकार
यह सामन्ती दुर्ग हमारे चरणों के शृँगार
स्वयं विधाता हुआ अवतरित बन करके सत्कर्म
सर्वोपरि हो रहा विश्व में केवल मानवधर्म
देकर तुम भी योग बटोही चलो समय के साथ
धरती का सेवक धरणीधर अब होगा भूनाथ
आज विश्व को सत्य चाहिये सेवा संयम त्याग
शक्ति नहीं जग आज चाहता जीवन से अनुराग
इसी पँथ का अनुगामी बस फूले और फलेगा
जो युग के प्रतिकूल एक दिन दोनों हाथ मलेगा

—एल० मालपाणी, जयपुर

### ★ दो मुक्तक ★

( श्री महेश सन्तोषी )

मुझे क्यों गम हो मेरा इन्सान अभी जिन्दा है,
धरती पर प्यार नभ में चांद अभी जिन्दा है;
सोने चांदी के इस भगवान का एहसान नहीं,
मेरे ईमान का भगवान अभी जिन्दा है !
गीत गान तो चला मगर साज भूल गया;
आदमी जिन्दगी का एक राग भूल गया;
दिमागी लू ने कुछ इस तरह से झुलसा मन
दिल ही दिल की आवाज आज भूल गया

---

हो। ये दो विशाल मूर्तियां आज भी उन्हें इन्सानियत और सहृदयता का सँदेश देरही हैं कि उदारता, आत्मीयता और इन्सानियत के पवित्र विचारधाओं के बल से वह सब कुछ हो सकता है जो न तो दबावसे पूर्ण हो सकता है न कानूनकी दहशत या जेलके दबदबेसे ही पूर्ण हो सकता है।

सहृदयता प्रेम उदारता ही माटी के इस शरीर को कँचन काया का रूप देने में समर्थ हो सकते हैं।

## ★ मनोवैज्ञानिक शिक्षण ★

शिक्षण दो प्रकार है। एक वह जो गुरुकुलों, विद्यालयों तथा स्कूल कालेजों में कोर्स की पुस्तकों का अध्ययन करना है। यह पाठ्य शिक्षण कहलाता है। दूसरा वह जिसमें, शिशु पालन आश्रम मर्यादा, शिष्टाचार; सदाचार उत्तमोद्देश्य पूर्ण परोपकारमय धार्मिक जीवन चर्या का ज्ञान यह जीवन सुधार शिक्षण कहा जाता है।

पाठ्य शिक्षण पुस्तकों के द्वारा बालक के छठे वर्ष से नियम पूर्वक होना चाहिये। इससे पूर्व पाँच वर्ष तक घर में ही शिशु पालन (शिशु शिक्षण) का समय है जो जीवन सुधार शिक्षण का प्रथम अँग है। शिशुपालन या शिशुशिक्षण वास्तव में माता के गर्भ से ही प्रारम्भ होता है। प्रायः दो वर्ष का हो जाने पर बालक को घर की सुन्दर सुन्दर वस्तुओं; बागबगीचे के फल फूलों आकाश के चन्द्र तारों के नामों; चार वर्ष का हो जाने पर चित्रों द्वारा नाना विधि सुन्दर २ मयूर, शुक-पक्षियों, मृग हाथी घोड़े पशुओं और प्रचलित तथा रेल मोटर विमान आदि आकर्षक वस्तुओं का खेल और कथा कहानियों के रूप में अनेक उत्तम बातों का ज्ञान करा सकते हैं, भूल से भी कल्पित भूत प्रेत आदि के सँस्कार न डालें। व्यर्थ में दण्ड देने का बालक को अभ्यासी न बनाया जावे। ऐसे लड़के ही आगे चल कर प्रायः उद्दण्ड हो जाया करते हैं, किन्तु उनको शाँति से प्रेम से समझाया जावे।

परिमित दण्ड भी यथावसर दिया जाना हितकर है पर ऐसा प्रेम प्यार लाड़ चाव भी न किया जावे जिससे सन्तान के बिगड़ने की सम्भावना हो। यह घर का मनोवैज्ञानिक शिशु शिक्षण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भविष्य हमें बुला रहा है !

(पं० जवाहर लाल नेहरू)

देश के सामने अनेक बड़े-बड़े काम और कठिनाइयाँ हैं। हो सकता है कि आज के भारतीय युवकों और युवतियों का इन कठिनाइयों का तत्काल मुकाबला न करना पड़े, लेकिन भविष्य में निश्चय ही उन्हें इनसे लोहा लेना होगा। यह एक ऐसा काम है जिस पर गर्व होना चाहिये। लेकिन साथ ही यह बहुत भारी और मुश्किल काम भी है। सिर्फ वे लोग ही इसे ठीक से कर सकेंगे, जो इसे दिल से करें और काम करने का ढँग सीखे हुए हों।

सिर्फ भाषण देना और प्रस्ताव पास करना ही राजनीति नहीं है। यह तो राष्ट्र-निर्माण के महान् कार्य का एक अँग मात्र है। शायद हम समझते हैं कि राष्ट्र-निर्माण बिना किसी कठिनाई या मेहनत के ही हो जायगा, लेकिन इतिहास से जो हमें सबक मिलता है; वह दूसरा ही है। हर जन्म के साथ प्रसव पीड़ा का कष्ट भी झेलना पड़ता है। हर विकास कार्य के लिए लगातार मेहनत की जरूरत होती है। जिन कठिनाइयों का हम सामना कर रहे है, वे तभी उपयोगी हो सकती हैं, जब हम उनसे फायदा उठाएँ उनसे सोचना और काम करना सीखें और सबसे बड़ी बात यह है कि उनसे हम एक अनुशासित राष्ट्र बनाने का सबक लें।

भारत में भेद भाव और फूट डालने वाली बहुत सी प्रवृत्तियां काम कर रही हैं और आमतौर पर लोग बड़ी-२ समस्याओं को भूल कर झगड़े और विवाद के रास्ते पर पड़ जाते हैं। जमाना बड़ा मुश्किल का है इस लिए हमें कमजोर नहीं रहना चाहिये और न व्यर्थ की आलोचना में अपनी शक्ति गँवानी चाहिये। हां, स्वस्थ आलोचना की हमेशा जरूरत है।

हमें समझना हैं कि जमाना किधर जा रहा है। जमाने की पुकार हमें सुननी है। पुकार यह है कि हमें अपने देश को बनाना है। आजादी हासिल करने के बाद हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि हम गरीबी को दूरकरके एक खुशहाल देश बानावें और उसकी जो अस्सी नव्वे फीसदी आबादी गिरी हुई है उसे उठावें। सबसे बड़ा सवाल आर्थिक है। चाहे हम भारत को जमीन और पैदावार से देखें, चाहे कारखानों और तिजारत वगैरा की तरफ से देखें, हमें देश को दौलतमन्द बनाना है। दूसरी जगह से भीख मांगकर ताकत नहीं आती। अपनी मेहनत के बल पर अपनी जमीन से अपने कारखाने से दौलत हासिल की जा सकती है। इस तरह से देश अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।

आम आदमी की हैसियत ऊँची हो और वह खुशहाल हो इस तरह से हमें अपने देश को बनाना है और तेजी से बनाना है। अगर हम अपनी ताकत नहीं बनायेंगे तो बिगड़ जायेंगे

भविष्य हमें बुला रहा है। हम कहां जायेंगे और हमारी क्या कोशिश होगी? हमारी कोशिश होगी आम आदमियों को भारत के किसानों और मजदूरों को आजादी और मौके दिलाना; गरीबी अज्ञान और रोग से लड़कर उनका अन्त करना एक खुशहाल जनसत्तात्मक और बढ़ते हुए राष्ट्र का बनाना और ऐसी सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक सँस्थाओं की रचना जिनसे कि हरएक मर्द औरत को इन्साफ मिले और उसकी जिन्दगी भरी-पूरी हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * भारतीय बाल सभा *

## बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी अध्यक्षा दीदी

## फुलवाड़ी

(बच्चों के प्रश्नों के उत्तर)

प्र०— दुनिया का सब से बड़ा आदमी कौन होता है ? दुनिया को देने वाला या उस से लेने वाला ? —ओम प्रकाश गुलाटी, पलवल।

उ०—दूसरों के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देने वाला व्यक्ति ही बड़ा कहलाने के योग्य है यद्यपि आज के युग में 'धनवान' को ही बड़ा समझा जाता है।

२. पैराशूट का आविष्कार किसने किया और किस सन् में ? (उपरोक्त)

उ० किसी गतांक में हमने आविष्कारों और उनके कर्ताओं की सूची प्रकाशित की थी उसमें से देख लें।

३. क्या यह ठीक है कि इस वर्ष से छटी कक्षा से अँगरेजी पुनः अनिवार्य रूप में पढ़ाये जाने का निश्चय हो गया है ?

—मोहन लाल, अमृतसर

उ० हां यह सर्वथा सत्य है।

४. क्या मनुष्य का कद किसी तरह लम्बा हो सकता है ? —सरोजिनी, देहली

उ० हां, अब कई आधुनिक तरीके मालूम कर लिए गए हैं जिनकी सहायता से एक महीने में दो इंच तक कद बढ़ाया जा सकता है।

५. हाई स्कूलों को हायर सैकण्डरी बनाने से क्या लाभ होगा ? —केदार नाथ शर्मा, रोहतक।

उ० शिक्षा के क्षेत्र में हम पश्चिमी देशों की नकल करने में सफल हो जाएंगे।

६. देश में बेकारी का मूल कारण क्या है ? —करतार सिंह, मोगा (फीरोजपुर)

उ० हमारी शिक्षा पद्धति का त्रुटिपूर्ण होना।

७. पंजाब सरकार द्वारा छटी कक्षा तक शिक्षा निःशुल्क कर देने के निश्चय का विरोध क्यों हो रहा है ? —सुशील कुमारी, गुड़गाँव।

उ० इस लिए कि यह केवल सरकारी स्कूलों तक ही सीमित रहेगा अन्य स्कूलों पर इस निश्चय का प्रभाव उलटा ही पड़ेगा।

[सभी बच्चे प्रश्न भेज सकते हैं।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मैं मानवता को नहीं बेचूँगा

अमर संदेश देने वाली घटना

मनुष्य के इतिहास में कुछ ऐसी घटनाएं हो जाती हैं जो चाहे शताब्दियां व्यतीत हो जाएं, युग नई करवट भी ले ले किन्तु वे अमर और दिव्य संदेश देती रहती हैं।

इटली की एक नदी में एक बार ऐसी बाढ़ आई कि बीच के कुछ भाग को छोड़कर जिस पर एक मकान बना हुआ था; सारा पुल बह गया। मकान में रहनेवाले खिड़कियों में से झांक झांक कर लोगों को सहायता के लिए पुकारने लगे क्यों कि वह भाग भी बहने को था। नदी के तट पर दर्शकों की भीड़ लगी थी। उस भीड़ में से एक व्यक्ति बोला —यदि कोई उस पार के लोगोंको बचा दे तो मैं १०० मुहरें पुरस्कार में दूंगा। यह सुनकर एक किसान युवक नाव लेकर नदी में उस भाग तक चला गया और उन लोगों को तट पर सुरक्षित ले आया। तब वह धनी व्यक्ति अपने वचनानुसार १०० मुहरें उसे इनाम में देने लगा। इस पर उस किसान युवक ने कहा—"मैं इन्हें लेकर मानवता को नहीं बेचूँगा। मैं ने रुपये के लालचमें इन्हें नहीं बचाया यह रुपया उन्हीं बे सहारा लोगों में बांट दो क्योंकि उन्हें इसकी आवश्यकता है!

उपकार से यदि चाहो तो संसार को जीत सकते हो किन्तु जब उसके बदले में प्रसिद्धि या लालच की आशा न रखो!

## ★ असम्भव ? ★

हारे हुए सेनापति ने सिकन्दर से कहा—'मुझ से यह काम न होगा यह सर्वथा असंभव है।' विजेता ने उत्तर में कहा—भाग जा यहा से, जा अपना मुह काला कर, मेहनत और हौसले वाले के सामने कुछ भी असंभव नहीं है।

## हंसते हुए आने और जानेवाला

एक बार जब एक मौलवी अपने एक मरे हुए नौकर को दफन कर रहा था तो कब्र खोदने वाला उसके पास आया और बोला—'जितने भी लोग यहां मृतक को दबाने आते हैं उनमें से केवल मैं आपको पसन्द करता हूँ। यह सुनकर मौलवी ने पूछा—मगर क्यों? उसने उत्तर दिया बात यह है कि और लोग तो यहाँ रोते हुए आते हैं और रोते हुए जाते हैं किन्तु तुम हसते हुए आए और हसते हुए जा रहे हो।

## ★ छोटा और बड़ा ★

बुद्धिमान पुरुष शून्य आकाश में देखता है और छोटे को बहुत छोटा नहीं समझता और बड़े को बहुत बड़ा नहीं मानता क्योंकि वह जानता है कि आकार-प्रकार की कोई मर्यादा नहीं होती!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ★ धर्म का सार ★

चुङ-सिन् नामक एक चीनी शिष्य ने अपने गुरु ताओ-वू की बड़ी सेवा की । एक दिन चुङ-सिन ने गुरु के पास जाकर कहा—"जिस दिनसे मैं आया हूं, आपने मुझे धर्म के विषय में कभी नहीं बताया ।"

गुरु ने उत्तर दिया—'जब से तुम यहां आये हो, मैं कभी तुम्हें धर्म का सार बताये बिना नहीं रहा हूँ । जब तुम चाय के प्याले को लेकर मेरे पास आए हो, तो मैं कभी उसे बिना ग्रहण किये नहीं रहा हूं । जब तुमने हाथ जोड़कर आदरपूर्वक मुझे प्रणाम किया है;तो कभी अपना सिर झुकाये बिना नहीं रहा हूं। अब तुमही बताओ मैं ने कब तुम्हें धर्म का उपदेश नहीं दिया है ? तुम्हारी भ्रांति यह है कि तुम धर्म को दैनिक जीवन के कार्य-कलापों से अलग मानते हो । अतः यदि तुम सत्य के साक्षात्कार के मानसिक विश्लेषण का आग्रह करोगे; तो तुम अपने लक्ष्य से बहुत ही दूर जा पड़ोगे । —ध्यानपद्धति-सार' से

## ★ याद रखो ★

जो मंजिल पर पहुंच गये हैं, वे धन्य हैं किन्तु वे और भी प्रशंसा के पात्र हैं जो बीच में थक कर गिर पड़ने के बावजूद भी उठकर कमर कस कर अपनी विजयश्री को अकाल नष्ट होने से बचा लेते हैं।

★हास्य—

## ★ सियासी माहिया ★

पिपल ते काँ बोले—
इम्पोर्ट लाईसैंसां विच ।
खादिम दा भी नां बोले ॥

वाहगे तों रिढ़ वटिया,
जिन अज भी स्मगलिंग नहीं कीती
ओहने दुनियां चों की खटिया

दो वोट दिला माहिया—
सूबे दी वज़ारत दा ।
फुल सानूं सुंघा माहिया ॥

हथ वोट नूं पा बैठे—
असीं कौमी असैम्बली विच
टोपी भी गँवा बैठे ।

कूंजां दियाँ डाराँ ने—
वोटां दी गिनती विच
हथ तेरे मुहाराँ ने

सीने नाल ला सानूं—
दो चार टूका 'दे
परमिट भी दवा सानूँ

हुन ठण्डी हवा लगे
रब तोड़े वजारत नूं
कदे साड़ा भी दा लगे

चिट्टा कुक्कड़ बनेरे ते
सूबे दिया लाट साहबा
बन्दा आशिक है तेरे ते ।

(एक पाकिस्तानी अखबार से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भूल करने की आदत को सुधारने की विधि

[ श्री विट्ठलदास मोदी ]

लोग-ऐसी गलतियाँ करते हैं जिन्हें वे जानते हैं और उनसे मुक्ति पाने के लिये अपनी इच्छा-शक्ति का व्यवहार करते हैं, फिर भी अपनी गलतियां वे छोड़ नहीं पाते। मेरा ख्याल है कि हम अपनी गलतियों को जान बूझ कर दुहरावें तो बैठे-बैठे अंगुलियों के नाखून चबाने; नाक-कान में अंगुली डालने; किसी से बातें करते व्यर्थ में शरमाने या हकलाने की गलतियों को आसानी से छोड़ सकते हैं। यह रीति मुझे एकाएक हाथ लग गयी। मैंने एक हिन्दी टाइपराइटर खरीदा और उस पर अपनी व्यक्तिगत चिट्ठियां एवं लेख लिखने लगा। मैंने देखा, जब भी मैं 'समय' टाइप करता, मैं उसे अपनी अनजानी आदत के अनुसार 'मयस' टाइप कर देता। बहुत कोशिश करता कि ऐसी गलती आगे न हो, पर जब 'समय' टाइप करने का वक्त आता तो 'मयस' ही टाइप करता। एक दिन मैंने साफ कागज लिया और कोई चार सौ बार बोल-बोलकर 'मयस' टाइप कर गया। फिर क्या था, मैंने देखा कि जब मुझे 'समय' टाइप करना होता है मैं 'समय' ही टाइप करता हूं।

इस विधि का प्रयोग मैंने अपने एक मित्र पर किया। वे जब बोर्ड की मीटिंग में जाते, अपनी वक्तृता इस प्रकार पढ़ते कि दूसरे सुन ही न सकें। मैंने उनसे कहा कि आप अपनी वक्तृता जैसी दे पाते हैं उसकी नकल कीजिये। ठीक उसी तरह पढ़िये जिस प्रकार आपने पिछली बार पढ़ी थी कि कोई न सुने। उन्होंने यह करने की कोशिश की। पर यह क्या? वह तो अपनी वक्तृता साफ पढ़रहे हैं। उनकी घबराहट चली गयी है। उनका प्रत्येक शब्द स्पष्ट सुनाई दे रहा है। यह विधि मैंने अनेकों को बतायी और उनमें से अधिकांश को इस रीति को जिसने जितना अपनाया, उस अनुपात से सफलता मिली।

बात यह है कि हम ऐसी जो भी गलतियां करते हैं, उन पर हमारा कोई अधिकार नहीं होता, वे हम से स्वतः हो जाती हैं। पर जब हम उन्हें जानकर करते हैं तो धीरे-धीरे उन पर हमारा अधिकार हो जाता है; फिर हमारी इच्छा, उन्हें करें या न करें। पर उन पर अधिकार पाने के लिए उन्हें करना चाहिये मनसे। इस प्रकार कि हम ठीक वैसा ही करना सीख रहे हैं, उनकी बढ़िया नकल कर पा रहे हैं।

हम सांस लेना बन्द कर सकते हैं क्यों कि हम अपने साँस लेने से परिचित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(शेष सफा ३६ पर)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# असफलता हमें सफलता की ओर ले जाती है

## प्रसिद्ध फ्रांसीसी मूर्तिकार हार्टले की स्फूर्तिदायक आत्मकथा

अपने व्यवसाय के पथ पर पहले ही पहले तरुण मूर्तिकार के रूप में जिस प्रतिमा का मैंने निर्माण किया, उस की अनुभूति मेरे लिये जैसी चिरस्मरणीय बन गई है; वैसी दूसरी नहीं होगी। तब मैंने सीखा था कि असफलता एवं सफलता में कितना सूक्ष्म अन्तर हो सकता है।

मैं विश्वविद्यालय से लौटा ही था और गरमी के दिनों में काम करने के लिये दूसरे विश्वविद्यालय में जाने के पूर्व केवल दस दिन का अवकाश मेरे हाथ में था। यह समय मटरगश्ती में बिताया जा सकता था, परन्तु मैं ने अपने नगर के मूर्ति निर्माण के योग्य किसी व्यक्ति को ढूंढ कर उस के केवल ऊर्ध्वांग (मस्तक, छाती एवं कंधों) की प्रतिमा बनाने का निश्चय किया। कला के जगत् में कोई भी इस बात को स्वीकार कर लेगा कि दस दिनों में इस प्रकार के काम को पूरा करने का संकल्प घोर दुस्साहस है। इस दुस्साहस की सीमा ठीक-ठीक कितनी थी, इस का पता मुझ को दो महीने बाद लगा।

कई विशिष्ट नागरिकोंके सम्बन्धमें विचार करने के बाद मैंने अपने काम के लिये श्रीक्यु जी. नोबलिटको चुना। उस समय नोबलिट स्पार्कस इण्डस्ट्रीज की व्यवस्था समिति के सभापति थे तथा बहुत दिनों से मेरी आंखों पर चढ़े हुए थे। जब मैंने उनके साथियों के सामने यह बात रखी कि श्री नोबलिट के ऊर्ध्वांगकी एक कांस्य प्रतिमा का उपहार उन के प्रति सब के सन्मान का अच्छा प्रतीक होगा, तब वे सहमत हो गये। चार दिनों बाद श्री नोबलिट ने मूर्ति निर्माण के लिये मेरे सामने दो घंटे बैठना स्वीकार किया।

जब हम लोगों का मिलन हुआ, उस समय यह बताना कठिन था कि किस के मन में अधिक बेचैनी थी। उन्हें इस बात का भय था कि जीवित व्यक्तियों की आकृति उतारने के सम्बन्ध में प्रचलित प्रथा के अनुसार मैं उन के चेहरे पर आर्द्रलेप चढ़ाने जा रहा हूँ। इधर मेरे मनमें इस बात पर विस्मय युक्त प्रश्न हो रहा था कि क्या मैं सात दिनों में इस कार्य को पूरा करलूंगा! जब म० नोबलिट ने यह जान लिया कि उन्हें किसी लेप के फेर में नहीं पड़ना है, तब उनका चित्त सुस्थिर हुआ।

मूर्तिकार का पहला काम है मिट्टी के लोदों को ठीक सिरकी आकृति में जमाना। प्रथम दिन मेरा प्रारम्भ अच्छा रहा और दूसरी बार मिलने पर मैंने थोड़ी थोड़ी मिट्टी लेकर

शेष सफा २६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कृत्रिम उपग्रह कैसे उड़ता है ?

राकेट द्वारा जब कृत्रिम उपग्रह को अन्तरिक्ष में छोड़ा जाता है तो वह बिना किसी यान्त्रिक उपकरण की सहायता के गुरुत्वाकर्षण शक्ति के बल पर पृथ्वी की परिक्रमा करता है।

यह गुरुत्वाकर्षण-शक्ति इस तरह से काम करती है यदि कोई प्रक्षेपणास्त्र १०० मील की ऊंचाई से पृथ्वी पर गिरे, तो पृथ्वीपर गिरते समय उसकी गति १ मील प्रति सैकण्ड तक पहुंच जायेगी। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि १ मील प्रति सैकण्ड (३६०० मील प्रति घण्टा) की गति से उड़ने वाला राकेट १०० मील की ऊंचाई तक जा सकता है। अनेक वी-२ राकेट इस तरह की उड़ानें कर चुके हैं।

यदि राकेट ५ मील प्रति सैकण्ड (१८००० मील प्रति घण्टा) की गति प्राप्त कर ले तो वह अन्तरिक्ष में ऊपर की ओर ४ हजार मील से भी अधिक ऊंचा उठ सकता है। ७ मील प्रति सैकण्ड की गति प्राप्त कर लेने पर वह वापस नहीं लौट सकेगा; क्योंकि गुरुत्वाकर्षण-शक्ति की गति इस से अधिक नहीं है।

गुरुत्वाकर्षण-शक्ति की तुलना रबड़ की पट्टी से कीजिये। जितना अधिक दबाव इस पर पड़ेगा उतनी ही अधिक यह खिंचती चली जायेगी। लेकिन ७ मील प्रति सैकण्डकी गति के दबाव को गुरुत्वाकर्षण की शक्ति सहन नहीं कर सकती और वह रबड़ की पट्टी टूट जायेगी। परन्तु किसी पदार्थ के अन्तरिक्ष की कक्षा में बने रहने के लिये इस गुरुत्वाकर्षण शक्ति को पार कर जाने की कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि सब राकेटों को लगभग ऊपर की ओर छोड़ा जाता है, इस लिए अन्त में इन्हें वापस ही लौटना पड़ता है।

जब रबड़ की पट्टी में पत्थर बांध कर उसे घुमाइये। रबड़ की पट्टी को इतना खींचिये कि वह टूटने न पाये। साथ ही यह पट्टी इतनी खिंची हुई होनी चाहिये कि सिरे पर बंधा हुआ पत्थर का टुकड़ा अपनी जगह पर वापस खिंच कर न आ सके। उस दशा में पट्टी इतना ही कर सकती है कि पत्थर को अपनी सीमा से बाहर न जाने दे।

गुरुत्वाकर्षण-शक्ति का असर यह होगा कि उक्त पत्थर अथवा बैज्ञानिक उपकरणों से युक्त कृत्रिम उपग्रह जमीन की परिक्रमा अनन्त काल तक जारी रखेगा जब तक कोई वस्तु उसे रोक न दे या उस की गति मन्द हो जाने पर गुरुत्वाकर्षण शक्ति उस पर अपना प्रभुत्व न जमा ले। जमीन की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के साथ इस प्रकार का सन्तुलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



क्रमागत

# उषा आमन्त्रण

[शान्त शास्त्री 'शालिहास' सिरसा]

( ११ )

सहज शीतल वात बहता
पन्थ श्रम से खिन्न हारे,
पथिक को देता सहारे।
कमर कसने की, पुनः
करने सफर की बात कहता।
सहज शीतल वात बहता
शब्द 'सर-सर' शब्द 'चलचल'
पथिक को देता नवल बल।
है सुखाता स्वेद जल कण,
पथिक का तन मोद लहता।
सहज शीतल वात बहता
बोलते खग द्रुम दलों पर
दे रहे उत्सास संबल।
बढ़ चलो राही! रुको मत,
रुक; न कोई लक्ष्य लहता।
सहज शीतल वात बहता

( १२ )

तुम संकेत समझ पाओगे ?
नीले बादल; पीले रजकण,
सरस पल्लवित कुसुमित द्रुमतृण
को परिमल से मोदित करते
प्रात पवन को लख पाओगे।
तुम संकेत समझ पाओगे।
गन्धवाही यह गंधवाह है,
नव जीवन का यह प्रवाह है।
पुष्पों द्वारा दत्त, वनों को;
क्या संदेश समझ पाओगे।
तुम संकेत समझ पाओगे ?
हर्षाता सब द्रुम लतिकाएं
कुसुमित करता नव कलिकायें।
जाता है भूतल पर फैला!
देखो तो क्या! लख पाओगे!
तुम संकेत समझ पाओगे। (क्रमशः)

---

(२४ से आगे)

स्थापित करने के लिए यह आवश्यकता है कि कृत्रिम उपग्रह को लेकर उड़ने वाला राकेट ४११ मील प्रति सैकण्ड की गति से कक्षा में डाल दे।

गति सम्बन्धी इस आवश्यकता को किसी भी कौशल से बदला नहीं जा सकता। लेकिन अनेक तरीकों से इसकी पूर्ति की जा सकती- है।

इसलिए जमीन से सैकड़ों मील दूर अन्तिरिक्ष में उड़ान भरने तथा बिना किसी यान्त्रिक सहयाताके जमीन की परिक्रमा का रहस्य चक्कर काटने वाली वस्तुकी गति में निहित है। निर्धारित गति से अधिक या कम गति होनेपर उपग्रह अपनी कक्षा में नहीं रहेगा। यह गति यति निर्धारित गति से कमहो तो गुरुत्वाकर्षण शक्ति उपग्रह को नीचे खींच लेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कर आंखें; मुंह तथा केश बनाना आरम्भ किया ! धीरे धीरे मूर्ति में मेरे आदर्श का कुछ कुछ रूप उतरने लगा। किंतु मुखाकृति का ढांचा बन जाने के बाद काम धीरे धीरे और कठिनाई से आगे बढ़ा।

अपनी तीसरी बैठक में मुझे यह अनुभव होने लगा कि समय बीता जा रहा है। तब मैंने अधिक परिश्रम से काम किया। डेढ़ घण्टे के बाद मुझे लगा कि पार्श्व से तो मूर्ति प्रायः ठीक थी, किन्तु सम्मुख से सफल नहीं बनी थी। मैं बढ़ती हुई चिन्ता को लेकर घर लौटा।

सोमवार के दिन अन्तिम दो घंटे की बैठक में मैंने जी तोड़ परिश्रम किया। अब सामने की ओर से भी आकृति सुचारु रूप से मिलने लगी, किन्तु मुखाकृति में बाह्य समानता के अतिरिक्त भी कुछ चाहिये। उसमें मूर्ति निर्माण के लिये चुने हुए व्यक्ति के व्यक्तित्व की छाप होनी चाहिए। मुझे लगा कि मेरी मूर्ति में 'जीवन' का अभाव था।

ढांचे में जान डालने के लिये अगस्त में घर लौट आने पर म० नोबलिट ने एक बार और इस कार्य के निमित्त अन्तिम समय देना स्वीकार किया। मैंने प्रतिमा को अपने घर के तल घर में सुरक्षित रख दिया और पिता जी से कह दिया कि वे कभी २ चिथड़ों को भिगोते रहें, जिस से मिट्टी मुलायम बनी रहे।

दो महीने बाद मै लौटा। जैसे ही मैंने घर में प्रवेश किया मैं जान गया कि दाल में काला है।

पिता जी ने कहा—'मूर्ति को न जाने क्या हो गया, तुम स्वयं ही आकर देख लो।

व्यग्रमन से मैं उन के साथ भू-घर में गया वहां मैंने देखा कि मेरी बनाई हुई नोबलिट की प्रतिमा टूट गयी है और वह बिगड़े—तीन बेढंगे रूपों में पड़ी हुई है। चेहरा चिपटा हो गया है, कानों का पता नहीं है और सिर का दक्षिण भाग विलग हो गया है।

मैं समझ गया क्या बात हुई। मूर्ति को बहुत अधिक गीला कर दिया गया था और वह अपने ही भारसे टूट गयी थी। व्यवसायके क्षेत्र में मेरा जो प्रथम निर्माण होता, वही अब गीली मिट्टी के ढेर के रूप में मेरी असफलता का प्रतीक बना पड़ा था ! मेरा गुस्सा मेरी मायूसी और लज्जा सहने योग्य नहीं रहीं। मैं एक बक्स पर बैठ कर क्रन्दन करने लगा।

घर में उस दिन की संध्या आनन्दमोद से सूनी रही। थोड़ी देर बाद मां; जिस कमरे में मैं उदास बैठा था उस में आईं। उन्होंने पुस्तकों की आलमारी के पास जाकर एक पोथी निकाली। तुमने कभी इसको पढ़ा है ? उन्होंने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


हास्य

# पिकनिक का प्रसाद

वर्षा के किसी सुहाने दिन पिकनिक पर जाने को किस का जी न चाहेगा ? लीजिए आज एक ऐसी ही पिकनिक का विवरण पढ़िए :—

अजी जागती हो या योंही आंखें मून्द कर वैसे ही लेटी हो ? सावन का महीना हो, बादल घिरे हुए हों, ऐसे में किसी को नींद आ सकती है क्या ? राजेश ने पलंग पर औंधी लेटी हुई पत्नी को गुद गुदा कर कहा । लीला की हसी न रुक सकी । उसने करवट बदली और मुस्कुरा कर कहा—अजी सोने भी दोगे या सिनेमा के हीरो ही बने रहोगे ?

राजेश अभी २ सिनेमा-शो देख कर आया था, 'ज़माना यह समझे कि हम पी के आए !' अनारकली क्या थी ? कली तो क्या तुम पर तो अनार कुर्बान किए जा सकते हैं ! ये लाल होंठ, ये उलझी हुई जुल्फें ; ये मद भरी आंखें यह चाँद की सी सूरत—यदि शहज़ादा सलीम देख लेता तो वह ही नहीं उसका बाप अकबर भी तुम्हें हृदय अर्पण कर बैठता ; राजेश ने मज़ाक किया ।

'सोने भी दोगे या सिनेमा के नाटक की रिहर्सल घर में करोगे ?' लीला ने चादर ओढ़ते हुए कहा । कुछ इसी प्रकार के विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे थे । वातावरण की नीरवता को कभी २ बादलों का गर्जन भंग कर देता था । राजेश बिस्तर पर लेट गया और अपना दायां हाथ साथ वाली चारपाई पर लेटी हुई लीला के कंधे पर रख कर उसके कपोलों को छूना चाहा । लीला ने करवट बदल कर कहा —'कुछ तो शर्म करो पिता जी अभी २ खाँस रहे थे । बीच में पर्दा है तो क्या हुआ ? आवाज़ तो उन तक चली ही जाती है ।'

राजेश ने लहजा बदलते हुए कहा, पिता जी को न जाने क्यों नींद नहीं आती ! जब भी देर गए घर लौटता हूँ तो हमेशा पिता जी तुम्हारा पहरा दे रहे होते हैं ।'

विवाह को दस वर्ष होने को आए हैं । मोहन आगामी सोमवार को ६ साल का हो जाएगा.... अजी सुनते हो मैं क्या कह रही हूँ । किन्तु राजेश सो चुका था । चारों ओर सन्नाटा था ।

सहसा वर्षा की दो चार बून्दें गिरीं । भगदड़ मच गई । धाड़ २ करती हुई चारपाइयां द्वार और खिड़कियाँ बजने लगीं । बच्चों की चीख पुकार सुन कर ऐसा जान पड़ता था जैसे मुहल्ले पर आक्रमण हो गया हो । फिर जोर दार वर्षा होने लगी । लोग

(शेष सफा ३० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


साढ़े बारह सौ वर्ष पहले ७१२ ई० में

# भारत पर पहला विदेशीय आक्रमण

## सिन्ध के राजा दाहर का पतन क्यों हुआ ?

खलीफा वलीद के शासन कालमें हज्जाज़ इब्न यूसफ से; जो कि कोफे का हाकिम था अप्रसन्न होकर अल्लाफी जाति के कुछ मुसलमान बागी हो कर हिन्दुस्तान की ओर चले आये। सिन्ध के राजा दाहर ने उन्हें उनकी प्रार्थना पर अपनी शरण में ले लिया और जागीर देकर उन्हें अपनी सेना में भरती कर लिया। तब भारत में एक भी मुसलमान न था। अल्लाफियों को शरण देना दाहर के भोलेपन की पहली भूल थी। हज्जाज़ के मांगने पर भी अल्लाफियों को दाहर ने वापस नहीं किया क्योंकि शरणागत की रक्षा करना उसने अपना धर्म समझा। उसे मालूम न था कि ये शरणागत भविष्य में उसके आस्तीन का साँप सिद्ध होंगे।

जब हज्जाज़ ने अपने सेनापति बदैल को सिन्ध पर चढ़ाई करने भेजा तो राजा दाहर के पुत्र यशराज ने उसे नारायण कोट के युद्ध में पराजित कर दिया। सेनापति बदैल युध्द में मारा गया। तब अल्लाफियों के बहकानेसे नारायणकोट के सेनापति समनी ने हज्जाज़ को पत्र भेजा जिसके द्वारा सिंध पर दुबारा चढ़ाई के लिए आमंत्रित किया। यह था राजा दाहर से समनी का विश्वास घात जो निमक हराम अल्लाफियों के बहकाने पर किया गया जिन को राजा दाहर ने शरण दी थी और जिनके कारण ही हज्जाज़ ने चढ़ाई की थी।

अब की बार हज्जाज़ ने मुहम्मद बिन कासिम को सेनापति बना कर ७१२ ई० में सिन्ध पर आक्रमण करने भेजा जिसके पास ६००० सैनिक और ३ हज़ार ऊट थे। जब राजा दाहर को पता चला तो उसने अल्लाफियों के सरदार मुहम्मद वारिस को हज़ाज़ी सेना को सिंध की सीमा पर रोकने को कहा परन्तु उसने राजा को सलाह दी कि शत्रु को सीमा पर रोकने की कोई ज़रूरत नहीं, उसे राजधानी तक आने दिया जाए हम उसका एक दम सफाया कर देंगे। भोले राजा दाहर ने उसकी सलाह मान ली और कासिम की सेना सिंध में घुस आई। अब राजा दाहर ने अल्लाफियों से फिर कहा कि हमने तुम्हारे प्राण बचाए, तुम्हें शरण दी जागीरें दीं अपनी सेना में भरती किया अब तुम शत्रु से लड़ो। इसपर मुहम्मद वारिस ने उत्तर दिया—आप ने हम से भलाई की यह मैं जानता हूँ किन्तु शत्रु मुसलमान है, उससे मैं नहीं लड़ सकता क्योंकि हमारा दीन इसकी इजाज़त नहीं देता। यह था निमक हराम एहसान फरामोश और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मित्र द्रोही मुहम्मद वारिस का उत्तर जिस पर राजा दाहर सिर पीट कर रह गया। अपने शरण देने वाले की सहायता करने की बजाय यवन सब के सब 'अल्लाहो अकबर' का नारा लगाते हुए मुहम्मद बिन कासिम की सेना में जा मिले और राजा दाहर पर ही चढ़ाई कर दी। इस बात को मुन्शी कर्म इलाही ने अपनी पुस्तक 'बहादुराने इस्लाम' में बड़े गर्व के साथ लिखा है। क्या वह निमक हराम वारिस इस्लाम का बहादुर था ?

यवनों के अतिरिक्त भारत की कुछ जातीयों ने भी राजा दाहर से विश्वास घात किया। सिंध के जाट और मेड़ लोग जो राजा और उच्च जाति के हिन्दुओं से असन्तुष्ट थे, मुहम्मद बिन कासिम के साथ जा मिले क्यों कि उन्हें अच्छे कपड़े पहनने की मनाही थी; घोड़े की सवारी उन पर वर्जित थी, अपने सिर खुले रखने पड़ते थे। हिन्दू जाति में वे अपमान की दृष्टि से देखे जाते थे। हमारी जाति-पति और ऊंच-नीच के भेद भाव ने उन लोगों को हमारे शत्रु की सेना में भरती होने पर बाधित कर दिया और इससे शत्रु को दुगना बल दिया।

यह सब शक्ति एकत्रितकर कामिस ने सिन्ध के प्रसिद्ध नगर देवल पर चढ़ाई की। यहां एक बड़ा मन्दिर था। आठ दिन तक तलवार चलती रही और कासिम हार कर भागने ही वाला था। उस समय एक देशद्रोही पुजारी ने कासिम के साथ मिल कर अपने देश से द्रोह किया। उसके परामर्श से मन्दिर का झण्डा गिरा दिया गया जिसके फल स्वरूप दाहर की सेना भाग खड़ी हुई। देवल पर यवनों का अधिकार हो गया। नगर नष्ट कर दिया गया। तीन दिन तक हिन्दुओं का वध होता रहा। मंदिर के स्थान पर वहाँ मस्जिद बनाई गई। उसी पुजारी के रहस्य प्रगट करने पर शत्रु के हाथ वह खजाना भी लगा जिस में से सोने से भरी ४० तांबे की देगें रखी थीं जिन में १६२०० मन सोना भरा था जिसका मूल्य आज कल के दर से १६ अरब रुपया होगा। इसके अतिरिक्त सोने की ६००० ठोस मूर्तियां भी थीं जिनमें सब से बड़ी तोल में ३० मन थी। हीरा पन्ना माणिक मोती तो इतने थे कि ये कई सौ ऊटों पर लादे गए थे।

देवल को जीत कर कासिम मीरन की ओर बढ़ा और फिर रावर को जा घेरा। वहां दाहर से युद्ध हुआ। समानो की तरह दाहर के सेनापति मोकर ने भी विश्वासघात किया। उसने किले की चाभी कासिम को दे दी। सेनापति वारस भी यवनों से मिल गया। २१ जून १६२ को वह लड़ते २ वीर गति को प्राप्त हुआ। यह दुर्दिन भारत के इतिहास में पतन का पहला दिन था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चारपाइयां उठा कर नीचे भागने लगे। सामने के मकान में लालशाह अपने बच्चों को ज़ोर ज़ोर से झंझोड़ रहा था, उठो पाजी के बेटो, बिस्तर भीग रहे हैं। यह बीवी भी क्या है एक औटो मैटिक मशीन है; कैलण्डर भी बदलने नहीं देती। कम से कम इतना तो ख्याल कर लिया करे कि बर्सात आएगी और इन चूज़ों को डरबों में बन्द करना होगा; अच्छा भला घर था। जब से यह आई है मुर्गी-खाना बन गया है। डर लगा रहता है कि बर्सात में कोई ऊपर ही न रह जाए। ६ को नीचे ढक आया हूं और अभी दो छत पर मेरी जान को रो रहे हैं!'

जमुना से यह सहन न हुआ। वह बादलों की गर्ज के साथ बरस पड़ी—'तुम पर खुदा की मार। यह सारा कबाड़ खाना तुम्हारा इकट्ठा किया हुआ है मैं दहेज में मायके से थोड़े ही ले कर आई थी। खुद तो दिन भर ऐश उड़ाते हो और मैं तुम्हारा यह जल तरगँ बजाती रहती हूं। कभी इसे थपक, कभी इसे थपक, कभी इसे पीट! मैं ही हूं जो यहां पड़ी हुई हूँ; कोई और होती तो कब की ज़हर खा चुकी होती!'

राजेश और लीला यह नाटकीय संवाद सुन कर लोट पोट हो रहे थे। फिर वे नीचे आ कर लेट गए। मोहन अभी उम्र का तो बच्चा थामगर था मुंहफट झट बोल उठा—'पिता जी को ऊपर छोड़ आए परनाले से बह कर गली में जा गिरेंगे। लीला और राजेश अपने नटखट पुत्र की यह बात सुन कर खिलखिला कर हँसने लगे। आप को अपनी ही पड़ी रहती है यह क्या सोचता होगा, ले आओ उन्हें जाकर। लीला ने मोहन को थपकते हुए राजेश से कहा। सामने लालशाह के कमरे में नाटक हो रहा था। जमुना लालशाह से कह रही थी तुम्हें तो मर कर भी नींद नहीं आएगी। अपनी उम्र को तो देख, बाकी के दिन राम-भजन में बितने चाहिएं। रहने दो अब ये चोंचले और बजाओ बैठकर हारमोनियम। बीच में से एक बच्चा बोल उठा—पिता जी, तबला कौन बजाएगा, सो भी जाओ न। 'चुप रह उल्लू के पट्ठे' लालशाह चिल्लाया।

राजेश ने खिड़की बन्द कर दी और लीला से कहा—अब नींद तो आने से रही। प्रातः सड़े हैं पिकनिक का पुरोग्राम बनाएं। बोलो क्या खाओगी खीर, पूड़े कचौरी....या।

लीला ने कहा—'मार खाऊंगी।'

राजेश—बड़ी हाजिर जवाब हो गई हो! अच्छा अभी से तैयारी शुरू कर दो।

वर्षा थम गई थी किन्तु बादल आकाश पर छाये हुए थे। ऋतु सुहावनी थी। प्रातः १० बजे राजेश, लीला मोहन कुक्कु, सरिता और उनके साथी सामान ले कर कम्पनी बाग में जा पहुंचे। झूला डाल दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(सफा २९ से आगे)

खीर पकने लगी। पूड़ियां बेली जाने लगीं। कड़ाही में घी गर्म रख गया। बच्चें चौके के गिर्द हो गए! कटोरियाँ और थाल बजने लगे। बादल भी ताक में थे। अनायास चूल्हे पर आ झपटे। घी तड़ २ करता हुआ कड़ाही से उछला। किसी के मुंह पर पड़ा किसी की टाँग झुलस गई किसी की बांह जल गई। लीला जो भागी तो उसकी साड़ी लकड़ियों से उलझ गई। गर्म कड़ाही राजेश पर गिर पड़ी। सब हाय हाय करने लगे। वर्षा तेज हो गई। जो कुछ बना पड़ा था खराब हो गया। सरिता पीने का पानी लेकर आई तो सब ने हाय २ लगा रखी थी। वह तोतली जुबान में बोलती थी कहने लगी 'मेरे पूले! लीला ने एक पूड़ा देते हुए हा—यह लो भीग गया है!' मोहन ने शरारत भरी हंसी के साथ कहा—सब ने दो दो पूड़े और साथ में पकौड़े भी लिए हैं। इस पर सरिता का तमाशा देखने योग्य था। सात वर्ष की बच्ची ने आकाश सिर पर उठा लिया, सबने दो २ पूड़े और पकौड़े लिए हैं। मैं नहीं लेतो एक पूड़ा! मैं सिर पे मारू' एक पूड़े को?

जैसे तैसे तांगों में वापस आए। रास्ते में डाक्टर की दुकान से दवा लगवाई, किसी के मुंह पर,किसी की बांह पर नीले रंग की दवा लगी थी जो कि एक विशेष दृश्य उपस्थित कर रही थी।

पिता जी ने पूछा—यह क्या है?

राजेश और कुक्कू ने कहा —यह बर्सात की पिकनिक का प्रसाद है पिता जी।

—'आबिद'

## ★ चार मुक्तक ★

(१)

बात लब तक आई, आकर रह गई
आज चश्मेतर छलक कर रह गई
यों सताया है ज़माने ने मुझे
हर खुशी मेरी बदल कर रह गई

(२)

जितना चाहो ऐश मनालो
जितना चाहे तन चमकालो
नश्वर है यह तो मिट्टी है
जागो रब से प्रीत जगालो

(३)

कितनी परि छुपा सकता हूँ
कितनी बात भुला सकता हूं
सब ही तो अपने से लगते
किसको गैर बता सकता हूँ

(४)

बात तू मुंह से बता सकता नहीं
चीर कर मैं दिल दिखा सकता नहीं
बुत से बोलो बात कोई क्या करे
बैठ जाये मोड़पर जो,राह पासकता नहीं

राधेलाल "अशान्त"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ★ हँसते हँसते जीना ★

१. पुलिस सिपाहीकी पत्नी—तुम रोज मुझे गन्दी गन्दी गाली क्यों देते हो ?

पु० सि—क्या करूं सरकार ने अच्छी गाली सीखने के लिए कोई स्कूल ही नहीं खोल रखा ।

२. मालिक—(नौकर से) क्यों बे कहां मर गया था ?

हसमुख नौकर—हजूर बीबीजीके पास !

३. आधुनिक युग की पत्नी—आज कल के पुरुष इन्साफ पसन्द हैं ही नहीं !

पति—ठीक ही कहती हो ! पन्द्रह तारीख तक सब रकम खतम मगर श्रीमती के शौक पूरे नहीं हो पाते !

रघुनाथप्रसाद श्रीवास्तव कानपुर

४. पूरे दिन की छुट्टी शहर में बिताकर एक सिपाही अपने कैम्प में वापस आ गया। उस वक्त वह शराब के नशे में मस्त हो कर झूम रहा था । उसे समझाने के हेतु अधिकारी ने कहा—यदि तू शराब छोड़ देगा तो हवलदार बन जायेगा, जमादार भी !

"क्या जमादार बननेक इच्छा नहीं है ?

कैप्टन साहब, सिपाही ने आंखें फाड़कर मैं थोड़ी सी चढ़ाता हूँ तो कैप्टन दीखता हूँ और अपने को जनरल समझता हूं । फिर जमादार बन कर क्या करूँगा ?

५. माता—बेटा सोहन, क्रोध करना छोड़ दो यह मनुष्य का सब से बड़ा शत्रु है ?

सोहन—माता जी आपने ही तो कहा था कि बेटा । शत्रु से भी प्रेम करना चाहिये ?

६. एक व्यक्ति कुआ खुदवा रहा था। इतने में एक बालिका दौड़ती हुई आई और बोली यह गड्ढा आप किस लिए खुदवा रहे हैं ?

व्यक्ति—आस पास वालों के लिये ।

बालिका—मेरे पापा ने बताया था कि जो दूसरों के लिये गड्ढा खोदते हैं वे स्वयं उस में गिरते हैं ।

७. एक लड़की ने अपनी सहेलीके गाल पर एक चाँटा दे मारा । उसकी माता बोली—जो कोई किसी को मारता है वह गंवार होता है । लड़की ने हा—आप मुझे रोज मारती हैं किन्तु आप तो गँवार नहीं हैं ।

८. रमेश—क्यों सुरेश । दुःखी क्यों हो?

सुरेश—मैंने एक लड़की से विवाह करना चाहा था, परन्तु उसने इनकार कर दिया।

सुरेश—इस में रंज काहे का ? हजारों मिल जावेंगी ।

रमेश—मुझे अपनी चिन्ता नहीं, चिन्ता उस लड़की के लिए है कि मेरे जैसा वर उसे कहां मिलेगा ।

९. एक आदमी ने धोबी से शिकायत की, तुम बुरी तरह कपड़े धोते हो; फाड़कर एक एक के दो-दो कर लाते हो । धोबी ने कहा—श्रीमान मैं एक कपड़े के दो कर लाने पर भी धुलाई तो एक की ही लेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ★ स्वास्थ्य सुधार ★

## पायोरिया के कारण और इलाज

कारण —कभी इस रोग का कारण यह होता है कि मसूढ़ों की शक्ति निर्बल हो जाने से उनके भाग के रक्त को अंग नहीं बनाती इस लिए मसूढ़ों में रक्त भर जाता है और साधारण कारणों से बहने लगता है या उस हिस्से के रक्त में सफरा की अमेज़श अधिक हो जाती है जिससे कि रक्त में एक प्रकार की तेज़ी और रिक्कत पैदा हो जाती है और बहने लगता है या मसूढ़ोंमें खून अधिक इकट्ठा हो कर वरम पैदा कर देता है और इससे एक की हरारत का अमल होने लगता है जिसके कारण रक्त गन्दा हो कर पीप का रूप धारण कर लेता है और अपनी तेज़ी और खराबी के कारण मांस को गलाकर वहा जख्म पैदा कर देता है तो इससे पीप निकलने लगती है। चुनाँचि यदि यही घाव अधिक देर तक रहे तो नासूर की शकल पैदा कर लेता है जो कठिनाई से अच्छा होता है। या इस रोग का कारण मुंह और दांतों को साफ न करना होता है विशेषकर भोजन करने के अनन्तर दांतोंको साफ न करना होता है। परिणाम यह होता है कि दांतों पर सख़्त पीले रंग का मैल जम जाता है और उसके कारण मसूढ़ों के किनारे घायल हो कर उनसे पीप आने लगती है।

इलामात—रोग के आरम्भ में प्रायः मसूढ़ों में वरम हो जाते है ! साधारण कारणों से खून आने लगता है। मुँह का स्वाद खराब रहता है। श्वास से दुर्गन्ध आती हैं। अन्तिम अवस्था में मसूढ़ों को दबाने से दुर्गन्ध युक्त पीप और लेसदार रतूबत निकलती है विशेषतः उस अवस्था में जबकि रोगी ने पान छालिया आदि न खाया हो और मुंह न धोया हो। दांतों की जड़ें खाली हो जाती हैं। जो लोग इस रोग में ग्रस्त होते हैं वे मसूढ़ों के फूलने और दांतों के दर्द से प्रायः पीड़ित रहते हैं।

इलाज—इस रोग में ऐसे मंजन प्रयोग लावें जो आज़मूदा भी हों और काबिज़ भी। मुंह और दांतों की सफाई का विशेष रूप से ध्यान रखें। भोजन करने के अनन्तर दांतों की दरारों में से भोजन के रेजे निकाल दें और खूब भली भांति गरारे व कुल्ली करें, दिन में कई बार। लेकिन यदि मसूढ़ों से खून आता हो तो यह नुसखा प्रयोग में लावें—

फिटकरी की खील ३ माशा, नीला थोथा खील ३ माशे, आकरकरा ३ माशे; । इन सब को कूट छान कर मंजन बनाएं और सायं व प्रातः दांतों और मसूढ़ों पर मलें और दो तीन बार दिन में एक तोला फिटकरी को ४० तोला पानी में घोल कर कुल्ली करें ।

## मधु का चमत्कार

(१) खून की सफाई के लिए २ चमचे शहद पानीमें घोलकर दिनमें दो बार पिया करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# नई आवाज हूँ

(श्री श्यामलाल विशिष्ट अकिंचन एम. ए.)

नई आवाज हूँ, मुझ को,
दफन करना बहुत मुश्किल,
अभी है वक्त; मुझ को,
झूमकर दिल से लगा लो तुम !
बहुत तुम ने सताया;
किन्तु-बनकर मौन मैं बैठा,
मगर ज्वालामुखी की भांति;
अब सोया हृदय जगता ।
न रोको अब उजाले को;
महल की इन दिवारों में,
रोशनी की लहर बढती;
बढेगी--अब तिमिर हटना ।
नई लौ हूँ, उसी प्रचीन;
धुँधले दीप की, लेकिन--
उसे अब गहन तम की,
कैद में रखना बहुत मुश्किल,
स्वयं ही गर्द को कर साफ;
बाती को जला लो तुम !
बहुत तुम ने दबाया;
मैं दबा, दब कर बना मिट्टी,
मगर कंकाल तन में कौन-सा,
यह जोश जगता है !
बढो आगे, समझ कर वक्त,
कर लो आज समझौता;
पुराने खून में यह नया,
ही तूफान उठता है ।
नई हूं लहर, तन की उसी
सूखी सरिता की; लेकिन-
उसे जंजीर सोने की,
बना कर बांधना मुश्किल,
स्वयं बन कर समुन्दर- इस
लहर का मन चुरा लो तुम ।
नहीं तुम देखते अब घृणा का,
स्वर हां रहा खामोश,
वसुधा पर जमाना, प्यार
की फसलें उगता है ।
धरा पर भेद की दीवार जो
लम्बी खड़ी थी अब-
उसे नूतन सवेरा जगा कर
भू से मिटाता है ।
नया स्वर हूँ; उसी डूबे
पुराने समय का लेकिन-
उसे खोया- मिटा- बिखरा
विगत कह रोकना मुश्किल
स्वय इससे मिला कर स्वर
नई सरगम बजा लो तुम ।

—मर कर एक सम्पादक स्वर्ग के द्वार पर पहुँचा किन्तु उसे अन्दर न जाने दिया गया। उसे नरक के अन्दर जाने से भी रोका गया। उसने एक वीरान सितारे में रहना और वहीं से समाचार-पत्र निकाला आरम्भ कर दिया। तब उसे स्वर्ग और नरक दोनो के फ्री पास मिल गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ★ गृह विज्ञान ★

## ★ कुछ सब्जियां और उनके गुण ★

★ गाजर—लोग प्रायः गाजर को बहुत साधारण सब्जी समझते हैं लेकिन इसमें विटामिन 'ए' पर्याप्त मात्रा में होता है जिसके बिना मनुष्य का विकास सम्भव नहीं है। यदि खाने की चीज़ों में विटामिन 'ए' की न्यूनता हो तो शरीर में रोगों को रोकने की शक्ति नहीं रहती। गाजर तिल्ली, पत्थरी, और कमजोरी के लिये लाभदायक है। जोश खून और सफरा को कम करती है इसके बीज दिमाग के लिए बहुत लाभप्रद हैं। गाजर शारीरिक शक्ति को बढ़ाती, खांसी बवासीर और संग्रहणी में लाभदायक है।

★ मूली—दमा, कमज़ोरी मेहदा, हिचकी, पेशाब की रुकावट और पत्थरी के लिए अति लाभदायक है। गज़ा को शीघ्र पचाने वाली हैं। हमेशा ताज़ा और छोटी मूली खानी चाहिए। मूली खाने के समय पत्ते भी चबाओ। मूली के पत्तों की भुजिया शीघ्र पच जाती है। मूली खाने के अनन्तर थोड़ा गुड़ खाना लाभदायक है।

★ टमाटर—हकीमों का कहना है कि अन्य सब सब्जियों से अधिक लाभदायक है। इसे कच्चा खाया जाय या पका कर दोनों तरह लाभप्रद है इस में फौलाद पर्याप्त मात्रा में होता है इस लिये इसके प्रयोग से कब्ज दूर हो जाती है। टमाटर खाने से खून पैदा होता है और आन्तों को विशेष लाभ पहुंचता है। फौलाद के अतिरिक्त विटामिन 'ए' 'बी' तथा 'सी' पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। छोटे बच्चों के लिये नेहमत है।

★ शलजम—खांसी; तपदिक; आंखों और शारीरिक निर्बलता के लिये अति लाभदायक है देर में हजम होता है। और अधिक खाने से पेट फूल जाता है। पकाते समय अदरक मिला लेना चाहिये!

★ पालक—इस में फौलाद पर्याप्त मात्रा में होता है। जिनके शरीर में खून कम हो वे इस का प्रयोग करें। इसके खाने से कब्ज जाती रहती है।

—आदमी अनुभव से ही सीखता है। आग से हमारा हाथ जल जायगा यह तो सभी जानते हैं किन्तु अपनी अंगुलियां जलाए बिना आग की गरमी से कोई परिचित नहीं होता।

—आय से व्यय कम रखें ऋण न लें। मितव्ययता सावधानी और आत्म त्याग से काम लें। इन नियमों का पालन कठिन हो सकता है। पर अन्त में इनके पालन से आत्म सँतोष के रूप में भारी लाभ प्राप्त होता है।

—मन एक उद्यान है जिस में हम चाहें तो सुन्दर फूल विकसित करें चाहें इसे उजड़ा पड़ा रहने दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(सफा २२ से आगे)

हम ने साँस लेना सीखा है, पर हम अपने दिल की चाल को बन्द नहीं कर सकते, क्योंकि उस पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। पानी की कल को हम बन्द कर सकते हैं, क्योंकि हमने उसे खोलना सीखा है। मतलब यह है कि किसी भी करने को छोड़ने के लिये उसे सीखना अपने वश में करना जरूरी है ।

और यह भी तो होता है कि जब हम एक गन्दा काम करते हैं तो उसके प्रति हमारे मन में एक प्रकार की घृणा उत्पन्न होती है। यह घृणा हमारे अन्तर्मन में उस कार्य से सम्बन्धित होकर रहती है, अतः जब वह काम हम फिर करना चाहते हैं तो हमारे अन्तर्मन में बैठी हुई हमें वैसा करने से रोकती है।

हकलानेवाले का उदाहरण लें। हकलाने वाला डरता रहत है कि वह बात करते समय कहीं हकलाने न लगे, वह कोशिश करता है न हकलावे। फल यह होता है कि डर और कोशिश उसकी कमी के प्रति उसे अधिक सजग कर देते हैं, जिस का प्रभाव बोलने से सम्बन्धित मांसपेशियों पर पड़ता है और वह अधिक हकलाने लगता है।

अब जब वह खुद हकलाने की कोशिश करता है तो क्या होता है? अपनी इस गलती से बचने के बजाय वह खुद ही इस गलती को करता है, उस से दूर रहने की बजाय उसे अपनाता है। जानकर हकलाता है और जितना जान-सोचकर वह हकला सकता है उतना ही अधिक उससे छुटकारा पाने की आशा की जा सकती है।

★बूझिए तो ?

## ★ पँजाबी बुझारतें ★

एनी 'क कुड़ी ओहदे निक्के-निक्के दन्द जे उस नूं खाइये ता पावे डण्ड।

२. काला सी कलत्तर सी; काले पिऊ दा पुत्र सी, आडों पानी पींदा सी, बरूटी छावें बैहिंदा सी।

३ बाहरों आये दो मलंग, हरीआं टोपियाँ नीले रंग।

४. बाहरों आये चार मलंग सावीआं टोपियां नीले रंग।

५ बात दी बतेई, चिक्कड़ विच गिदड़ खुबा; पूंछ नंगी रही।

६. इस आदमी दे सठ भग्गे।

७. हरी डण्डी सब्ज दाना, भीड़ पई मँग खाना।

८. गोल मोल भक्करी, उत्ते पीला रंग जेहड़ा मेरी बात न बूझू ओहदा पिऊ नंग।

९. माँ लीरां कचीराँ; पुत घोन मोन

१०. रड़े मैदान चूहा लेटे।

११. बहू आई आपे; चार लियाई काके, इक गोदी इक मोढे, बाड़ कन्नीं झाके; इक बापू बापू आखे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने

चाँद में पृथ्वी के केन्द्र की ओर आकर्षित करने की शक्ति कम होने से जो व्यक्ति भूमि पर ५०० पौंड बोझ उठा सकता है वह वहाँ ३००० पौंड बोझ उठा सकता है।

ऊपर

मलाया में बन्दर भी मज़दूरों के तौर पर भरती हो गए हैं। वे वृक्षों पर चढ़ कर नारियल नीचे फेंकते है। और पारिश्रमिक में उन्हें अच्छा भोजन मिल जाता है।

सामने

अमेरिका की प्रसिद्ध कन्सर्ट विशेषज्ञा जो गत दिनों कोरिया, फिलपाईन्ज वीटनाम कम्बोडिया थाइलैंड मलाया, बर्मा और लंका में कला के प्रदर्शन के पश्चात भारत आईं और सफल कार्य क्रम पेश कर लौट गईं। अपने दौरे का कार्यक्रम बनाते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप नहीं जानते कि—

सामने : मधु मक्खी अपने नृत्य द्वारा पैदा होने वाली आवाज़ द्वारा अन्य मक्खियों को उस स्थान की दूरी का पता कर देती है जहां से शहद उपलब्ध हो सकता हो।

★

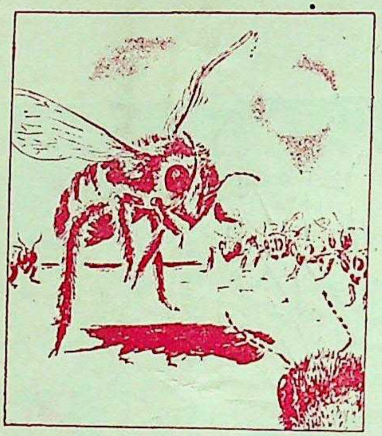

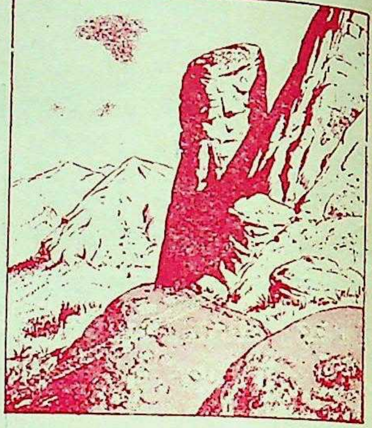

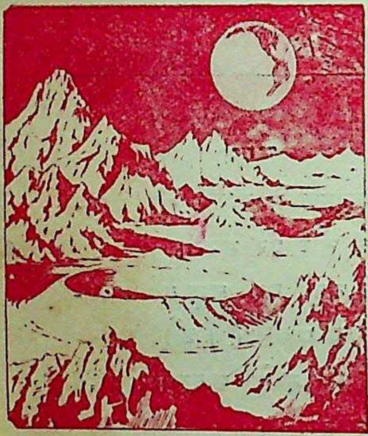

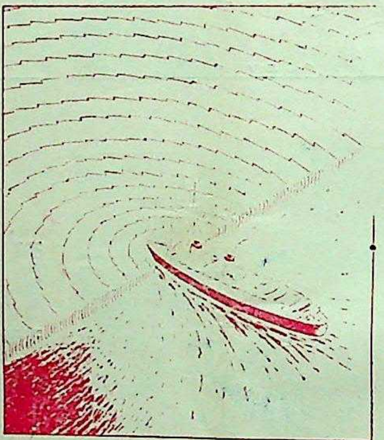

ऊपर : फगूँस और एलगा का सँयुक्त पौधा एसिड पैदा करता है जो चट्टानोंको तोड़कर मिट्टीमें बदल देता है जहां वृक्ष और फूलदार पौधे उगते हैं।

सामने : 'क्वीन एलिज़्वैथ' नामक जहाज के साइरिन १० मील की दूरीसे सुने जासकते व १०० मील से ज्ञात हो सकते हैं।

ऊपर

विशेषज्ञों का विश्वास है कि चांद से हमारी भूमि काले आकाश में नीले ग्लोब जैसी दीख पड़ेगी।

सामने

चाँद में वायु मण्डल की शून्यता के कारण मनुष्य कोई आवाज़ नहीं सुन सकता किन्तु पृथ्वीकी अपेक्षा देख बेहतर सकता है अतः वहां आबज़रवेटरी स्थापित करने के स्वप्न देखे जा रहे हैं।

★

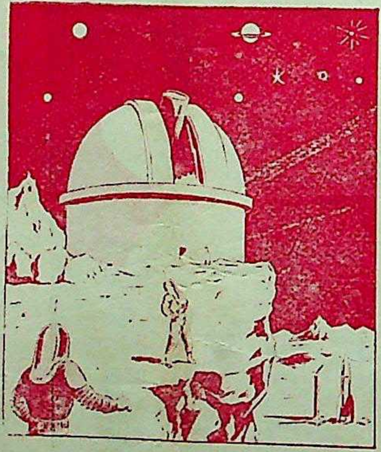

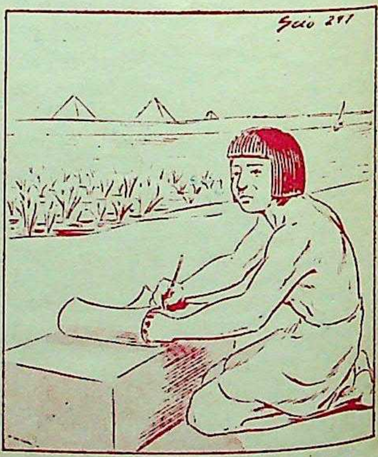

ऊपर : (बाईं ओर से) वैज्ञानिकों को भय है कि कागज़ बनाने के घास खत्म होने पर मनुष्य पुनः ताड़ के पत्तों का प्रयोग करने पर बाधित होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री एल० सी० हितैषी द्वारा वीर मिलाप प्रेस जालन्धर से मुद्रित तथा १२७ चहार बाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

वार्षिकमूल्य ७) | [पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका] | एक प्रति १० आने

★ काश्मीर के मुख्य मन्त्री ★

७ मई '५८

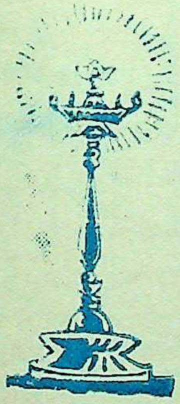

★ बख्शी गुलाम मुहम्मद ★
जिन्होंने काश्मीर के भारत के साथ सम्बन्ध को अटूट बताया है।

सम्पादक
हितैषी अलावलपुरी

शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित।

THE "Prakash"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने

हार्वेल इँगलैंड में स्थित बृटिश एनर्जी एस्टैबलिशमेंट में यह नया एट-मिक रिएक्टर एच एम लिडो स्थापित किया गया है। टक्नीशियन टैंक में झाँक रहे हैं।

नीचे बाईं ओर से १. यदि स्टार मछली के टुकड़े २ कर दिए जाएँ तो वे फिर स्टार मछलियों का रूप धारण कर लेंगे। २. रूसी विशेषज्ञों ने अमे-रिका म जब यह सस्ता घर देखा तो इसे इतना पसन्द किया कि फौरन खरीद लिया ताकि रूस में इसी तरह के घर बनाए जा सकें। ३. पश्चि० देशों में मलेरिया का अन्त करने के लिए जो पग उठाए गये हैं उनके बड़े उत्साह जनक परिणाम निकले हैं।

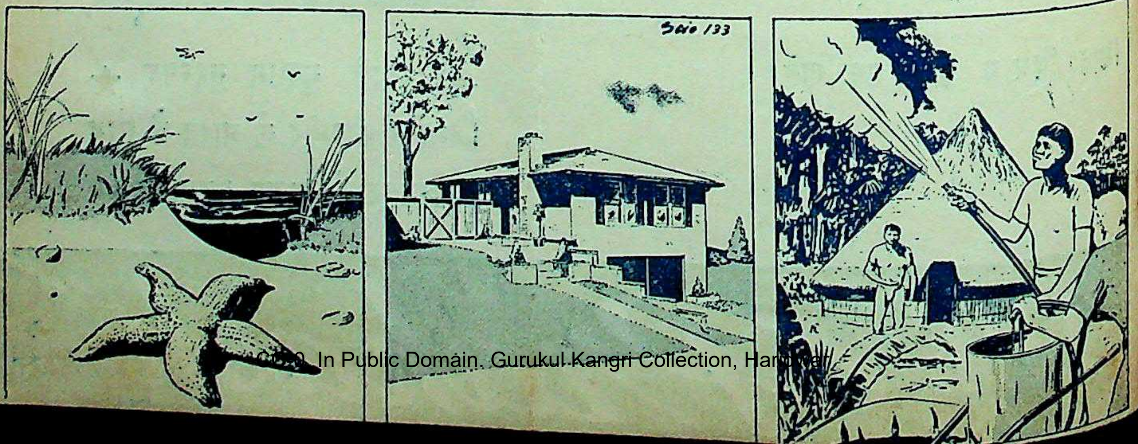

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब उत्तर प्रदेश बिहार हिमाचल पैप्सू भूपाल और हैदराबाद के स्कूलों केलिए स्वीकृत

# ★ प्रकाश ★

॥ पन्जाब की एकमात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका ॥

वर्ष ५३ क्रमांक ५२ | जालन्धर ७ मई '५८ | भाग ६ अँक ५ हिन्दी

## ★ कहाँ क्या है ? ★

| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| **कविताएँ** | | |
| पराग | श्री निर्बोध | ३६ |
| नया जीवन | पद्मसिंह 'कमलेश' | १८ |
| निर्माण | प्रणव शास्त्री | ,, |
| वीर मां की लोरी | | २५ |
| जवानी कह रही है | शाँति स्वरूप कुसुम | २२ |
| क्या जाने ? | | २६ |
| **कहानियाँ** | | |
| साहस के पागलपन का गीत | गोर्की | २ |
| बेचारा मुण्डू | रवीन्द्र कालिया | १६ |
| मृत्यु समय अपनी कमाई साथ ले जा सकोगे ? | | २४ |
| मंजिल की बांहें | 'सुदर्शन' | २६ |
| **लेख** | | |
| सोवियत संघ के सार्वजनिक शिक्षालय | | ७ |
| शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य | | ८ |
| सफलता के लिए आत्म-विश्वास | | ११ |
| भूगोल का प्रादुर्भाव कैसे हुआ | | २३ |
| अंगरेजी राष्ट्र भाषा नहीं रह सकती | | २६ |
| चाँद नीचे गिर क्यों नहीं पड़ता | | २८ |
| देख ली हम ने बम्बई भी ! | | ३१ |
| नाक से हाथ के अंगूठे तक | | ३५ |

तथा स्थायी स्तम्भ, अपनी बोली 'च फूल और काँटे शिक्षा समाचार, समाचार सार, सम्पादकीय विचार इत्यादि।

## ★ देश के युवक से ★

न भूलो कि इस जाति के प्राण हो तुम
इसी देश की वीर सन्तान हो तुम
उमड़ता हुआ एक तूफान हो तुम
प्रलय हो प्रलय का समाधान हो तुम
वही रूप फिर याद करना पड़ेगा,
रगों में नया खून भरना पड़ेगा।
तुम्हें शीघ्र ही अब सँभलना पड़ेगा
उछलना, उबलना मचलना पड़ेगा
समय के नहीं साथ चलना पड़ेगा
सुनाई पड़ेंगी विजय की पुकारें
तुम्हें देख कर खिल उठेंगी बहारें।
उठो फूट के पात्र को फोड़ डालो
अभी भेद की शृङ्खला तोड़ डालो
भटकते दिलों को पुनः जोड़ डालो
समय की प्रबल धार को मोड़ डालो
विषैली विषमता मिटाते चलो तुम
सभी को गले से लगाते चलो तुम !
स्वयँ जागकर दूसरों को जगा दो
अभी नाव को तुम किनारे लगा दो
उठो इस धरा को गगन तक उठा दो
नहीं तो गगन को धरा पर झुका दो
नई नींव खोदो, नए घर बनाओ
नई रागिनी में नए गीत गाओ। 'हँस'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## * अपनी बोली 'च *

### समय दी आवाज

जिला फीरोजपुर दे पिंड चूहड़ चक 'च जमीन दे बटवारे दे झगड़े 'च पियो दी दो पुत्ताँ ने हत्या कर दित्ती। एह खबर पढ़ के मन 'च सवाल पैदा होया कि एसे धरती ते कदे राम ने जन्म लिया सी जिस सौतेली माँ नूँ दिते पियो दे वचनां दे पालन लई तख्त ताज ते घर बार सब कुछ छड दित्ता सी? जेकर एह धरही ओो ही ए ते. फेर जमीन दे इक टुकड़े लई पुत्तां ने पियो दे टुकड़े क्यों कर दिते? की धन अते सम्पत्ति दा मोह पियो-पुत्र दे रिशते दे मोह नालों ज्यादा प्रबल है? ओह केहड़ो चीज है जिसने अजेहा वातावरण साडे समाज 'च पदा कर दिता है जिस विच पुत्र पियो दा आज्ञाकारी नहीं बन रिहा?

जेकर ध्यान नाल वेखिया जाए ताँ साडे विचाराँ ते जीवन दे प्रति साडे दृष्टकोण नूं दूषित करन वाली इको चीज है ते ओह है पाश्चमीयता। पश्चिमीयता दा विष साडी रग-रग ते साह साह 'च समा गिया ए। एस ने साडे मस्तिष्क 'च स्वार्थ दी असीमित भावना भर दिती है जिहड़ी कि सानूं अपने कर्त्तव्य नूं पछानन नहीं दिंदी ते उचित-अनुचित दा विचार नहीं करन दिंदी।

असी चाहे बड़े बड़े कालेज हस्पताल ते सड़कां किन्नीआँ बना लईए पर जद तीक साडे विचार उच्चे नहीं हुन्दे तद तीक साडी एह तरक्की जिस ते असीं गर्व कर रहे हाँ कौडी दी नहीं एह गल असीं अज पहली बार नहीं आख रहे अगे भी कई वार बड़े जोर नाल आख चुके हां। पर सानूँ शक ए कि किधरे तरक्की दी परिभाषा ही न हुन बदल गई होवे। जे एह गल नहीं ते सानूं मनना पयेगा कि असीं उन्नति वल नहीं अवनति दे डूँगे खडे 'च गिरदे जा रहे हां। ते जे असीं सँभलन दी कोशिश न कीतीतां साडीआं सन्तानाँ दा भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा ते ओह बड़े होके राष्ट्र दे पतन लई सानूं उत्तरदायी ठहरानगे। की असीं समय दी आवाज नूँ सुन के संभलन दी कोशिश करांगे?—भाईया रेढू

## ★ समाचार सार ★

—राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद २ मई को शिमला पधारे आप तीन सप्ताह वहाँ रहेंगे।

—शेख अब्दुल्लाको देश घातक सरगर्मियों के कारण पुनः नजर बन्द कर दिया गया है।

डा० ग्राहम की रिपोर्ट पर जो उन्होंने कश्मीर की समस्या विषयक सुरक्षा परिषद् को दी है अगले मास विचार किए जानेकी आशा है।

—मिसर के प्रेजीडेंट नासिर रूस गए हुए हैं।

—आँध्र प्रदेश में हालमी नदी पर ६६०० फुट लम्बा पुल तयार हो रहा है।

—पं० नहरु ने प्रधान मंत्री पद त्यागने का अपना विचार त्याग दिया है।

—प्रथम मई से देश में वेश्या-वृत्ति कानूनन बन्द कर दी गई है।

—मौ० आजाद के स्थान पर पं० पन्त कांग्रेस पार्लियामेंटरी पार्टी के डिप्टी लीडर निर्वाचित हुए हैं।

—अफगानिस्तान में भारी बाढ़के कारण ४६ व्यक्ति मारे गए हैं।

—२८ अप्रैल को पंजाबी रिजनल कमेटी की एक बैठक चण्डीगढ़ में हुई।

—अमेरिका ने भारत को १९ लाख ८७ हजार डालर की आर्थिक सहायता देना स्वीकार किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## ★ फूल और काँटे ★

[पाठकों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—क्या शेख अब्दुल्ला को दोबारा नजर बन्द करना अच्छा है या बुरा ?

सीता राम जम्मू।

उ०—इन दो लानत, न उसका बाहिर रहना अच्छा न जेल में रखना, हमारी सम्मति में उसे भी कासिम रिजवी की तरह पाकिस्तान चले जाना चाहिए।

प्र०—क्या हमारे देश में डैमोक्रेसी चल रही है? —हरि प्रकाश लुधियाना।

उ० यहाँ डैमोक्रसीके नाम पर बहुमतीय धक्का शाही पनप रही है, आपको यदि इसे डैमोक्रेसी मानने से इन्कार है तो आप कम्युनलिस्ट हैं।

प्र०—अपनी सम्मति में क्या पँ० नेहरु के बिना देश का काम चल सकता है ? सुशील मेरठ

उ०—आज तक किसी के बिना दुनिया का काम रुका भी है जो भारत का नेहरु के बिना न चलेगा ? गाँधी जी चले गए तो क्या काम रुक गया था ?

प्र०—काँग्रेसका प्रभाव देशमें क्यों घटता जा रहा है ? —सन्तोष कुमार अम्बाला

उ०—इस लिए कि वह जनता की सेवक न रह कर हाकिम बन गई है और हाकिम भी वह जिसे केवल अपनी उदर पूर्ति की ही चिन्ता हो—कहो यह झूठ है क्या ?

प्र०—यदि भारत सरकार काश्मीर के कुछ भाग पर पाकिस्तान का अधिकार अनुचित समझती है तो अपना वह इलाका वापिस लेने की चेष्टा क्यों नहीं करती ? जानकी नाथ श्री नगर।

उ०-इसलिए कि पँचशील रास्ता रोके खड़ा है।

## ★ शिक्षा-समाचार ★

दूसरी पँच वर्षीय योजनाके शेष तीन वर्षों में देश भर में ६० हजार अध्यापकों को नौकरी देने की योजना बनाई जा रही है।

प्राइमरी कक्षाओं के लिए सरकार द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकें बाजार में अप्राप्य है।

सैंट्रल एडवाइजरी बोर्ड आफ एजुकेशन का यह सुझाव कि सैकण्डरी स्टेज में ३ भाषाएं; अंग्रेजी, हिन्दी और प्रदेशीय भाषा अनिवार्य रूप में पढ़ाई जाए बहुत से राज्यों ने स्वीकार कर लिया है। पँजाब और बम्बई राज्य अभी विचार कर रहे हैं।

तीसरी एशियन गेम्ज में जो जपान में होंगी भारत के निम्न खिलाड़ी भाग लेंगे प्रद्युम्न सिंह, सोहन सिंह, मिलखा सिंह, गुलजारा सिंह जगदेव सिंह, अजीत सिंह श्री चन्द्र राव, मोहेन्द्र सिंह, राम मेहतर, ईशर सिंह सी. एम. मुठिया जे बी जौसेफ, अलैक्स सिल्वेरा बावू सिंह पान सिंह बलकारसिंह उस्मानी मारिया राम दलजीत सिंह तथा सरनजीतसिंह आदि।

प्राईवेट स्कूलों द्वारा मांग की जा रही है कि सरकार उन्हें इतनी ग्रांट दे कि जिससे वे भी छटी कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा प्रचलित कर सकें।

भारत सरकार ने इस वष भी २०० मैरिट स्कालरशिप देना स्वीकार किया है।

जनवरी से ताशकन्द स्कूल नं० २४ में छोटी कक्षाओं के पाठ्क्रम में हिन्दी भी शामिल कर ली गई है और क्यूमोवा हिन्दी की अध्यापिका नियुक्त हुई है। क्योटो विश्वविद्यालय के १ छात्रको संस्कृत का प्रथम पुरस्कार दिया गया है।

केरल के शिक्षा बिल की विवादास्पद धाराएँ सुप्रीमकोर्ट में विचाराधीन हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * सम्पादकीय विचार *

## वेश्यावृत्ति का अन्त

केन्द्रीय सरकार ने एक कानून द्वारा १ मई से वेश्यावृत्ति का अन्त कर दिया है। सरकार का यह पग स्तुत्य है किन्तु हमें भय है कि कानून का डण्डा अभीष्ट की सिद्धि न कर सकेगा क्योंकि जब तक उन पतिता स्त्रियों के लिए जो वेश्या-वृत्ति कर रही हैं, कोई सन्तोषजनक व्यवस्था न हो उन से यह आशा रखना कि वे यह नीच व्यवसाय छोड़ देंगी, दुराशा मात्र है। क्योंकि अब वे छिप-छिपा कर अपना धन्धा जारी रखने पर विवश हो जाएंगी। ऐसी परिस्थिति में हम सरकार को सुझाव देंगे कि वह पहले उनको समाज में खपाने अथवा उनकी जीविका की व्यवस्था कर ले फिर इस कानून को लागू करे।

## ६० हजार अध्यापकों की जरूरत

दूसरी पँचवर्षीय योजना के शेष तीन वर्षों में देश भर में ६० हजार अध्यापकों को केन्द्रीय सरकार नौकरी देने की एक योजना पर विचार कर रही है। इसके अनुसार ५८-५६ में १५ हजार ५६-६० में २० हजार और ६०-६१ में २५००० टीचरों की जरूरत पड़ेगी।

हमारे इतने बड़े देश में जहां पढ़े लिखे युवक-युवतियाँ लाखों की संख्या में बेकार हों, ६० हजार का अध्यापन कार्य में लग जाना समस्या का पूरा हल तो नहीं है फिर भी इस दिशा में एक सराहनीय पग अवश्य है। यदि सरकार अपनी योजना का ढांचा ऐसे ढंग से बदलने को तैयार हो जाय कि जिसमें देश के लखों बेकारों को कार्य मिल सके तो हमारी पँच वर्षीय योजनाओं की सफलता में सन्देह न रहे। क्योंकि उस अवस्था में जनता खुशी से इन योजनाओं के लिए धन देगी।

## पं० नेहरु के विचार

देश के प्रधान मँत्री पं० नेहरू ने विचार प्रगट किया है कि बड़े-बड़े भवनों पर धन व्यय न करके अध्यापकों को सन्तुष्ट रखने पर बल देना चाहिए। उन्हें अच्छा वेतन दिया जाय और उनके रहने के लिए घर तैयार किए जाएं चाहे विद्यार्थियों को वृक्षों की छाया में ही क्यों न पढ़ाना पड़े?

पंडित जी के विचार प्राचीन आदर्श का समर्थन करते हैं। किन्तु आधुनिक युग में इन पर अमल करने को तैयार कौन होगा?

## शिक्षा-कर

पँजाब सरकार ने बिजली के रेट में २ पैसे की वृध्दि के रूप में जो शिक्षा कर लगाया है वह इसलिए आपत्ति जनक है कि जिनके बच्चे शिक्षा ग्रहण नहीं करते उन्हें भी यह कर देना होगा जबकि बिजली राष्ट्रीयकरण के पश्चात डेढ़ आना प्रति यूनिट पहले ही महंगी है। फिर इस कर से सारे स्कूलों को लाभ न पहुंच कर केवल सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को ही लाभ पहुँचेगा। इस से तो शिक्षा का सशुल्क रहना कहीं बेहतर था! उसके इस निर्णय ने प्राईवेट स्कूलों के लिए जो कठिनाई पैदा कर दी है वह तो न होती।

इस कर का विरोध किया जाना चाहिए क्योंकि यह न्यायोचित नहीं है।

## स्कूली पुस्तकों का अभाव

स्कूक १६ अप्रैल से खुल चुके हैं और कक्षाएं नियमपूर्वक लग रही हैं किन्तु दुःख की बात है कि प्राइमरी कक्षाओं की स्कूली पुस्तकें बाजार में अभी तक प्राप्य नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * सोवियत संघ के सार्वजनिक शिक्षालय *

(लेखक श्री ए० गोनचारोव)

क्रांति से पूर्व तीन चौथाई रूसी अशिक्षित थे। आम स्कूलों में जो थोड़े से लोग भरती हुए, सन् १९ ४ में ७९ लाख -उनमें से ७४ लाख ही चार कक्षावाले ऐसे प्राथमिक स्कूलों में गये जिनमें से एक में मैं पढ़ता था ।

पूर्वी क्षेत्रों के लोगों, किरघिजी, तुर्कमनिस्तन, उजबेक और कजाक को तो इतनी भी शिक्षा नहीं मिलती थी। इन जातीय वर्गों के लोगों में अधिक से अधिक ५० में से सिर्फ एक और कहीं कहीं तो जैसा कि कजाकों के बारे में सच था, १६० में से एक ही पढ़ लिख सकता था।

रूस के अन्य लोगों के समान ही इन लोगों में निरक्षरता भूतकाल का अवशेष-मात्र रह गई है। आज शायद ही कोई ऐसा गांव है जहाँ उसका अपना सात-साला स्कूल न हो और पूरी दस वर्षीय पढ़ाई के लिए जो मोटे तौर पर अमरीका की प्राथमिक और हाईस्कूल दोनों के बराबर होती है, सुविधाओं का तेजी के साथ विस्तार न किया जा रहा हो।

परिणाम बिल्कुल स्पष्ट है । अब हाई स्कूलों की अँतिम-कक्षाओं आठवें से १०वें दर्जे तक में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या सन् १९१५ के मुकाबले में ५० गुना है ।

इस चालू स्कूली वर्ष के २२०,००० स्कूलों और १५,००,००० अध्यापकों तथा प्रतिवर्ष बड़े पमाने पर १०;००० नये स्कूलों के निर्माण के बावजूद हमें अभी भी बाध्य होकर ७ से १७ वर्ष की उम्र के २९;०००,००० स्कूली बच्चों के लिए दो और कभी कभी तीन पालियां चलानी पड़ती हैं। राष्ट्रीय बजट का १३ प्रतिशत भाग सार्वजनिक शिक्षा के लिए निर्धारित कर दिया गया है।

रूस की सारी शिक्षा प्रणाली में, स्कूल जाने से पहिले की शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तरपर स्नातक शिक्षा तक नियमित श्रेणियां हैं! हमारे यहां ऐसी कोई चीज नहीं है जो निर्बाध रूप से हमारी शिक्षा की सीढ़ी में नीचे से ऊपर जाने के रास्ते में बाधक हो। सभी सार्वजनिक स्कूलों में पाठ्यक्रम और पढ़ाई के तरीके एक जैसे हैं । साथ ही पाठ्य-पुस्तकें भी एक जैसी हैं।

हां,प्रत्येक जनतन्त्र अपनी विशिष्ट क्षेत्रीय नसली और भाषाई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने पाठ्यक्रम को दिशा देता है लेकिन इस प्रकार की प्रणाली तैयार की गई है कि कोई भी विद्यार्थी बिना किसी कठिनाई के अपने जनतन्त्र जिसमें पढ़ाई शुरू की हो के अलावा दूसरे जनतन्त्र में भी पढ़ाई जारी रख सकता है।

दस साला स्कूल में विज्ञान जिसका केन्द्र बिन्दु भौतिक शास्त्र और गणित है की बुनियादी जानकारी विशुद्ध साहित्य के अध्ययन और पोली टैकनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। इस तैयारी के साथ जो भी लोग दस साला स्कूल की पढ़ाई पूरी कर लेते हैं वे या तो नौकरियों के लिए या कालेज स्तर पर पढ़ाई जारी रखने को लैस हो जाते हैं।

विज्ञानों भौतिकी रसायन और प्राणिशास्त्र में आम नियमों की पढ़ाई के अतिरिक्त बच्चों से प्रयोगशालाओं और उनके बाहर कार्य क्षेत्र में काफी काम कराया जाता है जिससे उन

(शेष पृष्ठ १० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य ! *

(स्वामी रङ्गनाथानन्द जी एम.ए.)

शिक्षा के सुप्रसिद्ध केन्द्र में शिक्षाके विषय में अपने विचार प्रकट करना ही मुझे उचित प्रतीत होता है। राजनैतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति से पूर्व हमारी शिक्षाका कोई उच्च ध्येय न था। किन्तु हमारे देश के मान्य नेता स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा गाँधी आदिने इस विषयपर विशेष रूप से विचार किया था क्योंकि शिक्षा पर ही देश की उन्नति निर्भर है। इस लिए इन नेताओं ने यह विचार प्रकट किया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जनता के लिए हित कारक हो। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार भी इस प्रश्न पर विचार करती रही है कि शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिये। उसके कुछ उच्च उद्देश्य होने चाहियें। साधन ध्येय की पूर्ति के लिये होते हैं। पहले हमें अपने सामने स्पष्ट ध्येय रखनाचाहिये। सरकार करोड़ों रुपया शिक्षा पर खर्च करती है उसका क्या उद्देश्य है? शिक्षा के इन ध्येयों को हम इस क्रम से रख सकते हैं। प्रत्येक राष्ट्र जो शिक्षा देता है वह उस राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है।

(१) हमारे राष्ट्रवासियों को अपनी उत्तराधिकार में प्राप्त संस्कृति, सभ्यता की रक्षा और वृद्धि में तत्पर रहना चाहिये। हमारा भूत के प्रति एक ऋण है और भविष्य के लिए उत्तरदायित्व है। विदेशीय शासन के कारण इस निरन्तरता को स्थिर रखने में हम समर्थ न थे अतः हमारे नेताओं ने स्वराज्य के लिए प्रयत्न किया। चरित्र और सदाचारादि की उच्चता के साथ दूसरे देशों की अच्छी बातें ग्रहण करने में उद्यत होना चाहिये। संयुक्त राष्ट्रीय शिक्षा संघ में भी यही आदर्श रखा जाता है। भारतीय छात्र के लिए यह आवश्यक है कि वह प्राचीन संस्कृति को समझने और उसकी रक्षा करने में समर्थ हो पर साथ ही दूसरे देशों की अच्छी संस्कृति को भी ग्रहण कर सके।

## समाज का उत्पादक अवयव

(२) प्रत्येक व्यक्ति समाज का उत्पादनशील अँश बन सके। वह दूसरों पर निर्भर वा भार भूत न हो। आजकल यह पहले की अपेक्षा भी अधिक आवश्यक है। उसे शारीरिक श्रम के द्वारा मानसिक शक्ति व बुद्धि के द्वारा कला वा शिल्प व्यवसाय तत्त्वज्ञान, विज्ञान आदि के द्वारा समाज का एक उपयोगी और उत्पादक अँश बनना चाहिये।

(३) शताब्दियों की दासताके पश्चात हमें स्वतन्त्रता वा प्रजातन्त्रराज्य प्राप्त हुआ है। इस प्रजातन्त्रराज्य को नागरिकों के हार्दिक सहयोग की आवश्यकता है। शिक्षित युवकों और युवतियों के द्वारा इस प्रजातन्त्रराज्य का समर्थन और सच्चा सहयोग प्रत्येक क्षेत्र में मिलना चाहिये। शिक्षा संस्थाओं को प्रजातन्त्रवाद सहानुभूति की भावना सहिष्णुता आदि की निर्माणशाला होना चाहिये। शिक्षित युवकों को उत्तम नागरिक बनना चाहिये। वही राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम शक्ति है। तभी हम सामाजिक; आर्थिक अन्य दृष्टियों से उन्नत हो सकेंगे।

## मन हृदय और चरित्र विकास

(४) इस आन्तरिक विकास से ही मनुष्य वस्तुतः सुखी हो सकता है। नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के बिना केवल समाज का उत्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अंश बन जाने से काम नहीं चल सकता और न सच्चा सुख वा शांति प्राप्त हो सकती है। जब व्यक्ति अपने को आध्यात्मिक धन से सम्पन्न अनुभव करे तभी जीवनकी पूर्ति होती है। मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति अत्यावश्यक है जिस की प्रायः देशों में उपेक्षा की जाती है। बर्ट्रेण्ड रसल नामक सुप्रसिद्ध विचारक ने बताया है कि मनुष्य और प्रकृति में संघर्ष मनुष्यों का परस्पर संघर्ष और अपने अन्दर खँचव ये तीन अप्रसन्नता के कारण होते हैं। इनके दूर करने के लिए आध्यात्मिक विकास की बड़ी भारी आवश्यकता है। धार्मिक नैतिक शिक्षा इस दृष्टि से नितांत आवश्यक है। इसके बिना जो बाह्य शिक्षा है वह पत्ता को पानी देने के समान है।

## अन्तारष्ट्रिय व्यापक दृष्टि

(५ सँसार अब विशाल और परस्पर सम्बध्द हो गया है अतः हमारी अन्ताराष्ट्रीय दृष्टि हो जानी चाहिये। सारे सँसार के प्राणियों के साथ हमारी आत्मीयता हो जानी चाहिये हमारे तत्त्व ज्ञान में इस पर सदा बल दिया जाता था किन्तु हम गत सहस्त्र वर्षों से अन्यों से कट से गये। हमने अपने को औरों से श्रेष्ठ और अन्यों को म्लेच्छ समझना शुरू किया। यही हमारी अवनतिका एक प्रधान कारण हुआ। हमारी शिक्षा को हमें इस योग्य बनाना चाहिये कि जिससे हम सारे संसारको अपना समझने लग जाएं। साम्प्रदायिक जातीय और सँकुचित राष्ट्रीय भावनाओं से भी ऊपर अन्ताराष्ट्रीय व सार्वभौम भावना को हमें अपने अन्दर भरना चाहिये। इसके बिना समस्याओँ का समाधान नहीं हो सकता। इस समय विज्ञान अथवा वैज्ञानिक दृष्टिकोणको अपनाने की बड़ी आवश्यकता है अन्यथा हमारा समस्याएं बढ़ती चली जाएँगी। स्वामी विवेकानन्द जी ने ठीक कहा था कि हमारी शिक्षा में धर्म और विज्ञान का पूर्ण समन्वय होना चाहिये क्योँ कि मानवमात्रका सच्चे सुखका प्राप्त करने केलिए दोनों की आवश्यकता है। यदि हमारी शिक्षा उत्तम है तो हम इस उद्देश्य की पूर्ति शीघ्र कर सकेंगे। एक अन्य स्थान पर स्वामी विवेकानँद ने कहा था कि हमें जिस वस्तु की आवश्यकता है वह है मानव निर्माण करने वाली शिक्षा वकील डाक्टर इंजनीयर बनाने वाली पढ़ाई सर्वत्र दी जा रही है किंतु मानव निर्माण करने वाली पढ़ाई का उपेक्षा हो रही है। इन में से किसी भी उद्देश्य की पूर्ति अभी तक नहीं हो सकी यह खेद की बात है। ध्येय और उद्देश्योँ को स्पष्ट रूप में अपने सामने रखने की आवश्यकता है।

हमारे देशवासियोँ में प्रायः आलस्य है और कार्यक्षमता विदेशीय शासनादि के प्रभाव से कम है। क्रियात्मक दक्षता को युवकोँ में विकसित करने की आवश्यकता है। श्रम की प्रतिष्ठा को स्थापित करने की आवश्यकता बहुत अधिक है। यहां प्राय. प्रत्येक आदमी शासन चलाना चाहता है काम करना नहीं। जब यह श्रम की प्रतिष्ठा हमारे देश में स्थापित हो जाएगा तब देश की उन्नति शीघ्र होगी इसमें संदेह नहीं। जातिभेद वा जातपात के कारण भी हमारे लोग अनेक प्रकार के काम करने में सँकोच करते है गत महायुद्ध के दिनों में अमेरिकनों ने हस्पतालों का चलाने में हिंदुओँ के सम्बन्ध में यह कठिनाई अनुभव की थी अतः हिंदुओं के स्थान में उन्हें मुसलमानों को रखना पड़ा था। शिक्षा और कार्य का परस्पर सम्बंध वा समन्वय होना चाहिये। महात्मा गांधी जी द्वारा प्रवर्तित बेसिक शिक्षा पद्धति का यही विचार आधार भूत था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(सफा ७ से आगे)

का व्यावहारिक प्रयोग सिखाया जा सके। उदाहरण के लिए गांवों के स्कूलों की प्रयोगशालाओं में रसायनशास्त्र की परीक्षाओं से विद्यार्थियों को विभिन्न खनिज-खादों के गुणों का पता लग जाता है। प्राणि-शास्त्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए कई स्कूलों के अपने परीक्षणस्थल हैं जिनमें पौधे उगाने के कांच के कमरे पक्षियों के रखने के बड़े २ पिंजड़े और मौसम सम्बन्धी केन्द्र होते हैं।

जैसे-जैसे परिस्थितियाँ अनुकूल होंगी, हमारी योजना विशुद्ध साहित्य सौंदर्य-शास्त्र और व्यायाम के क्षेत्र में अपने काम को सुदृढ़ बनाने की है।

व्यायाम और खेलकूद मौसम अच्छा होने पर घरों से बाहर या स्कूल के क्रीड़ास्थलों में होते है। सभी विद्यालयों के अपने-अपने खेल के दल होते हैं और अतःशिक्षालय या विभिन्न नगरों के बीच प्रतियोगिताओं का बहुत जोर रहता है।

गाने की और ड्राइंग की कक्षाएँ विद्यालय के कार्यक्रम का अँग है। इतिहास भूगोल और साहित्य की पढ़ाई दो दृष्टिकोणों को ध्यानमें रख कर की जाती है विश्व दृष्टिकोण जो बच्चों को दूसरे देशों को समझाने में सहायता देता तथा उनको संस्कृति और परम्पराओं के सम्बन्ध में जानकारी देता है और यह बताता है कि उनके क्षेत्र ने देश और विश्व को क्या योग दिया है।

★ बहुभाषा-प्रशिक्षण ★

चूँकि सोवियत संघ बहु-जातीय देश है कक्षाओं में ६० से अधिक विभिन्न भाषाओं में पढ़ाई होती है। काकेशस मैदान के दाघेस्तान स्वशासित जनतन्त्र जैसे अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र में भी विद्यालयों में ६ भाषाएँ पढ़ाई जाती है और उजबेक जनतँत्र में इन की सँख्या ७ है।

किसी प्रदेश की अपनी भाषा में शिक्षा देने से राष्ट्रीय संस्कृति को बढ़ावा मिलता है और उससे ऐसे स्थानीय कर्मचारियों के प्रशिक्षण में तेजी आ जाती है जिनकी उद्योग और अन्य काम धन्धों के लिए बड़ी जरूरत होती है। इस के अलावा वह इन जातियों को जिन में से कुछ को विकास की मुख्य धारा से कई सदियों से अलग रखा गया है, विश्व संस्कृति के निकट लाती है।

सोवियत विद्यालयों में अँगरेजी फ्रेंच और जर्मन भाषा सिखाई जाती है। मास्को के विद्यालय ४८६ में अत्यधिक सक्रिय नाट्य मंडलिया है जो मूल अँगरेजी और अमरीकी नाटक खेलती हैं। बहुत विद्यालयों में जिनमें से एक दूर थ साइबेरिया के मतपीय प्रदेश के बागान गाँव में हैं अँगरेजी क्लबें है। दीवारपर लगाये जाने वाले अँगरेजी के समाचार पत्र है और वहां के छात्र ब्रिटिश और अमरीकी पत्र मित्रों के साथ दिलचस्प पत्र-व्यवहार करते हैं।

पिछली गर्मियों में मास्को में एक व्याख्यान प्रतियोगिता हुई थी जिस में विद्यालयों के ७७००० से अधिक बच्चों ने भाग लिया था और इन में से कइयों ने भाषाओं के बीच अँगरेजी फ्रेंच जर्मन इटालियन और पोलिश कविताएँ पढ़ी थीं।

बहु-व्यावसायिक और अन्य समस्याएं

हमारे शिक्षकों में विशुद्ध साहित्य के अध्ययन भौतिक शास्त्र तथा गणित प्राकृतिक विज्ञानों व विदेशी भाषाओं के अध्ययन और विशेषकर बहु-व्यावसायिक प्रशिक्षण को सुदृढ़ बनाने के लिए १० साल के कार्यक्रम में २ साल और जोड़ने के लिए काफी आग्रह है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# *सफलता केलिए आत्म विश्वास आवश्यक है!*

यदि आपको अपने स्वयंपर विश्वास नहीं है तो इसे निश्चय मानिये कि दूसरोंका विश्वास भी आप पर नहीं टिकेगा । दूसरों के सामने यदि आप अत्यधिक लज्जा अथवा सँशय अनुभव करेंगे तो यह स्पष्ट है कि उनको आपकी योग्यता का प्रतोति में बाधा पहुंचेगी और वे आप पर निर्भर न रहकर किसी अन्य को अपने काम का उत्तरदायित्व सौंपना अधिक पसन्द करेंगे । स्मरण रखिये आत्म-विश्वास ही संसारमें समस्त भौतिक-अधिभौतिक सफलता का मूल आधार है।

इमर्सन के शब्दों में व्यक्तिका अपने में विश्वास उसकी सबसे बड़ी योग्यता है । निम्नलिखित प्रश्न आपकी इसी योग्यता को परीक्षा के लिए हैं। अँत में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर मिला कर आप स्वयँ अपनी इस योग्यताकी थाह लीजिये और तत्काल अभाव-पूर्ति का प्रयत्न प्रारम्भ कर दीजिये ।

१. क्या आप स्वयँ को अधिकांश विषयों में उतना ही योग्य समझते हैं जितना कि आप अपने परिचित अन्य व्यक्तियों को मानते हैं ?

२. क्या आपसे लोग अधिकतर प्रसन्न रहते है ?

३. सामाजिक गोष्ठियों का क्या सम्पूर्ण आनन्द उठा लेते है ?

४. आपके स्वयं के सम्बन्ध में की गयी आलोचनाका क्या आप सही मूल्याँकन करते है ?

५. क्या आप ऐसे लोगों की चेष्ठाओं का शाँति से प्रतिकार कर सकते है जो दूसरों को छोटा दिखाने में ही अपना महत्व मानते हैं ?

६. नयी परिस्थिति में नये लोगों और नये काम के साथ क्या आप सहज ही सामंजस्य पैदा कर लेते हैं ?

७. क्या आप बहुधा पहले बोलकर लोगों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करते हैं ?

८. अपने प्रति किये गए मजाक का क्या आप स्वयँ आनन्द लेते हैं ?

९. किसी प्रकार का संकोच अनुभव किये बिना आप अपने विषयमें बातचीत कर सकते हैं ?

१०. लोगों के देखते रहने पर भी क्या आप अपना काम मजे से करते रहते हैं ?

११. क्या आप किसी विषय पर अपना मत आसानी से प्रकट कर सकते हैं ?

१२. तर्क में आप अपना दृष्टिकोण अन्त तक निभाये रखते हैं ?

१३. विघ्न-बाधाएँ आप को अपना काम पूरा करने में अधिक दृढ़-संकल्प बनाती हैं ?

१४. किसी काम की शुरुआत आप स्वयं कर सकते है ?

१५. अपनी ताकतों का परिचय देने के लिए आप उत्तरदायित्व के बोझ की सहर्ष संभालने में राजी हो जाते है ?

१६. अपनी योग्यताओं अथवा कामनाओं के केवल सपने ही न देख कर आप उन सपनों को साकार करने का प्रयत्न करते है ?

प्रत्येक प्रश्न के स्वीकारात्मक उत्तर पर ५ अँक प्राप्त कीजिये । ५५ या उससे अधिक अँक सन्तोषप्रद हैं। ४५-५५ भी ठीक है और ४० ४५ सामान्य। लेकिन ४० से नीचे अँक सन्तोषजनक नहीं है। विशेषतया प्रश्न नँ ४, ७ और १६ का यदि आपका उत्तर नहीं है तो इनसे सम्बन्धित अपनी प्रवृत्तियों को सुधारने की चेष्टा कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



★ मैक्सिम गोर्की की एक कहानी

# ❋ साहस के पागलपन का गीत ❋

★ तेरे खून की बूंदें जीवन के अन्धकार में चिनगारियों की तरह चमक उठेंगी। ★

तट पर अलस भाव से पछाड़ें खाता और दूरी पर निस्पन्द सोया हुआ असीम सागर नीली चाँदनी में नहाया हुआ था। मृदु रजत सागर क्षितिज में दक्षिण के आकाश की नीलिमा में विलीन हो गया था और गहरी नींद सोया हुआ था। मेघों के मुलायम रोयेंदार पारदर्शी वस्त्र की छाया सागर पर पड़ रही थी। मेघ भी निस्पन्द लटके हुए थे। तारागण की सुनहली पच्चीकारी पर बादलों का झीना पर्दा पड़ा हुआ था, परन्तु वह इस पर्दे के पीछे छिपी हुई न थी। ऐसा लग रहा था मानो आकाश सागर की ओर झुका जा रहा हो, जैसे तट को शिथिल भाव से धोती चंचल लहरों की कानाफूसी सुननेका प्रयत्न कर रहा हो।

आंधी से टूटे पेड़ों से ढँके पहाड़ों ने ऊपर नीले शून्य में अपनी नुकुली चोटियां तान रखी थीं जहाँ उन का कठोर रूपरेखा दक्षिण की रात के सुखद उष्ण अन्धकार के स्पश और दुलार से मृदु हो गयी थी।

पर्वत गम्भीरता के साथ ध्यानमग्न थे। उनकी काली छाया आलोड़न करती हरी लहरों पर इस तरह पड़ रही थी मानो उन्हें ढंकने के लिए लबादा ओढ़ा दिया गया हो, मानो पर्वतकी छाया ज्वार को रोकना चाहती हो, तरँगों के अविराम गति से होने वाले छपाके को शाँत करना चाहती हो, झाग की सिसकियों को बन्द करना चाहती हो—उन समस्त स्वरों को मौन करना चाहती हो जो वातावरण में व्याप्त रहस्यमय मौन में व्याघात पहुंचा रहे थे। चन्द्रमा, की जो अभी पहाड़ की चोटियों के पीछे से नहीं निकला था; रजत श्यामल चन्द्रिका भी यही काम कर रही थी।

'अल्ला हो अकबर!' लम्बे, श्वेतकेशी, दक्षिण की धूप से श्यामल, दुबले-पतले, चतुर, बूढ़े, क्रिमियावासी चरवाहे नादिर रजीम ओग्ली के मुँह से धीमे स्वर से निकला।

मैं और वह एक बड़ी चट्टान के पास बालू पर लेटे थे। चट्टान अन्धकार से ढँकी हुई थी और उस पर बहुत अधिक सिवार तथा घास पात उग आया था। चट्टान उदासी और मलिनता युक्त थी। वह अपनी जन्मभूमि पर्वत से बिछुड़ गयी थी। इसके एक ओर नरकुल और पानी में उगने वाले दूसरे पौधे उग आये थे। ऐसा लगता था जैसे समुद्र और पहाड़ के बीच बालू की जो सँकरी-सी पट्टी थी, उसी में ये पौधे उसे जकड़ रखना चाहते हों। हमारे अलाव की लपटों से तट के पास प्रकाश हो गया। सारे के सारे तट की सतह में गहरी दरारें पड़ी हुई थी और लपटों की लौ से तट की अति प्राचीन सतह पर नाचती हुई छाया-मूर्तियां बन रही थीं।

हम ने एक मछली पकड़ी थी और हम दोनों उसे उबाल रहे थे। हम दोनोंकी मनोदशा ऐसी थी कि हर चीज सरल, प्रेरणादायक और समझ में आने लायक जान पड़ती थी, हमारे हृदय दर्पण से स्वच्छ और उल्लासपूर्ण थे और हम बस यह चाहते थे कि लेटे-लेटे सपने देखते रहें।

सागर तट पर थपेड़े लगा रहा था; लहरों का स्वर ऐसा मधुर था कि लगता था जैसे वे हमसे कह रही हों कि हमें भी अपना अलाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ताप लेने दो। कभी- लहरों के सम स्वरमें बाधा पड़ती। अधिक ऊंचा, अधिक उल्लासपूर्ण स्वर मुखर हो उठता। यह स्वर किन्हीं अधिक साहसी लहरों का होता जो रेंगती हुई हमारे परों के पास आ जाती थीं।

रजीम सागर की ओर मुँह किये लेटा था। उसकी कोहनी बालू में गड़ी हुई थी सिर हथेली पर था। वह तिमिराच्छन्न दूरीको विचार मग्न ताक रहा था। उसकी भेड़ की खाल की टोपी खिसक कर सिर के पीछे चली गयी थी। सागर से आये हवा के ताजा झोंके ने उसके सुन्दर झुर्रियाँ पड़े कपाल पर पँखा झला। उसने दार्शनिक की भांति कहा—इसकी उसे परवाह न थी कि मैं सुन रहा था या नहीं मानो वह सागर से बातें कर रहा हो।

जो आदमी दयानतदारी के साथ ,खुदा की इबादत करता रहता है उसे जन्नत मिलती है। लेकिन जो खुदा या पैगम्बर की खिदमत नहीं करता ? हो सकता है कि वह बाहर वहां रहता हो—उस झाग में। पानी पर जो रूपहली जगह है शायद वहीं हो। कौन जाने ?

अन्धकारमय और फूत्कार करता सागर कुछ प्रकाशमान हो गया। उसकी सतह पर इधर उधर चाँदनी छिटक गयी। चन्द्रमा पहाड़ की बेडौल चोटियों के पीछे से खिसक कर ऊपर आ गया था और तट पर उस चट्टान पर जिसकी बगल में हम लेटे थे और सागर पर जो उससे मिलने के लिये कुछ उसास भरता उठ रहा था अलस भाव से अपनी ज्योत्स्ना उंडेल रहा था।

रजीम कोई कहानी सुनाओ—मैं ने बूढ़े से कहा।

क्यों ? उसने बिना सिर मोड़े पूछा।

अरे बस इस लिये कि मुझे तुम्हारी कहानियाँ सुनने में मजा आता है।

मैं तुम्हें अपनी सारी कहानियां सुना चुका हूँ। अब और कोई कहानी बाकी नहीं रहती।

वह चाहता था कि मैं उसे मनाऊँ और मैंने ऐसा ही किया।

अगर तुम चाहो तो मैं गाना गा सकता हूँ। वह आखिर राजी हुआ।

उस का कोई सा पुराना गाना सुनने से बढ़कर और कौन सी खुशी मुझे हो सकती थी ? और वह एक पुराने गीत के ताल-स्वर की रचा का प्रयत्न करते हुए सधे-बंधे स्वर में गाने लगा।

पहाड़ के ऊपर एक साँप रेंग रहा था। वह कोहरे से ढंकी एक घाटी में जो सागर की ओर मुँह किये थी आकर बैठ गया।

ऊपर आकाश में सूरज चमकने लगा पहाड़ का गरम-गरम सांस उठ कर आकाश की ओर जाने लगी नीचे लहरें चट्टानों पर और भी जोरों से पछाड़ें खाने लगीं।

घाटी से होकर अन्धकार और कुहासे से होकर एक नदी तेजी से बही जा रही थी। सागर से मिलनेको आतुर नदी पत्थरोंको अपने प्रवाह से उलट-पलट रही थी।

झाग का मुकुट बांधे, प्रचण्ड और श्वेत केशी नदी चट्टान को काट कर क्षुब्ध गर्जन करती हुई सागर में कूद पड़ी।

अचानक एक बाज जिसके डैनों में खून लगा था और छाती में घाव था आकाश से गिरा। वह उस घाटी में आ गिरा जिसमें सांप कुण्डली मारे बैठा था।

बाज जब धरती पर गिरा, तो चें चें कर चीख पड़ा और चट्टान पर परेशान-सा डैन फड़फड़ाने लगा !

साँप डर गया और वहां स हट गया, परन्तु शीघ्र ही देखा कि चिड़िया तो मरने वाली है एक या दो मिनट में मर जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इसी लिए वह रेंगता हुआ उस घायल पक्षी के पास आया और उसे चिढ़ाने के लिए उसके कान में फूत्कार करते हुए कहा—

'तो बहुत जल्द तू मर जाएगा ?'

तो जल्द ही मैं मर जाऊँगा, बाज ने आह भर के कहा। लेकिन कोई बात नहीं। मैंने जिन्दगी का उपभोग किया है। मैंने सुख का स्वाद लिया है; खूब लड़ाइयां लड़ी है। गगन में खूब ऊँचाइयों पर उड़ा हूँ। अरे नाचीज, तुझे गगन में विचारने का सौभाग्य कभी न प्राप्त होगा जैसा मुझे मिला है !'

आसमान ? वह क्या है ? वह तो कुछ नहीं है। क्या मैं आसमान में रेंग सकता हूं ? यह घाटी कहीं अच्छी है—कैसी नमी तथा सुखद उष्णता है।

साँप ने स्वाधीनता-प्रेमी बाज से यह कहा तथा बाज की शेखी पर मन ही मन हंसा।

और उसने मन ही मन सोचा इसमें क्या है, चाहे कोई उड़े या रेंगे ? अन्त एक ही है,सब को धरती में सोना होगा; सब धूल में मिल जायँगे।

सहसा बाज ने सिर उठाया तथा उस अँधेरी घाटीपर दृष्टि डाली।

चट्टान की दरारों से पानी झर झर कर गिर रहा था तथा घाटी की वायु में मृत्यु तथा विनाश की गन्ध थी।

बाज भरपूर प्रयत्न कर दुःख तथा चाह के स्वर में चीख पड़ा।

अरे गगन में उड़ना; एक बार फिर मँडराना ! मैं दुश्मन को पकड़ूंगा—अपनी छाती से उसका सिर कुचल दूँगा—अपने खून में ही डुबा कर उसका दम घोंट दूंगा, ओह सँघर्ष का आनन्द !

सांप ने सोचा यदि बाज के कंठ से ऐसी चीख निकलती है तो गगन में रहना सच-मुच बहुत मजेदार होगा !

तब उस ने स्वाधीनता के प्रेमी बाज से कहा—रेंग कर चट्टानके किनारे तक आ जा तथा वहाँ से ऊपर की तरफ छलाँग लगा। शायद तेरे डैने अब भी तेरा साथ दें और फिर तू गगन में उड़ने लगे।

बाज में एक हलचल मच गयी। वह गर्व के साथ चीखा तथा कीचड़ में पँजे गड़ाता हुआ रेंग कर चट्टान पर आ गया।

किनारे पर पहुँचनेपर उसने डैने फैलाये लम्बी सांस खींची और आंखों में एक चमक के साथ शून्य में कूद पड़ा।

बाज इस तरह तेजी से गिरा जैसे कोई पत्थर गिरता है। जब वह गिर रहा था, तब उसके पँख इधर-उधर बिखर रहे थे उसके डैने नुच रहे थे।

वह गिर कर एक लहरमें आ पड़ा। और समुद्र की लहर ने उसका खून धोया उसे झाग से ढंक लिया और समुद्र में ले गयी।

सागर की तरँगां ने जब चट्टान के सामने पछाड़ खायी तो उनसे दर्दभरी चीख निकली और पक्षी जा चुका था असीम सागर में विलीन हो चुका था।

साँप बहुत देर तक घाटीमें कुण्डली मारे बैठा रहा पक्षी की मृत्यु के सम्बन्ध में सोचता बिसूरता रहा, उसके आकाश-प्रेम के सम्बन्ध में सोचता-विचारता रहा। उसने शून्य की ओर देखा जहां अशाँत हृदय को सुख देने के लिए स्वप्न पैदा होते हैं।

मैंने क्या देखा ? उस शून्य अनन्त आकाश में वह अभागा बाज ! ऐसे पक्षी मंडराते रहने की चाह के कारण दूसरे की शाँति का अपहरण क्यों करें ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आकाश में किस रहस्य का पता चलता है? एक ही उड़ान में चाहे वह कितनी ही अल्पकालीन क्यों न हो, मैं यह सब जान सकता हूँ।

इतना कह कर उसने और भी मजबूती से कुण्डली मारी, शून्य में छलांग लगायी और धूप में एक काली रेखा सी चमक गयी।

लेकिन जो रेंगने के लिए पैदा हुए हैं, वे कभी उड़ना नहीं सीख सकते। साँप चट्टान पर आ गिरा, लेकिन ऐसा नहीं गिरा कि मर जाता। वह हँसा और उसने कहा—

तो उड़ने में यह आनन्द मिलता है। गिरने का आनन्द! अरे नादान! अरे नादान पक्षियो! धरती पर तुम सुखी नहीं; उसे तुम जानते नहीं, तुम आकाश में आरोहण करते हो और उसके स्पन्दनशील असीम में रहते हो। लेकिन शून्य के सिवा आकाश और है क्या? प्रकाश प्रचुर है, परन्तु शरीर रक्षा के लिए कुछ नहीं। तो फिर इतना गर्व क्यों? और ऐसी उपेक्षा क्यों? दुनिया से अपनी पागल महत्वाकाँक्षा को छिपाना; जिन्दगी की दुनियादारी का सामना करने में होने वाली असफलता को छिपाना? उपहासास्पद पक्षी, अब मैं तुम्हारी बातों में कभी नहीं आने का, कभी धोखा न खाऊंगा, क्योंकि अब मुझे सब कुछ मालूम हो गया है। मैंने आकाश देख लिया है। मैं उसमें गया हूं, उसका पता लगाया है और आकाश से मैं गिरा हूं, गनीमत है कि मैं मरा नहीं। अपने पर मेरा विश्वास और बढ़ गया है। वे भ्रम में हैं जो पृथ्वी को प्यार नहीं करते। मैंने सत्य का पता लगा लिया है। अब पक्षी के आह्वान पर कभी कान न दूंगा। मैं धरती से पैदा हुआ हूं, धरती का हूं।

इस प्रकार कहकर उसने एक पत्थर के ऊपर कुँडली मार ली उसे अपने पर बहुत गर्व था।

सागर चमक रहा था, प्रकाश आंखों को चौंधिया देने वाला था और लहरें तट पर प्रचण्ड थपेड़े लगा रही थीं।

लहरों के सिंह-गर्जन में बाज के गीत की गूँज थी। सागर के प्रहारों से चट्टानें हिल रही थीं गीत के स्वर से आकाश कांप रहा था।

हम साहस के पागलपन का गीत गाते हैं!
साहस का पागलपन जीवन का ज्ञान है।

ओह साहसी बाज! तूने शत्रुसे लड़ते हुए अपना कीमती खून बहाया है लेकिन वह समय आयेगा जब तेरे खून की बून्दें जीवन के अन्धकार में चिनगारियों की तरह चमक उठेंगी और वीरोंके हृदयों में स्वाधीनता और प्रकाश के प्रेम की आग जगायेंगी।

तूने अपने जीवन से मोल चुकाया है! परन्तु तू स्वाधीनता और प्रकाश के संघर्ष की गर्वीली ललकार के रूपमें वीरों के गीतोंमें जीवित रहेगा।

हम साहसके पागलपन का गीत गाते हैं।

सागर के इन्द्रधनुषी रंग विकीर्ण करने वाले दूधिया विस्तार में नीरवता है। तट से टकराती लहरें मन्द स्वर में गा रही हैं, और मैं भी दरियों को ताकता हुआ मौन हूँ। अब पानी पर कहीं अधिक चाँदनी पड़ रही है, हमारी केतली से उबलने की धीमी-धीमी आवाज आ रही है।

एक लहर अपनी दूसरी बहनों से आगे बढ़ आती है और रहीम के सिर के पास पहुँच कर धीमे से ऐसा स्वर करती है मानो मजाक कर रही हो।

पीछे जाओ। तुम्हें पता है कि तुम कहां जा रही हो? रहीम अपना हाथ हिलाते हुए कहता है और लहर पीछे हट जाती है मानो उस की आज्ञा मान रही हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



★कहानी—

# * बेचारा मुण्ड *

(श्री रवीन्द्र कालिया)

जून की चिलचिलाती धूपमें चल कर जब कोई मिलने आए तो कम से कम ठँडा जल पिलाना तो कर्तव्य सा हो जाता है। अमृत का गर्मी से दम निकल रहा था। उसे पसीने से तर बतर देख कर मैं ने पंखा चला दिया और फिर एक बार सरसरी निगाह से बाहर धूप में तप रहे नलके की ओर देखा और फिर पानी से खाली सुराही की ओर। अमृत पास पड़ा अखबार पढ़ने लगा और मैं बर्फ लाने के लिए बाजार की ओर चल पड़ा।

दुकान पर मामूली भीड़ थी। जेब में हाथ डाल कर देखा एक अठन्नी और एक दुअन्नी थी। अठन्नी खोटी थी तीन चार जगह से वापिस मिल चुकी थी। सोचा एक बार फिर दे कर देखूं न चली तो दुअन्नी तो है ही। तभी एक सात आठ वर्षका बच्चा रुमाल घुमाता हुआ आया और आकर मेरे आगे खड़ा होगया। मैंने सोचा कि अठन्नी इस ढँग से निकाल कर दूंगा कि दुकानदार को जरा सन्देह न हो।

दुकानदार सबको बर्फ दे रहा था। हमारे दफ्तर के हैड क्लर्क मि० कुंज बिहारी लाल शर्मा भी बर्फ लेने आए हुए थे। मैं उनसे बात चीत करने लगा। बातचीतके दौरान में मैंने बर्फ ले ली पैसे दे दिए। दुकानदार ने सात आने लौटा दिए जो मैंने बिना गिने जेबमें डाल लिए।

शर्मा साहिब से हाथ मिलाकर चलने को ही था कि दुकानदार का कर्कश स्वर कानों में पड़ा। मुड़कर देखा तो पाया कि वह मेरे आगे खड़े उस बच्चे से बिगड़ रहा था, बच्चू मरम्मत की जरूरत है।

क्यों क्या हुआ? शर्मा साहिब ने पूछा।

होना क्या था पंडितजी साला दिन दिहाड़े धोखा दे रहा है कि अठन्नी दी थी सुअर कहीं का। दुकानदार के होंट फड़क रहे थे।

बच्चे के कपड़ों और बोल चाल से पता चलता था कि वह किसी का घरेलू नौकर है। उसके चेहरे पर एक रँग आ रहा था और एक जा रहा था। जितने भी ग्राहक खड़े थे सबकी आँखें उसे निगल जाना चाहती थीं।

कोलाहल सुनकर सामनेसे सरदार साहब अपनी घी की दुकान से उतर आए और मूछों को ताव देकर कहने लगे—भई जमाना ही ऐसा आ गया है। धोखा-देही की घटनाएँ इतनी बढ़ गई हैं कि हर समय सतर्क रहने की जरूरत है। कल एक बुढ़िया घी लेने आई। भाव-ताव करने के बाद एक डली मुँह में रख कर बोला घी से मुश्क आती है—। सरदार साहब बिल्कुल पास आ गए थे। बच्चे के पास पहुंचकर उसके कान उमेठते हुए बोले मैंने बुढ़ियासे कहा घी से चाहे मुश्क आती हो पहले छटाँक भर घी के साढ़े पाँच आने निकालो और फिर बात करो—। उन्होंने फिर जोर से कान उमेठा और एक धक्के के साथ छोड़ दिया।

सहसा सरदार साहब की आवाज शर्मा साहब की मोटी आवाज में डूब कर रह गयी। शर्मा जी वही पुराना किस्सा ले बैठे थे जिसका बीसियों बार दफ्तर में जिक्र कर चुके थे कि कैसे उन्होंने अपने नौकर को बटुए से पैसे निकालते रंगे हाथों पकड़ लिया था और कैसे उन्हों ने नौकर को निकाल दिया था और अब चाहे गर्मी हो या सर्दी वह स्वयँ ही सब काम करते हैं—।

दुकानदार को बातों में लगा २ देख घी वाले सरदार साहब ने आँख बचा कर बर्फ का एक टुकड़ा उठाया और अपनी दुकान पर पहुँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



शर्बत ठंडा करने लगे।

मुझे यद्यपि देर हो रही थी और मेरी बर्फ भी पिघल रही थी तथापि मैं अखबार में पढ़ी एक घटना अपने नाम पर सुनाने का लोभ सँवरण न कर सका। भीड़ के बीच पहुंच कर मैंने भी अपनी बात ऊँची आवाज में कहनी शुरू की कि इस सरीखे एक जेब कतरेको सिपाही की गिरफ्त में देख कर कहा था बेटा जरा मेरी जेबको हाथ लगाकर देखता। ऐसा मजा चखाता कि उमर भर याद रखता। उस विशेषज्ञ जेब कतरे ने हँस कर उत्तर दिया—बाबू! तुम्हारी जेब में है ही क्या? सिर्फ तीन आने! उनमें भी एक आना खोटा है। जनाब मैंने जेब से पैसे निकाल कर गिने तो पूरे तीन आने निकले। यदि यह प्रवृत्ति प्रबल न होती तो इस देश का यह हाल न होता। यह सोने की चिड़िया मिट्टी का खिलौना बन कर न रह जाती।

मेरी बात ने दुकानदार का गुस्सा और भी तेज कर दिया। उसने वहीं बठे बैंठे बच्चे को धक्का दिया और जोर जोर से बर्फ तोड़ते हुए जोर २ से गालियां देने लगा।

लड़का भय से कांप रहा था उसकी बर्फ काँप रही थी उसके हाथ काँप रहे थे उसकी जेब काँप रही थी। वह दीनता पूर्वक कहने का यत्न कर रहा था, 'मैंने अठन्नी दी थी मेरे पैसे लौटा दो। मुझे मालकिन मारेगी—।

साला मालकिन का। दुकानदार ने बर्फ काटने वाला सूआ घुमाते हुए कहा—हट जा दूर हो जा मेरी नजरों से! आठ आने कहीं खर्च लिए होंगे। मैंने तुम्हारे ऐसे बीसियों ठीक किए हैं। कोई धीरे २ बुडबड़ा रहा था, इस देश का क्या होगा जहाँ के बच्चे ही झूठे मक्कार जेब कतरे धोखेबाज और शैतान बन चुके हैं जहां के-

मैं घरकी ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर आ के मुड़ कर देखा वह बच्चा अपनी मैली कमीज के छोर से आंसू पोंछ रहा था।

घर पहुँच कर मैंने बर्फ पत्नी को पकड़ाई और अमृत का उस छोकरे की कहानी सुनाने लगा। अभी सुना ही रहा था कि सबसे छोटा बेटा पैसा लेने आ पहुँचा।

जेब में हाथ डाल कर पैसे जो निकाले तो देखता ही रह गया! खोटी अठन्नी और सात आने पैसे मेरी हथेली पर मानो डंक मार रहे थे। मैंने गलती से अठन्नी की जगह दुवन्नी दे दी थी और दुकानदार ने एक आने की जगह सात आने लौटा दिए थे!

अमृत मेरी ओर देख रहा था और मैं पैसों की ओर, उन पैसों के बीच मुझे उस बच्चे का दीन चेहरा दिखाई देने लगा, उसकी बर्फ काँप रही थी, उसके हाथ कांप रहे थे, उसकी जेब कांप रही थी।

## ★ पराग ★

(श्री विजय शंकुर निर्बोध प्रभाकर बी.ए. जयपुर)

ऐसी शक्ति अपरिमित दो माँ वह साहस कल्याणी
पापों पर तो दिल से रोले एक बार यह प्राणी
मनका कलुष रहा ज्यों का त्यों रगड़ी कोरी काया
मल में जन्मा, मरा मैल में अनुपम समय गंवाया
बनते फिरते मुक्त व्यर्थ ही तन मन के आधीन
जिसका जितना अधिक त्याग है वह उतना स्वाधीन
चिन्ता है तो आज एक ही नर को आठो याम
निकल न जाये कहीं किसी विधि मुँहसे हरिका नाम
करता रहा रूप, धन;बल का आजीवन अभिमान
गया न किंचित कभी श्वाँसकी अस्थिरता पर ध्यान
आज कामना मात्र एक है दो मां यह वरदान
जोभी शब्द लिखे यह बात करे यह विश्व-कल्याण
सफल साधना हो जाये यदि इतनी राह दिखादो
सचराचर में रूप एक हो मां तुम मुझे दिखादो
[illegible] कठिन है जाना मुझे सिखादो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ✻ नया जीवन ✻

(श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', आगरा)

हूँ ऋणी, तुम ने नया जीवन दिया है
खो गया था जो कहीं वह मन दिया है

तप रही थी ग्रीष्म-सी यह प्राण की धरती
भावनाएँ जा रही थीं दूब-सी मरती,
एक बेचैनी समाई थी शिराओं में—
शाँति आशा को न मिलती थी दिशाओं में

क्या कहूँ पाहुन। नमित-सी दृष्टि से तुमने
जो बने रस-स्रोत वह सावन दिया है।

शक्ति चुकती जा रही थी दूर थी मँजिल
सांस का दुश्मन बना था राह का तिल-तिल
लाँछनों के खड्ग खोले थे खड़े अपने—
हाथ खींचा था युगों के पुण्य ने, तप ने

आ अयाचित दान-सी पथ पर स्वयं तुमने
जो अचल दृढ़ता बने, वह प्रण दिया है।

जन्म-जन्मों से सजाए अर्घ्य आंखें थीं
दूर उड़ने को खुलीं ये पलकें-पांखें थीं,
कल्पना की आरती का दीप रोता था—
घुटन का ज्वालामुखी उद्विग्न होता था

सिद्धि की उपलब्धि-सी वरदायिनी। तुमने
जो बने चिर ध्येय वह पूजन दिया है

जिन्दगी भाने लगी है अब मुझे फिर से
प्राण में मस्ती नई छाने लगी फिर से
आज मेरे पांव धरती पर नहीं पड़ते—
खिल रही मुस्कान जैसे फूल हों झड़ते

अर्थ जीने का बताकर प्रिय मुझे तुमने
मुक्ति से जो श्रेष्ठ वह बन्धन दिया है।

## ★ 'तीन व्यँग' ★

(प्रसाद प्रभाकर)

निशानी—

राजा-रानी-युग गया केवल कहानी रह गई।
राजा-जी से नाम में उनकी निशानी रह गई॥

'बी'—

ए. बी.सी.डी. थी पढ़ी पर याद 'बी' ही रह गई
हो गये 'बी ए' मगर बस याद बी.बी रह गई।
बेकार बन घूमे-फिरे पर बोंदली ही रह गई।
मुट्ठी खोली तो क्या देखा टूटी बी.डी रह गई॥

तदबीर क्या ?—

ए. बी.सी से कर शुरू पहुंचे तो वाह तकदीर क्या
जा रुके हम जैडकी जड़ अब कहो तदबीर क्या?

## ★ निर्माण ★

(श्री प्रणव शास्त्री)

निर्माणों के गीत पुरुष ने जब-जब गाये।
प्रकृति प्रिया ने तभी सुखद शृङ्गार सजाये॥
श्रम का सरस सितार शारदा सिद्धि सजाती
रुनझुन रुनझुन आती पायल मधुर बजाती
हंस वाहिनी सत्य-ग्रहण का पाठ पढ़ाती।
रहती स्वर में मनहर स्वर संगीत मिलाये॥
उठते हैं तूफान विटप की सम्पति लुटती
घोर निराशा की रजनी जब आकर जुटती
कोंपल किरण मनोहर नूतन क्रमश: छुटती।
यों निर्मित-सन्देश बसन्ती राजा लाये॥
प्रगति-पन्थ पर चलते युग जब थक-सा जाता
उन्मन-सा निःसाध पिपासा से अकुलाता
तब कोई घनश्याम वारि-गीत बरसाता।
कर्म क्षेत्र में शस्य साहसी फिर लहराये॥
राष्ट्र-अर्चना दीप स्नेह से भर-भर लाएं
चारु चरित्र की शुद्ध वर्तिका शीघ्र सजाएं
पावन उद्यम ज्योति परस्पर प्रणव जगाए।
मन-मन्दिर में राष्ट्र जनों की पूजा पाये॥

—निश्चय ही मनुष्य के लिए यह कभी नहीं कहा जा सकता कि वह खुद अपना मालिक है। वह समुद्र की एक लहर की तरह है या उड़ते हुए उस पँख की तरह जिसे हर झोंका इधर से उधर उड़ा देता है।
—जौन फौस्टक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * भारतीय बाल सभा *

## बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी  अध्यक्षा दीदी

## फुलवाड़ी

[ बच्चों के प्रश्नों के उत्तर ]

प्र०—रूमाल का आविष्कार किस ने किया था और किस सन् में। २. दर्पण का आविष्कार किसने किया और किस सन् में ?

—जगदीश लाल गंगेवर हाथरस।

उ०—रूमाल की अपेक्षा कमीज के आविष्कार की बात पूछते तो क्या ज्यादा अच्छा न होता ? और दर्पण तो बहुत प्राचीन काल से भारत वर्ष में शृंगार के लिए काम में लाया जा रहा है।

[२] क्या अरबके शाह इब्नसऊद ने जब वह देहली आए थे गांधी जी की समाधि पर फूल नहीं चढाए थे ? —ओम प्रकाश गुप्ता पलवल।

उ०—सम्भव है न चढ़ाए हों क्योंकि ऐसा करना वे बुत-परस्ती समझते हैं और उनका मजहब बुत-परस्ती के खिलाफ है; यह सच होते हुए भी मुसलमानों के बुजुर्गों की मजारों पर फूल चढ़ाये भी जाते हैं।

(३) एक दिन क्लास की मेज पर लिखा हुआ था कि मेज पर मत लिखा करो। मेज पर लिखने वाले गधे होते हैं ! जिस ने यह मेज पर लिखा होगा आपकी राय में वह स्वयं क्या होगा ?

उ०—यदि लिखने वाले का पता लगा सका तो निश्चय ही तुम्हें मालूम हो सकता है कि वह कौन है, हमारी राय क्यों पूछते हो ?

(४) क्या दुकानें अब १० बजे खुला करेंगी और रविवार को सब बन्द रहा करेंगी ? —चूनी लाल गुप्ता, गुड़गाँव।

उ०—हां ऐसा कानून बन चुका है और १ जून से इस पर अमल शुरू होगा।

(५) सरकारी दफ्तरों का टाईम ७ बजे से डेढ़ बजे तक क्यों कर दिया गया है ?

कृष्णा कुमारी भाटिया।

उ० इसलिए कि सरकारी नौकर दोपहरकी सख्त गर्मी के समय आराम से घर में सो और शाम को सैर कर सकें !

[ सभी बच्चे प्रश्न भेज सकते हैं ]

★ ★ ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * अब कोई कुरूप नहीं रहेगा ! *

प्लास्टिक सर्जरी के चमत्कार

प्लास्टिक सर्जरी की सहायता से रोगी के शरीर के कुरूप घायल या कटे हुए अँगों को उसके अपने शरीर के तन्तुओं से नए सिरे से बनाया जा सकता है। प्लास्टिक सर्जरी के पश्चात रोगी के शरीर का भद्दापन दूर हो जाता है और नया अंग कुदरती अंग की तरह काम करना शुरू कर देता है। यों तो प्लास्टिक सर्जरी को रोगियों के इलाज का बिल्कुल नया तरीका माना जाता है किन्तु इस का आरम्भ बहुत पुराना है। रूसी प्रोफेसर एम. एन. मिखेलसन की खोजों से पता चलता है कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व तिब्बत में प्लास्टिक सर्जरी के द्वारा रोगियों की नाक बदलने की कोशिश की गई थी।

कहा जाता है कि तीन हजार वर्ष पूर्व भारत में भी नाक बदलने के काम में सफलता प्राप्त हुई थी। तीस वर्ष पूर्व चीन में सर्जरी के विशेषज्ञ प्रो० तांङ पिङ छी और नी पाओ छुन इत्यादि ने प्लास्टिक सर्जरी के बारे में बहुत सी अमूल्य जानकारी प्रकाशित की। हाल में चन्द सालों में चीन के हर बड़े हस्पताल में सर्जरी से मरीजों का इलाज किया जा रहा है।

इस तरीके से बीमारियों के इलाज में बहुत बड़ी सहायता मिलती है। रोगी के शरीर के किसी भाग के तन्तुओं को काट कर उससे घायल कटे या गले हाथ पांव या दूसरे अंग बनाए जा सकते हैं। उनकी शक्ल भी सुधारी जा सकती है। नासूर या दूसरी किसी वजह से फटे ओंठ का प्लास्टिक सर्जरी से न केवल इलाज हो सकता है। बल्कि रंग रूप भी बदला जा सकता है। शरीर के बाहरी अंगों की प्लास्टिक सर्जरी के साथ-साथ धीरे-धीरे रोगी के अन्दरूनी अँगों की प्लास्टिक सर्जरी भी शुरू हो गई है। जैसे अन्न प्रणाली की संकुचितता और मूत्राशय के नालव्रण का इलाज। हमारे शरीर के बहुत से अन्दरूनी भागों की असाध्य बीमारियों का इलाज इस क्रिया की सहायता से सम्भव हो गया है। आजकल सर्जन रोगी के शरीर पर दूसरे की खाल लगाने के तजुर्बे कर रहे हैं। यदि ये परीक्षण सफल हो गए तो एक आदमी के शरीर का अंग दूसरे आदमी के शरीर पर भी लगाया जा सकेगा। एक बालक के दाएं गाल पर काफी बड़ा काला दाग था—उसे मिटाने के लिए कई आप्रेशन किए गए जो सफल रहे। अब उसका चेहरा देख कर कोई नहीं कह सकता कि कभी कोई दाग उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


चेहरे पर रहा होगा। इसी तरह एक लड़की की दाईं आंख की पलक पर एक धब्बा था उसे तीन बार अप्रेशन करके दूर कर दिया गया जो अब बिल्कुल ठीक हो गई है। एक और उदाहरण लीजिए एक कारखाने के मजदूर का अंगूठा एक दुर्घटना में कट गया। प्लास्टिक सर्जरी से उसकी तर्जनी अंगुली काटकर अंगूठे की जगह लगा दी गई। अब वह इस हाथ से अच्छी प्रकार कार्य कर सकता है।

★ चीन की स्टेज पर 'शकुन्तला' नाटक ★

चीन भारत मैत्री के ५वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर चीन की स्टेज पर भारत के प्रसिद्ध संस्कृत कवि कालिदास की रचना शकुन्तला नाटक को पेश किया गया। शकुन्तला का पार्ट पाए-शान और दुष्यन्त का मे-शी ने किया। पेकिंग से प्रकाशित होनेवाली हिन्दी पत्रिका चीन-सचित्र के सितम्बर अं में इस नाटक के कुछ दृश्यों के रंगीन चित्र छपे हैं उन्हें देखकर चीनी अभिनेता और अभिनेत्री को पहिचानना कठिन है कि वे चीनी हैं अथवा हिन्दुस्तानी! इस नाटक को प्रस्तुत करने में भारतीय नर्तकी कमला लक्ष्मण, पृथ्वी राज कपूर और भारतीय दूतावास के श्री बहादुर सिंह और उन की पत्नी ने बहुत सहायता दी! यह नाटक चीन वासियों में बहुत लोक प्रिय हुआ।

## * मैं वह हूं .... *

खलीफा हारूं रशीद ने हुक्म दिया कि रात को कोई भी रास्ता न चले। बगदाद के सब रहने वालों ने इस हुक्म की तामील की और रात को शहर में घूमना-फिरना बन्द कर दिया। लेकिन एक रोज सिपाहियों ने देखा कि एक आदमी सड़क पर चला जा रहा है। एक सिपाही ने उसको रोक कर पूछा—क्या तुमने खलीफा हारूं रशीद का शाही हुक्म नहीं सुना?

बेशक सुना है। उसने जवाब दिया।

फिर तुम्हारी बाहर निकलने की हिम्मत कैसे हुई?

मुझ पर यह हुक्म लागू नहीं होता।

किस वजह से? और कौन हो तुम?

मैं वह बेनाम इंसान हूँ जिस के सामने खलीफा शहजादे बड़े-बड़े नवाब और सब सरदार रोज अपनी गरदन झुकाते हैं।

सिपाही ने यह सोच कर कि कोई बड़ा आदमी होगा और किसी खास वजह से अकेला इधर आया होगा उसे छोड़ दिया।

सुबह पता चला कि वह और कोई नहीं खलीफा हारूं का हज्जाम था!

—यदि काँच के किसी बर्तन में गम चीज रखनी हो तो बर्तन के पेंदे के नीचे कपड़े की गद्दी पानीमें भिगो कर रखदेने से बर्तन नहीं टूटता!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## * पड़ोसी *

अँगूर की लता के जड़ के पास किसी ने बीज डाल दिया और पेड़ उग आया। जब यह जरा सा पौधा बढ़ ही रहा था और इसे सहारे की जरूरत थी इसके उदार पड़ोसी ने इसे किसी भी तरह की हानि नहीं पहुंचायी अपने भोजन और पानी में से इसे भी दिया!

लेकिन इसके बाद पौधा बढ़ कर पेड़ हो गया। इसकी अपनी मजबूत जड़ें गहरे तक चली गई थीं। अब इसने खानेकी मांग न की जितना चाहिए खुद हासिल किया।

अँगूर को इसके लिए जगह देनी पड़ी वह मितव्ययी जीवन बिताने का आदी था। उसका भुलक्कड़ पड़ोसी जो खाना देता वही उसके लिए इतना काफी था कि उचित समय पर उसके रसीले अंगूरों में मीठा रस भर दे।

पेड़ ने अपनी डालें और पत्तेदार टहनियां और फुनगियां लता के ऊपर फैला दीं और टहनियों की घनी पत्तियों के बीच से प्रकाश की बहुत थोड़ी ही किरणें आ पातीं।

अब लता का धीरज छूट गया और उस ने पड़ोसी से कहा कि वह धूप न रोके।

पेड़ ने सिर्फ दांत निपोर दिये और उस की डालें लता के ऊपर और भी अधिक छा गयीं।

समय बीतता गया और अंगूर की लता में अंगूरों के मनोहर गुच्छे लगे क्योंकि लता थोड़े में निर्वाह की आदी थी। अंगूरों के गुच्छे देख कर आँखें तृप्त हो जातीं।

और पेड़ अब भी बे-रोक टोक बढ़ता जा रहा था! अपने अभ्यास के अनुसार सूर्य की सारी किरणें अपने में समेट रहा है लेकिन उसे शायद इसकी सुध नहीं कि उसकी मजबूत डालों में एक भी फल नहीं लगा।

—(लियोनिद गुरुन्स)

## ★ पशुओं की बातें ★

(१) बेचारी पहाड़ी बकरी पर रहम खाइये। वह कभी आराम से नहीं सोती बेचारी बकरी! गरीब को हर समय सन्देह रहता है यहाँ तक कि रात को सुप्तावस्था में भी चौकन्नी रहती है परन्तु पहाड़ी बकरियां चालाक होती हैं उन में से कुछ ने अपने बचाव का और साथ ही रात में आराम की नींद लेने का रास्ता ढूंढ लिया है। रात को वे चुपके-चुपके वहाँ पहुंच जाती हैं जहां चिपमंक (एक खास किस्म की गिलहरियां) रहती हैं। बकरियां वहीं सो जाती हैं। शीघ्र ही वे खुर्राटे लेने लगती हैं उन्हें इस बातकी पूरी तसल्ली रहती है कि जरा से खटके पर गिलहरी शोर मचा कर उन्हें सावधान कर देगी।

(२) भारत के हाथी करवट सोते हैं। वे अपने आगे पीछे के पैरों को मोड़कर सावधानी से लेट जाते हैं; लेकिन अगर कोई भारतीय हाथी खड़े २ सोये तो समझ लीजिये कि वह निश्चित रूपमें बीमार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * भूगोल का प्रादुर्भाव कैसे हुआ ? *

[ श्री रामनारायण मिश्र ]

यों तो संस्कृत-साहित्य से संसार का कोई विषय अछूता नहीं रहा है, तथापि आधुनिक भूगोल का इतिहास अपने में अलग ही है।

ईसा से लगभग २००० वर्ष पूर्व ही ग्रीस में भूगोल के नाम का जन्म हुआ। उस समय अपनी अल्पज्ञता के कारण यूनानी लोगों ने सपूर्ण पृथ्वी को चपटा कहना शुरू कर दिया था। वे अपने निकटवर्ती रूमसागर को ही दुनिया मानते थे। यद्यपि यह उनकी कूप-मण्डूकता ही थी, किन्तु कुछ ही समय बाद जब जनसख्या बढ़ने लगी, तब कुछ लोगों ने दूसरे लोगों को हरा कर अपना दास बना लिया। अब यही दास लोग अपने विजेताओं के अत्याचारों से इतने पीड़ित हो गए कि भाग-भाग कर वीरान जगलों में जा बसे।

उस समय तक हिन्दुस्तान अमेरिका और आस्ट्रेलिया की भी खोज हो चुकी थी। अब यूनानियों ने रूम सागर के भी अतिरिक्त कोई प्रदेश है ? यह जाना। फिर इसी समय मिटेलस ने जमीन को अण्डाकार बताया।

सम्पूर्ण योरुप में इस विज्ञान का प्रचार होने लगा, जमीन के एक भूगोल वेत्ता ने इसी समय भूगोल की सब से पहली पुस्तक 'जागरीफिया जनरलाइज' लिखी। कुछ भू-शास्त्रियों ने जमीन किस तरह बनी ? पहाड़ कैसे बने ? वर्षा क्यों होती है ? जैसे भूगोल के आधारभूत कारणों की असली वजह जानने का प्रयास किया और इस पर कुछ सिद्धांत स्थिर किये जैसे जब भाप भर हवा ऊपर जाती है तो ठण्डी होकर बरसने लगती है अथवा मिट्टी वर्षा और तापमान के योग से वनस्पतियां उगती हैं। इत्यादि इस प्रकार इन सिद्धांतों पर ही विचार-विमर्श करने के लिए भूगोल का एक अलग विभाग बन गया। जिसे 'प्राकृतिक' या 'फिजीकल' भूगोल कहते हैं ! जर्मनो के भूगोल वेत्ताओं ने इन सिद्धांतों का प्रतिपादन करने का प्रशसनीय कार्य किया है।

आज तो भूगोल कितनी उन्नति कर गया है ? यह बताने की आवश्यकता ही नहीं रह गई। आज भूगोल और मानव जीवन में वही सम्बन्ध सूत्र जुड़ गया है; जो मणियों के समूह और सूत्र में होता है। 'सूत्रेमणि गणाइव।' इन दोनों के समन्वय से ही मानव-जीवन की माला पूरी होती है।

### पशु लाइब्रेरी

उत्तर प्रदेश सरकार की चिड़िया घर में पशु लाइब्रेरी खोलने की योजना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



★ कहानी    परलोक में निर्बाह के लिए

# *मृत्यु-समय अपनी कमाई साथ ले जाएंगे ?*

बहुत वर्ष पहले की बात है, उस दिन मैं ने अपने नगर के बूचड़खाने का निरीक्षण किया।

हजार से ऊपर गायें और बकरियां, जिन्होंने बुढ़ापे के कारण दूध देना बन्द या कम कर दिया था, अलग अलग पंक्तियों में खड़ी थीं और उनके शरीरों को काटने वाली होले की पैनी मशीनें उनके ऊपर झूल रही थीं।

मशीन युग की यह साफ सुथरी और सुगम व्यवस्था देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और बूचड़खाने के मालिक को मैं ने इस के लिए बधाई दी।

पशुओं की पंक्तियों के बीच घूमते हुए अचानक मेरी दृष्टि एक बूढ़ी गाय पर पड़ी वह मेरे एक पड़ोसी मित्र की गाय रह चुकी थी और उसका दूध मैं भी अनेक बार पी चुका था।

अचानक मैं ने देखा कि मैं भी एक गाय हूं और उसी गाय की बगल में मैं भी एक रस्सी के सहारे बंधा हुआ हूं। सिर पर झूलती मृत्यु और पीड़ा के भय से मैं कांप उठा।

लेकिन एक देवता से कुछ परिचय मित्रता की राह देवताओं के दरबार में मेरी पहुंच थी। मैंने तुरन्त अपने मित्र देवता का आवाहन किया और उससे प्रार्थना की कि वह तुरंत ही मेरा अनुरोध देवताओं तक पहुंचाकर इस बूचड़खाने की मशीनों को इसी क्षण नष्ट करा दे और यहां के सभी पशु जब बाहर निकल जायं तो इस इमारत को आग लगवा दे।

मेरी प्रार्थना का प्रभाव नहीं तो आप इसे संयोग ही समझ लीजिये, उस समय छतों पर लटकती हुई पैनी मशीनें पशुओं के शरीरों तक नहीं उतरीं। बूचड़खाने के कर्मचारियों ने कहा कि मशीनों को चलाने वाली बिजली बिगड़ गई थी।

मैं पुनः अपने मानव शरीर में लौट आया था और बूचड़खाने के मालिक का हाथ पकड़े उसके द्वार पर पहुंच गया था। अपनी आन्तरिक सफलता पर मैं मन ही मन बहुत प्रसन्न था। मुझे विश्वास था कि दैवी स्वीकृत विधान से आज की रात यह बूचड़खाना अवश्य ही आग की लपटों में भस्म हो जायगा।

मैं ने यह बूचड़खाना दिखाने के लिए आपको विशेष रूप से इस लिए निमन्त्रित किया था कि मैं इसकी आमदनी में आधा साँझा आपको देना चाहता हूँ। आप एक माने हुए फकीर हैं और मेरे बुजुर्गों का यह रवैया रहा है कि अपने कारोबार की आमदनी का आधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिस्सा फ़कीरों को बराबर देते रहे हैं । इस बूचड़खाने का मुनाफा आजकल छह हजार रुपया रोजाना का है। बूचड़खाने का मालिक कह रहा था।

"छह हजार यानी मेरे लिये तीन हजार रुपया प्रतिदिन !" मैं सोचने लगा।

घर पहुंच कर अपने मित्र देवता का मैं ने फिर आवाहन किया और अपना संचित पूरा तपोबल लगाकर देवताओं के पिछले आदेश को रद्द करा दिया।

चौथे वर्ष में नगर का सबसे बड़ा सरकार को सबसे अधिक आयकर देनेवाला व्यापारी घोषित किया गया। नगर-सभा ने मेरा नाम नागरिकों के एक से काटकर दूसरे, अति सम्मानित रजिस्टर में लिख दिया था।

उसी वर्ष नगरवासियों ने मेरे सम्मान में एक बड़ा भोज दिया।

मेरा मित्र देवता भी उसी अवसर पर मुझे अपना अन्तिम प्रणाम देने आया और बोला।

देवताओं ने भी तुम्हारा नाम अपने एक रजिस्टर से काटकर दूसरे में लिख लिया है ! उसके अनुसार यह आवश्यक है कि तुम परलोक में अपने निर्वाह के लिए यहां कमाई हुई सोने चांदी की सम्पत्ति को मृत्यु के समय, अपने साथ ले आने की व्यवस्था कर लो।'—'राही'

## ★ वीर माँ की लोरी ★

ऐ मेरी आंखों के तारे लाडले नन्हे से लाल
मेरी आशा के खिलौने: भोले भाले नौनिहाल
तू अजर है तू अमर है; तू प्रभु का अँग है
तू प्रभु से दूर रह कर भी प्रभु के सँग है
तुम हो ऐसे वीर बालक जो कभी डरते नहीं
जो कि मरके भी जमाने में कभी मरते नहीं
तू है योध्दा, तू बलि है तू बड़ा बलवान है
ऐ मेरे नन्हे हकीक़त, तू वतन की शान है
एक दिन होगी यही जाति तेरे आधार पर
चाँद तारे की तरह चमकेगा तू संसार पर
हाँ बड़ा हो कर यही उपकार करना है तुझे
कौम का कमजोर बेड़ा पार करना है तुझे

## जब मुझे नीन्द नहीं आती

मैं दोनों हाथों को सिर के पीछे ले जा कर बिछौने पर लेट जाता हूं और सोचने लगता हूँ—'एक शाँत और सुखद वातावरण अलसानी दुपहरी दूर बहुत दूर पर तरुवर की शीतल छाया।' —हेरिसन क्लाइड (कलाकार)

'मैं बिछौने पर इसी लिए जाता हूँ कि, सो सकूँ; किंतु यदि वहां पहुंच कर नींद न आए; तो मै उठ कर तब तक कसरत करता हूँ, जब तक खूब थक न जाऊं और बाद में जोरों की नींद आ जाती है' —मेजर एन्थोनी एलाला (यात्री)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * अंगरेजी राष्ट्र भाषा के रूप में नहीं रह सकती *

(श्री आचार्य विनोबा भावे)

'चूंकि भारत की भाषाएँ अनुन्नत हैं अतः शासन का कार्य इन से नहीं चलाया जा सकता है यह भ्रम है।'

यदि हमारी भाषाएं प्रशासन कार्य के योग्य नहीं हैं तो हमने अंगरेज़ों को भारत छोड़ने के लिए क्यों कहा? हमें उन्हें कहना चाहिए था कि वे यहां ठहर कर शासन का कार्य चलाते रहें। अपनी भाषाओं को दुर्बल और अनुन्नत सोचना भ्रम पूर्ण है।

निस्सन्देह अंगरेजी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का प्रवेश द्वार है और उसे सीखना चाहिए फिर भी सँसार अंगरेजी से बहुत बड़ा है। भारत और चीन दोनों की जन-सख्या ससार की समस्त जन सख्या का २।३ भाग है इस पर भी इन दोनों देशों में बहुत कम लोग अंगरेजी जानते हैं।

कोई समय था जब अंगरेजी सँसार की एक प्रमुख भाषा थी परन्तु अब संसार बहुत विस्तृत हो गया है। अब भारत, रूस और चीन दुनियां के रंग मंच पर आ गए हैं। दुनियां की स्थिति की उपेक्षा करना मूर्खता है। हमें चीन, रूस, जापान, अरब तथा अपने अन्य पड़ौसी देशों की भाषाएं पढ़नी होंगी।

अंगरेजी को दुनियां की भाषा मानने से हम इस विशाल जगत और उसके निर्माण की मूल्यवान विरासतों से अपने को वंचित रखेंगे।

'मैं भारत से अँगरेजी को निकालना नहीं चाहता परन्तु मैं इसे निश्चित रूप से अपने मन का मालिक भी नहीं बनने दूंगा।'

तामिल नाड के भाषाविवाद के पुरस्कर्त्ता अदूरदर्शी हैं और उनकी मनोवृति सँकुचित है। यह मान लेना मूर्खता की परा-काष्ठा है कि हम बाह्य जगत का ज्ञान अंगरेजी के द्वारा ही प्राप्त कर सकते वा उससे सम्पर्क स्थिर रख सकते हैं! उन में से कोई चीन, रूस वा यूरोप के देहात में जाय और अंगरेजी में बात-चीत करे तो उसे पता लग जाएगा कि उसकी बात को कितने व्यक्ति समझ पायेंगे।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक देश को इस जगत में एक मिशन की पूर्ति करनी होती है। जब तक हम अंगरेजी से चिपके रहेंगे जब तक हम उस मिशन की पूर्ति न कर सकेंगे।

'समस्त सँसार में भारत ही अकेला देश है जिस की सीमाओं के भीतर १४ मुख्य भाषाएं प्रचलित हैं। भारत एक अनूठा प्रयोग कर रहा है और उसे अपना विशिष्ट मिशन पूरा करना है।

—शाह ईरान ने मलिका सुरैया को तलाक दे दिया क्योंकि वह बांझ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



★कहानी

# ✻ मँजिल की बाँहें ✻

(कु० सुदर्शन खोसला प्रभाकर)

गली में खड़ी बाला ने रजनीको पुकारा; रजनी उसकी आवाज़ सुनकर झट बाहिर निकल आई।

"क्या है ?" उसने बाला की मुस्कान पर एक रहस्यमयी दृष्टि डालते हुए कहा—

"वह—सामने—रमा है न !" बाला ने बड़ी कठिनाई से होंठों से फूटती हंसी रोक कर कहा—

वह न—बड़ी अभिमानी है—किसी से बोलती ही नहीं —मानो आकाशसे अप्सरा उतर आई हो।

उसकी इस बात पर रजनी को भी हंसी आ गई। साथ वाले आंगन से शामो भी बाहिर निकल आई और मुंह पर आश्चर्य के भाव लाते हुये बोली—

अरे ! किस की बात कर रही हो, क्या—रमा;हा ! हा हा ! वह जोरसे अट्टहास करउठी।

फिर जरा रुककर बोली—

अप्सरा है या—ओ—हो—मोटे होंठ भद्दा रंग—लाल—शराबी सी आँखें—सीप से कान—और—मोटी कमर—उसे,उसे कहती हो अप्सरा !

उसने मुंह फैला कर इस ढंग से बात की कि वे दोनों भी हंसे बिना नहीं रह सकीं।

वे बातें कर ही रही थीं कि पास से वही रमा बगलमें दो-चार किताबें दबाये निकलगई।

रजनी ने धीरे से कुछ कहा तथा हंसी का फुहारा फिर फूट चला।

रमा ने भयभीत दृष्टि से उन्हें देखा फिर दौड़कर अपने घर में घुस गई तथा निढाल सी चारपाई पर गिर पड़ी।

एक २ करके कई दृश्य उसकी भयभीत दृष्टि से गुजरने लगे।

वह एक दम अबला थी। पिता की मृत्यु कब हुई ? शायद उसे कुछ पता नहीं। मां भी उसे समाज की अत्याचारी दीवारों के सहारे छोड़ कर वहाँ चल गई–जहाँ से आज तक कोई नहीं लौटा।

रमा ने पिता की पूंजी से कुछ पढ़ा तथा निकट के गांव में शिक्षिका हो गई। लेकिन समाज उसकी हंसी उड़ाता रहा।

फिर भी वह उस चट्टान की तरह बनी रही, जिसके खुले वक्ष पर नदियों की तूफ़ानी लहरें चाहे कितना ही टकरायें लेकिन वह विचलित नहीं होती।

वह भी हृदय में तूफ़ानों को दबाये मुस्कुरा कर उन्हें निमन्त्रित करती जा रही थी। उसके जीवन का हर क्षण संघर्ष बनता जा रहा था, उसके जीवन का हर पल उसके डर की चिन्गारी को सुलगा रहा था। कभी-कभी वह अपने को भूलकर अपनी भावनाओं का

(शेष पृष्ठ ३० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * चाँद नीचे गिर क्यों नहीं पड़ता ? *

विस्तृत नीले आकाश में अपनी पूर्ण आभा में प्रकाशमान, हम धरतीवासियों को ज्योत्स्ना प्रदान करने वाला चाँद ऊपर आकाश में क्यों टंगा रहता है, नीचे क्यों नहीं गिर पड़ता, यह प्रश्न स्वाभाविक ही है। कई ऐसे आकाश-पिंड है, जिनके इर्द-गिर्द चाँद नहीं होता। उन ग्रहों के निवासी यदि धरती पर आयें और उन्हें खगोल-शास्त्र का कोई ज्ञान न हो तो वे धरती के चारों ओर परिक्रमा करते चाँद को देखकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे। उन की समझ में ही नहीं आयेगा कि यह कैसा जादू है, चांद हमारी पृथ्वी के चारों ओर क्यों घूमता है ?

पर हमारे धरती-निवासियों के लिए चांद के चारों ओर घूमने का प्रश्न आज इतने आश्चर्य का विषय नहीं है। ३०० वर्ष पहले ही सर आइजक न्यूटन ने इस आश्चर्य का समाधान कर दिया था। धरती की जिस गुरुत्वाकर्षण शक्ति से हमारे पैर जमीन पर टिके रहते हैं; उसी शक्ति द्वारा चांद भी आकाश में अपने स्थान पर टँगा रहता है। साधारणतया लोगों में यह विश्वास प्रचलित है कि एक निश्चित ऊंचाई के बाद पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण-शक्ति नहीं पाई जाती लेकिन यह सत्य नहीं है। पृथ्वी की यह शक्ति दूर से दूर तारों तक भी पहुंचती है। हां ज्यों-ज्यों दूरी अधिक होती जाती है त्यों-त्यों उसका प्रभाव कम अवश्य होता जाता है और कुछ लाख मीलों के बाद तो वह नगण्य हो जाता है।

आप पृथ्वी से जितनी दूर जायेंगे उतने ही गुना धरतीकी गुरुत्वाकर्षण-शक्ति भी कम होती जायेगी। उदाहरण के तौर पर यों समझ लीजिये कि यदि पृथ्वी से दूर उड़ने की आप की गति दुगनी हो जाये तो यह शक्ति मात्र एक-चौथाई रह जायेगी और यदि आपकी गति दस गुनी बढ़ जाये तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति का १०० वां भाग ही शेष रह जायेगा।

गुरुत्वाकर्षण-शक्ति वस्तुतः पृथ्वी में ही नहीं बल्कि सभी ग्रहों-सृष्टि की सभी वस्तुओं में पायी जाती है। जिस वस्तुका जितना बड़ा आकार और घनत्व होगा उतनी ही अधिक उसकी यह शक्ति होगी। बृहस्पति नक्षत्र बहुत बड़ा है और इसी से उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति से तीन गुना अधिक है। इसके विपरीत चन्द्रमा की यह शक्ति पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति का ९वां भाग ही है।

पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति और चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति दोनों एक दूसरे को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अपनी ओर खींचती है। इस खिंचावमें करोड़ों टनों की ता त होती है। चन्द्रमा यदि पृथ्वी के चारों ओर घूमता न रहता तो वह बहुत पहले ही पृथ्वी से टकराकर चूर-चूर हो जाता। लेकिन आज वह २००० मील प्रति घंटा से भी अधिक गति से पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है और जब तक उसको यह गति कायम रहेगी; तब तक वह गिर नहीं सकता। चूंकि इतने ऊपर हवा का कोई अवरोध नहीं है अतः इस गति में अन्तर आने की कोई सम्भावना भी नहीं है।

यदि आप एक पत्थर को एक रस्सी में बाँध कर उसे घुमाना शुरू करें तो आप को अनुभव होगा कि पत्थर का वजन मानो कुछ है ही नहीं। चाँद जब पृथ्वी के चारों ओर घूमता है तब भी बहुत कुछ ऐसा ही होता है। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति को आप रस्सी मान लीजिये और चांद को पत्थर का एक टुकड़ा। चन्द्रमा अपनी गति के कारण ही नीचे नहीं गिरता और धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति उसे अपने से अधिक दूर जाने नहीं देती।

चांद किसी कारण यदि अपने स्थान से हट भी जाये तो पृथ्वी के चारों ओर घूमने की उसकी गति में स्वयं ही आवश्यक परिवर्तन हो जायेगा और वह उस वक्त भी ज्यों का ज्यों आकाश में टंगा रहेगा। ... ऐसे परिवर्तन सदा होते रहते हैं क्योंकि चन्द्रमा का पथ बिल्कुल गोल नहीं है।

चन्द्रमा जहां है वहीं सदा बना रहे यह आवश्यक नहीं। वह पृथ्वी के और निकट आ सकता है और अधिक दूर भी जा सकता है। हां पृथ्वी और उसके बीच की दूरी के अनुपात से ही गति कम या ज्यादा होनी चाहिए, तभी वह अपने स्थान पर टिका रह सकता है। एक रस्सी में पत्थर का टुकड़ा बांधकर घुमाने वाली बात यहां भी लागू होती होती है। रस्सी जितनी छोटी होगी उतनी ही अधिक तेजी से पत्थर के टुकड़े को घूमाना होगा।

उदाहरण के लिए धरती के चारों ओर केवल कुछ सौ मील की दूरी पर भी कृत्रिम चांद घूम सकता है, ठीक उसी प्रकार जैसे ढाई लाख मीलकी दूरी पर असली चांद घूमता है। हाँ इस कृत्रिम चांद से दस गुना अधिक तेजी से पृथ्वी के चारों ओर घूमना होगा क्योंकि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति नजदीक रहने से अपेक्षाकृत अधिक रहेगी। हिसाब लगा कर देखा गया है कि यदि १८००० मील प्रति घटे के हिसाब से यह कृत्रिम चांद पृथ्वी की परिक्रमा कर सके तो वह अपने स्थान पर टिका रहेगा और वह केवल डेढ़ घटे में पृथ्वी की परिक्रमा पूरी कर लेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(सफा २७ से आगे)
विसर्जन कर नई राह की रचना करना चाहती थी लेकिन समाज उसे काटकर समाप्त कर देता था। वह युगों से संजोये स्वप्नों को साकार कर देना चाहती थी लेकिन निष्ठुर समाज उस की कोमल भावनाओं का गला घोंट देता था।

विवशताओं की चोट ने उसे पत्थर बना डाला था, ऐसा पत्थर जो निष्प्राण था; जिस की धड़कनें सुलग २ कर राख हो चुकी थीं, जिसके हृदय में कोई स्पदन नहीं था, कोई आहट नहीं थी।

प्रेम हृदह की एक धड़कन का नाम है! लेकिन उसने कर्तव्य के नाम पर उसे भी पीस दिया था।

उसके हृदय मन्दिर की पूजा के प्रसूनोंको मुरझाते देखकर भी वह कह देती थी–तुम भी जल जाओ, ठीक मेरी तरह। और उस के अधरोंकी मुस्कानकी सोई वेदना टीस बनजाती।

वह युवती थी, लेकिन सहमी हुई! जिस के कुंआरे अरमानों को बार २ समाज ने कुचला था; उसकी कमजोर आवाज की हमी उड़ाती थी।

कभी-कभी वह निराशा के बोझ से दब कर अन्धकार में सिमट कर खो जाना चाहती थी। उसकी आंखोंकी आकुलता ससार से दूर उस सत्ता के दर्शन करना चाहती, जिसे किसी से घृणा नहीं। हर सुन्दर वस्तुसे उसे नफरत हो गई। वह वहाँ छिप जाना चाहती थी, जहां सौन्दर्य नाम की कोई वस्तु नहीं। उसके बाद उसकी विस्मय से फैली आंखों से अश्रु गिर गिर कर कठोर धरतीके उर पर बिखरने लगते।

लेकिन उसके बाद उसके हृदयकी ज्वाला संघर्ष बन जाती तथा वह एक शिला की भाँति बनकर समाज के थोथे अत्याचारों रूपी तूफानों को अपनी छाती पर सहने लगती।

तब उसे कोई कहता हुआ लगता—

पगली! तू कुरूपा नहीं, समाज की दृष्टि कलुषित है; जो तेरे मानसिक सौन्दर्य के दर्शन नहीं कर पाई।

तब वह चुपचाप जीवन-पथ पर खड़ी पत्थर की तरह आंधियों का सामना करती और जब गर्द दूर होती तो उसे ऐसा लगता कि मँजिल अपनी लम्बी लम्बी बांहों से उसे अपनी तरफ बुला रही है।

फिर उसके अधरों पर वही पुरानी हसी नाच उठती जिसके बल पर वह बिल्कुल मंजिल के सन्मुख जा खड़ी हुई थी।

★ बूझो तो ★

उच्ची टाली तोता बैठा गर्दन ओहदी काली आ के बुझे पंडित पाधा जा बुझे कोई पाली।

२. आँडे सी जद बोलदे सां बच्चे बोलनों रह गये मूर्खां ने की बुझनी चतुर बुझनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(सफा ३१ से आगे)

कुछ पत्रिकाएं भी यात्रियों के मन-बहलाव और समय काटने के लिए मौजूद थीं। कोई एक घण्टा पश्चात वही रिसैप्शनिस्ट प्रत्येक यात्री से पूछने आई कि उसे टी'चाहिए अथवा कफी ! हमें'चाय'पसन्द है किन्तु हमारे साथी ने काफी पसन्द की। थोड़ी देर बाद ट्रे में नाशता आपहुँचा। जिसे सामने की सीटकी पीठ में फंसी मेजपर खोलकर रखदिया गया। नाशते में एक सन्त। एक चीकू एक कप चाय अण्डे का आमलेट एक टिकया [वह न जाने किस चीज की बनी थी]उबले आलू की बनी एक चीज डबल रोटा मक्खन और रौंगी के उबले दाने थे ! निमक मिर्च दानियां भी मौजूद थीं। छुरी कांटा और चम्मच भी थे। शूगर क्यूब दो थीं। एक गिलास रंगदार पानी का था शायद उसमें निम्बू का रस मिला हो। नाशता खत्म कर टेबल को उसी तरह अगली सीट में 'टिच' कर दिया। और समाचार पत्र पढ़ना शुरू किया। खिड़की में से नीचे देखा जा सकता था ! किन्तु सारे रास्ते में बंजर जमीन ही देखने को मिली; कहीं हरा भरा-खेत देखने को नहीं मिला। हाँ कभी-कभी कोई नदी नाला मामूली पानी की पतली लकीर जैसा दिखाई अवश्य पड़ जाता था। ११ बजनेमें दस मिनट शेष थे कि पुनः पेटियां बाँधने का परामर्श दिया गया क्योंकि हम बम्बई आ पहुंचे थे और जहाज अब नीचे उतरने वाला था। जहाज से समुद्र के तट पर खड़े मकान ऐसे लग रहे थे जैसे बच्चे लकड़ी के ब्लाकों से मकान बनाते हैं। जहाज हवाईअड्डे पर उतरा। हवाईजहाज उड़ते समय बिल्कुल खड़ा जान पड़ता था और धरती आहिस्ता २ पीछे खिसक रही प्रतीत होती थी। बारी बारी यात्री सीढ़ी से उतर उस गेटकी तरफ बढ़े जहाँ यात्रियों के स्वागत के लिए आए व्यक्ति प्रतीक्षा कर रहे थे। चूँकि इसी जहाज में काश्मीर के प्राईम मिनिस्टर बख्शी गुलाम मुहम्मद भी आए थे अतः गेट पर उनके पहुंचते ही नारे लगने शुरू हो गए! हार डाले गए और फोटो खींचे गए। हमारी निगाहें अपने 'होस्ट' मि० कपूर को ढूंढ रही थीं। हम एक दूसरे को पहचानते न थे। १० मिनट पश्चात वह इक परिचिता लड़की और उसके भाई सहित आ पहुंचे। अभिवादन के पश्चात वेटिंग रूम में जाकर अपना सामान छुड़वा लिया और कपूर साहेब की कार में उनके बंगले पर जो वर्ली में समुद्र के तट पर है आ गये। वहां मुंह हाथ धोकर खाना खाया। दोपहर के पश्चात नहा धोकर हम उनके बँगले के बरामदे में आ बैठे जहां से अथाह समुद्र की बल खाती लहरें आती और किनारे-किनारे बनी दीवार से टकराती दिखाई देती हैं।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ✻ जग-बीती ✻

## ★ पीर साहेब की दाढ़ी पर धावा ★

शेख सादी सफर करते हुए एक गांव से गुजरे। गांव वाले सब के सब जाहिल थे; उन के पीर साहब भी जाहिल थे, शेख सादी को गाँव वालों ने हाथों हाथ लिया और बड़ी खातिर की। पीर साहब यह देखकर घबराये और डरे कि, कहीं शेख सादी उनकी गद्दी पर कब्जा न कर लें। आखिर शेखसादी की जाँच करने के लिए पहुंचे और कड़क कर बोले—तुम बड़े काबिल समझे जाते हो—जरा इस शकल का मतलब तो बताओ! शकल क्या थी? सिर्फ एक दायरा था जिसके बीच में एक लकीर खिची हुई थी। सादी ने बहुत सोचा कि यह 'ज्योमेट्री' की कौन सा शकल है, मगर चूं कि सवाल पूरा न था इसलिए जवाब न दे सके। पीर साहब हंसकर बोले— बस! इसी लिए काबिल बनते हो। भला इस शकल में क्या धरा है बाजरे को एक रोटी है जिस पर तरकारी की एक फाँक रखी हुई है।

सादी ने देखा कि पीर साहब ने जाहिल होने पर भी जलील कर दिया।

इस लिए बदला लेने के लिए पीर साहब की बड़ाई करते हुए आगे बढ़ कर उनकी दाढ़ी में से एक बाल उखाड़ कर उन्होंने बाजू पर बांध लिया।

लोगों ने कहा कि; यह क्या? सादी ने कहा—पीर साहब अल्लामा हैं उनकी दाढ़ी के बालकी बर्कत से हम भी आलिम होजायेंगें। सादी की बात खत्म भी न हुई थी कि लोग पीर साहब की दाढ़ी पर टूट पड़े और उनके चिल्लाने पर भी उनकी दाढ़ी का एक-एक बाल नोच लिया!

## ★ दृष्टिकोण ★

एक गरीब बालक धूल से सना सड़क पर खेल रहा था। तभी उसकी निगाह अपनी ही उम्र के एक बालक पर पड़ी; जो कीमती वस्त्र पहने बाबागाड़ी में बैठा था।

धूल से सने निर्धन बालक ने अपने ऊपर एक दृष्टि डाली और फिर उस बालक की ओर देखा मानो मन में कह रहा हो, ओह! वह लड़का कितना सुखी है। कितने अच्छे कपड़े पहनता है, कैसी सजी हुई गाड़ी है।

गाड़ी में बैठे बालक ने भी एक बार अपने दुबले शरीर की ओर देखा काँति-विहीन सूखे मुख पर हाथ फेरा और धूल में सने उस बालक की ओर एक-टक देखने लगा मानो कह रहा हो ओह! वह बालक कितना सुखी है। कैसा हृष्ट-पुष्ट शरीर है, कैसी कांति है उसके मुख पर।

---

कि देखो घँटियां बजतीं वृषभ जाते
कृषक को धान बोने हैं
धरा पर स्वर्ग आयेगा किशोरी

(शेष सफा ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ★ जवानी कह रही है ★

(श्री शांतिस्वरूप 'कुसम')

अधूरी है अभी मँजिल, अधूरा पथ,
अधूरा है अभी जीवन।
हर तरफ से आ रही बू स्वार्थ परता की
घृणा के घन तने हैं
डाह की ज्वाला धधकती द्वेष से,
मुंह वासनाओं के सने हैं
शक्ति पांवों में बहुज जंजीर पर,
हर पाँव को रोके खड़ी है
व्यक्तिगत का राग कहने को न,
पर मन्तव्य अपने ही बने हैं
मलय आता मगर किस काम की
वह भी लिए रहती विषैलापन।
अरे यह एक आँसू है उधर तो,
अश्रुजल की बह रहीं नदियां
कि स्मित यह एक कितने लोचनों को
पर तरसते हो गयीं सदियाँ
न बांधो एक आंचल से प्रणय मेरा,
हजारों को जरूरत है
जरूरत है भुला दूं आज ये सपने
शराबी ये नयन सुधियां
अनेकों स्वर बुलाते, दे रहे उठकर
अनेकों हाथ आमन्त्रण।
कि यौवन वह नहीं जो सुन
पुकारों को खड़ा खामोश रह जाये
भटकते काफिलों के पग न छिल जायें,
अतः मारग न दिखलाये
नहीं वह भी नहीं यौवन कि जो
हरदम रहे भुज-पाश में बन्दी
झुका दे शीश चाहे जिस तरफ
जिस ओर हटते देख कर साये
न वह यौवन कि जो देखे सुबह औ,
सांझ की उतरी-चढ़ी चितवन।
जवानी कह रही है बन्द कर दो
गीत जिन से बुजदिल कायम
जवानी कह रही है रोक दो
संगीत जिससे फैलता मातम
जरूरत है न चन्दा से सितारों
से करें बातें गगन में जा
धरा के फूल कुम्हलायें न चलने दो
हवा गम की न बिखरे तम
उगी हैं कोपलें अभिनव कि बढ़ने दो,
महकने दो जरा उपवन।
अभी तो सूर्य निकला है- प्रभाती
के तराने गा रहीं कलियां
सुहागिन बन न मंजिल की तरफ
नादान मुड़ पायीं अभी गलियां
न तलवे गर्म हो पायें न सांसें
फूल पायी हैं थकन लेकर
अभी विश्राम के स्वर क्यों मनाते
क्यों अभी अलमस्त रंगरलियाँ
गाओ राग दीपक तुम न संध्या है
न होगा पन्थ यों पावन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# * देख ली हम ने बम्बई भी ! *

भारत के पूर्वी तट पर बसा देश का यह दूसरा बड़ा नगर अपनी भव्यता, सुन्दरता तथा व्यापार का केन्द्र होने के कारण देश के अन्य भागों में रहने वालों के लिए अपूर्व आकर्षण रखता है। कौन ऐसा व्यक्ति होगा जिसे इस नगर को देखने की इच्छा न होगी ? इच्छा तो हमारी भी देर से बम्बई देखने की थी किंतु जब जाना पड़ा तो अचानक और वह भी एक अत्यावश्यक कार्यवश अतः बम्बई जा कर भी उसे पूरे तौरपर देखने का समय न मिल सका।

६ एप्रिल को रात के दस बजे फ्रंटियर मेल से जालन्धर से देहली के लिए प्रस्थान किया। ७ की प्रातः को साढे सात बजे गाड़ी देहली पहुंची। स्टेशन पर एक टिकट-सम्बन्धी जिन्होंने पहले से हवाई जहाज की एक सीट बम्बई के लिए बुक की हुई थी अपनी कार लेकर आए हुए थे। वह हमें पालम हवाई अड्डे पर ले गए। वहां १६५ रु० देकर टिकट खरीदा और सामान तुलवाया गया। सामान पर गोल कार्ड धागे से बांध डुप्लीकेट टोकन हमें दे दिया गया। सारे यात्री और उनके रिश्तेदार तथा मित्र 'एयर फील्ड-गेट' पर प्रतीक्षा करने लगे। हवाई जहाज थोड़े ही फासले पर तैयार खड़ा था। ८ बजे हम अपने छोड़ने आने वालों से विदा लेकर हवाई जहाज में सवार हो गए! हवाई जहाज के अन्दर दो लाइनों में दो दो सीटें बराबर २ लगी हुई थीं। सीटों की दोनो लाईनों के बीच आने जाने को रास्ता छोड़ा गया था। हम हवाई जहाज की खिड़की के निकट एक कुर्सी जैसी गद्दोदार सीट पर आराम से बैठ गए। थोड़ी देर बाद सामने जहाज के अन्दर के कमरे के अन्त में ऊपर लाल रोशनी में लिखा मिला अपनी पेटियां बांध लें। एक घोषणा भी इस उद्देश्य की सुनाई दी कि हवाई जहाज २० हजार फीट की ऊँचाई पर पहुंच कर ३२५ मील प्रति घण्टा की रफ्तार से उड़ान करेगा। जहाज के उड़ने से पूर्व एक सुन्दर लड़की जिसे 'रिसैप्शनिस्ट' कहते हैं ट्रे में टाफियां और खट्टी-मीठी गोलियाँ लिये आई। प्रत्येक यात्री ने एक एक गोली उठा मुंह में डाल ली। बाद में पूछने पर पता चला कि जहाज के ऊपर उठते समय दिल की घबराहट को इस गोली की सहायता से दूर किया जा सकता है। चूंकि जहाज एयर कण्डीशन्ड था अतः इजनों का शोर अन्दर सुनाई नहीं देता था। सीटों की पीठों पर २ जेबें बनीं थीं जिन में ताजा अंगरेजी दैनिक की एक एक प्रति और हवाई जहाज की यात्रा-सम्बन्धी पैम्फलेट भी थे।

(शेष सफा ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## नाक से दाँए हाथके अँगूठे तक

हमारे देश में लम्बाई आदि मापने के लिए इंच: फुट, गज; मील आदि का सहारा लिया जाता है। इस प्रणाली को हमने अंग-रेजों से अपनाया है। शुरू में फुटका माप अनिश्चित था। इस सम्बन्ध में कुछ मनोरजँक सच्चाइयां प्रस्तुत की जाती हैं:—

इङ्गलैंड के बादशाह एडवर्ड द्वितीद ने जौ के तीन दानों के बराबर इंच की लम्बाई मानी थी। हैनरी प्रथम ने एक गज की लम्बाई का माप शाही घराने के किसी व्यक्ति की नाक से दांएं हाथ के अंगूठे की नोक तक नियत किया गया था। उस समय एक गज की लम्बाई उतनी मानी जाती थी जितनी वीर वार के दिन गिरजा घर से निकल कर आने वाले पहले १६ व्यक्तियों के बांएँ पैरों को एक के पश्चात दूसरा रखने से होती थी। खारांश यह कि अंगरेजी प्रणाली का विकास मन माने ग से हुआ।

## ★ अभिलाषा ★

आज यही अभिलाष मेरी;
इस देश जाति को प्यार करूं।
जिस देश जाति में जन्म लिया
यह तन उस पर बलिहार करूं॥
अब धन दौलत और सामग्री,
मिलती पर मुझको चाह नहीं।
सुख की अभिलाषा त्याग आज
अपनाया मैंने राह यही।
कुछ और मुझे परवाह नहीं,
आज कल्पना साकार करूं।
जिस देश जाति में ज़न्म लिया;
यह तन उस पर बलिहार करूं।
सँसार क्षेत्र मेरा पथ है,
आये क्यों न तूफान प्रचल
नाला नद और चट्टानों में
मैं चलता रहता हूँ अविरल।
मुझको यह अच्छा लगता पल
जिसमें सेवा भरमार करूं।
जिस देश-जाति में जन्म लिया

—तारादत्त माथुर 'निविरोध

## *बूझिए तो ?*

[पँजाबी बुझारतें]

१. वे लकड़कदा-हाँ पई। आह की औंदे खड़कदा-तूं पई। मैं लड़कदा मैं की जानां १ की औंदे खड़कदा।

२. ऐनी 'क मिट्टी, पिट पिट करदा न हगे न मूते, किल्ह २ मर

३. आतर पूजाँ पातर पूजा सगरी; बिना पात कोई छटी लियावे ताँ बड़े साडी नगरी।

४. हरा फुल मुढ केसरी बिना पत्तां दे छां; राजा पुछे रानी नूँ की बृक्ष दा नां ?

५. इक ... ,नां ओहनूं अड़न पत्ते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * गृह विज्ञान *

★ घर में रखने की आवश्यक चीजें— बच्चों वाले घर में चोट लगने और मामूली दर्द आदि की शिकायत हर समय पैदा होती रहती है। रोग अधिक होतो वैद्य हकीम डाक्टर को फौरन बुला लेना चाहिए मगर साधारण शिकायतों को दूर करने के लिए हर घर में निम्नलिखित चीजें अवश्य मौजूद रहनी चाहिए १. टिंकचर आयोडिन २. मरहम पट्टी के लिए साफ कपड़ा ३. साफ रुई ४. फोड़े फुंसियों पर रखने के लिए फाहे ५. छोटी कैंची ६. बोरक की मरहम ७. जेतून का तेल ८. वैजलीन ९. नरम कपड़ा मलमल ।

★ खाने की चीजें—खाने की चीजों की एहतियात न रखने से प्रायः सभी रोग होते हैं। अतः दूध का विशेषतः ध्यान रखाना चाहिए। दूध रखने और गर्म करने के बरतन निहायत एहतियातसे धोकर और सुखाकर रखने चाहियें जिस बरतन से जरा सी भी बू आती हो उसमें दूध कदापि नहीं डालना चाहिए। यदि दूध में थोड़ा सा बोरिक ऐसिड डाल दिया जाए तो दूध अधिक समय तक खराब नहीं होता।

★ शीशे का गिलास—बरतन में ठंडा पानी भर गिलास उस में रख दें और उन्हें उबालें इस तरह गिलास पक्के हो जाएंगे। गरम पानी शीशे के गिलास में डालने से पहले यदि चमचा उसमें खड़ा कर दें तो गिलास टूटेगा नहीं।

# ★ क्या जानें ? ★

हिन्द से जिसको प्रेम नहीं<br>
वह हिन्दी भाषा क्या जाने !<br>
देश के हित सम्मान नहीं,<br>
उस मानव की कुछ शान नहीं।<br>
हंस-हंस कर जिसने वेदी पर<br>
है किया कभी बलिदान नहीं<br>
मातृ-भूमि की आन नहीं,<br>
चमकी मुख पर कुछ शान नहीं।<br>
भीषण-रण की ज्वाला में<br>
हों हाथों में गर जान नहीं।<br>
देखा जिसने बलिदान नहीं;<br>
मरने की विधि वह क्या जाने<br>
हिन्द से जिसको प्रेम नहीं<br>
वह हिन्दी भाषा क्या जाने

—तारा दत्त माथुर 'निर्विरोध

★ हम भी बोयेंगे ! ★

पतझड़ की ऋतु में मैंने अपने सारे शोक संतापों को इकट्ठा करके अपने बाग में गाड़ दिया। जब अप्रैल महीना आया और बसन्त ऋतु पृथ्वी से विवाह करने आयी तो मेरे बाग में उगने वाले फूल दूसरों के बागों के फूलों से बहुत सुन्दर और भिन्न थे।

मेरे पड़ोसी मेरे फूलों को देखने आये और सबने मुझसे कहा—अबकी बार जब पतझड़ ऋतु में बीज बोनेका समय आये तो क्या इन फूलोंके थोड़े से बीज हमें भी न दोगे हम भी उन्हें अपने बागों में बोयेंगे ! —खलील जिब्रान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * स्वास्थ्य सुधार *

## ★ स्वास्थ्य को स्थिर रखने के नियम ★

* प्रायः सभी रोग पेट से ही पैदा होते हैं इस लिए खाने पीने के सम्बन्ध में बड़ी एहतियात रखनी चाहिये, जैसेः—

१. दिन में केवल दो बार खाना खाओ यदि बीच में भूख लगे तो थोड़ा सा दूध पी लो ।

२. पाचन शक्ति प्रातः काल जागती है और १० बजे तक भोजन ग्रहण करने को उद्यत रहती है इससे पूर्व भोजन खाकर इस पर बोझ न डालो ।

३. रात को बहुत शीघ्र खाना मत खाओ सदैव सोने से पूर्व ३ घण्टे पूर्व खाना खा लेना चाहिए ।

भोजन खाकर हाथों को साफ करके मुंह और आँखों पर फेरनेसे दृष्टि स्थिर रहती है।

५. खाना खाने के अनन्तर १५-२० तक अपनी बाईं करवट लेटा करो । इससे पाचन शक्ति को सहायता मिलती है ।

६. भोजनको खूब चबा-चबा कर खाना चाहिए । जिनका मेहदा निर्बल हो उन्हें इस का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

७. ज्यादा गरम और ज्यादा ठण्डे शरबत और खाने मेहदे के लिए हानि कारक होते हैं। इन से अच्छे मेहदे भी खराब हो जाते हैं ।

८. गरमियों में प्याज बरसात में नीम्बू अवश्य प्रयोग में लाने चाहिए इनसे कई बीमारियां नहीं होतीं ।

९. अँगूर संगतरे, किशमिश, मनक्का; अंजीर नाशपाती न केवल रोगों को रोकते हैं अपितु स्वास्थ्य प्रद हैं ।

१० अपने शरीर में किसी प्रकार का विष न जाने दो याद रखो चाय और तम्बाकू भी जहरीली चीजें हैं ।

११. खाना खाने से पहले या पीछे खांड वाली चाय पीने से हाजमा खराब हो जाता है।

१२. शराब या कोई अन्य नशा भूलकर न लगाएं ।

१३. प्रातः बिना कुछ खाये थोड़ा सा पानी पी लेने से कब्ज जाती रहती है। कब्ज के लिए यह अवश्य करना चाहिए।

१४. महीने में एक बार जुलाब अवश्य ले लेना चाहिए ।

१५. सप्ताह में एक उपवास करना लाभ प्रद है ।

१६. प्रातः नियम पूर्वक शौच जाने की आदत डालो ।

१७. शरीर को ताजी हवा मिलनी आवश्यक है रोज कुछ मिनट हल्की धूप में नगे शरीर बैठना लाभदायक है ।

१८. प्रातः सैरको जाना बहुत लाभप्रद है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ★ चुटकुले ★

१. एक बैरिस्टर साहेब का स्वास्थ्य दिन प्रति दिन गिरता देख उनके मित्र ने उन्हें कुछ मास विश्राम करने का परामर्श दिया क्योंकि इस प्रकार उनका 'काँस्टीटयूशन' पुनः बन सकेगा। किन्तु बैरिस्टर साहेब धीरे से बोले— मेरा कांस्टीटयूशन तो देर हुई बर्बाद हो चुका है अब तो मैं बाईलाज के अधीन रह रहा हूँ।

२. मिस सूसन यह पत्र बताता है कि तुम 'बास' की प्राईवेट सैकरेटरी नहीं टाईपिस्ट रही हो? तुम ने झूठ क्यों बोला? किन्तु महोदय, आपनेही तो विज्ञापन में लिखा था कि आपको प्राईवेट सैकरेटरी के तौर पर ऐसी लड़की चाहिए जो बहुत दूर तक सोच सकती हो!

३. मित्र—आज तो बहुत देर हो गई मोहन; तुम अपनी पत्नी से क्या कहोगे? मोहन—मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी, वही सब कुछ कहेगी मुझे तो केवल सुनना होगा।

४. गाड़ी में सफर करते हुए दो व्यक्तियों में काफी घनिष्ठता हो गई! आधी रात का समय था। दोनों सोने की तैयारी करने लगे। डिब्बे की खिड़कियाँ सब बन्द थीं। बात चीत का विषय वेंटीलेशन था—एक ने कहा— मैं सदैव लोगों को सोने के कमरे की खिड़कियां खुली रखने का परामर्श दिया करता हूं। क्या अनुमान लगा सकते हो कि क्यों? उसके साथी ने कहा—निःसन्देह तुम स्वास्थ्य विभाग में कार्य करते होगे! 'नहीं' वह धीरे से उसके कान के समीप मुंह लेजाकर बोला— सच पूछो तो मैं चोर हूँ।

५ डाक्टर को नमस्ते कर एक अपरिचित युवक ने कहा—आपको धन्यवाद देता हूँ क्योंकि आपके इलाज से मुझे बहुत लाभ पहुंचा है! डाक्टर ने विस्मय सूचक दृष्टि से उसे गौर से देखकर कहा—किन्तु मेरा ख्याल है कि तुम कभी मेरे पेशेंट नहीं रहे। युवक मुस्कराता हुआ बोला.इस से क्या? मेरा चचा तो आप का पेशेंट था—और मैं उनका मनोनीत उत्तराधिकारी हूं।

६.एक महिला अपने बच्चे को स्कूल ले गई और अध्यापक से बोली—मेरा बच्चा बहुत लाडला है इसे कभी सजा न दीजिएगा। कभी शरारत करे तो इसके साथ वाले लड़के के थप्पड़ मारना पर्याप्त होगा इससे यह डर जाएगा और शरारत से बाज रहेगा।

७. फर्म का मैनेजर—(आकऊंटेंट की नौकरी के उम्मीदवार से) क्या तुम डबल ऐंटरी करना जानते हो?

मैं ट्रिपल ऐंटरी कर सकता हूं। उसने तत्काल जवाब दिया।

ट्रिपल ऐंटरी? क्या मतलब है तुम्हारा! हां जनाब,एक ऐंटरी मैनेजिंग पार्टनर के लिए दूसरी स्लीपिंग पार्टनर तीसरी इन्कमटैक्स वालों के लिए जो [illegible] में घाटा दिखायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैलेफोर्निया इन्स्टी-ट्यूट आफ टैक्नौलौजी की जैट प्रोपलशन लैबोरेटरीज में एक्सप्लोरर नामक अमे-[रिकी] उपग्रह को जुपिटर सी ला-[न्चिंग] व्हीकल पर फिट करने से पहले चैक किया जारहा है।

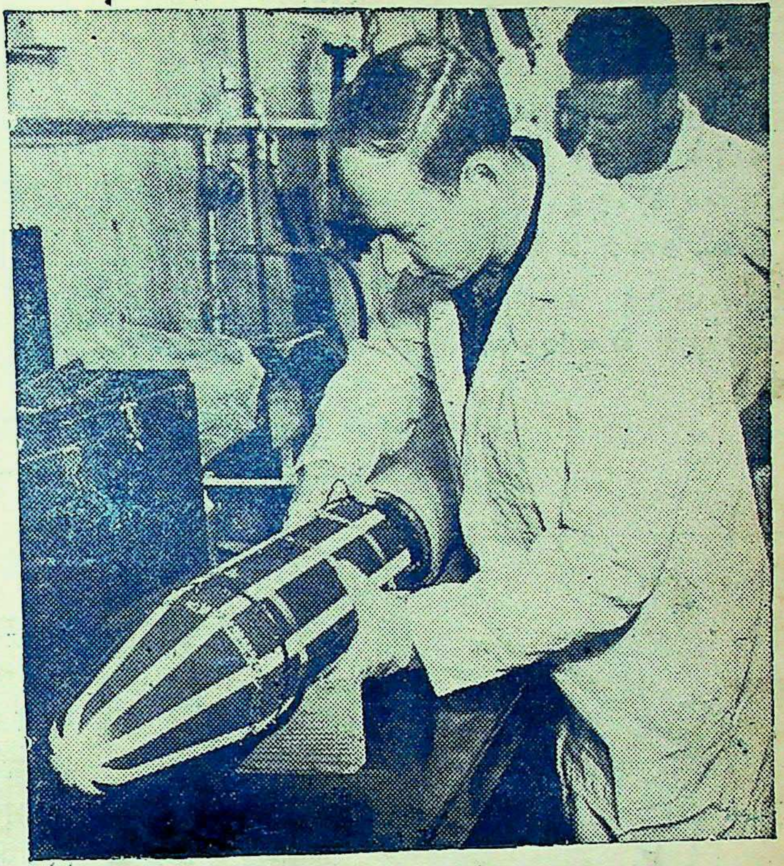

अमेरिका में १९५७ केलिए मिस एलिथया गिब्सन को सर्वोत्तम टैनिस का स्त्री खिलाड़ी घोषित किया गया मिस गिब्सन जज राबर्ट कैनन से ट्राफी लेते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## सचित्र समाचार

सामने-वृक्ष रहित आइसलैण्ड में ९वीं सदी में वन थे। फिर पेड़ उगाने के यत्न किए जा रहे हैं।

नीचे—जापान में स्त्रियाँ समुद्र से मोती निकालती हैं। कारण; वे शीतल जल का पुरुषों से अधिक सामना कर सकती हैं।

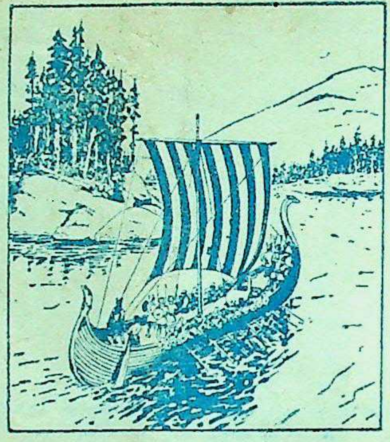

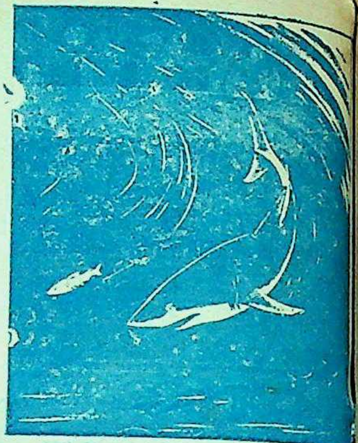

ऊपर-पाइलेट मछली शार्क के लिए भोजन प्राप्ति में सहायता करती है। बदले में भोजन तथा सुरक्षा पाती है।

सामने-जुलाई '५७ से दिसम्बर '५८ तक भूगोल वर्ष में ४० देशों के वैज्ञानिक पृथ्वी का अध्ययन करेंगे।

सामने-१ प्राचीन काल में लू से बचने के लिए चटाइयां गीली करके द्वारों के आगे लटकाई जाती थीं। २.एन्टार्कटिका पर बर्फ ६७५० फीट तक गहरी है। इसके बोझ से धरती ५००० फीट समुद्र के नीचे और धंस रही है।

श्री एल० सी० हितैषी द्वारा वीर मिलाप प्रेस जालन्धर से मुद्रित तथा १३७ चहार बाग जालन्धर शहर से प्रकाशित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

वार्षिक मूल्य ७) | ( पँजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका ) | एकप्रति १० आने

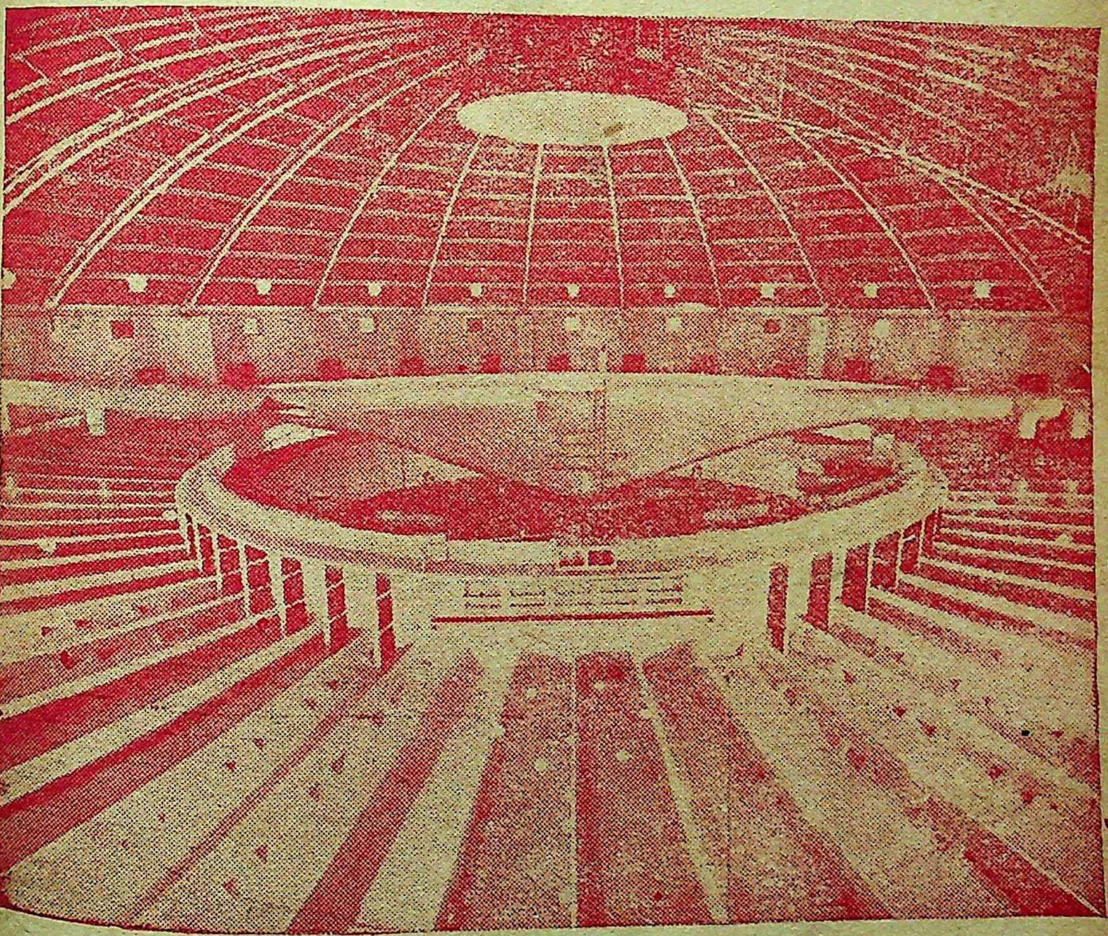

यह रही बृटेन की नई हाईड्रो डिनेमिक लेबोरेटरी जो रैडिंगटन (मिडलसेक्स) में स्थित है।

THE "Prakash"

Editor: L.C.Hitashi

JULLUNDUR CITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

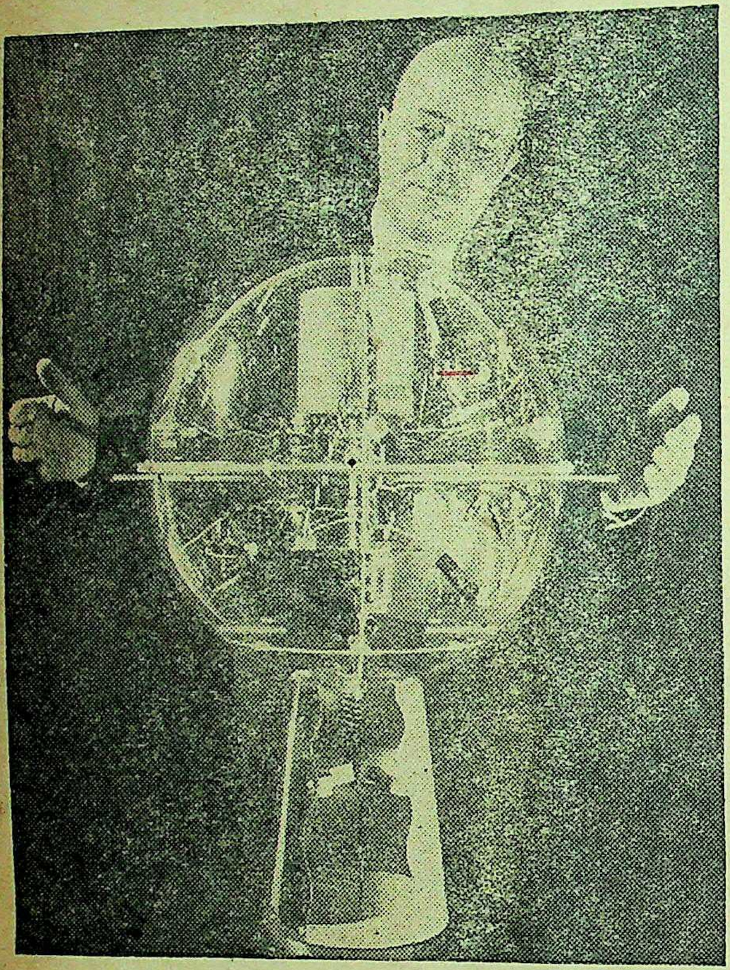

सामने

भूमि उपग्रह का एक माडल, मि० हर्बर्ट फ्फिस्टर ने तैयार किया है। इसका वजन २५ पौंड तथा आकार १८ इन्च। माडल में साइँटिफिक एक्विपमैंट का कुछ भाग दिखाईपड़ रहा है।

नीचे

बुडापेस्ट का प्रसिद्ध रेगनम मेरियानम चर्च जिसे तोड़ कर रूसियों ने स्टालिन की मूर्ति खड़ी की थी पर हंगरीक स्वतन्त्रता प्रेमियों ने विप्लव के पहले दिन ही तोड़ डाली।

सामने

यदि मानव दिल की आजीवन शक्ति को एकदम प्रयुक्त किया जा सके तो उस से एक बड़ा युद्धपोत पानी से १४ फुट ऊंचा उठाया जा सकता है।

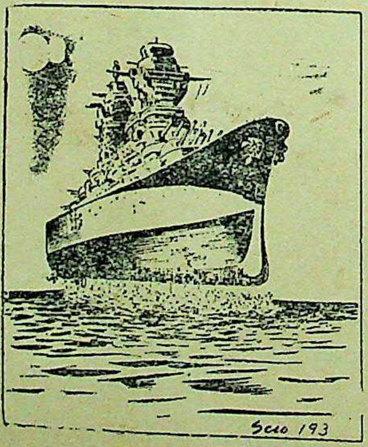

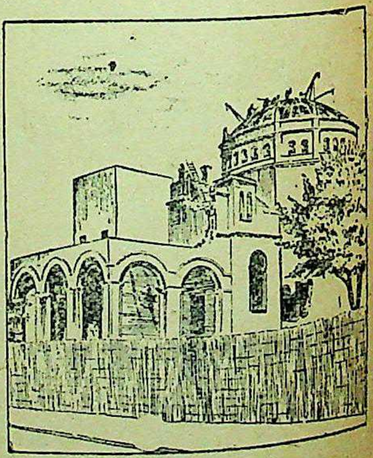

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब उत्तर प्रदेश बिहार हिमाचल पप्सू भूपाल और हैदराबाद के स्कूलों केलिए स्वीकृत

# प्रकाश

॥ पञ्जाब की एकमात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका ॥

वर्ष ४३ क्रमांक ४३ जालन्धर ७ ~~मई~~ '५८ जून भाग ६ अंक ६ हिन्दी

## कहाँ क्या है ?

कविताएं

रहो और रहने दो विद्यावती पृष्ठ ३
कोयल कोयल क्यों बनी ? १६
उषा आमन्त्रण—मुस्कराईयाँ २३
शालिहास हासावलि; निर्माण बेला ३१

कहानियां

अलग्योझा मुन्शी प्रेम चन्द ११
कुचले फूल कु० सुदर्शन प्रभाकर २४
गाने वाला भेड़िया (रूसी कहानी) ३२

लेख

युवकों में उदारता और चरित्र निर्माण की आवश्यकता राष्ट्रपति ६
छात्रों का औद्योगिक प्रशिक्षण ८
हम किस ओर जा रहे हैं ? १२
सँसार का सर्वप्रथम गणितज्ञ बालक २०
मृत बालक जीवित होगया २८
देख ली हम ने बम्बई भी ३६

इनके अतिरिक्त स्थायी स्तम्भ, शिक्षा समाचार, समाचार सार, अपनी बोली 'च समांचार सार, फूल और कांटे; भारतीय बाल सभा; स्वास्थ्य-सुधार, चुटकले रूसी कहावतें पँजाबी लोकोक्तियां पहेलियां इत्यादि।

## रहो और रहने दो !

(श्रीमती विद्यावती मिश्र)

माँग रही आज मनुजता रहो और रहने दो !
क्योंकि ताप के अन्तराल में पली यहां पर छाया
ढलती निशिके अन्धकार ने राग ज्योति का गाया
अगणित बर्जोंसे निर्मित हिमगिरिकी दृढ़ छातीपर
छोटे से पौधे ने अपना है अधिकार जमाया,
चाहो तो तुम प्रबल वेगमय विशद सिंधुबन बहलो
किंतु निकट ही तुष्टि दायिनी सरिता भी बहने दो
रहो और रहन दो !!

वैभव भरे कण्ठ से कहते हैं प्रासाद कहानी
किंतु अनसुनी अब न रहेगी कुटियों की भी वाणी
माना सपनों से अनुरँजित तारों की गाथाएं
पर जीवन का कोष छिपाये है धरती अनजानी
कहने का अधिकार विश्व में सबको एक सदृश है
अपनी बात कहो औरों को भी अपनी कहने दो
रहो और रहने दो !!

युद्ध-अर्थ संकट दलगत संघर्ष स्वार्थ के फल हैं
ऊंच-नीच के भेद भाव से पाती हिंसा बल है
राजनीति मानव मंगल की सच्ची परिभाषा है
कोई भी क्यों कहे भला अब यह विडम्बना छल है
अपने प्रति अन्याय विषमता पलभर सहनकरो मत
निर्बल को सत्ताधारी का रोष नहीं सहने दो !
रहो और रहने दो !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# शिक्षा-समाचार

मैट्रिक का परिणाम २० मई को घोषित कर दिया गया।

—टकाना फार्म हाई स्कूल के नए भवन का उद्‌घाटन अमेरिकन राजदूत मि० एल्जवर्थ बंकर ने २ जून को किया।

—पैप्सु के अन-एडजस्टिड बी.टी.टीचरों की यूनियन ने १२ जून को चण्डी गढ़ में प्रदर्शन करने का निश्चय किया है।

—अमेरिका में भी हिन्दी-संस्कृत बँगला तथा अन्य भारतीय भाषाएं पढ़ाये जाने की व्यवस्था की गई है।

—पँजाब के शिक्षा विभाग ने जनरल साँइस के अध्यापकों के अभाव की पूर्ति के लिए एफ. एस. सी पास लड़के लड़कियोंके लिए ट्रे निंग कालेजों में डिप्लोमा-क्लास इस वर्ष से जारी करने का निश्चय किया है।

सोशलिस्ट नेता राम मनोहर लोहिया ने एक वक्तव्य में कहा है कि अंगरेजी का स्थान जल्दी से जल्दी हिन्दी को दिया जाना चाहिए।

—आल इंडिया काँग्रेस कमेटी ने पँजाब उत्तर प्रदेश, बिहार और आंध्र में उर्दू को प्रान्तीय भाषा के तौर पर प्रोत्साहन दिए जाने का प्रस्ताव स्वीकार किया है।

भारत के शिक्षा मन्त्री डा० के० एल श्री माली के वक्तव्य अनुसार बहुत से राज्यों ने त्रि-भाषा योजना को सिध्दाँत रूप में स्वीकार कर लिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने केरिल के शिक्षा विधेयक की कुछ धाराओं को अवैध बताया है।

कलकत्ता में स्कूलों के छात्रों ने प्रदर्शन करते हुए माँग की कि स्कूल के साथ खेलने के मैदानों की व्यवस्था होनी चाहिए।

# समाचार सार

गुड़ गाँव की लोक सभा की सीट के लिए काँगरेसी उम्मीदवार श्री मौली चन्द्र जन-संघ के घोषित उम्मीदवार श्री प्रकाश वीर ३६६६३ वोटों से जीत गए।

५४ हजार बच्चे प्रति घण्टा पैदा होते हैं।

फ्रांस के नए प्रधान मंत्री जनरल डिगाल बनाए गए हैं. उन्हें ६ मास तक खुले अधिकार सौंप दिए गए हैं।

राजस्थान में गर्मी की अधिकता के कारण २४ और बिहार में ४२ व्यक्ति मर चुके हैं।

सुबह १० से साँ के ८ बजे तक दुकानें खुलने का कानून १ जूनसे लागू हो गया है।

नेपाल के राजा महेन्द्र तथा उनकी रानी रूस का दौरा करने गए हैं।

पँजाबी जोन रिजनल कमेटी के प्रधान सेठ राम नाथ ने प्रधान-पद से त्याग पत्र दे दिया है।

अमेरिका के सब से अधिक वेतन मि० आर्थर होमर प्रेजीडेंट बैथलहम स्टील कार्पोरेशन पाते हैं अर्थात ६ लाख ७० हजार डालर प्रति वर्ष।

भारत सरकार ने घोषना की है कि वह पाकिस्तान की लिंक-कैनाल्ज का व्यय उठाने की गारण्टी नहीं कर सकता।

लेबनान में युध्द जारी है।

पूर्वी बंगाल और पश्चिमी पँजाब की भारत से लगनी वाली सीमाओं पर पाकिस्तान द्वारा बराबर शरारतें की जा रही हैं।

चण्डीगढ़ में पाकिस्तान के और लाहौर में भारत के डिप्टी हाई कमिश्नर का दफ्तर १ जुलाई से बन्द हो जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# फूल और काँटे

[पाठकों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—क्या फ्रांस में डैमोक्रेसी ने दम तोड़ दिया है ? —राज बहादुर लखनऊ.

उ०—नहीं आत्म हत्या की है।

प्र०—पाकिस्तान भारत की सीमाओं पर शरारतें करने से बाज क्यों नहीं आता ? किशोरी लाल गुप्त, हिसार।

उ०—उसने जो अस्त्र-शस्त्र अमेरिका से मंगवाए हैं कहीं उन्हें जंग न लग जाए-इस लिए उनका प्रयोग यदा कदा करता रहता है।

प्र०—गुड़गांव की पालिमेंटरी सीट पर स्वतन्त्र उम्मीदवार कांग्रेसी उम्मीदवार के मुकाबले में क्यों जीत गया ? राजदुलारी शर्मा देहली

उ०—उसकी घर की फूट के कारण !

प्र०—कौन सा मनुष्य अपने को सुखी कह सकता है ? कुन्दन लाल भूपाल।

उ०—जिसने संतोष का धन पाया है।

प्र०—शेख अब्दुल्लाको जेलमें भी मासिक वेतन क्यों दिया जाता रहा ? रामनाथ; जम्मू।

उ०—ताकि जब बाहिर आकर भारत के विरुद्ध उसे आँदोलन चलाने के लिए बेकार रहना पड़े तो उसे आर्थिक कठिनाई न हो !

प्र०—मनुष्य पशु से किस बात में श्रेष्ठ है ? सोहन लाल, मेरठ।

उ०—इस बात में कि उसे बोलने और विचारने की शक्तियाँ प्राप्त है।

प्र०—पँ० नेहरु के पश्चात भारत का प्रधान मन्त्री किसे बनाना चाहिए ? देवकी देवी अमृतसर।

उ०—उनके यह पद खाली करने पर उस समय के सर्व श्रेष्ठ जन नेता को !

[सभी पाठक प्रश्न भेज सकते है]

# अपनी बोली 'च

फ्राँस 'च डैमोकरेसी ने आत्म हत्या कर लई ते मार्शल डी-गाल ने हकूमत दी बाग डोर अपने हथ'च लै लई। ओन्हां नूं ६ महीनियाँ लई सारे अधिकार दे दित्ते गए हन। एह क्यों करना दिया ?-इस लई कि देश 'च गृह-युद्ध छिड़ जान दी सँभावना वध गई सी। फ्राँस दी एस ट्रेजेडी तों पश्चिमी देशां नूँ शिक्षा गृहण करनी चाहीदी ए। ओह एह कि ओह देश बाकी क्षेत्रों 'च चाहे किन्नी उन्नति क्यों न कर लैन पर जद तीक मनुष्यां दे चरित्र उच्चे नहीं हुन्दे तद तीक कोई राष्ट्र न उन्नत कहा सकदा ए ते न ही जीवित रह सकदा ए।

साडे लीडराँ नूँ भी ठण्डे दिल नाल सोचना चाहीदा ए कि ओह भारत नूँ जिस तेजी नाल पश्चिमी देशां दी हर गल 'च अन्धा-धुन्ध नकल करन नूँ कह रहे ने ओह चँगी नहा। भारत दी अपनी महत्ता है जेहड़ी ओसदी प्राचीन सभ्यता ते हिन्दू संस्कृति करके है। जे असीं एहनाँ नूं पिच्छे सुट के पश्चिमीयता नूँ अपना लिया ताँ साडा हाल फ्रांस नालों भी वध भैड़ा होवेगा

मिसाल दे तौर ते पश्चिमी देस हिन्दुआं दी व्याह प्रणाली दी प्रशंसा एस लई करदे हन कि एह इक अटूट सम्बन्ध मन्निया जांदा है पर जे कर एथे भी पच्छम दी देखा-देखी तलाक दी प्रथा प्रचलित हो जावे तां भारत अपनी महानता खो वैठेगा। ऐसे महानता दे पच्छम वाले प्रशँसक ने ते एसे तो प्रभावितहोके तलाक दीआं शरवाँ दिनों-दिन सख्त करदे जा रहे ने। ओह चाँहदे हन कि तलाक बिलकुल बन्द हो जावे अगरचे इक दम कर नहीं सकदे। निकट भविष्य 'च अवश्य पश्चिमी देसां 'च इस दा अन्त हो जावेगा पर तद तक शायद एह बीमारी भारत 'च फैल जायेगी !

भाईया रेलू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# सम्पादकीय-विचार

### ★ मैट्रिक का परीक्षा फल ★

इस वर्ष मार्च में हुई मैट्रिक - परीक्षा का परिणाम २० मई को घोषित हो गया। कुल १०-३६०६ लड़के लड़कियों ने दाखला भेजा किन्तु परीक्षा एक लाख नौं हजार दो सौ लड़के लड़कियों ने दी। इनमें से ५६ हजार सात सौ चार पास हुए। इस प्रकार परिणाम ५२ प्रतिशत रहा प्राईवेट परीक्षार्थियों की सँख्या ४६०११ है और रेकग्नाईजड़ स्कूलों के परीक्षार्थियां की ६० ८६ इनकी पास पर्सेंटेज क्रमशः ३६ और ६४ प्रतिशत रही।

परीक्षा में बैठने वालों की सँख्या प्रति वर्ष आठ दस हजार बढ़ जाती है। इस तरह पँजाब शिक्षा के क्षेत्र में उतरोत्तर उन्नति कर रहा है इस में सन्देह नहीं।

### ★ हम बधाई देते हैं ★

बनारसी दास हाई स्कूल अम्बाला छावनी के छात्र अश्विनी कुमार गोस्वामी ने ८५० में से ७७३ अँक प्राप्त कर के एक नया रिकार्ड कायम किया है। गवर्नमेंट हाई स्कूल रोहतक के छात्र नन्द लाल सचदेव ७५३ अँक लेकर द्वितीय रहे हैं और डी. सी. माडल स्कूल फरीजपुर की छात्रा नरेन्द्र कौर सहोता ७०१ अंक लेकर लड़कियों में प्रथम रही है। ये तीनों बधाई के पात्र है। इन्हों ने न केवल स्वयं नाम पाया है अपितु माता-पिता और अपनी संस्थाओं का भी मान बढ़ाया है।

हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

### ★पास होने वाले क्या करें? ★

४० हजार के लगभग लड़के प्रति वर्ष मैट्रिक पास करते हैं। इन में से थोड़े ही उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए कालेजों में प्रविष्ट होते हैं—शेष के सामने समस्या आ खड़ी होती है उनके भविष्य की! वे क्या करें—न वे स्वयँ जानते है और न सरकार के पास ही इस प्रश्न का कोई सन्तोष जनक उत्तर है। इस लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है कि जिसके फल स्वरूप मैट्रिक पास करने वाले किसी युवक को बेकार न रहना पड़े। हमारी सरकार ने सम्भवतः इसी समस्या को हल करने के अभिप्राय से बेसिक-शिक्षा प्रणाली का प्रचलन किया है। किन्तु वह कहाँ तक इस उद्देश्य की सिद्धि में सहायक हैं यह बताने की आवश्यकता नहीं। जब सरकार शिक्षाकी व्यवस्था अपने हाथों में ले रही है तो उस पर यह जिम्मेदारी और भी अधिक आ पड़ती है कि वह शिक्षा प्रणाली में शीघ्रति शीघ्र ऐसा परिवर्तन करे कि जिस से पढ़ लिख कर भी युवकों को बेकार न घूमना पड़े।

### ★फेल होने वालों की समस्या★

लगभग ५० हजार लड़के लड़कियाँ प्रति वर्ष मैट्रिक की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होते हैं। इस तरह देश का बहुत सा धन शक्ति और समय व्यर्थ ही नष्ट हो रहे है। इनको बचाने की कोई सूरत निकाली जानी चाहिए। एक सुझाव यह है कि मैट्रिक की परीक्षा भी वर्ष में दो बार हुआ करे ताकि फेल होने वालों का एक साल व्यर्थ न जाए। उस सप्लीमेंटरी परीक्षा में केवल उन्हीं बिषयों की परीक्षा ली जाए जिन में परीक्षार्थी फेल हुए हों।

यदि यह सुझाव मान लिया जाए तो देश का बहुत हित हो सकता है।

### ★ सूचना ★

अफ्रीका के ग्राहकों से प्रार्थना है कि अपना २ शुल्क बिना और बिलम्ब के भेज दें। उन्हें बिल भेजे जा चुके हैं। (मेनेजर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# *युवकों में उदारता और चरित्र निर्माण की आवश्यक्ता*

(राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी)

नौजवान राष्ट्र की रीढ़ के समान होते हैं उनका पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा राष्ट्र का पहला कर्तव्य है इस लिए शिक्षा को उन्नत करने और स्वाधीन भारत की आवश्यकताओं के अनुसार उनकी व्यवस्था करने के लिये अब नए कार्यक्रम बनाने का समय आ गया है। युवक स्वभावतः नई प्रवृत्तियों से प्रेरित होते हैं और नई स्थितियों का स्वागत करते है। इस प्रकार उनकी जानकारी में वृद्धि होती है और वे बहुत सी नई बातें सीखते है।

युवक और युवतियां अपने जीवन में उदात्त दृष्टिकोण अपनायें अर्थात मन से और विचार से उदार होने की चेष्टा करें! ऐसा करना हमारे देश की परम्परागत विचारधारा के अनुकूल ही है। आज की परिस्थितियों और इस राष्ट्र की भावी उन्नति का भी यही तकाजा है। सब जानते है कि भारत एक प्राचीन देश है। अपने हजारों वर्षों के इतिहास में उसने अनेकों उतार चढ़ाव देखे हैं सँस्कृतियों के उत्थान पतन देखे है छोटी बड़ी सल्तनतों को बनते बिगड़ते देखा है और स्वयँ देश की भौगोलिक सीमाओं को फलते और सिकुड़ते हुए भी देखा है। फिर भी ईश्वर की कृपा से भारत राष्ट्र आज भी जीवित है जबकि बहुत से प्राचोन देशों का अस्तित्व केवल इतिहास की पुस्तकों में ही रह गया है। इसका प्रमुख कारण यही जान पड़ता है कि हमारी विचारधारा में एक विशेष बल था और जितने भी परिवर्तन यहाँ घटे हैं उनमें एक सामान्य सूत्र था। वह सूत्र उदारता और सहिष्णुता की भावना थी, इस भावना के बल पर ही हम अपनी विचारधारा में नए विचार खपा पाए हैं और नवीन तत्वों को अपनाने में समर्थ हो सके हैं। उसीने हमें जीवित रखा और उसीके कारण इस राष्ट्र को एकता का आधार मिल सका है।

कुछ भी हो बहुत सी मँजिलें तय करके भारत अब एक स्वतन्त्र गणराज्य बन चुका है। अपने हजारों साल के इतिहास में शायद पहली बार यह देश एक शासन एक विधान और एक झण्डे तले आया है। हम लोगों ने जो देश के बड़े-बूढ़े अथवा नेता कहे जा सकते हैं भारतीय एकता को सँविधान और विधि के साँचे में ढाल दिया है। अब इस एकताको व्यवहार की कुठाली में ढालना बहुत हद तक नौजवानों का काम है। इस कार्य को वे कैसे सम्पन्न करें इसकी ओर मैंने पहले ही संकेत करदिया है। हमारे परम्परागत उदात्त दृष्टिकोण को अपना कर ही आप ऐसा कर सकते हैं। सँकीर्ण विचारों को छोड़ समता के सिद्धाँत को जीवनमें उतार जाति-पांति के भेद भाव से ऊपर उठ तथा प्रान्तीयता की दूषित भावना का परित्याग कर वे इस दृष्टिकोण को अपना सकते हैं। उनका यह सौभाग्य है कि वे स्वाधीन भारत में शिक्षण पा रहे हैं। हम लोग जिन्होंने विदेशियों द्वारा सँचालित सँस्थाओं में शिक्षा प्राप्त की थी उनसे ईर्ष्या कर सकते हैं।

आप देख रहे है कि देश में चारों तरफ निर्माण सम्बन्धी काम हो रहे हैं। बांध बन रहे हैं छोटे उद्योगों को फिर से जीवित किया जा रहा है देहात में रहने वाले लोगों को नई सुविधायें दी जा रही हैं और आर्थिक दृष्टि से देश को उन्नत करने का हर सम्भव प्रयत्न किया जा रहा है। इस महान प्रयास में निश्चय ही वे हाथ बटा सकते है यदि प्रत्यक्ष रूपसे शहरों या देहातों में कुछ काम करके वे ऐसा कर सकें तो बहुत अच्छा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# *छात्रों का औद्योगिक प्रशिक्षण*

(प्रो श्री ले० टी० पल्लादियेवा)

सोवियत स्कूल के सामने छात्रों को कारखानों सामूहिक कृषिशालाओं व राजकीय कृषिशालाओं परीक्षणात्मक जमीन के टुकड़ों और स्कूल वर्कशापों के कार्य से सम्बन्धित गतिविधियों में सुयोजित ढंग से लाने के द्वारा अध्ययन का जीवन के साथ निकट-सम्पर्क स्थापित करने का कठिन कार्य उपस्थित है।

१९५४ में औद्योगिक प्रशिक्षण पर आधारित कक्षाएं यूक्रेन के ६ स्कूलों में आयोजित की गईं। तब से दो साल गुजर चुके हैं। कीव के स्कूल नं० ६६ में औद्योगिक प्रशिक्षण की चार कक्षाएँ हैं, और इस स्कूल का इस क्षेत्र में कुछ अनुभव भी प्राप्त हो गया है। इस लेखका उद्देश्य इस अनुभव पर प्रकाश डालना और औद्योगिक प्रशिक्षण कक्षाओं के कार्य का वर्णन करना है।

इन स्कूलों में प्रथम और द्वितीय दाखिले ऐच्छिक थे। १९५४ और १९५५ के पतझड़ में जब इस किस्म का केवल एक कक्षा आयोजित की गई थी स्कूल सबके सब प्रार्थियों को लेने में असमर्थ थ. और कुछ छात्राओं को दाखिल करने से इन्कार कर दिया गया। जब तक सब के सब छात्र डाक्टरी परीक्षा में पास नहीं हो गये पैडेगोगिकल परिषद् ने छात्रों को इस कक्षा में भरती करने का निर्णय नहीं किया।

जब हमने पहले पहल इस कक्षाका आयोजन किया हमें डर था कि कारखानों के काम से छात्रों पर बहुत अधिक जोर पड़ेगा और इस लिए हमने सिर्फ उन्हीं को चुनने की कोशिश की जो अध्ययन में अच्छी प्रगति कर रहे थे। किंतु परीक्षण ने सिद्ध कर दिया कि यदि कोई जोर पड़ता भी था तो बहुत हलका था और सामान्य प्रगति को प्रभावित नहीं करता था। १९५५ के दाखिले के समय हमने बहुत बड़ी संख्या उन छात्रों की प्रविष्ट की जिन्होंने असली तौर पर सब विषयों में 'तीन' अंक (पाँच अंक की प्रणाली के अनुसार) प्राप्त किये थे और हमने गलती नहीं की। उन सब में सुधार हुआ।

इलैक्ट्रिकल प्रिसीशन इन्स्ट्रूमेण्ट प्लाण्ट (बिजली द्वारा सूक्ष्म माप तौल के औजारों का प्लाण्ट) की दो पहली कक्षाओं ने अन्य बात सिद्ध की अर्थात कारखाने में काम करने के लिए बच्चों का बहुत अधिक विशिष्ट आचरण के आधार पर चुनाव करने की आवश्यकता नहीं जो भी छात्र स्कूल में आचरण के लिए पांच अंक प्राप्त कर चुका हो कारखाने में काम करने के लिए चुना जा सकता है क्योंकि ऐसा करने से अच्छा अनुशासन रहता है, और स्कूल में प्रायः की जाने वाली बचगाना शरारतों का यहाँ सर्वथा अभाव है। मार्च १९५६ में ८ से १० श्रेणी के छात्रों को औद्योगिक प्रशिक्षण में डाल दिया गया और इससे पूर्णतया हमारी आशा की पुष्टि हुई- कारखाने में अनुशासन भंग का एक भी मामला न हुआ। समूचा वातावरण तथा वयस्क कर्मचारियों का उदाहरण बच्चों को अनुशासन-बद्ध करता है।

औद्योगिक प्रशिक्षण पाठ्य क्रम की कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों के प्रति उनके माता पिता का रवैया भी दिलचस्प अध्ययन का विषय है। पहले पहल जब कक्षा शुरू हुई माता-पिताओं ने यह विचार पसन्द किया किन्तु बहुत इस बात से डर गये कि बच्चों के लिए यह कठिन होग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इससे नये अवांछित बाहरी प्रभाव प्रवेश करेंगे। किन्तु कारखाने में भी कुछ मास के कार्य के बाद ही उनके भय दूर हो गये। जब १९५५ में दाखिला हुआ तो कोई भी माता या पिता ऐसे नहीं थे जिन्होंने इस प्रकार का सन्देह या आशंका प्रकट की हो। उस अवसर पर और मार्च १९५६ के पिछले दाखिले के दौरान में जब कारखाने के अन्तिम दो कक्षाओं ९वीं और ८वीं की भरती हुई तो माता पिताओं ने एकमत से नये विचार की पुष्टि और समर्थन किया।

कारखाने में छात्र विविध कामों में दक्षता प्राप्त करते हैं। इस में दो ग्रुप हैं, बिजली के सूक्ष्म औजारों के टर्नर और पुर्जों को जोड़ने वाले मिकेनिक कक्षा ९वीं में पुर्जों को जोड़ने वाले मिकेनिक और कक्षा ८वीं में ड्राफ्टसमैन और पुँजी को जोड़ने वाले मिकेनिक।

प्रशिक्षण की प्रणाली निम्न प्रकार है— दूसरी पाली के दौरान में जब शाप में कार्य बन्द होता है और काम की जगह खाली होती है तब कारखाने के सर्वोत्तम फोरमैनों को शिक्षक के रूप में छात्रों के ग्रुप को क्रियात्मक पाठ देने का काम सौंपा जाता है। तब तक फोरमैन का मुख्य काम खत्म हो चुका होता है और वह बच्चों पर पर्याप्त ध्यान दे सकता है। प्रशिक्षण की यह व्यवस्था बहुत मूल्यवान सिद्ध हुई है। किन्तु स्कूल में बहुत से छात्र ऐसे भी हैं जिन्हें व्यक्तिक अप्रैण्टिसशिपकी प्रणाली से प्रशिक्षण दिया जाता है। परीक्षण विभाग में दो टर्नर और दो असेम्बलर हैं। प्रशिक्षण की इस व्यवस्था के परिणाम बहुत अच्छे निकले हैं

कारखाने में सिद्धांतों द्वारा अध्ययन भी कराया जाता है। इस कार्य विशेष—कारखाने के इंजीनियर करते हैं।

कारखाने में बच्चों के प्रशिक्षण के लिए सही ढंग से शिक्षा के वर्ग का चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है। अधिकाँश अवस्थाओं में से पेशेवर अध्यापक नहीं होते किन्तु उन्हें शिक्षणकी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमें सैध्दांतिक और क्रियात्मम अध्ययन के लिए अच्छे शिक्षकों का चुनाव करने में सफलता मिली। प्रथम असेम्बली शाप का फोरमैन कुज्निन गत दो वर्ष से लड़कियों के एक ग्रुप को असेम्बलिंग का काम सिखा रहा है और इंजीनियर तारानोव टर्नरों के एक ग्रुप को सैध्दांतिक शिक्षा दे रहा है और इस वर्ष उसने फिटरों की सिखलाई शुरू की है।

छात्रों का स्कूल और कारखाने में निम्न प्रकार आयोजित किया गया। औद्योगिक शिक्षण कक्षाओं के पाठ्यक्रम में ३० घँटा प्रति सप्ताह की कटौती की गई। इस कटौती का दूसरी चीजों के लिए उपयोग किया गया—क्रियात्मक (दो घण्टा) शारीरिक व्यायाम (एक घण्टा) श्रेणी ८ में भूगोल (आधा घण्टा) और विदेशी भाषाएं (आधा घण्टा) तथा श्रेणी ९ में भौतिक (आधा घण्टा) शिक्षकों ने विश्वास दिलाया है कि वे पाठ्यक्रम की सामग्री कम समय में समाप्त कर देंगे छात्र स्कूल में सप्ताह में ५ दिन पढ़ते हैं और दिन में ६ पाठ लेते हैं। छठे दिन कारखाने में काम करते हैं जहां वे दो घण्टे सिध्दांत के अध्ययन को और चार घण्टे सीधे शाप में काम को देते हैं। अधिकाँश बच्चे दूसरी पाली में काम करते हैं वे दोपहर बाद तीन बजे कारखाने में आते हैं साढ़े चार बजे तक सिध्दाँत का पाठ लेते हैं और शाम को ५ से ९ बजे तक काम करते हैं ९ बजे के बाद कोई छात्र कारखाने में नहीं ठहरता।

कारखाने के इँजीनियरों ने यूक्रेनियन पेडागोगिकल अनुसन्धान सँस्था तथा यूक्रेनियन सोवियत समाजवादी सँघ के शिक्षा मन्त्रालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सहायतासे क्रियात्मक और सैध्दान्तिक अध्ययन के कार्यक्रम तैयार किये है।

औद्योगिक प्रशिक्षण का छात्रों की स्कूल सामान्य प्रगति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? यह प्रश्न उचित रूप से ही शिक्षकों और माता-पिताओं के लिए दिलचस्पी का विषय है। प्रभाव निःसन्देह बहुत अच्छा हुआ है। औद्योगिक एक प्रकार की पोलीटैक्नीकल शिक्षा है और इसी चीज में उसकी सबसे बड़ी कीमत निहित है। सेकेण्डरी स्कूल का उद्देश्य है छात्राँ को औद्योगिक उत्पादन के मूल नियमों से परिचित कराना यदि प्लाण्ट पर नहीं तो और कहाँ यह काम सब से अधिक प्रभावशाली ढँग से सम्पन्न हो सकता है ?

इलेक्ट्रिकल प्रिसीजन प्लाण्ट बहुत वर्षों से स्कूल का संस्थान हो रहा है और हम भौतिकी और रसायनकी विभिन्न समस्याओं के अध्ययन से पूर्व वहाँ की यात्रा का आयोजन करते हैं। किंतु इसका उस विभाग अथवा उत्पादन प्रक्रिया से सरसरी तौर पर किये गये परिचय का छात्र द्वारा कारखाने में नियमित रूप से काम करने से कोई मुकाबला नहीं जहां वह औद्योगिक प्रक्रियाओं का समझदारी से अध्ययन करता है। दो बराबर की ९ वीं० कक्षाओं में भौतिकी के पाठ के दौरान में शिक्षक ने छात्रों से इंजीनियरिंग अथवा जीवन में दिखाई देने वाली भूलने तथा चक्राकार भ्रमण की घटना के उदाहरण देने को कहा। औद्योगिक प्रशिक्षण कक्षा ने बहुत से उदाहरण प्रस्तुत किये जो उन्होंने उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान में देख रखे थे। जब हम लेथ का स्विच बन्द कर देते है तो भी स्पिण्डल कुछ समय तक घूमता रहता है। इसी तरह नाप के उपकरण की सुई बिजली के सर्किट से सम्बन्ध विच्छिन्न कर देने पर भी कुछ समय तक आगे पीछे हिलना जारी रखेगी इत्यादि ! किन्तु जिन छात्रों का कारखाने से सम्बन्ध नहीं था उन्होंने अपने को दीवारकी घड़ी के पेण्डुलम के उदाहरण तक ही सीमित रखा।

असेम्बलर फिटर और टर्नर इस बात का नियमित रूप से ध्यान रखते हैं कि उत्पादन की प्रक्रियामें विद्युत धाराका क्या उपयोग है बिजली के नियमों का क्रियात्मक ज्ञान जितना बिजली के औजारों के असेम्बलरों से होता है उसकी स्कूली ज्ञान से कोई तुलना नहीं चाहे उस स्कूल में बिजली इन्जीनियरिंग के क्रियात्मक अध्ययन की कितनी ही अच्छी व्यवस्था हो।

कारखाने में काम करने वालों का स्कूल के प्राविधिक ड्राइङ्ग कार्स के प्रति सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण होता है। उनके लिए ड्राइङ्ग वास्तविक मशीनके हिस्से का प्रतीक है वे ड्राइङ्ग को कारखाने में पढ़ना सीखते हैं और उसे सिर्फ स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों से कहीं अच्छी तरह समझते हैं। बच्चे ड्राइङ्ग के पाठ बड़ी गम्भीरता से ग्रहण करते हैं और उससे प्राप्त होने वाले ज्ञान को पसन्द करते है।

कारखाने में काफी लम्बे अर्से तक काम करने से छात्रगण किसी न किसी तरह विभिन्न विभागों की उत्पादन प्रक्रियाओं से अभिज्ञ हो जाते हैं। वे धातुओं लौह और लौहेतर की मशानिंग ढलाई की प्रक्रिया गर्मी पहुँचाने की प्रक्रिया चादर पर जस्त चढ़ाने के कार्य प्लास्टिक कोल्ड स्टाम्पिंग तथा अन्य विभागों का प्रत्यक्ष अध्ययन कर सकते हैं।

प्रत्येक छात्र एक काम में ही दक्षता प्राप्त करता है किंतु प्लाण्ट पर कार्य करने की अवधि में वह उत्पादनकी विभिन्न प्रक्रियाओं से परिचित हो जाता है तथा यदि वह कोई दूसरा काम चुनना चाहे तो वह काम चुन सकता। है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



★कहानी—

# *अलग्योझा*

(स्वर्गीय मुन्शी प्रेम चन्द जी)

भोला महतो ने पहली स्त्री के मर जाने के बाद दूसरी सगाई की तो उसके लड़के रग्घू के लिए बुरे दिन आ गये। रग्घू की उम्र उस समय केवल १० वष की थी। चैन से गाँव में गुल्ली-डण्डा खेलता फिरता था। मां के आते ही चक्की में जुतना पड़ा। पन्ना रूपवती स्त्री थी और रूप और गर्व में चोली-दामन का नाता है। वह अपने हाथोंसे कोई मोटा काम न करती गोबर रग्घू निकालता बैलों को सानी रग्घू देता। रग्घू ही जूठे बरतन माँजता। भोला की आंखें कुछ ऐसी फिरीं कि उसे अब रग्घू में सब बुराइयाँ ही बुराइयाँ नजर आतीं। पन्ना की बातों को वह प्रचीन मर्यादानुसार आँखें बन्द करके मान लेता था रग्घू की शिकायतों को जरा भी परवाह न करता। नतीजा यह हुआ कि रग्घू ने शिकायत करना ही छोड़ दिया। किसके सामने रोये? बाप ही नहीं सारा गाँव उसका दुश्मन था। बड़ा जिद्दी लड़का है। पन्ना को तो कुछ समझता ही नहीं। बेचारी उसका दुलार करती है खिलाती-पिलाती है। यह उसी का फल है। दूसरी औरत होती तो निबाह न होता। वह तो कहो पन्ना इतनी सीधी-सादी है कि निबाह होता जाता है। सबल की शिकायतें सब सुनते हैं निबल की फरियाद भी कोई नहीं सुनता। रग्घू का हृदय मां की ओर से दिन-दिन फटता जाता था। यहां तक कि आठ साल गुजर गये और एक दिन भोला के नाम भी मृत्यु का सन्देश आ पहुंचा।

पन्ना के चार लड़के थे—तीन बेटे और एक बेटी। इतना बड़ा खर्च और कमानेवाला कोई नहीं। रग्घू अब क्यों बात पूछने लगा? यह मानी हुई बात थी कि अपनी स्त्री लायेगा और अलग रहेगा। स्त्री आकर घर में और भी आग लगायेगी। पन्ना को चारों ओर अँधेरा ही दिखाई देता था पर कुछ भी हो वह उस की आसरैत बनकर घर में न रहेगी। जिस घर में उसने राज किया उसमें अब लौंडी न बनेगी। जिस लौंडे को अपना गुलाम समझा उसका मुँह न ताकेगी। वह सुन्दर थी अवस्था अभी कुछ ऐसी ज्यादा न थी। जवानी अपनी पूरी बहार पर थी। क्या वह कोई दूसरा घर नहीं कर सकती? यही न होगा कि लोग हसेंगे। बला से! उसकी बिरादरी में क्या ऐसा होता नहीं? पँडित ठाकुर थोड़े ही थी कि नाक कट जायगी यह तो उन्हीं ऊंची जातों में होता है कि घर चाहे जो कुछ करो बाहर परदा ढका रहे। वह तो सँसार को दिखाकर दूसरा घर कर सकती है। फिर वह रग्घू की दबैल बन कर क्यों रहे?

भोला को मरे एक महीना गुजर चुका था। सँध्या हो गयी थी। पन्ना इसी चिन्ता में पड़ी हुई थी कि सहसा उसे ख्याल आया लड़के घर में नही हैं! यह बैलों के लौटने की बेला है कहीं कोई लड़का उनके नीचे न आ जाय। अब द्वार पर कौन है जो उनकी देखभाल करेगा। रग्घू को तो मेरे लड़के फूटी आँखों भी नहीं भाते कभी हंस कर नहीं बोलता! घर से बाहर निकली तो देखा कि रग्घू सामने झोपड़े में बैठा ऊख की गंड़ेरियां बना रहा है तीनों लड़के उसे घेरे खड़े हैं छोटी लड़की उसकी गर्दन में हाथ डाले उसकी पीठ पर सवार होने की चेष्टा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(शेष सफा १०५ पर)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★तथाकथित सभ्यता के निर्माण की भूख में आज—

# हम किस ओर जा रहे हैं ?

आचार्य पं० सूर्यनारायण व्यास

कहते हैं कि हमारा स्तर उठाया जाने वाला है! हमें सभ्य देशों के समाज की तरह जीन रहने का सुविधाएं प्राप्त होंगी और हम सिर उठाकर सभ्य की तरह रह सकेंगे। पता नहीं हमारे सभ्य बनने की परिभाषा कैसी होगी ? और जीवन स्तर कैसा होगा ? यदि हमारा सभ्यता पश्चिम के भौतिकवाद की आधार शिला पर पोषित और विकसित होना चाहता है और हमारे स्तर का मानदण्ड भी वही रहेगा तो निश्चय ही मानव की आवश्यकताएं और उसकी ऊँचाई तो बढ़ती जायगी पर उसकी मानवता का अधःपात अवश्यम्भावी है। आज अत्यन्त उन्नत सभ्य समझा जाने वाला पश्चिम भौतिक भावना से ऊब गया है। उसके जीवनानन्द की क्षणिकता ने उसे आत्मानन्द की ओर प्रेरित करना आरम्भ कर दिया है। तब हम उसका और तीव्रता से अनुगमन कर अपनी सभ्यता एवं स्तर का निर्माण करना चाहते हैं। पश्चिम का मानव अंधेरे पथ में भटक रहा है और हम आध्यात्मिक प्रकाश की अवहेलना कर उसी अँधेरे में भटकने की भूल करना चाहते हैं! भारत वर्ष वह देश है जहां मानवता ने चरम उत्कर्ष साध्य किया है परन्तु आज के भौतिकवाद में पथ भ्रांत पश्चिम मानव को मानव अधिकार रक्षा की चिंता से विकल होना पड़ रहा है। एक दूसरे के अधिकार को कुचलने के कुचक्र में उसकी समस्त शक्ति और मति मौलिकता दिखला रही है। ऐसी स्थिति में पश्चिम के जिस उच्च स्तर को छूने के लिए यत्नशील हैं उस स्तर पर पहुँच कर हृदय जैसी मूल्यवान और [illegible] मानव मानवता को खोकर मशीन बनने का गर्व अनुभव करता है। हमारी सभ्यता में प्रतिस्पर्धा पापमय माना जाता रहा है और हृदय की पवित्रता को पुण्य की पूँजी। पर जहाँ मानव पवित्र पूँजी को पश्चिमी सभ्यता को भेंट कर पाप का सौदा समेटने के लिए आतुर बैठता है! उसके भौतिक स्तर की ऊँचाई का चाहे वह भले ही आल्पस की गिरिमाला के नोन्नत शृंग को माने, पर वास्तव में हमारी यता के अनुरूप वह गहरे पाताल लोक के कूप की निचाई में ही गिर जाता है।

भारत वर्ष की सभ्यता में मानव को श्रेष्ठ माना है इतर भी प्राणिमात्र का मह किसी प्रकार कम नहीं समझा गया है। और घातक पशु-पक्षी जन्तु कीट तक की ही कीमत की गयी है, अहिंसा की उत्पत्ति भव्य भावना पर आश्रित है। प्राणिमात्र की और आवश्यकता को महत्व दिया गया है। और चाण्डाल तक को समान रूप से देख उपदेश है। ऐसी अवस्था में किसी को मा प्रति उस सभ्यता में तिरस्कार करने की ही नहीं की जा सकती वर्ग भेद व जाति भे सवाल ही नहीं उत्पन्न हो सकते पर आज देश में जो कुछ देख रहे हैं वह सब भेद स्पर्धा मानवीय भावों की उपेक्षा आदि यह उस भौतिक भावना की ही देन है जिसने संघर्ष भेद भाव और मानवता का अ करने के लिए प्रेरित किया है और जिसके पर हमारा स्तर बढ़ाया जाने वाला है। अधिक सभ्य बनने को आतुर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


का जनक भौतिकवाद है ! हम उसकी आराधना में आँखें मूँद कर स्वार्थ की साधना करते जा रहे है। इसका परिणाम यह है कि हम निरन्तर मानवता के मूल्य को भुलाते जारहे हैं। हमारा लक्ष्य स्वार्थ है, अपनी उन्नति है। समाज के प्रति मानव के प्रति भी हमारा कोई कर्तव्य है। सत्य ईमानदारी पवित्र भावना या पुण्य भी है इसकी किंचित कल्पना भी हम नहीं करना चाहते। जिस पुण्य पापकी आध्यात्मिक भावना पवित्र परिभाषा ने हमारी मनुष्यता को बनाये रखा है उसे अपने भौतिकवादी भ्रम में पड़कर उपेक्षित (ढकोसला) समझ लिया है। यही कारण है कि आज हमारी मानवता मलिन बनती जा रही है और हम कर्तव्य से च्युत होते जा रहे हैं पथ से भ्रष्ट बनते जा रहे है। भारतीय सभ्यता में जहां मेहमानों का महत्त्व था मानवता के प्रति ममत्व था वहाँ आज का ममत्व मानव जीवनोपयोगी प्रत्येक वस्तु में मलिन मिलावट के रूप में उसे मसल देने के लिए काम आ रहा है। देश में शायद ही ऐसी कोई वस्तु हो जिसका उपयोग मानव के लिये उपयोगी हो वह बिना मिलावट के मिल जाय। आज से दस वर्ष पूर्व की यह स्थिति इस मानवता के आराधक देश में उतनी अधिक नहीं थी जितनी व्यापक रूप में इस दशक में दिखाई पड़ती है। यह स्पष्ट है कि हमारा नैतिक अधः पतन कितने वेग से हो रहा है और हमारी मानवता कितनी द्रुत गतिसे गिरती जा रही है ! यदि इसी वेग से मानवता के इस प्रकार ह्रास का क्रम जारी रहा तो हमें कल्पना कर लेनी चाहिये कि हमारे स्तर के ऊपर उठने का आधार कौनसा रहने वाला हो और हम किस श्रेणी की सभ्यता को सीखने जा रहे हैं ? यह हमारे ऊपर उठने का उपक्रम है या अधःपतन का ?

★

# * फायर-फ्लावर *

मैं अपनी खिड़की से प्रकृति में होने वा परिवर्तनों को भली-भांति देख सकता हूँ। क ही अपने घरके सामने छोटे से गढ़ेमें मैंने सफे टोपी लगाये स्नो ड्राप (सफेद रंग के फूलों पौधा विशेष) को देखा। वह वसन्त की धूप चमक रहा था और आज वह दूसरे फलों व बाढ़ में बह गया।

और यह हैं फायर फ्लावर (फूल विशेष यह अपनी सुनहली आरक्त पंखुड़ियाँ खोल रह है ! मैं इस फूल को लेकर अपनी भाग्य परीक्ष किया करता था। एक एक पँखुड़ी अलग करते हु मैं आदर भाव से गुनगुनाता 'मुझे प्रेम करती या नहीं करती।'

अधीर हो कर मैं तेजी से दरवाजे क तरफ दौड़ा परन्तु बीच में ही रुक गया -

'बुढ़ऊ मत जाओ' मैंने आवाज सुनी यह फूल तुम्हारे लिये नहीं है तुम्हारा तो तोड़ जा चुका है।

मेरी खिड़कीके नीचे कोई खिलखिला क हँस रहा था। मैं ने फिर खिड़की से झाँक क देखा। एक लड़का मेरी जवानीके सुनहले आ क्त फूल पर झुका हुआ था। यह फूल उसक प्रतीक्षा कर रहा था।

बच्चे अपनी भाग्य-परीक्षा करो लेकि मैंने जो भूल की थी वह न करना !

# * मेरा प्रेम *

यद्यपि आपने मुझे कभी प्रेम नहीं किय फिर भी मै आपको प्रेम करता हूं। आप व भुलाने के लिए मैंने एक और प्रेमिका का अनु सन्धान किया। फिर भी कल्पना की वस्तु क पना ही है उसे कभी प्रेम नहीं किया जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(सफा ७ से आगे)

रही है पन्ना को आँखों पर विश्वास न आया आज तो यह नयी बात है ! शायद दुनिया को दिखाता है कि मैं अपने भाइयोंको कितना चाहता हूँ और मन में छुरी रखी हुई है घात मिले तो जान ही ले ले ! काला सांप है काला सांप कठोर स्वर में बोली—तुम सबके सब वहां क्या करते हो ? घर में आओ साँझ की बेला है गोरू आते होंगे।

रघू ने विनीत नेत्रों से देख कर कहा—मैं तो हूं ही काकी ! डर किस बात का है ?

बड़ा लड़का केदार बोला—काकी रघू दादा ने आज हमारे लिए दो गाड़ियाँ बना दो हैं यह देख एक पर हम और खुन्नू बैठेंगे दूसरी पर लछमण और झुनियाँ दादा। दोनों गाड़ियां खींचेंगे।

यह कह कर वह एक कोने से दो छोटी छोटी गाड़ियां निकाल लाया चार-चार पहिये लगे थे बैठने के लिए तख्ते और रोक के लिए दोनों तरफ बाजू थे।

पन्ना ने आश्चर्य से पूछा—ये गाड़ियाँ किस ने बनायीं ?

केदार ने चिढ़ कर कहा—रघू दादा ने बनायी हैं और किसने ? भगत के घर से बसूला और रुखानी माँग लाये और चटपट बना दीं खूब दौड़ती है काकी ! बैठ खुन्नू मैं खींचूं।

खुन्नु गाड़ी में बैठ गया केदार खीँचने लगा चर-चर का शोर हुआ मानो गाड़ी भी इस खेल के साथ शरीक है।

लछमन ने दूसरी गाड़ी में बैठ कर कहा—दादा खीँचो।

रघू ने झुनिया को भी गाड़ीमें बैठा दिया और गाड़ी खीँचता हुआ दौड़ा ! तीनों लड़के तालियां बजाने लगे पन्ना चकित नेत्रों से यह दृश्य देख रही थी और सोच रही थी कि यह वही रघू है या और।

थोड़ी देर के बाद दोनों गाड़ियाँ लौटीं लड़के घर में जाकर इस यान-यात्रा के अनुभव बयान करने लगे। कितने खुश थे सब मानो हवाई जहाज पर बैठ आये हों।

खुन्नू ने कहा—काकी सच, पेड़ दौड़ रहे थे

लछमण—और बछियां कैसे भागी सब की सब दौड़ीं !

केदार—काकी रघू दादा दोनों गाड़ियाँ एक साथ खीँच ले जाते हैं।

झुनियाँ सब से छोटी थी उसकी व्यञ्जना शक्ति उछल-कूद और नेत्रों तक परिमित था—तालियां बजा कर नाच रही थी।

खुन्नू—अब हमारे घर गाय भी आ जाये गी काकी ! रघू दादा ने गिरधारी से कहा है कि हमें एक गाय ला दो। गिरधारी बोला कल लाऊंगा !

केदार—तीन सेर दूध देती है काकी ! खूब दूध पीयेंगे।

इतने में रघू भी अन्दर आ गया पन्ना ने अवहेलना की दृष्टि से देखकर पूछा—क्यों रघू तुमने गिरधारी से कोई गाय माँगी है ?

रघू ने क्षमा-प्रार्थना के भाव से कहा—हां माँगी तो है कल लायगा !

पन्ना—रुपये किसके घर से आवेंगे ? यह सोचा है ?

रघू—सब सोच लिया है काकी ! मेरी यह मोहर नहीं है इसके पच्चीस रुपये मिल रहे हैं पांच रुपये बछिया के मुजरा दे दूँगा बस गाय अपनी हो जायगी !

पन्ना सन्नाटे में आ गयी अब उस का अविश्वासी मन भी रघू के प्रेम और सज्जनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अस्वीकार न कर सका बोली—मोहरको क्यों बेच देते हो ? गाय की अभी कौन जल्दी है ? हाथ में पैसे हो जायं तो ले लेना सूना-सूना गला अच्छा न लगेगा । इतने दिना गाय नहीं रही तो क्या लड़के नहीं जिये ?

रग्घू दार्शनिक भाव से बोला—बच्चों के खाने पीने के यही दिन है काकी । इस उम्र में न खायँगे तो फिर कब खायंगे ? मोहर पहनना मुझे अच्छा भी नहीं मालूम होता। लोग समझते होंगे कि बाप तो मर गया इसे मोहर पहनने की सूझी है ।

भोला महतो गाय की चिन्ता ही में चल बसे न रुपये आये और न गाय मिली मजबूर थे । रग्घू ने वह समस्या कितनी सुगमता से हल कर दी । आज जीवन में पहली बार पन्ना को रग्घू पर विश्वास आया बोली—जब गहना ही बेचना है तो अपनी मोहर क्यो बेचोगे ? मेरी हसली ले लेना ।

रग्घू—नहीं काकी ! वह तुम्हारे गले में बहुत अच्छी लगती है ! मर्दों को क्या मोहर पहनें या न पहनें ।

पन्ना—चल मै बूढ़ी हुई । मुझे अब हसली पहन कर क्या करना है ? तू अभी लड़का है तेरा सूना गला अच्छा न लगेगा !

रग्घू मुस्कुराकर बोला—तुम अभी से कैसी बूढ़ी हो गयी ? गाँव में कौन तुम्हारे बराबर है ?

रग्घू की सरल आलोचना ने पन्ना को लज्जित कर दिया । उसके रूखे मुरझाये मुख पर प्रसन्नता की लाली दौड़ गयी !

पाँच साल गुजर गये रग्घू का सा मेहनती ईमानदार व बात का धनी दूसरा किसान गांव न था ! पन्ना की इच्छा के बिना कोई काम न करता , उसकी उम्र अब २२ साल की हो गई थी पन्ना बार बार कहती—भइया बहूको विदा करा लाओ कब तक नैहर में पड़ी रहेगा ? सब लोग मुझीको बदनाम करते है कि यही बहू को नहीं आने देती मगर रग्घू टाल देता था । कहता कि अभी जल्दी क्या है ? उसे अपनी स्त्री के रँग-ढंग का कुछ परिचय दूसरों से मिल चुका था । देसी औरत को घर में लाकर वह अपनी शांतिमें बाधा नहीं डालना चाहता था ।

आखिर एक दिन पन्नाने जिद करके कहा तो तुम न लाओगे ?

कह दिया कि अभी कोई जल्दी नहीं है ।

तुम्हारे लिए जल्दी न होगी मेरे लिए तो जल्दी है मैं आज ही आदमी भेजती हूँ ।

पछताओगी काकी उसका मिजाज अच्छा नहीं है !

तुम्हारी बला से ,जब मै उससे बोलूँगी ही नहीं तो क्या हवासे लड़ेगी ? रोटियां तो बना लेगी मुझ से भीतर बाहर का सारा काम नहीं होता मैं आज बुलाये लेती हूँ ।

बुलाना चाहती हो मगर फिर यह न कहना कि यह मेहरिया को ठीक नहीं करता उस का गुलाम हो गया ।

न कहूँगी जाकर दो साड़ियाँ और मिठाई ले आ ।

तीसरे दिन मुलिया मैके से आ गयी । दरवाजे पर नगाड़े बजे शहनाइयों की मधुर ध्वनि आकाश मे गूंजने लगी । मुँह दिखावे की रस्म अदा हुई । वह ईस मरुभूमि में निर्मल जल धारा थी । गेहुंआं रग था बड़ी २ नोकीली पलकें कपोलों पर हल्की सुर्खी आँखों में प्रबल आकर्षण रग्घू उसे देखते ही मन्त्र-मुग्ध हो गया ।

प्रातःकाल पानी का घड़ा लेकर चलती तब उसका गेहुँआं रंग प्रभातकी सुनहरी किरणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कुन्दन हो जाता है मानो ऊषा अपनी सारी सुगन्ध सारा विकास और सारा उन्माद लिये और मुस्कुराती चली जाती हो।

मुलिया मैके से ही जली-भुनी आयी थी मेरा शौहर छाती फाड़कर काम करे और पन्ना रानी बैठी रहें उसके लड़के रईसजादे बने घर्मे मुलिया से यह बरदाश्त न होगा वह किसी की गुलामी न करेगी। अपने लड़के तो अपने होते ही नहीं भाई किसके होते हैं? जब तक पर नहीं निकले हैं रग्घू को घेरे हुए हैं ज्योंही जरा सयाने हुए पर झाड़ कर निकल जायंगे बात भी न पूछेंगे।

एक दिन उसने रग्घू से कहा— तुम्हें इस तरह गुलामी करनी हो तो करो मुझ से तो न होगा।

रग्घू—तो फिर क्या करूँ तू ही बता? लड़के तो अभी घरका काम करने लायक भी नहीं हैं।

मुलिया—लड़के रावत के है कुछ तुम्हारे नहीं है जो तुम्हें दाने दाने को तरसाती थी सब सुन चुकी हूँ मै लौंडी बन कर न रहूँगी। रुपये पैसे का मुझे कुछ हिसाब नहीं मिलता न जाने तुम क्या लाते हो? और वह क्या करती है? तुम समझते हो रुपये घर ही में तो है मगर देख लेना तुम्हें जो एक फूटी कौड़ी भी मिले।

रग्घू—रुपये पैसे तेरे हाथ देने लगूँ तो दुनिया क्या कहेगी यह तो सोच।

मुलिया—दुनिया जो चाहे कहे दुनिया के हाथों बिकी नहीं हूं देख लेना भाड़ लीप कर हाथ काला ही रहेगा फिर तुम अपने भाइयों के लिए मरो मैं क्यों मरूं?

रग्घू ने कुछ जवाब न दिया उसे जिस बात का भय था वह इतनी जल्द सिर पर आ पड़ा। अब अगर उसने बहुत तत्थो थमो किया तो साल छः महीने और काम चलेगा बस आगे यह डोंगा चलता नजर नहीं आता बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी?

एक दिन पन्ना ने महुए का सुखावन डाला बरसात शुरू हो गयी थी बखार में अनाज गीला हो रहा था मुलिया से बोली—बहू जरा देखती रहना मै तलाब से नहा आऊँ।

मुलिया ने लापरवाही से कहा—मुझे नींद आ रही है तुम बैठ कर देखो एक दिन न नहाओगी तो क्या होगा?

पन्ना ने साड़ी उठा कर रख दी नहाने न गयी मुलिया का वार खाली गया।

कई दिन के बाद एक शाम को पन्ना धान रोपकर लौटी। तो अँधेरा हो गया था दिन भर की भूखी थी आशा थी कि बहू ने रोटी बना रखी होगी मगर देखा तो यहाँ चूल्हा ठण्डा पड़ा हुआ था और बच्चे मारे भूख के तड़प रहे थे मुलिया से आहिस्ता से पूछा—आज अभी चूल्हा नहीं जला?

केदार ने कहा—आज दोपहर को भी चूल्हा नहीं जला काकी! भाभी ने कुछ बनाया ही नहीं?

पन्ना—तो तुम लोगों ने खाया क्या है?

केदार- कुछ नहीं रात की रोटियाँ थीं खुन्नू और लछमन ने खायीं।

पन्ना—और वह?

केदार—वह तो पड़ी सो रही है कुछ नहीं खाया।

पन्ना ने उसी वक्त चूल्हा जलाया और खाना बनाने बैठ गयी आटा गूँधती थी और रोती थी क्या नसीब है! दिन भर खेत में जली घर आयी तो चूल्हे के सामने जलना पड़ा।

केदार का चौदहवाँ साल था भाभी के रंग ढंग देख रहा था। (शेष अगले अंक में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# * भारतीय बाल सभा *

## बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी

अध्यक्षा दीदी

## फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०— मैट्रिक में जो लड़का फर्स्ट, रहा क्या वह भी निर्धन है ? -सन्तोष कुमारी अमृतसर ।

उ०—नहीं वह एक समृद्धि-शील परिवार का सदस्य है। उसका एक भाई और बहिन भी उसी की तरह नाम पा चुके हैं और कालेजों में प्राध्यापक हैं ।

२. मैंने मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली है- कालेज में पढ़ाने की माता पिता में सार्मथ्य नहीं;ऐसी अवस्था में मुझे अब क्या करना चाहिए। -अशोक कुमार अम्बाला ।

उ०—यह प्रश्न केवल एक तुम्हारा ही नहीं है। प्रति वर्ष हजारों युवक मैट्रिक पास कर चुकते हैं तो उनके सामने यही समस्या आ उपस्थित होती है। ऐसा करो कि एम्पलायमेंट-ऐक्सचेंज से सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'ट्रेडज फार दी स्कूल लीवर्ज' पढ़ कर अपने भविष्य के लिए निर्णय कर लो ।

३.—मैं ग्रीष्मावकाश में किसी पहाड़ पर जाना चाहता हूँ। सब से सस्ती जगह कौन सी है? करतार सिंह फीरोजपुर ।

उ० डलहौजी चले जाओ। लगभग २० रुपये आने जाने पर व्यय होंगे । वहां होटलों में जगह बड़ी सस्ती मिल जाती है।

४.—क्या भारत की हाकी-टीम एशियन गेम्ज में पाकिस्तान की टीम से हार गई है ? जानकी नाथ पठानकोट

उ० -नहीं दोनों टीमें बराबर रही हैं ।

५. इस वर्ष ग्रीष्मावकाश किस तारीख से शुरू होगा ? सुन्दर लाल रोहतक ।

उ० पूर्ववत ही जुलाई के दूसरे सप्ताह में होना चाहिए बशर्तेकि शिक्षा विभाग ने इस वर्ष से कोई परिवर्तन का निश्चय न किया हो यद्यपि ऐसे किसी निश्चय का हमें पता नहीं है ।

[सभी बच्चे प्रश्न भेज सकते हैं]

—— दीदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★साहित्य सँसार

## * स्वप्न *

किसी महात्मा ने स्वप्न में एक बहुत सुन्दर महा पुरुष को देख कर उससे पूछा—

तुम कौन हो ?

मैं अनन्य विश्वास हूं ।

कहाँ रहते हो ?

सच्चे प्रभु भक्तों के हृदय में ।

क्या करते हो ?

शोक, भय, दुःख चिन्ता और पाप आदि संकट देने वाले वैरियों को दूर से ही मार भगाता हूँ ।

फिर महात्मा को एक काली कलूटी भयानक राक्षसी दिखायी दी उससे पूछा—

तुम कौन हो ?

मैं विषय-वासना हूं ।

कहां रहती हो ?

भोग और आराम चाहने वाले मनुष्यों के हृदय में ।

क्या करती हो ?

जीव को सकट देने वाले पाप तापादि की रक्षा करती हूँ और नये-नये पाप शोक भय दुःख और चिन्ताओं को बुलाया करती हूँ ।

## * प्रतीक्षा *

हमारी जीवन-नैया को उस पार लगाने वाले आराध्यदेव ! झंझावात के घात-प्रतिघात से बार-बार टकराते जीवन की ओर भी तुम ने कभी देखा ?

हम अधम हैं कलुषित हैं कामी हैं और हैं पग-पग पर प्रलोभनों से अड़ने उलझ पड़ने वाले, माना पर तुम्हीं बताओ हम किसे पुकारें ।

भले हैं बुरे हैं चाहे कुछ भी हैं-है तो हम आपके ही !

जितना समीप होने की चेष्टा करते हैं हमारे पैर उतना ही पाषाण हुए जाते हैं—मन्थर !

और तुम दूर !—दूर !!—अति दूर !!!

तुम्हारी पूजा के लिये बड़ी साध से सुमनों का संचय किया बड़ी तन्मयता से माला गूंथी । वे सारे सूख गये—झड़ गये । तुम्हारी प्रतीक्षा में आंखें पथरा गयीं ।

और तुम दूर ।—अति दूर ।

इस अनन्त प्रतीक्षा का अन्त कहाँ है, नहीं जानता । 'त्रिदण्डी'

## चुटकुला

साहेब—मैंने आज तीस हजार रुपये का बीमा करवा लिया है ताकि मेरे मरने के अनन्तर तुम्हें कष्ट न हो ।

मेम—मेरे प्यारे । बहुत अच्छा किया अब तुम्हारी बीमारी पर डाक्टर बुलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी ।

★ राजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## *कोयल कोयल क्यों बनी ?*

मैं कोयल हूं डाल डाल पर बोला करती हूँ
अपने मन का भेद सदा खोला करती हूँ
पर मेरा यह भेद नहीं दुखियों ने जाना
यह मेरा रोना उसने समझा है गाना
मैं कोयल क्यों बनी बनी कैसे मैं काली
यह मीठी आवाज मैंने कहां से पा ली
यह सब मन का भेद सुना ही दूं न छिपाऊं
जिससे थोड़ी सी शांति आज मैं भी तो पाऊं
सुनो अप्सरा थी मैं पहले इन्द्र पुरी में
छुम छुम छुम नाचा करती थी मान भरी मैं
चन्दा सी सुन्दर थी, थी कमलों सी कोमल
बादल के थे वस्त्र बिजलियों के कुण्डल
जब मैं भरपूर खूब गाना गाती थी
देवों की वह सभा ठगी रह जाती थी ।
और एक दिन मैंने ऐसा गाना गाया
स्वयं इन्द्र ने मुझे हार मणि का पहिनाया
किन्तु गया सुख बीत अचानक दुःख ने घेरा
मेरी करनी से ही तो छा गया अन्धेरा
मेरे मन में जागा यह अभिमान निराला
मुझ से अच्छा और कौन है गाने वाला
मन मानी करती थी बस डर न था किसी का
जिसने छेड़ा मुझे किया अपमान उसी का
मैं मतवाली बनी ढंग सब मेरे बदले
मैं थी मद में चूर न थे अब वे दिन पहले
हुई इक दिन बात इन्द्र ने मुझे बुलाया
देव सभा में नया गीत गाओ कहलाया
जब चाहे तब गाऊं मुझ को गुस्सा आया
मैं गा सकती नहीं यही उत्तर भिजवाया
मैं न गई रह गई सभा देवों की सूनी
किन्तु क्रोध की आग इन्द्र की अब थी दूनी
मुझे पकड़ ले गए दूत मैं चिल्लाती थी
किन्तु इन्द्र का हुकम दया किस को आती थी
देव सभा के बीच इन्द्र ने मुझे बुलाया
कड़ा-चड़ा तेवर कर फिर दण्ड सुनाया
तुझे रूप का गर्व हठीली काली हो जा
यहां न रह सकती अब तू जा जग में खो जा
पक्षी बन अब तू दुनियाँ में नीचे जाय
कूक-कूक कर डाल डाल कोयल कहलाय
पर करता हूँ दया तुझ पर दिवानी
तू गाती है मधुर कण्ठ भर मीठी वाणी
यह तेरी आवाज साथ तेरे जावेगी ।
जिस से तू सम्मान जगत में पावेगी
बस अब यह होती यहीं राम कहानी
लेगा उनको कष्ट न जिसने आज्ञा मानी

---

### ★पहेलियां★

१. सोवत नारी वो औषधि खावे
जिस पर थूके वो मर जावे । ([illegible])

२. मैंने देखी एक अनोखी नारी
जिस में गुण है सब से भारी ।
पढ़ी नहीं पर अचरज आवे
मरना जीना तुरत बतावे ([illegible])

३. बाबा सोवे या घर में
टांग पसारे वा घर में । ([illegible])

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * संसार का सर्वप्रथम गणितज्ञ बालक श्रीनिवास *

श्रीनिवास राम नुजम् संसारकी उन थोड़ी विभूतियों में से थे जो दरिद्र-परिवार में जन्म लेकर भी अपनी प्रतिभाके बलसे गणित-संसार में सदा को अपना नाम अमर कर गये। इतिहास में किसी बालक गणितज्ञ का इनके पूर्व हमें नाम नहीं मिलता। इतने कम समय में उन्होंने जो असाधारण सफलता प्राप्त की वह वास्तव में महान् है।

इनकी प्रतिभा कितनी विलक्षण थी; इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जिन कठिन प्रश्नों के हल करने में गणितज्ञ घण्टों लगा देते उन्हें ये चुटकी बजाते कर देते थे। इनकी गणना शक्ति तथा स्मरण शक्ति भी अलौकिक थी। प्रो० हार्डी ने इनके सम्बन्ध में एक जगह लिखा है—

मैं ने आज तक श्री रामानुजम् सरीखा कोई गणितज्ञ नहीं देखा। मैं आपकी तुलना आयलर और जैकेनी से ही कर सकता हूँ। अंकों और संख्याओं से आपकी गहरी दोस्ती थी तथा एक सफल व्यक्ति पर उनको अपनी सफलता का ज्ञान नहीं। आवश्यकता थी कि उन्हें उनकी महत्ता और सफलता का ज्ञान कराया जाता।

श्री रामानुजम का जन्म २२ दिसम्बर सन् १८८७ ई० को मद्रास प्रांत के इरोद नाम के एक छोटे गाँव में हुआ। उनके पिता एक साधारण परिवार के निर्धन ब्राह्मण थे और मुनीमी करके अपना पेट पालते थे। पांच वर्ष की आयु में वे ग्राम की पाठशाला में पढ़ने बैठे। दस वर्ष की आयु में कुम्भकोणाम हाई स्कूल में पढ़कर सन् १८९८ में प्राइमरी परीक्षा में वे सर्वोच्च उत्तीर्ण हुए।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात के अनुसार इन्हें बाल्यावस्था से ही गणित से अत्यन्त प्रेम था। यह बालक सदा अपनी ज्ञान-पिपासा की शाँति में लगा रहता। तीसरी कक्षा में पढ़ते हुए ही इन्हों ने बीज गणित आदि का इँटरमीडियेट कक्षाओं का पाठ्य क्रम समाप्त कर दिया था तथा चौथी कक्षा में बी० ए० के त्रिकोणमिति के कठिन प्रश्न उस समय वे केवल बारह वर्ष के थे। उन्होंने बी० ए० के एक छात्र से लोनी साहब की सुप्रसिद्ध त्रिकोणमिति पुस्तक बहुत हठ करके प्राप्त की क्योंकि पहले उस छात्र ने इनकी बात हसकर टाल दी थी। १२ वर्ष की आयु में त्रिकोणमिति सारी हल कर देना इनकी अलौकिक प्रतिभा का उदाहरण है। पांचवीं कक्षा में इन्होंने 'ज्या' और 'कोज्या' का विस्तार कर डाला। यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य होता है कि इस ऐतिहासिक बालक को आयलर नामक विद्वान का नाम तक ज्ञात न था जो कि गणित के ऐसे विषयों में सर्वप्रथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अनुसन्धान करने के कारण यूरोप के गणितज्ञों में अमर हो गया है । आयलरके सिद्धांतों को बताने वाला इन्हें कोई गुरु ही मिला था न किसी ग्रन्थसे सहायता ही । १३ वर्ष की आयु में इनका किया हुआ कार्य सर्वथा मौलिक तथा स्वतः प्रेरित था । इस छोटी आयु में इन्होंने गणित-सम्बन्धी जो कार्य कर लिया था वह बड़े-बड़े गणिताचार्यों की सम्पूर्ण आयु की मौलिक खोजों से किसी प्रकार कम महत्व का नहीं था ।

१७ वर्ष की आयु में इन्होंने सरकारी छात्र-वृत्ति प्राप्त करते हुए १९०३ ई० में मैट्रीकुलेशन की परीक्षा पासकी । इंटरमीडिएट कक्षा में वार्षिक परीक्षा में अंगरेजी में अनुत्तीर्ण हो जाने से इनकी छात्र-वृत्ति बन्द हो गयी और निर्धन छात्र की पढ़ाई का यहीं अन्त हो गया । अपना पूर्ण समय और ज्ञान गणित की ओर ही लगाने से इन्हें अंगरेजी या अन्य विषयों के पढ़ने का समय ही न मिलता था और न रुचि ही थी ।

बिना किसी गुरु की सहायता या सहायक ग्रन्थों को प्राप्त किये ही ईश्वर प्रदत्त प्रेरणा से वह एक प्रकार से पूर्ण मौलिक कार्य करते थे । सच्ची लगन प्रतिभा और अध्यवसाय के आगे कुछ भी असम्भव नहीं है । यह अत्यन्त विस्मय की बात है इन्हें कोई भी प्रसिद्ध गणित की पुस्तकें देखने को नहीं मिलती थीं जो भी यदा-कदा कोई गणित पुस्तक इन्हें देखने को मिल जाती थी यह उसी पर संतोष करते थे । हां एक पुस्तक कारकी सिनोप्सिस इन्हें इनके मित्र ने कुम्भकोणम कालेज पुस्तकालय से ला दी थी । यह पुस्तक इन की प्रतिभा तथा प्राकृतिक शक्तियोंको जगानेमें बहुतसफल सिद्ध हुई । यद्यपि यह पुस्तक बहुत उच्चकोटि की नहीं है ।

बाल्यावस्था में इन्हें इनके अध्यापकगण सनकी समझते थे ! प्रायः महान पुरुषों को साधारण बुध्दि के लोग ऐसे ही झक्की समझते हैं । इन महान आत्माओं की महत्ता और प्रतिभा का ज्ञान तो अन्तिम अवस्था या मरणोपराँत ही होता है । तीसरी और चौथी कक्षा में पढ़ने वाला जब यह विद्यार्थी अपने अध्यापक तथा सहपाठियों से गणित के कठिन प्रश्नों नक्षत्र तथा पृथ्वी की परिधि आदि के विषय पूछता तब इन असाधारण प्रश्नों का ठीक से उत्तर टीचर भी न दे पाते थे । एक तीसरी कक्षा में बता रहा था कि किसी संख्या को उसी संख्या से भाग दिया जाय तो भजनफल एक होता है इन्होंने पूछा कि क्या शून्य के सम्बंध में भी यही नियम लागू होता है ?

बेचारे अध्यापक स्वयँ नहीं जानते थे कि शून्य को यदि शून्य से भाग दिया जाये तो भजनफल एक नहीं वरं अपरिमित अथवा अनिर्दिष्ट होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



★क्या आपने हाईडज का नाम सुना है?★

शायद आप इसे नहीं जानते। यह एक अँगरेज डाकू है जिसे अंगरेज जनता प्यार करती है! इसका कारण है इसका अद्वितीय साहस और बेजोड़ चातुर्य।

वह कई बार जेल से भाग चुका है। दो वर्ष पूर्व वह नोटिंघम जेल से भाग गया था और ८ मास तक फौज के एक विभाग में कार्य करता रहा! इन आठ महीनों में वह समाचार पत्रों को पत्र लिखता रहा कि वह निर्दोष है। वे पत्र समाचार पत्रों में छपते रहे फिर भी खुफिया पुलीस उसे न पकड़ सकी। पुलीस उस के पत्र समाचार पत्रों में पढ़ लेती या टैलीफोन पर उसकी आवाज सुन लेती। हाईडज ने अपनी आवाज के रिकार्ड भर कर अपनी पत्नी को दे दिए थे उसकी पत्नी वही रिकार्ड बजा कर टैलीफोन पर उसकी आवाज सुना देती।

अभी-अभी वह अदालत से भाग गया है। उसका भागना कोई आकस्मिक घटना न थी अपितु एक सोची समझी योजना थी। उस ने अदालत के कमरे के द्वार में दो छेद कर दिए थे। एक दिन जब सिपाही उसे लेने आये तो उसने दौड़ कर अदालत का कमरा बन्द कर बाहिर से ताला लगा दिया और स्वयं फुर्ती से भाग गया दूसरे दिन समाचार पत्रों ने उस के भाग जाने की खबर मोटे अक्षरों में छापी। एक समाचार पत्र ने लिखा कि इंगलैंड की जनता उसकी साहस पूर्ण फरारीसे प्यार करती है।

हाईडज पहले पहल २८ वर्ष की आयु में १९३९ में जेल से भागा था तब उसको सेंध लगाने के अपराध में सजा दी गई थी।

# ❋ अकबर और बीरबल ❋

एक बार अकबर ने बीरबल से कहा कि बीरबल तुम बहुत बुद्धिमान हो तुम्हारे पिता तुमसे भी बुद्धिमान होंगे।

जी हा वे बहुत बुद्धिमान हैं —बीरबल ने कहा। अकबर ने कहा अपने पिता को कल दरबार में लाना।

दूसरे दिन बीरबल ने अपने पिता से कहा कि आपको दरबार में राजा ने बुलाया है। उसके पिता ने कहा राजा ने क्यों बुलाया है?

बीरबल ने कहा कि राजा आप से कुछ पूछेगा मगर आप कुछ बोलना नहीं।

जब बीरबल और उसके पिता दरबार में पहुचे तो अकबर ने उनका स्वागत किया और बैठाया और लगा सवाल पर सवाल करने। परन्तु बीरबल के पिता कुछ न बोले। इस पर अकबर को क्रोध आ गया। और बीरबल से पूछने लगा कि बीरबल जब कोई मूर्ख मनुष्य सामने आ जाये तो क्या करना चाहिये। बीरबल शीघ्र बोला कि चुप रहना चाहिये।

—कृष्ण लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


★ क्रमागत

# × उषा-आमन्त्रण ×

(शांत शास्त्री शालिहास सिरसा)

१३

यह है बसन्त की प्रात सखे।
पतझड़ ने झाड़े जिसके दल
शाखाओं का शोषा रस बल
उस स्थाणु मात्र द्रुम में फूटे
अब अरुण वर्ण नव पात सखे
यह है वसन्त की प्रात सखे !
गुन गुन गुँजन गाने वाले
काले लाले वे मतवाले
अलि कलिका के कानों में मुँह
दे कहते हैं शुभ प्रात सखे
यह है वसन्त की प्रात सखे।
हरियल डालों पर घूम घाम
खग दल करते हैं धूम धाम।
लख इधर नजर भर जाएगी
ये हैं अद्भुत खग व्रात सखे

१४

सुनो सुनो ऊषा आमन्त्रण
तरुण-अरुण किरणें दिनकर की
झाड़ रहीं रज नभ मन्दिर की
अवगुंठन युत सस्मित वदना
उषा लग रही कितनी शोभन
सुनो सुनो ऊषा आमंत्रण
मृत अतीत हुआ रे मानव

★ अमीर खुसरो की मुकीयों की तरह—

# × मुस्कराइयाँ ×

(शान्त शास्त्री शालिहास सिरसा)

खून चूम लेती वह सारा
रूप रंग उसका है न्यारा।
घर उजाड़ आफत की डिब्बी
क्यों भई ! टी० बी ? नहिं भई ! बीबी।

कुतरे कान जेब भी काटे
साग फलों का रस वह चाटे
उसके बिना अधूरी लाइफ
क्यों भई, नाइफ ? नहिं भई वाइफ

बड़ा पेट बहु भोजन खाती
आगे आकर दांत दिखाती
भारी काया भी मन मथनी
क्यों भई हथनी ? नहि भई पत्नी

---

है भविष्य का यहाँ बृथा रव
गत भावी के दुश्चिंतन में
मत कर वर्तमान में रोदन
सुनो सुनो उषा आमंत्रण
मत फूलो तुम छली सुखों से
मत हारो जग के दुःखों से
जीवन हैं संघर्ष आफतों को
नर तू दे खुला निमंत्रण
सुनो-सुनो उषा आमंत्रण

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


★कहानी—

# *'कुचले फूल'*

(कु० सुदर्शन खोसला प्रभाकर)

धीरे २ मन्दिर के दीप एक एक करके दम तोड़ने लगे। श्यामा ने निश्चल खड़ी भगवान की मूर्ति को निहारा। उसके मुख पर दीपक की धुन्धली आभा नाच रही थी फिर भी वह स्थिर थी, मौन थी! श्यामा ने धीरे से अपना मस्तक घुटनों पर फैंक दिया। काफी देर बाद बूढ़े पुजारी ने उसे पुकार कर कहा —

'बिटिया! काहे को बैठी हो; जाओ। बहुत रात जा चुकी!'

श्यामा ने चौंक कर सिर ऊपर उठाया तथा बूढ़े पुजारी को एक बार देख कर भगवान के चरणों में पड़े सूखे पुष्पों को निराशा से देख कर पूछा—

बाबा! एक बात पूछूं?

'पूछो!' बाबा ने कुछ आगे बढ़ कर कहा—

भगवान के चरणों में शांति मिलती है न?

हां—इसमें शंका ही क्या है? आश्चर्य से वृद्ध ने श्यामा को घूरते हुये कहा—

ठीक है। फिर ये पुष्प भगवान के चरणों में पड़े २ सूख क्यों गये?

श्यामा ने दीपक की कांपती लौ की धीमी आभा में देखा कि बाबा कुछ विचलित हो चुका है तथा उसके मुख पर पसीने की बून्दें उभर आई हैं। वह मुस्कुराई—

बाबा! शायद तुम घबरा गये हो। लेकिन यह प्रश्न बिल्कुल सीधा सा है।

इस बार बाबा की आवाज सचमुच विस्मय से भीग गई थी—

सीधा है? उसने पूछा।

हाँ एकदम साधारण है; देखो! भगवान का स्वरूप महान है। उसकी सत्ता के आगे प्रकृति भी खिल कर झुक जाती है—फिर भगवान ने तो कुछ नियम चला दिये हैं, जिन का उल्लंघन कोई भी नहीं कर सकता। फूल डाली पर ही लगते हैं, क्योंकि उसके जीवन की डोरी प्रभु ने डाली के साथ गूंथ दी है—क्यों?

बाबा चुपचाप मन्दिर की दहलीज पर बैठ गया। फिर बोला—

तुम बहुत प्रतिभा-शाली हो—क्या नाम है तुम्हारा?

श्यामा!

श्यामा, आह कितना मधुर नाम है, जो कभी गोकुल के श्याम का था, सचमुच तुम्हारे मुख पर एक विचित्र आभा है; देवी।

पुजारी एक टक श्यामा को देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



उसके बाद वह धीरे २ मन्दिर से निकल कर गहरे अन्धकार में खो गई तथा पुजारी वहीं बैठा रहा; चुपचाप प्रतिमा की तरह मौन।

दूसरे दिन फिर मन्दिर का द्वार खुला। घण्टियां बज उठीं। श्रद्धा के पुष्प तथा प्रसाद लिये अपार भीड़ आने लगी। प्रभु के चरणों के आगे पुष्पों का फिर ढेर लग गया और कुछ देर बाद वे किसी के नादान अरमानों की तरह मुस्काने लगे।

साँझ हो गई। लोगोंका मन्दिर में तांता बन्ध गया लेकिन पुजारी की दृष्टि बार-बार बाहिर के दरवाजे की ओर उठ जाती थी।

बाहर वर्षों से वह मोह-माया के जाल को तोड़ कर मन्दिर की सुखद छाया में आ बैठा था। लेकिन आज फिर न जाने क्यों मोह का एक दुर्बल सा धागा प्रबल शक्ति बन कर उसके पांवों में लिपट गया था, अन-जाने ही उसके हृदय के किसी कोने में स्नेह उमड़ आया था।

आखिर वह आ ही गई, उसके हाथ में एक थाल था, जिसमें कुछ पुष्प रौली, प्रसाद तथा एक दीपक था। वह धीरे २ बढ़ती रही तथा मन्दिर की सीढ़ियों के पास आकर रुक गई।

श्यामा ! पुजारी की आवाज में खुशी का का कंपन था वह चुप खड़ी कुछ देर तक किसी के पाव तले मसले गये लाल फूल को देखती रही, जिसे शायद किसी ने लापरवाही से गिरा दिया था तथा वह अभागा भगवान के चरणोंतक भी पहुँच नहीं पाया। था श्यामा ने काँपती उंगलियों से उसे उठा कर थाली में रख लिया।

श्याम, पुजारी ने फिर पुकारा। श्यामा ने अश्रुपूर्ण दृष्टि से दीप की कांपती लौ को देखा; जो बुझने को थी लेकिन बुझ नहीं पाईथी। वह जल्दी २ सीढ़ियां चढ़कर मन्दिर में प्रविष्ट हो गई।

पुजारी उसके पीछे २ जाकर भगवान की मूर्ति के पास जाकर बैठ गया तथा लालायित दृष्टि से श्यामाको देखने लगा। जिस परमात्मा के दिव्य दर्शन वह वृध्द अभी तक कर नहीं पाया था आज उसे उस भोली बालिका के मुखपर दीख रहा था। श्यामा के नेत्र बन्द थे अधर फड़क रहे थे तथा मुख पर थी मुस्कान निश्छल मुस्कान.पवित्र मुस्कान—उसकी आंखों से प्रेमाश्रु फूट कर बह चले थे तथा उसने धीरे से आंखें खोल दीं। सामने वृध्द पुजारी बैठा निर्निमेष उसे ताकरहा था उसकी झुर्रीयुक्त कपोलों पर भी आँसू चमक रहे थे।

श्यामा ने वह कुचला पुष्प भगवान के चरणों में चढ़ाते हुए कहा—

देव ; यह कुचला पुष्प भी न जाने मेरी तरह कितने प्रहार सह चुका है, फिर भी इसे स्वीकार कर लो। तथा उसके दृगों में सिमटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अश्रु—ओस बिन्दुओं की तरह बह कर पुष्पों में गिरकर विलीन हो गये।

फिर वह देर तक निर्जीव फूलों, काँपती लौ तथा मौन प्रतिमा को घूरती रही।

रात हो गई मन्दिर का पथ सूना हो गया लेकिन काफी देर तक वह पाषाण की तरह स्थिर बैठी रही। फिर धीरे २ रात के सूनेपन में खो गई। उसके बाद वृद्ध पुजारी चुपचाप देर तक आंखें फाड़-फाड़ कर अन्धकार को घूरता रहा।

इसी प्रकार प्रतिदिन मन्दिर का द्वार खुलता घण्टियां बजतीं फूल चढ़ते तथा पुजारी उसकी प्रतीक्षामें बैठा रहता। वह आती तथा चुपचाप भगवान के कदमों में लीन हो जाती लेकिन वृद्ध उसकी मुखाकृति में एक महान आत्मा के दर्शन करके कृतार्थ हो जाता।

एक दिन हमेशा की तरह सांझ आ गई तथा कुछ देरतक मन्दिरका पथ फूलोंसे भर गया जनता का उत्सासित हृदय घण्टियों को टन २ के साथ बज उठा।

बाबा प्रसाद दो! किसी ने पुजारी को पुकारा लेकिन उसकी दृष्टि तो बाहिर लगी थी। उसने अनमने भाव से बढ़े हुए हाथों पर प्रसाद धरना शुरू किया।

कुछ देर बाद घण्टियों का स्वर रुक गया मन्दिर का पथ सूना हो गया तथा भगवान के चरणों में पड़े फूल मानों किसी की प्रतीक्षा में पड़े २ मुरझाने लगे लेकिन वह न आई। पुजारी का हृदय मानों रो उठा वह बाहिर जाकर देर तक सूने पथ को निहारता रहा! दीपक की हल्की आभा के बिना उसे अपनी आंखों की ज्योति कम लगने लगी।

श्यामा! वह फट पड़ा; उसे चारों ओर से यही प्रतिध्वनि सुनाई देने लगी, वह भगवान के कदमों में आकर बैठ गया लेकिन उसे शाँति न मिली। उसे लगा कि प्रभु इस पत्थर की मूर्ति में नहीं कहीं बाहिर गया है लेकिन कहाँ?

वह मन्दिर की सीढ़ियाँ उतर कर बाहिर निकल गया। दूर मन्दिर के पथ के अन्धकार में भी फीकी २ आभा दिखाई दी। वृध्द उधर ही बढ़ गया पास जाकर देखा एक थाली में कुछ फूल प्रसाद तथा रौली पड़ी थी और एक दीपक न जाने कब से जल २ कर बुझने को था। पुजारी कांप उठा, साथ के वृक्षों के झुटपुटेसे एक चीख सुनाईदी। श्यामा, वह थरथरा उठा। उसके कदमों में बिजली की तेजी आ गई।

पास जा कर देखा कुछ दानव प्रकृति के मानव श्यामा को बुरी तरह झकझोर २ कर खींच रहे थे. वह अबला चीख रही थी—

मैं नहीं जाऊंगी, मुझे पाप की तरफ न ले जाओ; मुझे भगवान के चरणों में ही रहने दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मैं तुम्हारा पति हूँ— मेरा कहना तुझे मानना ही होगा, चल।

और एक बलिष्ठ पुरुष ने आगे बढ़ कर उसके खुले बालोंको नोचते हुये एक जोर की ठोकर लगा दी।

मैं वेश्या—नहीं बनूंगी—छोड़ दे—पापी—और उसकी आवाज ने काँप कर रुदन का रूप धर लिया।

पुजारी सिर से पांव तक कांप उठा—

श्यामा— नारी—अबला—भगवान। वह रो उठा—श्यामा।

बाबा! इस समय मांगो न अपने भगवान से शक्ति—मुझे पाप से बचा लो!

श्यामा ने करुण स्वर में पुकारा, फिर वह बूढ़ा उन पत्थर-दिल युवकों से उलझ गया लेकिन एक ही धक्के में उन्हों ने बृध्द को भूमि पर पटक दिया—उसके मस्तक से रक्त की धारा फूट चली।

जब कुछ देर बाद पुजारी की शक्ति लौटी तो वहां कुछ भी शेष न था, श्यामा जा चुकी थी गहरे कीचड़ में धसती हुई। बृध्द ने श्यामा की पूजा की थाली को निहारा—दीपक अन्तिम श्वास ले कर बुझ गया।

रात बीतती गई तथा पुजारी ने लड़खड़ाते हुए मन्दिर में प्रवेश किया। वह हारे हुए जुआरी की तरह आकर भगवान के कदमों में बैठ गया। दीपक की हल्की चमक में उसने

## ×रूसी कहावतें और मुहावरे×

### वचन कर्तव्य और सम्मान

कौल कौल ही है।

अपने वचन का पालन करो।

आदमी की जुबान उतनी ही पक्की होनी चाहिए जितना कि उसका इकरारनामा।

इज्जत आदमी को विवेक और बुध्दि देती है अपमान उनका अपहरण करता है।

इज्जत और सच्चाई जुड़वाँ भाई हैं।

बेइज्जती से तो मौत बेहतर।

आदमी अपने लिए जन्म नहीं लेता!

कुर्सियां आदमी की शोभा नहीं बढ़ातीं आदमी कुर्सी की शोभा बढ़ाता है।

पेड़ की परख फल से और आदमी की की परख उसके कामों से होती है।

मृतक के लिए शाँति तथा जीवित के लिए जिन्दगी।

जीवन संघर्ष है।

---

देखा पुष्प मुरझा चुके थे-उस अबला की तरह जिसे समाज ने मजबूत जंजीरों में जकड़ कर पीस डाला था।

और पुजारी की आँखों से अश्रु टूट २ कर उन लाल कुचले फूलों पर गिरने लगे—जिन्हें एक दुखिया ने भगवान के चरणों में चढ़ाया था—लेकिन वे उसी के मुरझाये जीवन की तरह सूख चले थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * मृत-बालक जीवित हो गया ! *

(एक भारतीय डाक्टर का चमत्कार)

नई दिल्ली के एक भारतीय शल्य-चिकित्सक की कुशलता तथा एक मृतक व्यक्ति द्वारा प्रदान किये गये अपने शरीर के फलस्वरूप न्यूयार्क के एक ६ वर्षीय नीली आंखों वाले सुन्दर बालक के प्राण बच गये हैं।

डेविड फ्लेमिंग जूनियर के हृदय की प्रमुख धमनी के खून से भरे और फूले हुए भाग को मरम्मत करने के लिए रोजनिल (न्यूयार्क) के सेगट फ्रांसिस अस्पताल में ३० दिसम्बर १९५७ को एक संकटकालीन आपरेशन किया गया।

हृदय की प्रमुख धमनी का एक कमजोर स्थल सूज कर बुलबुला सा बन गया था और उसके कारण यह भय उत्पन्न हो गया था कि उसके फट जाने पर किसी भी समय उस बालक की मृत्यु हो जायेगी।

भारत के ३० वर्षीय डा० राय महाजन की देख रेख में १४ चिकित्सक पुरुषों तथा महिलाओं की एक टोली ने आपरेशन प्रारम्भ किया। वह आपरेशन ५ घण्टे ३० मिनट तक चलता रहा। इस दौरान में बालक डेविड को मृत्यु के मुख से बचा कर पुनः जीवित करना था।

इस नाजुक आपरेशन के मध्य धमनी का वह दूषित भाग फट गया। रक्तप्रवेश का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया और रक्त के घुमाव को जारी रखने के लिए डा० महाजन के बच्चे के हृदय की मालिश शुरू की। २ घण्टे ४५ मिनट तक डा० महाजन मालिश करते रहे और उस समय दूसरे शल्य-चिकित्सकों ने एक ऐसे व्यक्ति के हृदय से धमनी लेकर जिस की मृत्यु १० महीने पूर्व हो गई थी प्रमुख धमनी के ७ इंच लम्बे भाग में जोड़ लगाया। बच्चे के उस अज्ञात प्राणदाता ने अपनी वसीयत करके अपना शरीर अस्पताल को दे दिया था।

उसकी मृत्यु होजाने पर उसके शरीरके कुछ स्वस्थ भागों को भविष्य में प्रयोग में लाने के लिए शीत प्रकोष्ठों में सुरक्षित रख दिया गया था।

उस बच्चे के हृदय के आपरेशन से उस बच्चे के प्राणों की रक्षा ही नहीं हुई बल्कि इससे चिकित्सा के इतिहासमें एक नए अध्याय का सूत्रपात भी हुआ है। जहां तक विदित है यह पहला अवसर था कि एक ओर तो हृदय का आपरेशन किया जा रहा था और दूसरी ओर रक्त-प्रवाह को जारी रखने के लिए दिल की मालिश की जा रही थी।

आपरेशन के पश्चात डा० महाजन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहा कि चिकित्सा की दृष्टि से यह बच्चा २ घण्टे ४५ मिनट तक मरा रहा किन्तु वह बच्चा अब अपने जीवन में पहली बार अच्छी तरह चलता-फिरता है और पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ कर रह है।

जिन घटनाओं के फलस्वरूप वह ऐतिहासिक आपरेशन सम्पन्न हुआ उनकी शुरुआत १९५१ में उस समय हो गई थी जब डा० राज महाजन ने नई दिल्ली के अरविन अस्पताल में अपना क्रियात्मक शिक्षण-समाप्त किया था।

डा. महाजन की रुचि दिल सम्बन्धी शल्य-चिकित्सा में बहुत अधिक थी और वे इस क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त करने के बड़े इच्छुक थे। उनके मित्र तथा सहयोगी नई दिल्ली के एक प्रमुख दिल रोग विशेषज्ञ डा. एस. के. सेन ने उन्हें दिल सम्बन्धी शल्य चिकित्सा में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

१९५१ के अन्त में डा. महाजन को फुलब्राइट छात्रवृत्ति मिल गई और वे ७ वर्ष तक आयोवा तथा न्यूयार्क के स्कूलों और अस्पतालों में अनुसन्धान एवं अध्ययन करने के लिए अमेरिका को रवाना हो गये।

गत दो वर्षों से डा. महाजन का सेन्ट फ्रांसिस अस्पताल से संबंध है। वहां उन्होंने दिल तथा फेफड़ों विषयक एक मशीन के विषय में एक अनुसन्धान योजना को पूरा किया है।

# धुएँ का वजन

महारानी एलिजबेथ ने एक बार सर वाल्टर रैले से पूछा—आप तम्बाकू के धुएं को तोल सकते हैं?

सर वाल्टर जरा भी हतप्रभ नहीं हुए। बोले–तोल सकता हूँ महारानी!

तोलकर पाइपमें तम्बाकू भरा गया। इसके बाद सर वाल्टर ने तम्बाकू की राख निकाली और उसका वजन लिया। अब तम्बाकू के वजन में से राख के वजन को घटाते हुए कहा वजन का यही अन्तर तम्बाकू के धुएं का वजन है महारानी!

★ सुस्ती और काहिली ★

काहिलों के लिए तो हर रोज इतवार है।

तुम क्या कर रहे हो?

कुछ भी नहीं।

और वह?

मेरी मदद कर रहा है।

अगर तुम अपनी मदद नहीं कर सकते तो तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता।

---

डा. महाजन ने कहा—इस यन्त्र का उपयोग अस्थायी तौर पर दिल एवं फेफड़ों के कार्य को जारी रखने के लिए उस समय किया जाता है जब इन दोनों अंगों की मरम्मत की जाती है। यह यन्त्र अपेक्षाकृत आसान है। जब मैं आगामी जुलाई में नई दिल्ली लौटूँगा तब मैं इसके हिस्सों को स्वयं जोड़ सकूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * शालिहास-हासावलि *

(गीत)

चापलूस मैं बन नहिं पाया !
इंगलिश भाषा और हिस्टरी
चट कर डाली यथा पेस्टरी
हो कर एम० ए०, एम.ए. रहा
बेकारी की बला नहिं टरी
मिली सिफारिश नहीं, इसीसे
सरविस में मैं हो नहिं पाया
धेला भी इक कमा न पाया
चापलूस मैं बन नहिं पाया।
जूती चाटो खीस निपोरो, का
पढ़ सुन्दर पाठ न पाया
हरिजन या परिगणित जातियों में
भी प्रभु ने नहिं जन्माया
पब्लिक सरविस आयोजन में
अरे नहीं था चाचा ताया
अर्थ शास्त्र पढ़ कर भी रिशवत
का मैं अर्थ समझ न पाया
हिन्दी राष्ट्र भारती है अब
दे दे शायद कुछ सरमाया
सो लेखक बन कर हिन्दी का
चरण शरण में इसकी आया
इधर-उधर से जोड़ तोड़ कर
लेख लिखा तब मैं ने भारी
भेजा सम्पादक जी को पर
खेद सहित आई इनकी
अब बेकार सभा का लीडर
बनने की कर ली तैयारी
सोच रहा हूँ करूं लीडरी
शायद कट जाए बेकारी ?
जाने क्यों लक्ष्मी रूठी है
अद्भुत उसकी माया
तलवे चाटो पूंछ हिलाओ
तब मिलती है माया
पढ़ी पुस्तकें कितनी मैं ने
पर यह पाठ न पाया
सीख खुशामद यदि लेता मैं
'खुश आमद' सब कहते
घर में बीवी बच्ची
आफिस में बाबू खुश रहते
जानें दूर हटेगी कब ये
क्रूर शनैश्चर छाया
स्वाभिमान का ठेका ले मैं
बहुत बहुत पछताया
चापलूस मैं बन नहिं पाया।

---

### ढकोसले

बाबू जी दफ्तर गए ताला दिया लगा
बीबी जा पीहर गई तू बैठा ढोल बजा
ला टी-कप पिला।
लीडर एम.एल.ए. बने झड़ २ पड़ते नोट
फिरें कार में बेखबर वाह भाई तेती श्रद्धा
उल्लू जी नेता बने लप लप गूलर खाएँ
टोपी उतारकर देखा तो जीवनके दिन तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## × पँजाबी लोकोक्तियाँ ×

वेले दी नमाज कवेले दीआं टक्करां
गये निभाने रोजड़े रह गये नौ ते बीह
गरीबाँ रखे रोजे दिन वडे आ गये
मक्खिओं परे उजाड़ा
मक्के जाना ते मजौरां नूँ की पुच्छना
मुल्लाँ दी दौड़ मसीत तक
मुफ्त दी शराब काजी नूं भी हलाल है
लिखे मूसा पढ़े खुदा
मूसा डरिया मौत तों मौत अगे खड़ी
पराधीन सुफने सुख नाहि।
बेगानी छाह ते मुच्छां नहीं मुनाई दियाँ
बिल्ली कन्न तत्ता नहीं।
इट कुत्ते दा वैर
मँदा कुत्ता खसमें गाल
घर दे पीरां तेल दे मुरंडे
गंगा गइयां हड्डीयां नहीं मुड़दीआं
जिन्नी न्हाती ओना ई पुन
न्हाती धोती रहगई नकते मक्खी बैह गई
बूहे आई जंज बिन्हों कुड़ी दे कन्न
ओह दिन डुब्बा जद घोड़ी चढ़िया कुब्बा
लागीआं तां लाग ही लैना है चाहे
जाँदी रण्डी हो जावे!
भठ पिया सोना जेहड़ा कन्न पाड़े
मामे कन्नीं दुर बीर बलीआँ भनेवाँ
आकड़िया फिरे।
भज्जी टुटी दे पत्तन मेले (उड़े थुड़े दा
पत्तन मेला)
सत्तां पत्तनां दा तारू
कइयाँ पत्तना दा पानी पीता
घर दी अधी चंगी बाहर दी सारी मन्दी।
घर दी कुकड़ी दाल बराबर

## * निर्माण बेला *

(सीता राम गुप्त दिनेश)

लेकर श्रम के युग व्यापी नव आंदोलन को
लो निर्माण की मनहर बेला आई है
युग बीत गया प्रमादों की निष्क्रियता का
श्रम घटा गगन में घिरी और घहराई है
लेकर कुदाल उमड़ा आता जन सागर हैं
गिरि कानन में बजती श्रम की शहनाई है
अब होगा श्रमजीवी ही वैभव का स्वामी
निर्धन कुटियों में नई ज्योति मुस्काई है
जो श्रम करदे प्रस्वेद बिन्दु का आलिंगन
उस कर्मवीर को विभव विजय ले आई है
अब आओ लें संकल्प नये निर्माणों का
मेटें निर्धनता जो स्वदेश पर छाई है
लेकर श्रम के युग व्यापी नव आंदोलन को
लो निर्माणों की मनहर बेला आई है
है पड़ी युगों से प्यासी ये बजर वसुन्धरा
आहें भरता है इसका चिर नीरस अन्तर
यदि चाह देश की उन्नति की श्रमदान करें
खोदें अगणित जलस्रोत कूप तालाब नहर
तब श्रम की अमर साधना से अनुराग भरा

(शेष सफा ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


★ बच्चों के लिए एक रूसी कहानी—

# ❋ गाने वाला भेड़िया ❋

(लेखक: ए० मित्यायेव)

सेर्को नामक बूढ़े कुत्ते को उसके मालिक ने घर से निकाल दिया। लेकिन भेड़िये की सहायता से वह पुनः अपने स्वामी का कृपा पात्र बन गया।

भेड़िए ने सेर्को के मालिक के बच्चे को उठाकर भागने का स्वांग किया। सेर्को ने उसका पीछा किया और भेड़िए ने पूर्व नियोजित योजना के अनुसार सेर्को को बच्चा ले जाने दिया।

सेर्को का मालिक बहुत प्रसन्न हुआ और उससे उसे अपने घर में रख लिया।

अब सेर्को इस उपकार का ऋण प्रत्युपकार द्वारा चुकाना चाहता है। उसने मित्र भेड़िये से कहा—रविवार की रात हमारे बाग में आने की कृपा कीजिए मैं आपकी कृपा का ऋण चुकाना चाहता हूं।

भेड़िया रविवार को यथासमय निर्दिष्ट स्थान पर गया।

उसी दिन सेर्को के मालिक की ज्येष्ठ पुत्री की शादी हो रही थी।

सेर्को भेड़िये को झोंपड़े में ले गया और उसे मेज के नीचे छिपा दिया। इसके बाद सेर्को ने एक बोतल अच्छी शराब और गोश्त का अच्छा सा टुकड़ा लाकर भेड़िये को दिया।

मेहमानों ने कुत्ते की मरम्मत करनी चाही लेकिन उसके मालिक ने बीच बचाव करते हुए कहा— इस पर हाथ नहीं उठाना इसने मेरी बड़ी सेवा की है और मैं इसके अन्तिम दिनों तक इस पर मेहरबान रहूंगा।

सेर्को ने मेज से और भी अच्छी २ चीजें लाकर भेड़िये को दीं। उसने भेड़िये को अच्छी तरह खिलाया पिलाया। आनन्द-मग्न हो उसने कहा—मैं गाना चाहता हूँ।

गाने का प्रस्ताव सुन सेर्को वस्तुतः अत्यन्त भयभीत हो गया। उसने अनुनय विनयभरे स्वर में कहा—कृपया गाइये नहीं। आप अच्छी तरह नहीं गा सकेंगे। यदि आप चुपचाप रहने की कृपा करें तो मैं आप के पीने के लिए कुछ और भी लाकर दूंगा।

भेड़िये ने शराब की लाकर दी बोतल और खाली कर दी और कहा—अब मैं सचमुच गाने जा रहा हूँ। और उसने मेज के नीचे से बुरी तरह हौंआना शुरू किया।

भेड़िए का हौंआना सुन मेहमान अपनी अपनी जगह से चौंक खड़े हुए और भगदड़ सी मच गई। एकने मेज के नीचे झांका तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ★ एक नया खेल ★

आपकी स्मरण-शक्ति की परीक्षा का एक खेल

इस मनोरंजक खेल को दो तीन या चार व्यक्ति तक खेल सकते हैं ! इसमें शब्दों को तरतीबवार ढंग से याद रखने की जरूरत पड़ती है ! खेल का निरीक्षक खेलाड़ियों द्वारा बोले गये तमाम शब्द कागज पर लिख लेता है और फिर उसकी मदद से खेल के दौरान बोले गये शब्दों की जांच करता है।

---

क्या देखता है कि भेड़िए महाराज आनन्द से विराजमान हैं।

कुछ मेहमान डर के मारे भाग खड़े हुए और कुछ भेड़िये को मार डालने की तैयारी करने लगे। इस के बाद सेकों भेड़िए की पीठ पर कूद गया और ऐसा दिखाया मानो वह उसका गला घोंट देना चाहता हो ।

मालिक ने कहा—भेड़िये को न छुओ नहीं तुम ,नहीं तो सेकों को चोट लग जाएगी। कोई चिन्ता नहीं। सेकों उसकी खासी मरम्मत करेगा ।

और खेत में भेड़िये को ले जाने के बाद सेकों ने उससे कहा—आपने कभी मेरा उपकार किया था और मैं ने अभी उसका ऋण चुकाया है !

इसके बाद उन्होंने एक दूसरे को नमस्ते किया और अपना-अपना रास्ता लिया।

शब्द किसी खास विषय को लेकर चुने जाते हैं जैसे नगरों के नाम कारखानों जानवरों आदि का नाम ।

मान लीजिये कि नगरों के नाम को खेल का विषय मान लिया गया है। दूसरा उसके बोले हुए नाम को दुहरा कर एक और नाम जोड़ देता है। अगर सिर्फ दो ही खिलाड़ी हुए तो फिर पहले की बारी आ जाती है । उसे पहले दो शब्दों के नाम दुहरा कर सूची में एक और नाम जोड़ना पड़ता है।

खेल के शुरू में तो नाम याद रखना मुश्किल नहीं होता लेकिन जब दस या उससे अधिक नाम तरतीबवार ढँग से दुहराने पड़ते है और एक भी नाम नहीं छोड़ना पड़ता तो खिलाड़ी भटकने लगते हैं और नाम भूल जाते हैं। निरीक्षक खिलाड़ी को बताता है कि उस ने गलती कर दी है। इस दशा में खेलाड़ी बाकी प्रतिद्वन्दियों के सामने हार जाता है।

## बेकार चीजें

बायें हाथसे दायां कान खुजलाना।

दो खरगोशों का पीछा करने से एक भी हाथ नहीं लगता ।

## शिक्षा और ज्ञान

ज्ञान प्रकाश है अज्ञान अन्धकार।

ज्ञान ही शक्ति है।

दो मूर्ख एक विद्वान के बराबर नहीं होते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ★ हँसते हँसते जीना ★

हास्य और व्यंग्य का मनुष्य के जीवन में बड़ा महत्व है। विलायत में तो किसी व्यक्ति को नौकर रखते समय उसका सब से बड़ा गुण यह समझा जाता है कि वह विनोद प्रिय हो। 'प्रकाश' तथा 'पंचायत गजट' के सम्पादक विनोद-प्रियता का गुण भी अपने अन्दर रखते हैं। उनके व्यंग के कुछ नमूने नीचे दिए जाते हैं:—

१. एक कालेज-छात्रा उनकी एक पुस्तक पढ़ने के लिए ले गई और कई मास तक उसे लौटाने का नाम न लिया। हितैषी जी ने उसे पुस्तक लौटाने का सन्देश भिजवाने की बजाय उसकी एक सह-पाठिनी द्वारा कहला भेजा; पुस्तक सँभाल कर रखना कहीं सेंक न लग जाए! वह लड़की इस व्यंग का आनन्द लिए बिना न रह सकी। पास खड़ी सभी लड़कियाँ खूब हसीं। कहने की जरूरत नहीं कि पुस्तक उसी सायं वापिस आ गई।

२. अभी गत मास ही उन्हें डलहौजी जाने का अवसर मिला। जब वह होटल से बस स्टैंड की ओर जा रहे थे तो उन्हों ने एक कुत्ते को एक डिब्बा मुँह में पकड़े भागते देखा एक व्यक्ति उसके पीछे २ भाग रहा था। उन्होंने उससे पूछा—क्यों साहेब डिब्बा घी का है क्या? 'जी हां' वह बोला—असली घी का। 'तभी तो वह लिए भागा जा रहा है। मेरे जैसे किसी के साथ नीचे के किसी शहर से आया होगा जहां वह बनस्पति घी खाते खाते असली घी को तरस गया होगा।' इस पर जितने लोग वहां खड़े तमाशा देखरहे थे खिल-खिला कर हस पड़े।

३. हितैषी जी एक चाय पार्टी में सम्मिलित हुए। उस में कुछ ऐसी स्त्रियाँ थीं जो घर के एक ऐनक धारी बजुर्ग से पर्दा करती थीं अतः समस्या आ खड़ी हुई कि सभी जन एक मेज पर कैसे बैठें। वे सज्जन कुछ हल न सोच पा रहे थे कि हितैषी जी ने सुझाव दिया कि आप यदि ऐनक उतार लें तो जिन्हें पर्दा करना है उन्हें इसकी जरूरत न रहेगी। इस की जरूरत न रहेगी। इस व्यंग से सभी जन हंसी से लोट पोट हो गए किन्तु सुझाव पर अमल नहीं किया गया। वे सज्जन अन्दर अलग चाय पीने को तैयार हो गए।

विनोद

---

(सफा ३१ से आगे)

हरिताभ रम्य अनुराग धारा का उमड़ेगा
इस वृहद राष्ट्र के सुन्दर स्वर्णिम आंगन में
नव स्वर्गिक वैभव का सागर लहरायेगा
उद्धार करें भूखी नंगी मानवता का
जो चिर युग-शासित गई सदा ठुकराई है-
लेकर श्रम के युग व्यापी नव आंदोलन को
लो निर्माण की मतवाली बेला आई है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# *हिमाचल की सैर*

(एक तरुण यात्री की लेखनी से)

आओ विद्यार्थियो,आपको केंन्द्रीय सरकार द्वारा शासित हिमाचल प्रदेश की सैर करवाएं। इस प्रदेशके ५ जिले हैं जिन में सब से बड़ा महासू है। यह शिमला (पँजाब) जो हिमाचल की राजधानी है; के इर्द-गिर्द की पहाड़ियों से लेकर तिब्बत की सीमा को छूता है। पहले इसी जिले की सैर प्रारम्भ करते हैं।

३१ अक्तूबर ५४ को मैं ने शिमला से इस जिला के प्रसिध्द स्थान कोट गढ़ के लिए प्रस्थान किया। कोट गढ़ सेबों के लिए विख्यात है। प्रातः साढ़े दस बजे मैं शिमला के बस स्टैंड पर पहुंच गया। यहीं पर हिमाचल राज्य परिवहन का भी टिकट घर है। कोटगढ़ के लिए मैं ने एक सीट बुक कराली और डेढ़ बजे चलने वाली बस की प्रतीक्षा करने लगा क्योंकि कोटगढ़ को दो ही बसें जाती हैं, एक प्रातः ७ बजे और दूसरी साढ़े एक बजे दोपहर। आखिर डेढ़ बज गया- यहां छोटी २ बसें चलती हैं अतः शीघ्र ही बस भर गई और समय पर अपनी मंजिल की ओर चल पड़ी। सुरँग पार करके ४ मील तक चढ़ाई चढ़ कर बस जोली पहुंची! यहां पुलीस की चौकी है ५ मिनट तक रुक कर बस फिर चल पड़ी। २ फरलांग पर एक और सुरंग आई। इसे पार कर हम हिमाचल प्रदेश में प्रविष्ट हुए! यहाँ तक का इलाका पंजाब में है। वहां से चल कर हम पहुंच गए उस स्थान पर जहां हिमाचल राज्य परिवहन जिला महासू के दफ्तर और वर्कशाप हैं! दूरसे ही पहाड़ीके ऊपर बसों व ट्रकों की पँक्तियां नजर आती हैं। इन्हें देखकर आश्चर्य होता है कि ये पहाड़ी के ऊपर कैसे चढ़ गईं? किंतु चकित होने की कोई बात नहीं क्योंकि दूसरी ओर से ऊपर जाने को सड़क है; उसी से ये बसें और ट्रकें ऊपर जाती हैं किसी जादू के जोर से नहीं। बस यहां भी ५ मिनट के लिए रुकी- यह है ढली। दो फरलांग आगे चले यहाँ से दो रास्ते हो जाते हैं। एक है चढ़ाई की ओर और दूसरा उतराई की। मैंने सोचा चढ़ाईकी सड़क पर बस आगे नहीं बढ़ सकेगी किन्तु बस जोर से आवाज करती हुई उसी सड़क पर आगे बढ़ने लगी। सड़क के दोनों ओर दयोदार आदि के वृक्ष खड़े छाया दे रहे थे! दो मील तक ऊपर ही ऊपर चढ़ते रहने के पश्चात बस सीधी सड़क पर दौड़ने लगी। तब आ पहुंचे छराबरा-शिमला से ८ मील दूर किन्तु ऊंचाई १५०० फीट अधिक! ३ बजचुके थे बस पहाड़ के एक ओर चल रही थी। दूर बर्फ से ढकी

(शेष सफा २८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * देख ली हम ने बम्बई भी ! *

[गतांक से आगे]

जिस कार्य के लिए हम बम्बई गये थे वह सायं ६ बजे हो गया। उसे पूरा कर घर लौट आए। रात के भोजन के पश्चात हमारे होस्ट मि० कपूर अपने परिवार सहित अपनी कार में हमें बम्बई की सैर कराने को निकले। कार में बैठे २ ही हमने गेटवे आव इंडिया, चौपाटी, मेरीनड्राइव मालाबार हिल, शिवाजी पार्क; ओपेरा हाऊ, सचिवालय आदि प्रमुख दर्शनीय स्थान देखलिए। रात को बिजली के बल्बों की चमचमाहट समुद्र तट पर अत्यन्त हृदय-मोदक दृश्य उपस्थित करती हैं। गगन चुम्बी भवन, खुली साफ सड़कों पर भागती हुई टैक्सियां, बसें ट्रामें और लोकल रेल गाड़ियाँ लाखों नगर वासियों को एक से दूसरे स्थान पर अन्य नगरों की अपेक्षा बहुत कम किराये पर पहुंचाने का कार्य करती हैं। हमें बताया गया कि बम्बई की सड़कें रात को पानी से धोकर साफ की जाती हैं। बम्बई के एक भाग में बिजली के स्थान पर गैस द्वारा प्रकाश की व्यवस्था की गई है। कोई घण्टा डेढ़ घण्टा सैर करके हम समुन्द्र प्वांइट पर स्थित एक फ्लैट में आ गए। हमें बताया गया कि इस फ्लैट में कभी प्रसिद्ध अभिनेता अशोक कुमार रहता था। वह फ्लैट अब हमारे एक सम्बन्धी के पास है। वह भी फिल्म व्यवसाय में ही हैं। उस फ्लैट के हाल कमरे के पीछे एक बड़ी खिड़की रात को खोल दी गई, उसमें से समुद्र की लहरें बल खाती और किनारे पर पड़े पत्थरों से टकराती स्पष्ट दीख पड़ती थीं; बड़ा मनोरम दृश्य था। रात को जब सोने लगे तो पंखा बन्द कर देने पर समुद्र की लहरों का शोर बराबर कानों में आता रहा। उन बेरूल लहरों का रात दिन निरन्तर किनारे से टकराते रहने का उपक्रम देख हृदय को अपूर्व उत्साह और कभी थक कर हार न मानने का मूक सन्देश मिला।

काफी रात गए तक नीन्द न आई यद्यपि शीतल वायु बाहिर से भीतर काफी आ रही थी। आखिर विचारों के समुद्र में गोते खाते चंचल मन को कब निद्रा देवी ने अपने वश में कर लिया—नहीं मालूम। देर से सोने पर भी प्रातः बहुत जल्दी आंख खुल गई। स्नानादि से निवृत्त हो कर कपड़े पहने और नाश्ता कर हम पुनः बम्बई की मोहकता में खो जाने को निकल पड़े। बसोंमें इधर उधर बिना किसी उद्देश्य के घूमते रहे। फिर अनायास ध्यान आया कि क्यों न चचेरी बहिन से जो खार में रहती है मिल आएं ? चुनांचि बस में बैठ खार जा उतरे और पूछते तथा साईन बोर्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पढ़ते १६वीं सड़क पर ४७७ नं० के मकान में उन से भेंट कर सकने में सफल हो गए। अच्छा दरमियाने दर्जे का नीचे का पोर्शन था जो उन्होंने ३हजार रुपये पगड़ी देकर प्राप्तकिया है किन्तु एकबार इतनी रकम का कड़वा घूँट भर लेने का लाभ उन्हें यह हुआ है कि किराया कम—अर्थात केवल ५५ रु० मासिक देना पड़ता है अन्यथा ऐसा ३ कमरों का घर वहां ३०० रु०मासिक में भी पाना संभव नहीं है। इस लोकैलिटी में बहुत से पंजाबी परिवार रहते हैं। बहिन बता रही थी कि डिपो से जो १७ रु० मन गेहूँ मिलता है वह केनेडा का कीड़े खाया होने से उन्हें ३२ रु० मन के भाव देसी गेहूं खरीद कर उसमें मिलाना पड़ता है। दूध की अब सरकार ने वहां अच्छी व्यवस्था कर दी है! बम्बई से कुछ दूर एक डेयरी फार्म खोल दिया है; वहां से बोतलों में बन्द दूध आकर १४ आने सेरके भाव सरकारी दुकानों पर लाईन लगाने पर बारी २ प्राप्त किया जा सकता है। सरकार के सभी दफ्तरों अथवा भवनों के बाहिर हिन्दी अक्षरोंमें अंग-रेजी और गुजराती सहित लिखे साईन बोर्ड सर्वत्र पाये गए, जिस का अर्थ यह लिया जा सकता है कि वहां हिन्दी अपनी जगह ले रही है।

वहां से फारिग होकर हम कुछ देर और बाजारों में घूमे। लगभग दो बजे बाद दोपहर

## *स्वास्थ्य-सुधार*

### ★तुलसी के चमत्कार★

**बच्चों के बुखार पर**

तुलसी के पत्ते बबूल की कोंपल अजवाइन देसी एक माशा सबको ढाई तोला पानी में पकालो जब चौथाई पानी शेष रह जाए तो मिसरी डाल कर पिलाएं।

**बच्चों के कान दर्द पर**

तुलसी के पत्तों का गर्म रस डालो एक दो दिन में आराम आजाएगा।

घर लौटे, थके हुए थे अतः सोगए! सांय ५ बजे उठे चाय आदि पीकर सायँ पुनः घूमने निकल गए। वर्ली में मि० कपूर से मिलनेगए। उनका धन्यवाद किया और रात को ९ बजे लौट कर भोजन किया और कुछ देर तक अपने नए होस्टसे वार्तालाप किया। हमारे ये नए होस्ट पटियाला के निवासी हैं। इतने सज्जन पुरुष से हमारी इससे पूर्व भेंट कभी न हुईथी। इन्होंने और मि० कपूर ने हमारी बम्बईमें जो खातिर दारी की उसकी मधुर स्मृति चिरकाल तक दिल में चुटकियां लेती रहेगी। दूसर दिन प्रातः साढ़े पांच बजे कपूर साहेब का ड्राईवर हमें कार में रेलवे स्टेशन तक छोड़ गया जहां पहुंच हमने ३२ रुपये १३ आने व्यय कर जालन्धर का तीसरे दर्जे का टिकट खरीदा और साढ़े ६ बजे चलने वाली पंजाब ऐक्सप्रेस में सवार होकर घरकी ओर रुख किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(सफा ३५ से आगे)

चोटियाँ दृष्टिगोचर हो रही थीं । २ मील और आगे बढ़ने पर आ पहुंचे कुफ़री । यहां बर्फ के दिनों में हिमाचल स्पोर्टस केन्द्र द्वारा बर्फ पर खेलें होती हैं ! इससे आगे है फागू जो ९००० फुट की ऊंचाई पर स्थित है. यहाँ का दृश्य इतना मनमोहक है कि कोई क्या वर्णन करे ? बीच में गांव और दोनों ओर बर्फ से ढकी चोटियां नजर आती हैं. अब बस उतराई पर थी.आगे पहुंचे ठियोग-यह ८ हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित है और शिमला से १८ मील दूर है. यहाँ से एक और सड़क निकलती है,इस सड़क पर फिर कभी चलेंगे । अभी तो कोटगढ़ जाना है । चार बज चुके थे. यहाँ भी पुलीस चौकी है, ब्लाक डिवेलपमेंट केन्द्र है । यहाँ बड़ा अच्छा कार्य हो रहा है । अब बस सीधी सड़क पर जा रही थी.लाफू घाटा होते हुए आ पहुंचे मलाना- शिमला से २८ मील दूर.पाँच बज गये थे. सड़क पर दोनों ओर लकड़ी के छोटे छोटे पोल खड़े थे जिन में मोटी लोहे की जंजीर थी !

यह मार्ग निश्चित समय पर खुलता है। उधर से आने वाली इधर और इधर से आगे जाने वाली बस उधर हो जाती हैं। यहां चाय पी आधा घण्टा रुक कर बस फिर आगे बढ़ी । सड़क यहां बहुत तंग है. तब आ पहुंचे शिलास पहाड़ी के नीचे हिमाचल कृषि विभागके आल विकास केन्द्र के खेत फैले हुए हैं। कुछ और आगे बढ़े किन्तु अब अन्धेरा छाने लगा था ४२ मील की यात्रा कर नारकण्डी पहुंच गए यह स्थान ९००० फीट से अधिक ऊंचाई पर स्थित है. चक्कर पर खड़े हो कर प्रकृति का सौंदर्य देखते बनता है.यहाँ बर्फीली ठण्डी वायु चलती है.यहाँ एक मन्दिर बना है.बस थोड़ी देर तक रुक कर फिर चल पड़ी. थोड़ी दूर जा कर उतराई आ गई. ४ मील पश्चात दो मार्ग हो गए। एक ऊपर चढ़ाई का जहां फिर कभी जाएँगे. नीचे चलकर आ पहुंचे सिध्दपुर। बस और आगे चल कर जरोल जा पहुंची-यह एक छोटा सा गांव है। इससे आगे है बरेड़ी और तीन मील की दूरी पर थानाधार। यहाँ बस खड़ी हो गई.रात्रि पड़ चुकी थी । यहां से कोटगढ़ तीन मील दूर है। ८ बजने को थे और जाना पड़ता है पैदल। यहीं रात काटने का निश्चय किया। प्रातः कोटगढ़ १ घण्टा में पहुंचा.चारों ओर सूखे दृक्ष ही वृक्ष नजर आए न पत्ते न फल। ये सेबों के बागीचे हैं। मई-जून में ये सूखे वृक्ष हरे भरे हो जाते हैं।

(क्रमशः)

★ मनुष्य संयोग का गुलाम नहीं परन्तु संयोग ही मनुष्य के गुलाम हैं ।

★ गरीबी के दुःखों में दबी हुई महानता धीरे-धीरे ही उदीप्त होती है ।

★ जिस मनुष्य ने संकट ही सहन नहीं किया वह संसार को क्या जान सकता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## सामने

अणुशक्ति के शान्ति कालीन प्रयोगों में से एक यह है कि बिना रेफ्रिजरेशन के खाद्य पदार्थ लम्बे अर्से तक सुरक्षित रखे जा सकेंगे। चित्र में माँस, रोटी, पनीर आदि वस्तुओं पर परीक्षण दिखाया गया है !

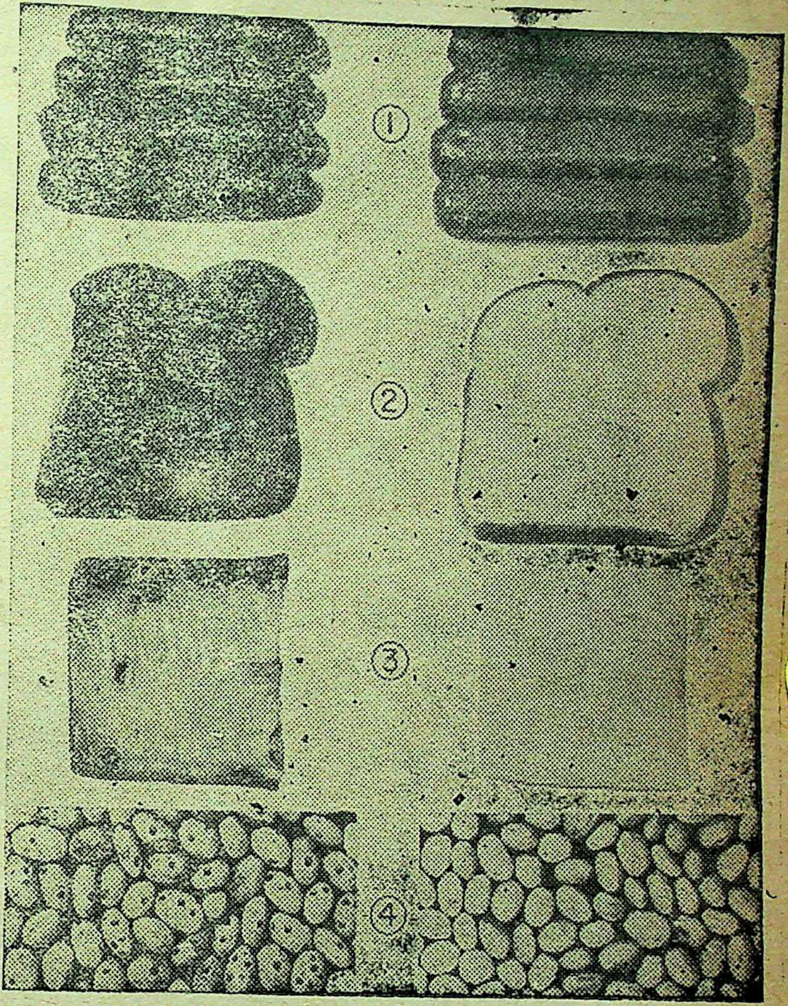


## नीचे

गत साल विश्व के कारखानों ने पूर्व वर्षों की अपेक्षा दुगना माल तैयार किया।

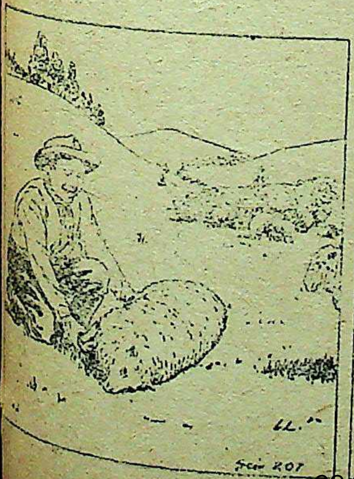

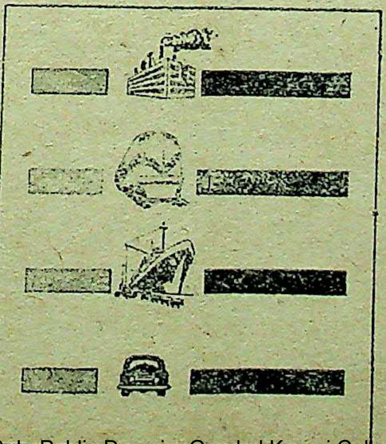

## सामने

वर्षा ऋतु में भेड़ों के शरीर का ऊन गीला होकर इतना भारी हो जाती है कि चिली में भेड़ें उसके बोझ से गिर पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## सचित्र समाचार

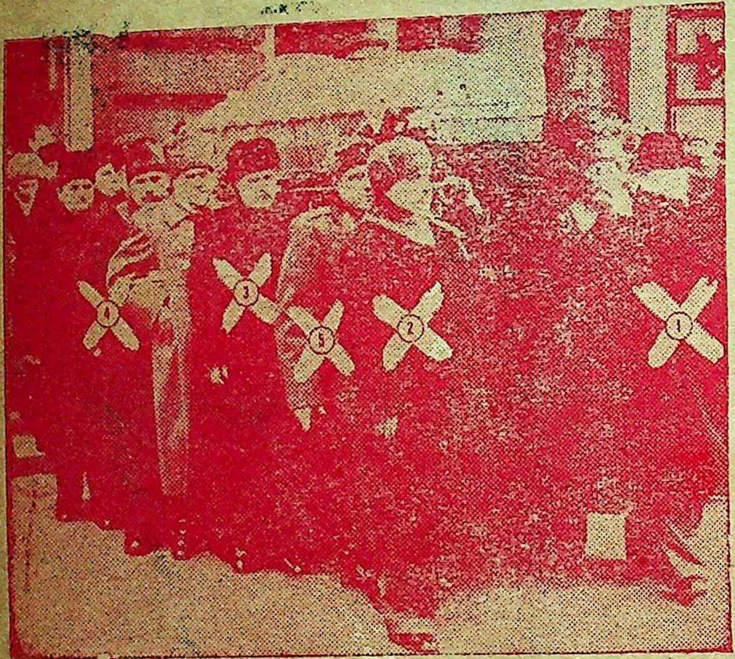

५ मार्च को स्तालिन की बरसी मनाई गई । वर्तमान अधिकारियों के वे लीडर भी कोपभाजन हो चुके हैं—जो कभी स्तालिन के साथी समझे जाते थे—इन में मालेनकोव, मोलोटोव, कागनोविच, जनरल वासिली स्टालिन नंबरवार चिह्नांकित हैं ।

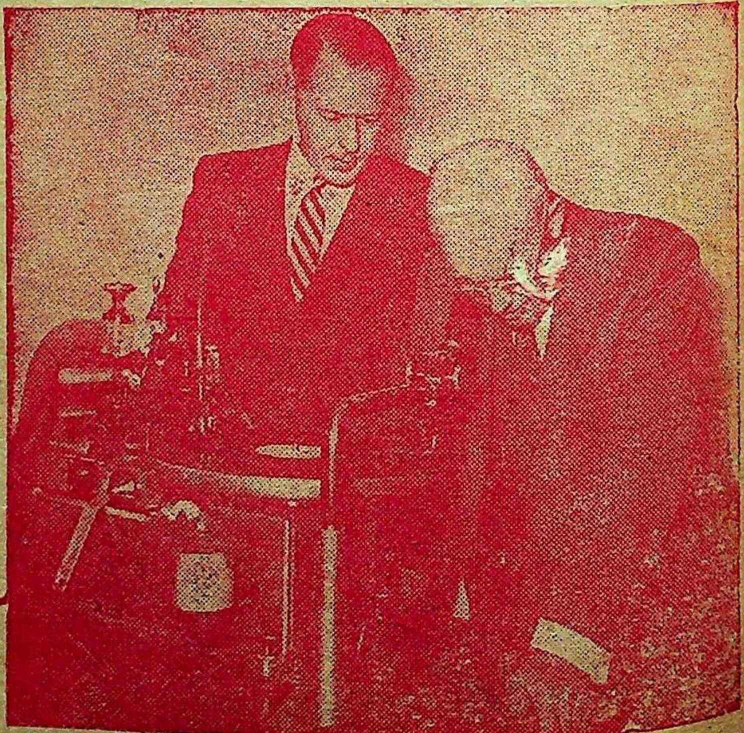

प्रेसीडेंट आईजन हावर 'वायस आफ अमेरिका' के १५वें वार्षिक समारोह पर अपना सन्देश ब्राडकास्ट करते समय । यह सन्देश ४३ भाषाओं में प्रसारित किया गया था ! उनके दाईं ओर आर्थर लार्सन डायरैक्टर यू० एस० इन्फार्मेशन एजेन्सी खड़े हैं ।

श्री एल० सी० हितैषी द्वारा वीर मिलाप प्रेस जालन्धर में मुद्रित तथा १३७ बहार बाग जालन्धर शहर से प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय

र्षिक मूल्य ७) | [ पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका ] | एक प्रति १० आने

७ सितम्बर '५८

सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी

विभाग द्वारा प्रमाणित।

## विज्ञान तथा वैज्ञानिक

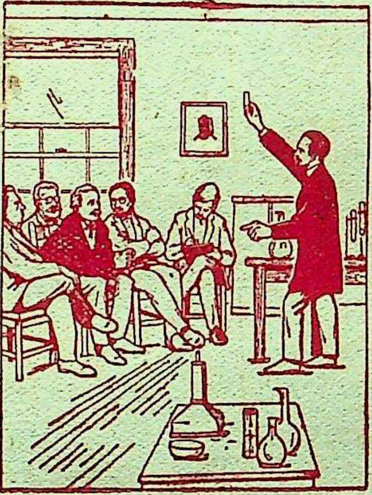

१९वीं शती में वैज्ञानिकों ने अनुभव किया कि दूसरे एलीमैंट्स के एटम्ज को सोने में परिवर्तित नहीं कर सकते क्योंकि सोना स्वयं आधारभूत एलीमैंट है ।

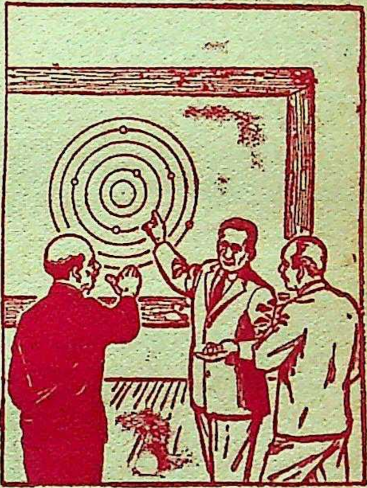

१९१३ में डेनिश वैज्ञानिक श्री नील्ज बोहर कई थ्यूरियों को मिला कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हर छोटा सा 'एटम' सोलर सिस्टम के समान है ।

THE "Prakash"

Editor: L.C. Hitashi

JULLUNDUR CITY.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

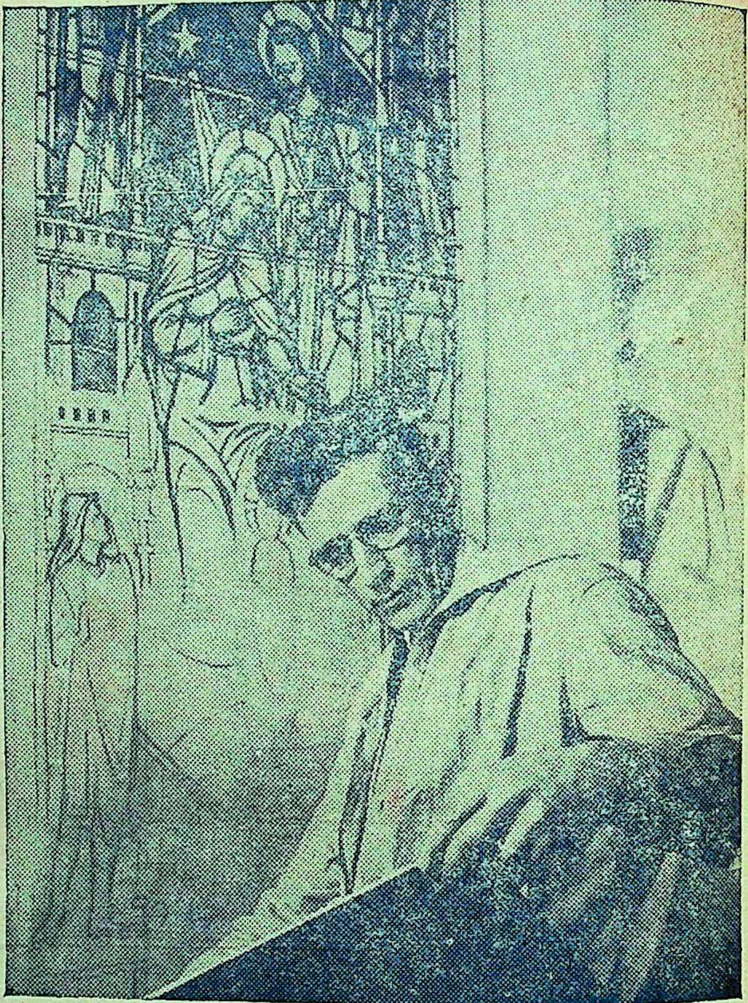

सामने

शीशे पर चित्रकारी की कला हजार साल पुरानी है किन्तु अमेरिका में इसे नए सांचे में ढाल कर लोक प्रिय बनाया जा रहा है। चित्र में एक कलाकार गिरजाघर में एक धार्मिक चित्र बना रहा दीख पड़ता है।

नीचे

अणु शक्ति के शान्ति कालीन विविध उपयोगों में से रोगियों का इलाज भी एक है।

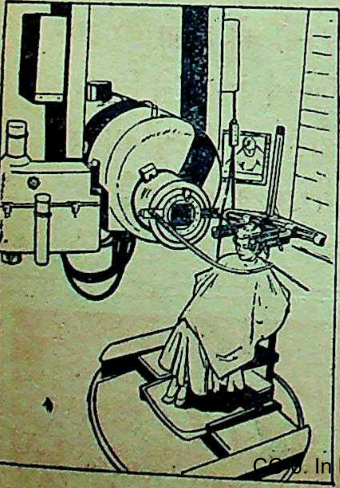

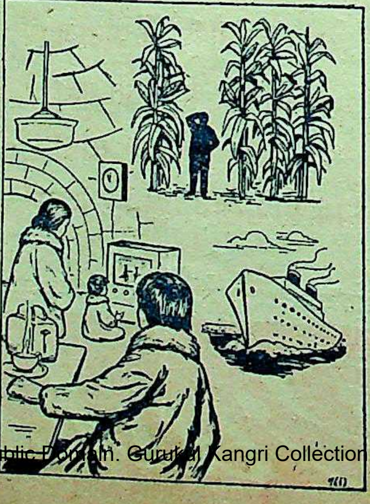

सामने

वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी है कि अणु शक्ति द्वारा भविष्य में बड़े २ चमत्कारी काम सम्पन्न होंगे। यहां तक कि सहरा भी हरे भरे खेतों में बदले जा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पँजाब उत्तर प्रदेश बिहार हिमाचल पैप्सु भूपाल और हैदराबाद के स्कूलों केलिए स्वीकृत

# ★ प्रकाश ★

॥ पन्जाब की एकमात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका ॥

वर्ष ५३ क्रमांक ५६ | जालन्धर ७ सितम्बर '५८ | भाग ६ हिन्दी अँक ६

## कहां क्या है ?

कविताएं


शांति सन्देश — श्री आनन्द मिश्र — पृ० ३
हमारी राष्ट्रभाषा — डा० सूर्यदेव — १०
गीत — श्री मोहनलाल विप्लव — ११
गीत — श्री कृष्ण बिहारी लाल — १८
मेरे प्रियतम पंजाब देश — श्री परमानन्द — २१
हिंदी का युग — श्री महावीरप्रसाद — २३
उषा आमन्त्रण — श्री शालिहास — २५
मौला बख्श (उर्दू) "इर्शाद" — २७
राजा जी मोरे — शालिहास — ३४


कहानियाँ


मुरझाई कली खिल उठी 'सुदर्शन' — १२
तब चावल पकाना कोई न जानता था — ३२


लेख


यशस्वी जीवन ही सार्थक है — ७
बैलों की शक्ति से बिजली — ८
चन्द्रलोक की यात्रा — १०
हिंदी की आप बीती — १६
सूर्य की शक्ति से मकान ठण्डा — २४
ऐटम बम [वार्तालाप] — २८
मन की बात जानने वाली मशीन — ३१
तथा स्थायी स्तम्भ


—★—

## शान्ति सन्देश

—श्री आनन्द मिश्र

रण भेरी बन्द करो अब मेरी धरती पर,
संहारों के ये गीत न गाए जाएंगे ।
तलवार अब लोहू से नहीं नहाएगी-
बे मौसम नन्हे फूल नहीं मुरझाएंगे ।
धरती ने करवट बदली डोला आसमान,
सम्हलो सम्हलो भूगोल बदलने वाला है,
खौलने लगा है हिंद महासागर का जल
मन्थन से कोई रत्न निकलने वाला है ।
गंगा की लहरों में यह कैसी सिकुड़न है !
गिरिराज हिमालय ने क्यों शीष उठाया है !
इतिहास खुल गए हैं किस की आगवानी में
कारवाँ शाँति के दूतों का बढ़ आया है ।
नेहरू के फौलादी हाथों की यह मशाल,
रोशनी दे रही है जग के अन्धियारे को,
हिंसा के मेघों लील नहीं पाओगे अब;
जगमगा रहे मानव के भाग्य सितारे को ।
दुनिया देखे खूनी एटम से टकराने,
हम पंचशील की सुदृढ़ ढाल लेकर आए,
निश्चय के दृढ़ हाथों में बाधा के पहाड़,
समता के बल पर हम सब आज उठा लाए ।
कैसा विरोध, कैसी विपदाएं; कैसा गम ?
यह गीत शाँति का जग भर को गाना होगा
सौ कवच भेद कर भी विनाश के आज हमें
अलका को धरती पर उतार लाना होगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# शिक्षा समाचार

—यूनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन के अध्यक्ष श्री देशमुख ने एजुकेशनल फण्ड में दस करोड़ रुपये की प्रस्तावित कटौती का विरोध किया है।

—श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख ने चण्डीगढ़ में प्रमुख स्त्री-शिक्षा विशेषज्ञों से भेंट कर स्त्री शिक्षा विशेषज्ञों से भेंट कर विचार-विनिमय किया।

—पाटली (गुड़गाँव) के सर्वोदय हाई स्कूल में शिक्षा मन्त्री श्री अमरनाथ विद्यालंकार की अध्यक्षता में एक शिक्षा सम्मेलन हुआ।

—३० अगस्त को 'यूनेस्को रिजनल सैमिनार आन एजुकेशन' की जनरल कमेटी ने देहली में अपने एक अधिवेशन में सिफारिश की है कि दक्षिण पूर्व एशिया मे अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

—शैडूलकास्ट जातियों के छात्रों को छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दिए जाने के लिए ७ करोड़ रुपए स्वीकार किए गए हैं।

—हांग काँग में कम्युनिस्टों द्वारा चलाया जा रहा स्कूल ब्रिटिश सरकार द्वारा बन्द कर दिया गया है।

केन्द्रीय सरकार ने पँजाब में स्त्री शिक्षा के प्रसार पर ३ लाख रुपए व्यय करने का स्वीकृति दी है।

—हैमिल्टन कालेज (अमेरिका) के प्रो० जौहन बिलथ और जौहन जेकबसन ने एक ऐसी मशीन तयार की है जो लाजिक के टीचर का कार्य कर सकेगी।

—कोठाकोहर और सोवार के इलाके के गवर्नमेंट स्कूलों का जबसे स्थापित हुए इस वर्ष पहली बार निरीक्षण किया गया है।

# समाचार सार

—श्री एन० वी० गाडगिल १६ सितम्बर से पंजाब के नए गवर्नर नियुक्त हुए हैं।

—अमेरिकी वैज्ञानिक सूर्य लोक में स्पेसशिप भेजने की योजना बना रहे हैं।

—विदेशों को भारतीय वस्तुओं के निर्यात में ५० करोड़ रुपये की कमी हो गयी है

—भारत को अमेरिका से दूसरी पँचवर्षीय योजना की सहायतार्थ ३५० मिलियन डालर मिलने की आशा है।

—चीन की तोपें च्याँग काईशेक सरकार अधीनस्थ टापू क्युमाय पर कई दिनों से गोले छोड़ रही हैं—आक्रमण की संभावना है।

—अहमदाबाद में महागुजरात परिषद, जयपुर में वकील तथा मध्यप्रदेश में सोशलिस्ट सत्याग्रह कर रहे हैं।

—राजौंद (करनाल) की सीट के उपचुनाव में २१ उम्मीदवार खड़े हैं।

—ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने ऐसी मशीन बनाने का निश्चय किया है जो डिक्टेशन पर उसका अभीष्ट भाषा में अनुवाद कर सकेगी।

—हिमाचल कौंसिलने विशाल हिमाचल स्थापित किये जाने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास किया है—किंतु केन्द्रीय सरकार इसके पक्ष में नहीं है।

—भारतीय सरकार ने दो सौ वस्तुओं पर से अंकुश उठा लिया है।

—भारत के वित्तमन्त्री श्री मुरार जी देसाई दूसरी पँचवर्षीय योजनाओं के लिए विदेशीय सहायता प्राप्तकरने केलिए लण्डन और अमरीका गये हैं।

—ज्वालामुखी से देहली गैस ले जाने के लिये पाईप लाईन बिछाई जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# अपनी बोली 'च

बिजली कढिया पानी

(१) साडे देश'च किन्नी कु अज्ञानता है इस दा ताजा उदाहरण दस दे हाँ। मध्य प्रदेश दे किसानां ने इक डैम दा नदी राहीं पुज्जिया पानी अपने खेतां दी सिंचाई लई एस करके लैन तों इन्कार कर दिता कि इस चों ते बिजली कढ़ लीती गई ए, हुन इस दा की लाभ ? ओहनाँ नूं सरकार दे कृषि विशेषज्ञाँ ने बहुतेरा समझाया पर ओहना दे पल्ले कुझ नहीं पिया ! ओहनां ने दलील दित्ती कि जिवें दुध चों मक्खन कढ लैन मगरों सप्रेटा पीन दा कोई लाभ नहीं ऐसे तरहाँ बिजली कढिया पानी देन नाल खेताँ नूं कोई फायदा नहीं पहुँच सकदा। हार के सरकारी अफसराँ ने आबियाना अधा करदित्ता ते विश्वास दवाया कि जे एस पानी दा ओहनां दे खेताँ नूं कोई लाभ न पुजिया तां एह अधा आबियाना भी वापस कर दित्ता जावेगा। दसो, है अजेही अज्ञ नता होर किसे देश विच ?

(२) पिछले दिनीं इक 'सावनी' नूं इक भक्त नूं धोखा देन दे जुर्म विच फड़िया गिया ए। न ते ओह साधनी ए, ते न ही साध बल्कि इक क्लर्क है जेहड़ा जनाने भेस'च औरताँ'च कीर्तन करदा हुन्दा सी। इक भक्त ने अपने घर सद के कीर्तन करवाया। पर ओह दा ला के कीमती साड़ियाँ ते ढेर सारा नामा लै के उड़न्छू हो गया। पर उड़ के जा किथे सकदा सी--फड़ लीता गया।

एह है इक होर उदाहरण साडे लोकां दी अज्ञानता दा।

एह घटना कोई नवी नहीं, एहो जेहियां घटनावां साडे देस'च थांह थाँह ते रोज घटदीआं हन पर साडे देसवासी हन कि एहनां तां कोई सबक नहीं लैंदे जिसदा नतीजा एह है कि नित नवें ठग पैदा हुन्दे रहन्दे ने।

--भाईया रेलू।

# फूल और कांटे

[ पाठकों के प्रश्नों के उत्तर ]

प्र०–पाकिस्तान के एक मुस्लिम लीगी नेता ने कहा है कि 'हमें भारत और वहाँ से आने वाली हर चीज से घृणा करनी चाहिये' क्या फरमाते हैं पँ० नेहरू इस मामले में ?

–भारत भूषण; हिसार

उ०–वह तो शत्रु को भी मित्र की नजरसे देखते हैं अतः वह क्या कहेंगे ? हां हमारी सम्मति जानना चाहो तो 'चाहिये' के आगे केवल इतना बढ़ाना काफी होगा–यदि उसका मूल्य पाकिस्तान को देना पड़े !

प्र०–श्री राजगोपालाचारी और मिस फातिमा जिन्ना की अपने अपने देश में क्या स्थिति है ?

–राजकुमारी देहली।

उ०–ठीक वही जो किसी घर में बूढ़ी सास और बेकार श्वसुर का प्रायः देखने में आती है।

प्र०–पाकिस्तान अमरीका से युद्ध सामग्री प्रसाद स्वरूप पा रहा है–हमें भी मिल सकती है तो हम क्यों नहीं लेते ? –सुशीला, मेरठ।

उ०–इसलिये कि 'पाकिस्तान पाकिस्तान है और भारत, भारत !' यह पं० नहरू का फरमान है।

प्र०–क्या ईमानदारी से जीवित रहनो संभव है ? –कुन्दनलाल अमृतसर।

उ०–जीना तो एक तरफ ईमानदारी से मरना भी संभव नहीं, क्या समझे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सम्पादकीय विचार

## समस्या और उसका हल

पंजाब का भाषा समस्या इतनी जटिल नहीं जितना कि इसे बनाया जा रहा है। जब सभी मानते हैं कि पंजाब द्वि-भाषा भाषा राज्य है तो इसे ऐसा घोषित कर प्रत्येक को हिन्दी अथवा पंजाबी स्वेच्छानुसार पढ़ने की छूट दे दी जाए तो सारा झगड़ा एक क्षण में समाप्त हो सकता है। यदि सरकार यह चाहती है कि सरकारी मुलाज़िमों को दोनों भाषाएं आनी चाहिएं तो वह सरकारी नौकरी के लिए ऐसी कोई शर्त लगा सकती है या मैट्रिक की परीक्षा में दोनों भाषाएँ अनिवार्य की जा सकती है। यह हल इतना सरल युक्ति-युक्त और बुद्धिसंगत है कि कोई लोक-सरकार इस से इन्कार नहीं कर सकती।

## समस्य क्यों हल नहीं होती ?

समस्या हल होने में नहीं आती, मगर क्यों ? इसलिए कि जिनके हाथों में सत्ता है, वे वास्तव में इसे हल करना नहीं चाहते या किसी कारण विशेष से कर नहीं सकते। वह कारण किसी से छिपा नहीं है—स्पष्ट शब्दों में वह है 'कांग्रेस अकाली गठजोड़'। किंतु अब सरकार के लिए राहे-फरार नहीं रही। उसने उर्दू भाषा भाषियों के लिए जब उर्दू माध्यम द्वारा अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने की सुविधा देने की घोषणा कर दी है तो वह किस तरह हिंदी भाषा-भाषियों को अपने बच्चों को हिन्दी में शिक्षा दिलाने के अधिकार से वंचित कर सकती है ?

## कालेजों में रात्रि-श्रेणियां

पंजाब यूनिवर्सिटी ने कालेजों को कुछ शर्तों के साथ रात्रि-श्रेणियाँ खोलने की अनुमति देकर एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की है। किन्तु उसने जहाँ सभी विषयों की क्लासें खोलने की छूट नहीं दी वहां डयोढ़ा शुल्क चार्ज करने करने की ढील देकर गुड़ को गोबर कर दिया है। जब यह स्पष्ट है कि रात्रि की क्लासों में वे ही युवक आएंगे जो आर्थिक कठिनाइयों के कारण दिन में जीविकोपार्जन करने पर विवश हैं, तो उन्हीं से डयोढ़ी फीस लेना न्यायोचित नहीं हो सकता। आशा है कि यूनिवर्सिटी के अधिकारी उपरोक्त दो त्रुटियों को दूर कर देंगे।

## देश के इंजिनीयर और वैज्ञानिक

आधुनिक भारत को इंजिनीयरों और वैज्ञानिकों की नितांत आवश्यकता है—यह बात बार बार बड़े जोर के साथ कही जाती है किन्तु यह एक नग्न सत्य है कि प्रायः सभी इंजिनीयरों और वैज्ञानिकों को यथोचित स्थान नहीं मिलता और उन्हें भी बेकार रहना पड़ता है। इस ओर पण्डित नेहरूका ध्यान गया है। उन्हों ने एक ऐसा फण्ड खोलने का सुझाव दिया है जिससे इंजिनीयरों और वैज्ञानिकों को उनकी बेकारी की अवधि में २०० से ६०० रु० मासिक तक अलाऊँस दिया जायेगा। यह सुझाव श्लाघ्य है। आशा करनी चाहिए कि ब्रिटेन की तरह यहां भी प्रत्येक बेकार को सरकार काम देना अपना उत्तरदायित्व समझेगी—और ऐसा न करने पर उसे बेकारी का भत्ता देगी।

## उच्च शिक्षा के लिए ऋण

लोकसभा में एक प्रस्ताव पेश है कि जो युवक धनाभाव के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर से वंचित रह जाते है उनकी सहायेता करना सरकार का कर्त्तव्य है। ऐसे युवकों का केन्द्रीय और राज्य सरकारें नाम मात्र सूद पर ५ वर्ष तक १५० रु० मासिक के हिसाब से ऋण दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# यशस्वी जीवन ही सार्थक है !

[ श्री रघुनाथ प्रसाद जी देहली ]

यशस्वी जीवन व्यतीत करना और मरने के बाद अक्षय कीर्ति छोड़ जाना जीवन की बड़ी सार्थकता समझी जाती है। कीर्ति जीवन की सुगन्धि और चाँदनी होती है जिनसे मनुष्य सुवासित और प्रकाशित रहता है। अतः प्रत्येक प्राणी को यशस्वी जीवन व्यतीत करना चाहिए और संसार से विदा हो जाने पर उसका यश बना रहना चाहिये। इस प्रकार वह मर कर भी जीवित रहता है।

यश सौभाग्य और शक्ति का सूचक होता है। यश का सबसे बड़ा लाभ यह है कि मनुष्य का नाम उन लोगों में पहुँच जाता है जो उससे परिचित नहीं होते और यदि उसमें युग पुरुष बनने की क्षमता होती है तो वह युग पुरुष बन जाता है। युग पुरुष वे व्यक्ति बनते हैं जो यश और कीर्ति की चिंता किए बिना परीक्षणों और प्रलोभनों से ऊपर रह कर अपने कर्त्तव्य कर्म में निरत रहते और जिनके प्रयत्न प्राणी मात्र के हित सम्पादन की दिशा में प्रेरित रहते हैं। कीर्ति का मार्ग सरल नहीं अपितु बीहड़ होता है। निष्काम भाव से परहित में लगे हुए एक व्यक्ति की कीर्ति को त्याग और बलिदान स्थायी रूप दे देते हैं। जब हत्यारे की गोलीसे महात्मा लिंकन के प्राण पखेरू उड़ गए तब उनके एक परम विरोधी राजनीतिज्ञ ने अश्रु पूर्ण नेत्रों और रुन्धे हुए हृदय से यह ठीक ही कहा था कि 'अब लिंकन पुरुष बन गए।' कीर्ति ऐसे महापुरुषों के पीछे चलती है परन्तु वे उसकी परवाह नहीं करते। तभी कहा जाता है कि कीर्ति सदैव अविवाहित रहती है क्योंकि श्रेष्ठ जन उस का वरण नहीं करते और अयोग्य जनों को वह वरण नहीं करती।

कीर्ति प्राप्त महापुरुषों के समक्ष उद्देश्य मुख्य होता है कीर्ति गौण। क्या आदि कवि ने अपनी अमर रचना (रामायण) यश प्राप्ति की कामना से की थी ? क्या मिल्टन ने ख्याति की प्राप्ति के लिए अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की थीं उनके जीवन की महत्वाकाँक्षा यह थी कि 'मैं अपने पीछे ऐसी कृति छोड़ जाऊं जिसे लोग जान बूझ कर मिटाना चाहें तब भी वह मिट न सके।' वह समय आया जब कैटों यह कहने के लिए विवश हुआ कि आने वाली सन्तान यह पूछेगी कि मिल्टन का स्तूप क्यों नहीं बनाया गया ?

सच्ची कीर्ति का आधार गुण होते हैं परन्तु बहुत से महत्वाकांक्षी व्यक्ति बिना गुणों और योग्यता के ही यश की सोपान पर चढ़ने की सोचते और यत्न करते हैं। इसके लिए वे उचित अनुचित, या ग्राह्य अग्राह्यका ध्यान तक नहीं रखते न ही वे अपनी अन्तरात्मा की स्वीकृति या अस्वीकृति की ही चिंता करते हैं। यदि वे अपनी धन सम्पत्ति वा हथकंडों से कीर्ति प्राप्त करने में सफल भी हो जाते हैं तो उनकी प्यास अधिक बढ़ जाती है परन्तु जिस प्रकार खारा पानी पीने से प्यास नहीं बुझती। उसी प्रकार नाम की चाह बढ़ने लगती है। लोग ऐसे व्यक्तियों की प्रशंसा करते है परन्तु यह न भूल जाना

[शेष पृष्ठ १० पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# बैलों की शक्ति से बिजली पैदा की जाने लगी!

ऐतिहासिक कुतुब मीनार के समीप खानपुर नामक एक छोटा सा गाँव भारत के देहात के लिए ऐतिहासिक महत्व धारण करता जा रहा है। इस गांव की जनसंख्या ६ सौ है। यहां एक प्राचीन साधन का आधुनिक उपयोग किया जा रहा है। बैलों की सहायता से बिजली उत्पन्न की जा रही है।

खानपुर के इस बिजली घर में न तो विशाल चिमनियां हैं और न ही ट्रांसमिशन यन्त्र आदि। ८ बैल; एक प्राचीन कुआँ और बिजली पैदा करने तथा जल खींचने वाला एक अमेरिकी यन्त्र कुल मिला कर यही सब कुछ है। ४ अमेरिकी कारीगर इस यन्त्र का संचालन करते हैं और थोड़े से ग्रामीण लोग बिजली उत्पन्न करने तथा जल निकालने के इस नये कार्य के लिए अपने बैलों को सधा रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने इस अद्भुत परीक्षण को देहात में एक क्रांति का नाम दिया है। कुएँ के ऊपर लगा बैलों द्वारा संचालित उच्च कोटि का पम्प युक्त बिजली-उत्पादक यँत्र अमेरिकी फर्मों ने प्रदान किया है। पम्प तथा बिजली उत्पादक यँत्र अलग हैं, किंतु दोनों का एक ही विधि द्वारा सँचालन होता है। जैसे ही बैल गोल चक्कर काटते हुए यँत्र का सँचालन करते हैं बिजली उत्पादक यँत्र बिजली उत्पन्न करने लगता है। सँचालन यँत्र जो पम्प और बिजली उत्पादन यँत्र को गति प्रदान करता है, बैलों के धक्के को अत्यधिक तेज रफ्तार में परिणत कर देता है। संचालन-सिद्धाँत बाइसिकल के सिद्धाँत के समान है जिसके अंतर्गत पैडल स्प्रोकेटों को गति प्रदान करता है तथा ये बाइसिकल को धकेलते हैं। यहाँ पैडल का काम बैल देते हैं तथा बाइसिकल के स्थान पर बिजली-उत्पादक यँत्र का संचालन होता है।

इस यत्र के सँचालन-अधिकारी श्री स्टीवन्स ने हाल में इस योजना को देखने के लिए आए हुए सम्पादकों की एक टोली को बताया कि बैल ४.५ किलोवाट बिजली उत्पन्न कर सकते हैं। इतनी बिजली खानपुर के १५० घरों तथा गलियों में प्रकाश करने के अलावा छोटे मोटे घरेलू कारखाने का भी सँचालन कर सकती है।

## पर्याप्त बिजली

बैल केवल बिजली ही उत्पन्न नहीं करते वे इतना (१५० गैलन प्रति मिनट) जल भी निकालते हैं जो खेतों की सिंचाई करने तथा सारे गांव को पीने का शुद्ध पानी मुहैया करने के लिए काफी है। प्रदर्शन के उद्देश्य से खानपुर के मध्य एक ऐसा तालाब तैयार किया जा रहा है, जिसमें २४००० गलन जल समा सके।

प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद, मंत्रिमण्डल के सदस्यों ने इस योजना की सराहना की है।

श्री स्टीवन्स की सब से अधिक महत्वपूर्ण वस्तुओं में पम्प और बिजली उत्पादक यँत्र सम्मिलित है। भारत की जनता की सेवा करने की दृष्टि से पम्प टैक्सास गैस ट्राँसमिशन कम्पनी द्वारा तैयार करके दिया गया। कम्पनी ने ट्रेसी पार्क नामक अपने एक इंजिनियर की सेवाएँ भी अर्पित कीं, जिसने खानपुर में यंत्र को स्थापित किया है। भारत की जनता की सेवा करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



के उद्देश्य से ही जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी ने बिजली-उत्पादक यन्त्र तैयार किया। खानपुर में इसके आने से पूर्व टेक्सास में एक फार्म पर इस यँत्र के छोटे नमूने की परीक्षा की गई। वहां बैलों की केवल एक जोड़ी ने यन्त्र को चलाया।

बैलों से खींचे जाने वाला यह पम्प एक मिनट में १५० गैलन पानी निकालता है। यह मात्रा परम्परागत रहट से दुगुनी है। इस पम्प की जल निकालने की अधिकतम क्षमता ३०० गैलन प्रति मिनट है।

चूंकि ३०० गैलन प्रति मिनट जल खींचना गाँवों के आम कुओं की क्षमता से बहुत अधिक है इसलिए प्रदर्शनार्थ खानपुर के कुएं के समीप एक सहायक तालाब बनाया गया है और उसे भूमि के नीचे कुएं से मिला दिया गया है। इस की सहायता से पम्प से आवश्यक बहाव में जल निकलता रहेगा। प्रदर्शन के उद्देश्य से ही कुएं के निकट दो कुण्ड बनाये गये हैं—एक सिंचाई के लिए और दूसरा घरेलू काम-काज के लिये जल उपलब्ध करने के निमित। सिंचाई सम्बन्धी जल कुण्ड को किसी भी समय जल से भरा जा सकता है और किसान लोग जब चाहे इस सँचित जल को अपने खेतों की सिंचाई के लिये उपयोग कर सकते हैं। इस तालाब में मछलियाँ भी पाली जा सकती हैं।

पम्प-बिजली उत्पादक यँत्र में लगे हुए स्विच को बन्द कर देने से बैलों द्वारा जल निकालने के स्थान पर बिजली पैदा की जासकती है। इस प्रकार सिंचाई के लिए जल निकालने के स्थान पर गलियों तथा घरों को प्रकाशित करने और लकड़ी के कारखाने में यँत्रों को चलाने के लिए बिजली पैदा करने का कार्य बैलों से लिया जा सकता है। इस प्रकार पैदा होने वाली बिजली को बैटरियों में जमा किया जा सकता है। जिन की सहायता से निकटवर्ती कारखाने को बिजली दी जा सकती है। यह कारखाना गाड़ी के पहिये के टुकड़े तथा अन्य फर्नीचर तय्यार कर सकता है। इस कारखाने की विशेषता यह है कि यह ग्रामीण लकड़ी से तय्यार किया गया है और इस पर १५;००० रुपये खर्च आए हैं।

कारखाने के समीप एक लुहारखाना है। इसमें बैलगाड़ी के पहियों पर लोहा चढ़ाने, औजारों की मरम्मत करने तथा लुहारी के अन्य सामान्य कार्य हुआ करेंगे। बढ़ईखाने तथा लुहारखाने की स्थापना श्री बिलबर्ट हैसल द्वारा की गई है।

पम्प तथा बिजली-उत्पादक यन्त्र भारत में २५,००० रु० की लागत से तय्यार किये जा सकते हैं। बड़ी संख्या में यँत्र तय्यार किये जाने पर १५,००० रु० और शायद इससे भी कम लागत आये।

एक ने कहा कि यह बहुत महंगा पम्प है। इसके उत्तर में स्टीवन्स ने कहा कि अकेला पम्प ही एक वर्ष में अपनी लागत पूरी कर देगा इसकी सहायता से दुगुनी तिगुनी फसलें और ऐसी सब्जियां आदि उत्पन्न की जा सकेंगी, जिन के लिए काफी सिंचाई की आवश्यकता होती हैं।

गांव के अन्तिम छोर पर केंन्सास के मिट्टी विशेषज्ञ श्री केंनेथ इवेन्ज द्वारा एक उन्नत प्रकार का भट्टा लगाया गया है। इस भट्टे में अत्यधिक ताप देकर ईंटें पकाने की नवीनतम विधियों से काम लिया जाता हैं। इस भट्टे की ईंटें स्थानीय सामान्य ईंटों की अपेक्षा अधिक बड़ी तथा अधिक टिकाऊ हैं। श्री स्टीवन्स ने भारतीय मिट्टियों के नमूने अमरीका भेजे थे और उनकी अमरीकी प्रयोगशालाओं में जांच की गई थी। परीक्षाओं से यह मालूम हो गया कि ईंटों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पकाने के अच्छे तरीके को अपना कर भारतीय मिट्टियों से स्थानीय ढंग से बनाई जाने वाली ईंटों की अपेक्षा १० गुना अधिक मजबूत ईंटें तैयार की जा सकती है। इस भट्ठे में प्रतिदिन १२०००० ईंटें तैयार करने की क्षमता है।

खानपुर की बृहद्देशीय योजना, जिसके लिये फोर्ड प्रतिष्ठान की ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की गई है, उस समय तक परीक्षण अवस्था में जारी रहेगी जब तक इंजिनियरिंग समस्याएँ हल नहीं हो जाएँगी। खानपुर में हुए प्रारम्भिक परीक्षण यह सिद्धाँत सिद्ध करने में बहुत ही संतोषजनक रहे हैं कि बैल विजली उत्पन्न कर सकते है और बड़ी मात्रा में जल निकालने वाले पम्प को चला सकते हैं। जब इंजिनियरिंग-कार्य समाप्त कर लिया जाएगा, उस समय श्री स्टीवन्स ऐसे पम्प एवं बिजली उत्पादक यन्त्र का नमूना तैयार करना चाहते हैं जो भारत के लोगों के लिए यहीं तैयार किए जा सकें। भारत के गांवों की प्रगति में उनका यही योग होगा।

# हमारी राष्ट्रभाषा

डा. सूर्यदेव साहित्यलंकार; एम.ए. डी.लिट् अजमेर

राष्ट्र-भाषा राष्ट्र का जाज्वल्य-जीवन-प्राण है।
राष्ट्र-भाषा राष्ट्र के संकल्प का सँत्राण है॥
राष्ट्र-भाषा से सदा ही राष्ट्र का कल्याण है।
राष्ट्र-भाषा-रहित सारा राष्ट्र ही म्रियमाण है॥

राष्ट्र-भाषा ही बने नित राष्ट्र हित संजीवनी।
सँगठन के सूत्र में बांधे जनों की जीवनी॥
मृतक तन में प्राण फूँके शक्तिकी स्रोतस्विनी।
राष्ट्र-गौरव को प्रगति दे तीव्रतर तेजस्विनी॥

शब्द-सरिता बह रही जिस में शतद्रू-सागरी।
सर्व-स्वर व्यँजन विभूषित अमित अभिनव आगरी
ज्ञान-गुण-गर्भित, सुगौरव-वारि-गरिमा-गागरी
शक्ति किस की है कि जो हम से छुड़ाये नागरी॥

राष्ट्र-भाषा की विजय हो, राष्ट्र-ध्वजका मान हो
विश्व में गूँजे हमारा राष्ट्, 'जन-मन' गान हो
आर्य सँस्कृत का सदा सँसार में सम्मान हो।
कीर्तिमय बनकर चमकता राष्ट्र 'सूर्य' समान हो॥

[पृष्ठ ७ का शेष]

चाहिए कि धूल और तिनके जल्दी ही पृथ्वी से उड़कर आकाश में पहुंच जाया करते हैं, झूठी कीर्ति प्राप्त करने वाले को तूफान का सदैव भय सताए रहता है। बड़े आदमियों की रीति नीति तो यह है कि वे अपनी सच्ची प्रशंसा से भी दूर भागते हैं। एक बार लियेन्स नगर के विद्वानों ने एक लेख के लिए पुरस्कार की घोषणा की। उस समय नेपोलियन युवक थे। उन्हों ने भी प्रतियोगिता के लिए लेख भेजा और उनका लेख ही प्रथम पुरस्कार के योग्य माना गया। सम्राट होने पर नेपोलियन को यह बात भूल चुकी थी किन्तु उनके मन्त्री टेलीरांत ने एक विशेष व्यक्ति को भेज कर लियेन्स से उस लेख की मूलप्रति मंगाई। लेख को सम्राट के आगे रख कर उसने हँसते हुए पूछा—'सम्राट इस लेख के लेखक को जानते हैं?' टेलीरांत को आशा थी कि उसके इस कार्य से सम्राट उस पर खुश होंगे और वह पुरस्कार पाएगा किंतु नेपोलियन ने लज्जित हो कर सिर झुका लिया और लेख को उठा कर जलती अंगीठी में डाल दिया।

यदि हमारे काम यश के योग्य होंगे तो वह हमें अवश्य मिल जाएगा। यदि हम पात्र न होंगे तो हम बलात यशस्वी कभी नहीं बन सकते। बुरे कर्मों से प्राप्त प्रशंसा शीघ्र ही नष्ट हो जाने वाली वस्तु है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# ★ चन्द्रलोक की यात्रा ★

[ श्री वी० शारोनोव ]

आज जबकि कृत्रिम भू-उपग्रहों के निर्माण के फलस्वरूप वायु रहित बाह्य व्योम में उड़ानें भरने की समस्या कल्पना विलास और कोरे सिद्धाँत तक सीमित न होकर प्राविधिक विकास एवं व्यावहारिक उड़ानों के स्तर पर आ गयी है, चन्द्रलोक की यात्रा एक वास्तविकता बन गई है।

यात्रियों द्वारा चन्द्रलोक की उड़ानें भरना और वहां से फिर वापिस आना भविष्य की बात है। तात्कालिक समस्या मानव-निर्मित-ब्रह्माण्डगामी वस्तु को चन्द्रलोक में भेजने की है जो पहिले दो स्पुतनिकों की तरह ही वापिस नहीं आयेगी। उदाहरणार्थ यह वस्तु कृत्रिम भू-उपग्रह हो सकती है जो पृथ्वी से छोड़े जाने पर चन्द्र-लोक के इर्दगिर्द चक्कर लगायेगी।

ऐसा प्रतीत हो सकता है कि यह समस्या भी उन व्यावहारिक सम्भावनाओं से बहुत दूर है जो आज हमारे सामने हैं क्योंकि तीसरा स्पुतनिक पृथ्वी से १८८० किलोमीटर से अधिक दूर नहीं है जबकि चन्द्रमा की दूरी ३८४,००० किलोमीटर है।

इसमें सन्देह नहीं कि दूरी का अन्तर विशाल मालूम होता है किंतु सब से मुख्य बात दूरी नहीं वरन् वह रफ्तार है जो ब्रह्माण्डीय राकट उड़ान के दौरान अपने में विकसित करता है।

जैसाकि हम जानते है पृथ्वी के चारों ओर वृत्ताकार ढंग से चक्कर लगाने के लिए जरूरी है कि कृत्रिम भू-उपग्रह की रफ्तार प्रति सेकंड आठ किलोमीटर हो। चूंकि चन्द्रमा में पहुँचने के लिए जरूरी है कि उपग्रह की रफ्तार प्रति सैकण्ड लगभग दस किलोमीटर हो, तो यह अन्तर बहुत अधिक नहीं है। यह सच है कि प्रति सैकंड रफ्तार में दो किलोमीटर बढ़ाना आसान काम नहीं है।

[ शेष पृ० १८ पर ]

# ★ गीत ★

[श्री मोहनलाल 'विप्लव' सिरसा]

आज व्यथाएँ मेरे उर में
एक नया तूफान मचातीं।

अपनी ही जलती ज्वाला में
आप जला जाता हूं मैं
अपने ही नयनों के पथ से
आप बहा जाता हूँ मैं।

अरमानों की चिता सजा
भावों की है आग लगाती।
आज व्यथाएं मेरे उर में
एक नया तूफान मचातीं।

दुख की दौलत साथ लिये हूं
प्यास लिये उपवास लिये हूं
टूटे मन की आस लिये हूँ
अटल अमिट विश्वास लिये हूं

फिर भी हार मिली है मुझको,
एक नयी मुस्कान दिखाती॥ आज व्य०

कैसे रोकूं व्यथा हृदय की
प्रिये तुम्हारे नश्वर स्मय से
कैसे करूं उड़ान विजय की
हारा हूं अपने अभिनय से

छोड़ कल्पना भी मुझ को,
एक नया सन्देश सुनाती।
आज व्यथाएँ मेरे उर में
एक नया तूफान मचातीं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहानी

# मुरझाई कली खिल उठी !

[ कुमारी सुदर्शन खोसला प्रभाकर ]

वह मुस्करा दी परन्तु उसकी मुस्कान के पीछे एक दर्द छिपा था। रमेश ने रहस्यमयी दृष्टि साधना पर फैंकते हुए चाय का जलता हुआ कप होंठों से लगा लिया। साधना की पलकें लज्जा से झुक गईं तथा माथे की अस्त-व्यस्त लट को बड़ी असावधानी से पीछे हटाती हुई वह रसोई की ओर चली गई।

'एक कप चाय पहुंचाने में इतनी देर! अरे! मैं पूछती हूं आखिर कब तक लड़कपन बिखेरती फिरेगी?'

रसोई से साधना को भाभी का तीखा तथा आश्चर्य-मिश्रित स्वर सुनाई दिया।

पल भर के लिए रमेश ने हाथ का कप जरा सा हिला तथा उसने उसे मेज पर रख दिया। उस के मुख पर करुण झलक पड़ी।

'कितनी कठोरता से एक कोमल कलिका को नोचा जाता है—बार २ उसकी पंखड़ियों को मसला जात है लेकिन डाली से अलग करके उसके दर्द को हमेशा के लिए मिटा क्यों नहीं दिया जाता? शायद डाली पर इसी लिए लटका रहने दिया जाता है कि वह धीरे २ मुरझाये जले और धीरे २ सिसक २ कर सूखे और झड़ जाये। उफ; कितना निर्मम है एक मानव जो दूसरे की दुर्बलता का लाभ उठा कर उसे पीसता है—उस पर अत्याचार करता है।'

अनायास उसकी विचारधारा रुकी। चाय उसकी प्रतीक्षा करते करते ठंडी हो चुकी थी। वह एक गहरा निःश्वास छोड़ कर उठ खड़ा हुआ।

'अरे रमेश! इतनी जल्दी चल पड़े?' दीपक ने अखबारसे दृष्टि उठा कर पूछा।

'हां, मित्र! अब चलें।' और वह चला गया परन्तु दीपक उसी के विषय में सोचता रहा।

रमेश, कितना महान है इसका व्यक्तित्व, उसके आगे स्वाभाविकही न जाने क्यों मेरा सिर झुक जाता है; विचार-धारा शिथिल पड़ जाती है। ऐसा लगता है कि वह मेरे हृदय का कोई अनिवार्य अंग है। वह आज इसी शहर का नामी डाक्टर है लेकिन मेरे लिये केवल एक मित्र—नहीं नहीं वह मेरे घर का एक सदस्य बन चुका है, उस पर मेरा विश्वास है क्योंकि उसका प्रभावशाली भाषण न जाने कितने स्थानों में हो चुका है। वह डाक्टर है लेकिन उसका हृदय कभी २ इतना भावुक हो जाता है कि अचानक ही एक सुन्दर कविता उसकी लेखनी द्वारा जन्म पा जाती है। ओह—रमेश—

उसकी भावना एक आहट पाकर बिखर गयी!

'अरे! कब तक यूं ही पड़े २ मक्खियाँ मारते रहोगे? जरा उठ कर स्नान करके नाशता कर लो न।' उसकी पत्नी ने यह कहते हुए कमरे में प्रवेश किया।

'अच्छा! पर देखो, मेरा मित्र रमेश कितना भला व्यक्ति है,—क्यों?'

दीपक ने अपने हृदय को ढ़ाढ़स देने के अभिप्राय से पूछ ही डाला।

'आप ही बहुत अच्छे हैं तो भला आपके मित्र-गण बुरे कैसे हो सकते है?'

जल्दी से बात समाप्त करने के भाव से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पत्नी ने कह दिया।

'ओह, यह मारा! सच; तुम बहुत चतुर हो?' दीपक जोर से हँस दिया।

'बस अब उठ भी जाओ न?' उसकी पत्नी ने उसका हाथ खींचते हुए कहा।

'अच्छा!' दीपक ने अंगड़ाई लेकर उठते हुए कहा और कोई गीत गुनगुनाता हुआ स्नानालय की ओर बढ़ गया।

इस बात को सप्ताह बीत गया। घर पर साधना अकेली थी। भाभी तथा भैया आवश्यक सामान लेने बाजार गये थे। साधना-भावना जगत में डूबी हुई सोचती रही—

'आखिर मेरा जीवन क्या है? एक सूने बर्तन की तरह—स्नेह हीन! जिसमें भर्त्सना अपमान तथा कठोरता के अतिरिक्त कुछ नहीं—काश! आज मेरी माँ जीवित होती!'

और उसकी आँखें भीग गईं। एक बड़ा सा शीशा दीवार पर लटक रहा था। उसकी दृष्टि उसी पर पड़ गई! सूखा हुआ पीला चेहरा जिस पर दो काली आंखें भटकी २ सी लग रही थीं। साधना ने भय से अपने हाथ की हथेलियों से मुंह छिपा लिया और मानो अपने को ही कह बैठी—

'साधना, डर मत! जीवन का कोई मोड़ तो तुझे जरूर ही गन्तव्य की ओर ले जायेगा।'

और वह स्वयं ही हँस दी—एक फीकी हँसी। जिसका स्वर खण्डहर की गूँज के साथ काफी मिल रहा था? वह जल्दी से मुड़ी और दरवाजे की ओर देख कर भय से जड़वत् होगई

'रमेश बाबू! उसकी आवाज अब भी आवेश से थरथरा रही थी। रमेश साधना के निकट आकर खड़ा हो गया। उसे साधना का विकृत सा चेहरा किसी पागल की आकृति सा लग रहा था।

'साधना!' रमेश ने उसे स्नेह से पुकारा। वह कातर दृष्टि से उसे घूरती रही। शायद वह अपने को 'स्नेह' का अधिकारी नहीं समझती थी। छोटी २ बातों पर की गई कठोरता ने उसके दिल की कोमलता को भारी ठेस पहुचाई थी। यही नहीं उसके दिल की एक अमूल्य चीज भी चूर २ हो चुकी थी जिस का नाम था आत्म-सम्मान?

'साधना!' रमेश ने उसे झंकार दिया। उसकी आवाज करुणा तथा स्नेह से भीग गई थी। साधना की नजर एक पल के लिए भी झुकी नहीं—वह ताकती रही—बस ताकती ही रही। मानो वह निर्णय कर चुकी थी कि संसार का स्नेह मर चुका है—लेकिन आज रमेश का स्वर अचानक सुन कर वह कुछ इस प्रकार का आश्चर्य कर रही थी—जिस प्रकार कि एक व्यक्ति की मृत्यु का समाचार सुनने के बाद साक्षात उसे ही अपने सन्मुख देख कर होता है।

'क्या देख रही हो साधना, मैं रमेश हूं।'

'आप?' साधना जैसे स्वप्न से जाग पड़ी हो, मानो उसकी चेतना फिर से लौट आई हो।

'आप! बैठिये।' और रमेश चारपाई पर बैठ गया तथा साधना नीचे बिछी चटाई पर।

'यदि इसे खुशी की समीर न मिली तो इसका जीवन इस प्रकार नष्ट हो जाएगा जैसे जल के बिना पौधा सूख जाता है।' रमेश की आँखें भीग गईं। साधना ने कुछ कहने के लिए दृष्टि उठाई तथा चौंक उठी—

'आप, अश्रु—डा० रमेश!'

रमेश केवल मुस्करा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


'इधर आओ साधना !' उसने पुकारा। साधना निकट जाकर खड़ी हो गई। रमेश ने उसे अपनी गोद में खींच लिया। साधना चुप-चुपचाप टूटी बेल की तरह उससे लिपट गई। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था मानो उस गोद में माँ के स्नेह की गरिमा हो। वह रो पड़ी सिसक २ कर !

'मत रोओ साधना !' रमेश धीरे २ उस का सिर सहला रहा था।

कुछ देर के बाद रमेश ने साधना को हिलाया। वह बेसुध सी पड़ी थी उसकी गोद में जिसमें संसार का सारा स्नेह सिमट कर आ गया था। उसकी बांहें नन्हे शिशु की तरह रमेश के गिर्द लिपटी हुई थीं।

'साधना !' रमेश की आंखों से पावक अश्रु कण छलक कर साधना के शरीर पर गिरने लगे। गरम जल के स्पर्श से साधना चौंक उठी तथा चटाई पर जा बैठी। उसकी नजर अपराधी की तरह झुकी हुई थी तथा आँखोंसे अश्रु टप २ गिर रहे थे। रमेश के सम्मुख मानो मनोविज्ञान का एक पृष्ठ खुला पड़ा था—

'स्नेह न मिलने से मानव अपराधी बन जाता है—यहाँ तक कि अपने जीवन की सही पहचान भी भूल जाता है।'

रमेश ने साधना की तरफ देखा—वह, वह सिर झुकाये बैठी थी।

'भूलो मत साधना: मैं भी तुम्हारे घर का एक सदस्य हूं फिर मैं तो तुम्हें इतना पहचान गया हूं—जितना कि शायद तुम्हारे भैया भी जान नहीं पाये। मेरे लिए तुम वह मूक देवी हो जिस का शरीर पाषाण का हो—जिस के दिल की धड़कन खो चुकी हो—लेकिन मैं तुम्हें जिलाने का प्रयत्न करूँगा—विश्वास करो।'

और वह चला गया—तेज हवा के झोंके की तरह। तथा घबरा कर साधना ने आँखें मींच लीं। उसके कानों में अब भी कोई कह रहा था—

'मैं तुम्हें जिलाने का प्रयत्न करूंगा—विश्वास करो।' पांच महीने बाद—

ज्वर-पीड़िता साधना उसी चटाई पर पड़ी छटपटा रही थी। वेदना के कारण उसका अँग २ टूट रहा था। उसकी भाभी शायद हठ करके भैया के साथ सिनेमा गई थी। रात्रि का भयानक अन्धकार एकाकी साधना को लील रहा था। चार-पांच दिनों के ज्वर ने उसके शरीर को तोड़ कर रख दिया था इसीलिये लाख प्रयत्न करने पर भी उठ कर वह दीया नहीं जला सकी सड़क के लम्प का फीका सा आलोक उसके कमजोर मुख पर पड़ रहा था—

'ओ माँ।' करवट लेते हुए वह करुण स्वर में चीख उठी।

'साधना।' एक जाना पहचाना स्वर उसे सुनाई दिया तथा किसी ने उसके जलते माथे पर हाथ रख दिया। मन्द प्रकाश में साधना ने देखा उसके सिरहाने रमेश बैठा है।

'ओह, आप ? रात में क्यों आये ?' वह भय से काँप रही थी।

'घबराओ नहीं—तुम्हारी दशा शोचनीय है इस अवस्था में मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकता—।'

उसके स्वर में दृढ़ता थी। रमेश धीरे २ साधना का मस्तक दबाता रहा। इस स्नेह-स्पर्श ने उसके दर्द को काफी दूर कर दिया। कुछ देर बाद रमेश ने बड़ी सावधानी से उसे उठाया तथा उसके होंठों से दवा का प्याला लगा दिया।

'इसे पी लो !' रमेश की आवाज में अधिकार था।

'ऊं हूं—।' साधना का स्वर मचल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


'बच्चों की भांति जिद न करो !' रमेश ने मुस्करा कर कहा। फिर सारी दवा उसके मुँह में उंडेल कर उसे लिटा दिया।

'साधना ?' उसके शुष्क बालों से खेलते हुये रमेश बोला।

'जी !' बड़ी कठिनाई से करवट लेकर साधना बोली।

'क्या तुम्हें चटाई पर कष्ट नहीं होता ?'

'होता है, लेकिन—लेकिन—उठा नहीं जाता।' साधना की आँखों में आंसू थे।

'तो ऐसा कहो—' रमेश ने बच्चे की तरह साधना को बाहों में उठा लिया तथा चारपाई पर लिटा दिया।

'यह तो अनुचित था।'

साधना लज्जा से सिमट गई।

'दुःख में कुछ भी अनुचित नहीं है—साधना—फिर तुम देखोगी कि मेरा पावक स्नेह तुम्हें जरूर एक दिन उभारेगा।'

साधना कुछ बोली नहीं, केवल उसके पीले तथा मुरझाये मुख पर एक मुस्कान खेल रही थी।

इस बात को पूरा एक मास हो गया। दीपक बाहिर से घबराया सा आया तथा चुपचाप एक कुर्सी खींच कर बैठ गया।

'क्या हुआ, क्या थक गये ?' उसकी पत्नी ने पूछा।

'शारीरिक दौड़ से नहीं बल्कि जीवन की दौड़ से ? तुम्हें याद होगा मैंने एक लड़के का जिक्र किया था उसने साफ इन्कार कर दिया है। शायद वह रुपया चाहता है मगर कहाँ से लाऊं रुपया ?'

'हाय राम ! अब क्या होगा—पता नहीं कैसी अभागी लड़की है यह !' भाभी ने चमक कर कहा।

साधना एक पुस्तक पढ़ने में संलग्न थी—भाभी के अन्तिम शब्द सुन कर काँप उठी लेकिन दूसरे ही क्षण उसे ऐसा लगा कि छिपे रूप से उसे कोई प्ररणा दे रहा हो—वह बोल उठी—

'भैया रहने दो-मैं विवाह नहीं करूंगी।' भैया ने गम्भीर रहने वाली साधना को आश्चर्य से देखा।

कुछ देर सोचने के बाद दीपक बोला—

'काश ! रमेश—'

बीच में ही उसकी पत्नी चीख पड़ी—

'क्या कहा—रमेश—डा० रमेश ! वह इस अभागी को क्यों व्याहने आयेगा ! वह ठहरा डाक्टर, उसके आगे पीछे तो अगणित युवतियां घूमती होंगी !'

साधना का नन्हा सा दिल धक् से रह गया ! अचानक द्वार खुला तथा रमेश ने प्रवेश करते हुए कहा—

'लेकिन उन सुन्दियों मेंसे मैं किसी भाग्यवान लड़की को ही चुनूँगा, क्यों ?'

'बिल्कुल ठीक !' भाभी अपनी सफलता पर मन ही मन मुस्करा दी। साधना के हृदय को मानो किसी ने मसल दिया।

'और जानती हो-उसका नाम क्या है ?'

'क्या —?'

'—?'

'अरे चुप क्यों हो, बोलो न !' भाभी के मुख पर उत्सुकता का भाव था।

'साधना !'

'हाँ—साधना। एक देवी—जिसके मानसिक सौंदर्य के सामने वाह्य सुन्दरता मन्द पड़ जाती है—वह करुणा की मूक प्रतिमा जिसे जीवित मुस्कान की आवश्यकता है !'

रमेश कहता जा रहा था। दीपक का मुख आश्चर्य से खुला रह गया और भाभी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * हिन्दी की आप बीती *

[ श्री महावीर प्रसाद प्रभकार ]

'जिस में सारस्य सुधा-सर है,
जीवन की सच्ची शिक्षा है।
हा ! उसी नागरी हिन्दी की,
भारत में नहीं प्रतिष्ठा है ।।'

भला मैं अपना परिचय कैसे दूं ? अपनों को अपना परिचय !!

हा ! विधि विडम्बना !! तेरे खेल भी अद्भुत हैं। जो कभी मेरे हमदर्द थे, जो आज भी मेरे भक्त बने हुए हैं, वे ही मेरे लिए सिर दर्द बन रहे हैं; वे ही आस्तीन के साँप सिद्ध हो रहे हैं। परन्तु वाह री काल की टेढ़ी चाल तेरे सामने किसी की दाल गलना टेढ़ी खीर है।

मेरा जन्म इसी भूमि पर, जहां आप या राम-कृष्ण-दयानन्द-गाँधी-सूर तथा तुलसी हुए, हुआ है। मेरे सामने इतिहास ने अनेक करवटें लीं। स्वतन्त्रता से पूर्व मैं अपने परिवार में सुखी थी। स्वतन्त्रता के प्रकाश में मैं फूली न समाई। मुझे मेरे देश में मेरा मान मिला था। किन्तु समय के साथ साथ मेरी आशाओं पर तुषारा-पात होने लगा और स्थिति यह हो गई कि मुझे अपनों से ही भय होने लगा। मुझे मेरे अतीत की स्मृति आती है तो मैं रोमाँचित हो उठती हूं १४ सितम्बर १९४९ का वह दिन जबकि मुझे मेरा पद दिया गया और वह दिन जब नेहरू ने यशोध्वज को विदेशों में फहराया—मैं कैसे भूलूं ? परन्तु आज अपने प्रति उपेक्षा देखकर रोना आता है। मेरे भक्त कहे जाने वालों द्वारा ही मेरी उपेक्षा !

इतना कुछ कहने पर आप अवश्य समझ गये होंगे कि मैं कौन हूं ? मैं हूं भारत के कोटिशः व्यक्तियों की वाणी, स्वातन्त्र्य प्रतीक, राष्ट्र-प्रतिष्ठा और गौरव-गुणाढ्या राष्ट्रभाषा हिन्दी।

जैसे ही सँविधान परिषद ने राष्ट्रभाषा रूप में स्वीकार किया मेरे 'भक्तों' की बरसाती जीवों की तरह बाढ़ आ गई। और इनकी 'भक्ति' का यह परिणाम निकला कि मेरी बहनें मुझ से डर सी गईं, मेरे विरुद्ध नए नए आरोप लगे, मेरे साथ परात्मजा सा व्यवहार होने होने लगा मेरी आड़ में शिकार खेले जाने लगे मेरे सेवकों के मुँह बन्द हो गए, मेरी तथा-कथित समस्या की आड़ में व्यक्तिगत, राजनैतिक वा स्वार्थी दाव-पेच चलने लगे। मुझे इनके कारण कई बार मर्मान्तक व्यंग बाण सहने पड़े एक बार कुछ रूसी मित्र भारत पधारे। उनका स्वागत किया गया। वे रूसी हैरान हो रहे थे इन युवकों की बोली पर। वे युवक बढ़-चढ़ कर अंग्रेजी बोल रहे थे। मैं मारे लज्जा के धरती में गड़ी जा रही थी। अन्तत. वे रूसी मित्र बोले 'साथियो ! क्या तुम्हें अपनी भाषा नहीं आती ?' मेरे ऊपर घड़ों पानी पड़ गया पर मन मसोस कर रहने के अतिरिक्त उपाय ही क्या था ? पर मेरी इन पीड़ाओं को समझने वाले कौन हैं ?

आप इन्हें अतिशयोक्ति न मानें। यदि आप भी मेरे हमदर्दों मे से हैं तो अपने अन्तः-करण की आवाज सुनें। जरा अपने क्रिया-कलाप पर एक दृष्टि डालें।

---

उसका मुँह पीला पड़ता जा रहा था। साधना-वह लज्जा से सिकुड़ती जा रही थी तथा उसकी पलकें कृतज्ञता से गीली होगईं। उसके दिल की मुरझाई कली खिल उठी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



आज मेरे नाम से फलने-फूलने वाली अनेक संस्थाएँ देश में हैं। आप सोचते होंगे कि इन सब के द्वारा हित-साधन होता होगा किन्तु यह आप का भ्रम है। यद्यपि इनके आवेदन-पत्र खाते, पत्र-शीर्ष, नाम आदि से तो यही सूचित होता है किंतु इनकी सूचना, इनके समाचार, इन की कार्यवाही; इनका पत्र-व्यवहार सभी अंग्रेजी द्वारा सम्पन्न होता है। प्रमाण-पत्र अंग्रेजी में मिलेगा। जरा 'सरस्वती' (फरवरी) का अंक उठाइये। उसमें 'भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयाग (केन्द्र) का आँग्ल माह का स्वरूप देखिए। हिंदी की संस्था और पत्र व्यवहार अंग्रेजी में। अब आप ही बताएँ यदि मैं इन से न डरूँ तो क्यों?

इधर देखिए मेरे नाम का झण्डा फहराने वाले इस प्रेमी को। मंच पर रखा 'माइक' भी इनके भाषण को सुन कर थर-थर कांपने लगा है पर जरा इनसे पूछिये तो कि आप का शुभ नाम? शायद कहेंगे सी. आर. शुक्ला। भई! यह क्या? जरा पूछिये कि आप 'प्रसाद' के बारे में प्रकाश डालिये? तो बगलें झांकने लगेंगे। किंतु आप यदि चाहें तो शेक्सपिअर के बारे में सुनिए। और कहीं आप यह न पूछ बैठें कि आप कौन सा पत्र पढ़ते हैं? क्योंकि अंग्रेजी पत्र की भाँति मेरे पत्रों में प्रामाणिकता या शब्द-सौष्ठव कहां? या मेरे पत्रों को कठिन भाषा कौन समझे? पुस्तक भी पढ़ेंगे तो वही क्योंकि मेरे अन्दर उन्हें सत या उच्च साहित्य दिखाई भी दे? यही क्यों मैं जब उन्हें मित्रमंडली में तर्क करते देखती हूँ तो मेरे ऊपर आक्षेपों, तर्कों, घृणात्मक वाक्यों का वह प्रहार होता है कि मैं वहाँ सिसकने लगती हूँ। ईश्वर बचाये इन 'भक्तों' से।

ये शिक्षक! आज जिनके कन्धों पर कोमल मति बच्चों की शिक्षा का भार है वे ये शिक्षक मेरे विषय में क्या जानते हैं; क्या धारणायें रखते हैं। यदि आप जान लें तो दांतों तले अंगुली दबाये बिना न रहें। प्राइमरी स्कूल के अध्यापक से विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों तक मेरे विषय में शून्यवत् है। वे नहीं जानते हिंदी की गतिविधि को! वे नहीं जानते कि कोई हिंदी पत्रिका कहां से प्रकाशित होती है? वे नहीं जानते कि 'साम्राज्य' में 'राज्य' के अर्थ से भिन्नता भी है। उन्हें हिंदी पढ़ाना है इसलिये पढ़ाते हैं वैसे वे 'दी रिचेस्ट लैंग्वेज' के कायल हैं!

साहित्य के स्थायित्व के स्तम्भ हैं लेखक, प्रकाशक, मुद्रक आदि।

आज मैं इनके हाथ का खिलौना बन रही हूं। ये मौके से लाभ उठाने वाले प्रकाशक मेरे नाम पर ऐसा साहित्य तैयार करवाते हैं कि जिससे मेरे नाम पर बट्टा लगता है क्योंकि इनमें व्यवसाय भावना प्रधान होती है। इनके लेखक होते हैं अपरिपक्व युवक जिन्हें भाषा पर अधिकार 'न' के बराबर होता है। इनका लेखन-चिन्तन वा निकष शुद्ध नहीं होता। मौलिकता के अभाव में इनका मान नहीं होता। यही कारण है कि मेरी प्रतिष्ठा मेरे लेखकों द्वारा मिट्टी में मिल जाती है। विनाशकारी बाढ़ से तो गुणकारी बूँदाबांदी कहीं विशेष हितकर है। इनमें रही कसर ये मुद्रक पूरी कर देते हैं, (अपेक्षा) को उपेक्षा भूत को मूत या मेरी को भेरी बनाना इनके बाएँ हाथ का खेल है, मात्रा-स्खलन त्रुटि आदि तो साधारण बात है।

यही क्यों पत्र-स्थिति देखिए। मेरे नाम पर छपने वाले पत्र संख्या में अधिक हैं पर उन का प्रचार अपेक्षाकृत कम। पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाले 'सम्पादक' पहले अपना सम्पादन तो करें; पर उन्हें समझाये कौन?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



[ पृ० ११ का शेष ]

प्रति सेकण्ड दस किलोमीटर की रफ्तार से उड़ते हुए दूसरा उपग्रह उपवृत्त में गमन करेगा। वह पृथ्वी से क्रमशः अधिकाधिक दूर उड़ता चला जाएगा और अपने कक्ष के सुदूरतम बिन्दु को पार करने के बाद पृथ्वी पर वापस आ जाएगा। इस प्रकार एक के बाद दूसरा चक्कर लगाता जाएगा। ब्रह्माण्ड में अपने कक्ष के विशेष स्थान पर कृत्रिम उपग्रह पृथ्वी के प्राकृतिक उपग्रह-- चन्द्रमा से मिलेगा और उसकी परिक्रमा करेगा जैसा कि ब्रह्मांडीय उड़ान सम्बन्धी सिद्धांत के जनक कें० ई० तसिओल-कोव्स्की ने सुझाव दिया।

इसका अर्थ क्या होगा ? हम यह अनुमान करें कि उपग्रह के अन्दर टेलीविज़न सेट रहेंगे जिसके सहारे चारों फैले ब्रह्मांड के फोटो पृथ्वी पर भेजे जा सकेंगे। इससे उन सबसे कठिन समस्याओं में एक का समाधान अर्थात चन्द्रमा की दूसरी तरफ का अध्ययन करना सम्भव होगा।

आज निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि आगामी पांच या दस वर्षों में चन्द्रमा के व्यावहारिक अध्ययन का विकास किस दिशा में होगा। लेकिन एक बात निश्चित है : कुछ समय तक चन्द्रमा का अध्ययन करने के बाद उसे काम में लाने की प्रक्रिया चालू होगी। मानव चालित यानों का निर्माण करेगा जिस में बैठ कर वह स्वयं चन्द्रलोक में पहुंचेगा और उस भास्कर उपग्रह की सतह पर जो हमारे निकटतम है, कदम रखेगा। और चन्द्रमा में पहुँचने के बाद वह वहां अस्थायी वैज्ञानिक स्टेशन कायम करेगा। उसके लिए हवा और भोजन की पूर्ति पृथ्वी से होगी। बाद में वेधशालाएं और संस्थान नियमित रूप में चालू हो जाएंगे तथा अन्ततः चन्द्रमा की प्राकृतिक सम्पत्ति का उपयोग करने के लिए औद्योगिक संस्थान स्थापित होंगे।

# ★ गीत ★

[ श्री कृष्ण बिहारी लाल मुरादाबाद ]

अमृत नहीं पिला सकते यदि
अपने हाथों से मुझ को तुम जहर पिला दो
हँसते हँसते पी लूंगा मैं॥
इतने दिन बीते इसी आश में
शायद कृपा-वारि पा जाऊं
ठुंठ बचे आनन्द-सुतरू को
शायद फिर से महका पाऊं
कलियाँ गाएँ, कोंपल झूमें,
फूल पात दें ताल हृदय-हर !
ठुनके हवा, अथिर थिरकें सब
जीवन-लास-विकास मनोहर।
धरती गीत रचे, सुख का मीत नचे।
किन्तु... बून्द नहीं पिला सकते यदि
अपने हाथों दोस्त प्यास का गला घोंट दो;
हँसते हँसते सह लूंगा मैं॥
अब तक ख्याल किया इस तन का
शायद जीवन तुम्हें पा सके
नयन अभी तक बन्द नहीं थे
शाऽऽयद यमुना कृष्ण पा सकें;
वँशी बाजे; राधा लाजे
तट नाचे; साजे स्वर सब पर
गागर छलके, मेघा गरजे
मस्ती लरजे कृष्णा तट पर
आनन्द साज सजे; मस्ती हो मस्त नचे
किन्तु... मधुरितु नहीं दिला सकते यदि
अपने हाथों पतझर में तुम आग लगा दो
रोते रोते हँस लूंगा मैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# * भारतीय बाल सभा *

## बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी  अध्यक्षा दीदी

## फुलवाड़ी

[ बच्चों के प्रश्नों के उत्तर ]

प्र०—दीवारे चीन किस ने बनवाई थी?

—सोहनलाल गुड़गांव

उ०—लुक्मान ने।

प्र०—दुनिया में सब से छोटी पुस्तक कौन सी है और किस विषय पर?

—शीला रानी फिरोजपुर।

उ०—उमर-ख्याम के सम्बन्ध में लिखी गयी है जो नाखुन के बराबर है।

प्र०—एक व्हेल मछली में से कितना तेल निकलता है? —शेरसिंह अमृतसर।

उ०—इतना कि १८ १८ सेर के दो सौ टीन भरे जा सकते हैं।

प्र०-सांप के कान नहीं होते तो वह आवाज कैसे सुनता है?

—आनन्द बिहारी; लखनऊ।

उ०—आँखों से।

प्र०—कुत्ता कितना भी दौड़े किंतु उसके शरीर पर पसीना नहीं आता—यह कहाँ तक सत्य है? —हरिश्चन्द्र लुधियाना।

उ०—उसे शरीर पर नहीं ज़बान पर पसीना आता है!

प्र.-ससार में सब से बड़ा साँप कहां रहता है उसकी आयु; मोटाई और लम्बाई आदि कितनी है? —किशनचन्द पलवल

उ.-अभी ऐसे सांप की खोज हो रही है।

प्र.-यदि विज्ञान मृत्यु पर विजय पा ले तो? —रामलाल करनाल।

उ.-ईश्वर की सत्ता से विश्वास उठ जाएगा।

प्र.-यदि मुझे सोना बनाने का नुस्खा हाथ लग जाए तो? —गुरदीपकौर।

उ.-तुम्हारा जीना दूभर हो जाए।

प्र.-मनुष्य का सब से बड़ा शत्रु कौन है? केदारनाथ बम्बई।

उ.-उसका अपना चचल मन!

प्र.-दुनिया में युद्ध क्यों होते हैं?

—सुन्दर लाल महेंद्रगढ़।

उ.-बड़े आदमियों की जिद के कारण।

[ सभी बच्चे प्रश्न भेजें। ]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



इटली की लोक कथा—

## ★ चतुराई ! ★

एक दिन किसान अपने खेत में काम कर रहा था। उसी समय वहां का बादशाह वहां से गुजरा। राजा ने किसान से पूछा, 'तुम दिन में क्या कमा लेते हो ?'

किसान ने कहा—मैं केवल चार आने कमा पाता हूँ।

राजा ने पूछा तुम उनका क्या करते हो ?

किसान ने कहा —'एक से मैं खाना खाता, दूसरा उधार देता ; तीसरा चुका देता और चौथा कुएं में फैंक देता हूं।' राजा को यह उत्तर सुन कर हैरानी हुई। उसने किसान को बात स्पष्ट करने के लिए कहा।

किसान ने कहा—'पहले से मैं अपना और अपनी स्त्री का पेट भरता हूं। दूसरा बच्चों को खिला पिला देता हूं। ताकि वह मेरे बूढ़े होने पर मेरी सेवा करके अपना ऋण चुका दें। तीसरा पि। जी को खिला देता हूं जोकि उन्होंने भूतकाल में मेरे लिए किया था। इस प्रकार पिता जी का ऋण चुकाता हूँ। चौथा दान देता हूं और भूल जाता हूं।

राजा बहुत खुश हुआ। उसने किसान से कहा कि जब तक तुम मेरा मुंह हजार बार न देख लो तब तक इन प्रश्नों का उत्तर किसी को न बताना। किसान ने मान लिया और राजा चला गया।

दूसरे दिन राजा ने अपने सब मन्त्रियों को बुला कर इन चार प्रश्नों का उत्तर पूछा। कोई न बता सका। एक मन्त्री को यह पता चल गया कि इस प्रश्न का उत्तर उस किसान को मालूम है। वह उसके पास गया; किसान ने कहा जब तक मैं राजा का हजार बार मुख न देख लूं तब तक मैं इनका उत्तर नहीं बताऊंगा। मन्त्री ने हजार मोहरें लाकर दे दीं। उन पर राजा की तस्वीर छपी थी। किसान ने हजार बार राजा का मुंह उन पर देख कर प्रश्नों का उत्तर मन्त्री को बता दिया।

राजा ने किसान से पूछा—'तुम ने अपनी प्रतिज्ञा क्यों नहीं निभाई ?'

किसान ने उत्तर दिया—'महोदय, मंत्री जी को उत्तर बतलाने से पहले मैं ने आप का मुख हजार बार देख लिया था।' किसान ने वे हजार मोहरें राजा को दिखा दीं। राजा किसान की चतुराई पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे हजार मोहरें और इनाम में दीं।

—प्रेमचन्द्र प्रभाकर

★ जज (अपराधी से) पुलिस ने तुम पर आरोप लगाया है कि तुम ने घोड़ा और ताँगा चुराया है !

अपराधी—हजूर यह आरोप गलत है—मेरी तलाशी ले लीजिए !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मेरे प्रियतम पँजाब देश !

[प्रो० परमानन्द शर्मा एम० ए०]

हे जरा-जर्जरित जन्म भूमि, हे जन-जननी ! शत नमस्कार ।
हे शताब्दियों के अमर चिन्ह, हे पुराय पंचनद नमस्कार ।

मेरे प्रियतम पंजाब देश !
भारत भू के गौरव ललाट !
हे चिर-संस्कृति के चिर-रक्षक !
हे खड़ग-पाणि, योद्धा विराट !
कुण्ठित तेरी तलवार आज
वैरी के सतत प्रहारों से,
मुड़ चुकी तीव्र असिधार आज
या नटी नियति के वारों से
तू मग्न हृदय हो खण्ड खण्ड,
लेती क्यों अन्तिम-श्वास आज ?
तेरे मुख से ओ वीर, धीर ।
क्यों निकल रहा निःश्वास आज ?
निज अतुल शौर्य्य पर क्यों तुझको
उठ चुका, वीर ! विश्वास आज ?
तू शौर्य-पुंज, तू शक्ति-मूर्ति,
फिर किस का मन में त्रास आज?
मेरे भारत के मुकुट सौम्य;
मेरे पावन पंजाब प्रान्त
क्या हुआ तुझे इस दुर्दिन में
यों राक्षस करते पदाक्रांत ।
मत हो हताश, मत हो निराश,
यदि काल चक्र का फेर पड़ा ।
हरने को तेरी व्यथा आज
हो गया पुनः इक वीर खड़ा ।

क्या ! यदि अवयव हो गए भंग
क्या ! टूट गए यदि अंग अंग
अणु अणु एकत्रित करने को,
'बन्दा' निकला लेकर उमग ।
माँ वृध्दे ! अब न बहा आंसू
तू वयो-वृद्ध इन आंखों से ।
मां ! देख न बन कर करुणा-सी
तू भीगी-भीगी पाँखों से ।
हत-हरिणी, क्रन्दन-क्षत हो कर,
थी जिस ने जग-माया त्यागी ।
माँ वृद्धा के व्रण देख पुन
बन गया खड़गा-धर बैरागी ।
बन्दा ने दारुण दुःख तेरे;
सुन छोड़ दिया माला जपना,
लेकर कृपाण है निकल पड़ा
पूरा करने शुभ प्रण अपना ।
चम-चम दिल्ली तक चमकेगी ।
क्षण-क्षण बिजली सी लहर-फहर,
दानव-दल-बल पर छहर-छहर ।
अब बन्दा की तलवार प्रखर ।
वह अरि से स्वयं निकालेगी
गुरु-पुत्रों के वध का बदला ।
उन दुष्ट यवन हत्यारों को;
कर देगी भस्म यही चपला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# एक बादल में कितना पानी ?

जब बादलों में पानी भरा रहता है तब उनमें अपने आप बिजली पैदा होती रहती है। जब तक पानी बरस नहीं जाता तब तक वह पूरी तरह बिजली से भरे ही रहते हैं। गर्मी के दिनों में प्रायः आंधी उठा करती है। वह अपने सहारे बादलों को उड़ा एक जगह से दूसरे स्थान पर ले जाती है। उन दिनों बादल भी पानी से भरे रहते हैं। एक २ बादल में ५० ५० लाख मन तक पानी होता है अतः जहाँ गर्म हवा से उनका मेल होता है तो पानी पिघलने और बरसने लगता है। आँधी तो गर्म हवा से भरपूर होती है इसलिए वह बादलों का पानी पिघला देती है किंतु साथ ही उसमें काफी रफ्तार और गति भी होती है अतः बादल चलते रहते रहते हैं। एक तो पानी बरसने के कारण बादलों में बिजली रहती है फिर गतिवान होने से बिजली से भरपूर दूसरे बादलों से उनकी टक्कर भी हो जाती है। दोनों की इस प्रकार की जोर की टक्कर से भारी गरज और चमक के साथ पर्याप्त शक्ति वाली बिजली का अंश बाहिर निकल पड़ता है। यह कभी कभी जमीन पर भी पहुँच जाता है और जान व माल को हानि पहुँचाता है। जब बादल बरस चुकते हैं तब बिजली नहीं गिरती। बादल पानी से भरे भी हों किंतु उन्हें आँधी का सहयोग न मिले तो भी बिजली नहीं गिर सकती अतः बिजल को आंधी ही जन्म देती है।

बन्दा बन्दी-जन का त्राता
अब बन्धन मुक्त करायेगा,
पंजाब देश फिर जागेगा,
उठ नाहर सा गुर्रायेगा।
लहरायेगा तक्षशिला तक,
माँ! तेरा पूत पुरातन ध्वज।
निकले झट इस की रक्षा को;
मस्तक पर धर तेरी पद-रज।

# नारियल और पत्थर में बातचीत

ऊंचे स्थान पर बृक्ष लगे थे। हवा का झोंका आया तो कुछ शब्द सुनाई पड़े। पता चला कि बृक्ष पर लगा नारियल नदी के किनारे के पत्थरों को फटकार रहा है—घिस घिस कर धूल बन जाओगे किंतु फिर भी नदी के चरण नहीं छोड़ोगे? यह तो अपमान की पराकाष्ठा है।' कुछ दिनों के पश्चात पूजा की थाली में बैठे उस नारियल ने देखा कि उन्हीं पत्थरों में से एक मन्दिर में शालिग-राम बना बैठा है। उसके क्रोध और आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रही। पत्थर ने सारी स्थिति भाँप ली। वह बोला—'नारियल तू अबोध है तो भी समझ गया होगा कि पत्थर भी परमेश्वर बन सकते हैं।

किसी का भाग्य कौन जान सकता है?
अभिमान बृथा है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## ★ हिंदी का युग ★

महावीर प्रसाद अग्रवाल बावलें (जि० गुड़गांवां)

इङ्गलिश का अब गया जमाना,
हिन्दी का युग आया है।
हटा गुलामी का कलंक वह,
आजादी को लाया है॥
गया जमाना मुट्ठी भर जन,
अपना राज्य चलाते थे।
गया जमाना भारत को जब,
नीचा राष्ट्र बताते थे।
गया जमाना जब ए. बी. सी,
रट-रट कर मर जाते थे।
अंग्रेजी पढ़ कर जब सुख से,
'बाबू जी' बन जाते थे।
पढ़ अब हर जन रत्न बनेगा,
सब को पढ़ना भाया है॥१॥
भूले भूल-भुलैया में फंस,
अब निज को पहिचान रहे।
भारत के हर कण-कण में हम,
अपना गौरव मान रहे।
शान हमारी राष्ट्र शान है,
शान रहे तो जान रहे।
हम हैं हिंदी भाषा हिंदी,
हिंदी का अभिमान रहे॥
हिंदी-हिंदुस्तान हमारा,
नारा एक लगाया है॥२॥
बाबू जी अब नहीं बनेंगे,
पढ़-पढ़ कर इङ्गलिश भाषा।
नहीं दीन-से बन कर अब हम,
जीवेंगे पर की आशा।
नहीं आतमा हम वेचेंगे;
खो कर अपनी अभिलाषा।
नहीं गले में अब डालेंगे;
परवशता का वह पाशा॥
पढ़ें प्रेम से हिन्दी हिन्दी,
हमें यही पथ भाया है॥३॥

## ★ मास्टर पीस ★

★ हमारा एक सहपाठी था प्रेमशंकर। वह ड्राइङ्ग में बहुत कमजोर था। जब भी ड्राइंग का पीरियड होता, प्रेमशंकर स्कूल से सटक जाता। पर एक दिन ऐसा हुआ कि हमारे ड्राइंग मास्टर घण्टा बजने से पहले ही क्लास रूम के सामने आ डटे, और प्रेमशंकर को ड्राइंग क्लास में जाना ही पड़ा।

ड्राइंग मास्टरने लड़कों के सामने मॉडेल रख दिए, और चित्र बनाने को कहा।

लड़कों की पेन्सिलें चलने लगीं, पर प्रेमशंकर ड्राइंग मास्टर का मुंह ताकता रहा बड़ी देर तक। फिर उसकी भी पेन्सिल कागज पर चलने लगी। मास्टर यह देखने के लिए कि कहीं वह झूट-मूठ पेंसिल चलानेका बहाना तो नहीं कर रहा है, उसके पास जाकर खड़े हुए।

कागज पर नजर पड़ते ही वे लाल-पीले हो उठे; क्योंकि कागजपर उन्हीं की एक भौंडी सी शक्ल बनी हुई थी। उन्होंने पूछा—'यह क्याहै ?' 'मास्टर-पीस है, जी' प्रेमशंकर ने धीरे से कह दिया!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# सूर्यकी शक्तिसे मकानको ठंडा रखा जासकता है

[ विज्ञान का एक नया चमत्कार ]

फोनिक्स (ऐरिजोना) के निकट पांच कमरे वाले एक मकान को गरम तथा ठण्डा रखने के लिए सूर्य के ताप की व्यवस्था से मकान केलिए सारा वर्ष गरम पानी का प्रबन्ध होने के अतिरिक्त बाहर तैरने के तालाब को भी कोसा पाकी मिल सकेगा।

पूर्व-परिचित सिद्धाँतों को नए तरीके से प्रयुक्त करके सूर्य की शक्ति ऐरिजोना के उक्त सूर्य-गृह में एकत्र की जाती है। सक्षेप में, इस मकान की छत काली की हुई ताँबे की चादरों से बनाई गई है, जिनके साथ जल प्रवाहित करने वाले तांबे के नल लगे हुए हैं। ये ताबे की चादरें ताप संचित करती हैं। इन तांबे की चादरों के दूसरी ओर चमकदार अलुमुनियम की चादरें लगी हुई हैं। तांबे तथा अलुमुनियम की चादरों के बीच एक ताप अवरोधक पदार्थ है। जब मकान को ताप की आवश्यकता हो, तब तांबे की चादर के काले पृष्ठ को सूर्य की ओर कर दिया जाता है। रात्रि में या गर्मियों में जब मकान को ठण्डा रखना हो; तब अलुमुनियम लगे हुए भाग को ऊपर कर दिया जाता है, जिससे कि ताप का प्रभाव मकान पर न पड़े।

ताँबे की चादरों के काले किए गए भाग पर कृत्रिम प्लास्टिक पदार्थ 'माइलर' की एक पारदर्शक परत चढ़ी रहती है। यह सूर्य की किरणों को तांबे की काली सतह में प्रविष्ट तो होने देती है, किन्तु ताप की लम्बी लहरों को इनसे बाहर नहीं निकलने देती। यह वही सिद्धान्त है; जो कोमल वनस्पतियों को काँच के घर में रखने में इस्तेमाल किया जाता है।

तांबे के नलों के जरिए प्रवाहित होने वाला पानी ताप संचित करने वाली चादरों तक पहुंचता है तथा वहां गरम हो जाने के बाद वह भूमि-गर्भ में बनी २,००० गैलन की एक टंकी में जमा हो जाता है। इससे रात्रि में तथा बादल होने की दशा में संचित ताप की व्यवस्था होती है। यह ताप आवश्यकता होने पर इस मकान में इस्तेमाल किया जा सकता है। इस कार्य के लिए सामान्य ताप-पम्पों का इस्तेमाल किया जता है। ताप-पम्प वायु-अनुकूलन की विधियों में सम्मिलित हैं। ये हवा या पानी में से ताप लेकर गरम करने की व्यवस्था को ताप प्रदान कर देते हैं। ठण्डा करने के लिए इससे विपरीत व्यवस्था की जाती है, जो सामान्य ठण्ठा करने की यंत्रिक विधि के अनुसार सारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ★ उषा आमन्त्रण ★

श्री शान्त शास्त्री "शालिहास" हिसार

(क्रमागत) [१९]

दीप बुझा चाहता है भाई !
रहा रात भर है जलता,
तम पी, काजल रहा उगलता।
कितने ही परवानों ने है
इसकी लौ पर बलि चढ़ाई।
दीप बुझा चाहता है भाई !
जले, अध-जले परवानों के शव,
कितने जलने वालों के-
पड़े हुए हैं, और स्नेह में ही
डूबे, कुछ जीवित भाई।
दीप बुझा चाहता है भाई !
स्नेह मुक्त बाती जलती है,
लौ सिर धुन धुन; कर मलती है
अन्त समय मानो निज कृति पर
दीपक-लौ, रोई पछताई।
दीप बुझा चाहता है भाई !

[२०]

आओ सुन्दर गीत सुनाऊं।
जाग उठे हैं खग उपवन के,
गाते हैं गायन निज मन के
उनकी स्वर लहरी में अपनी,
मादक राग तरंग मिलाऊं।
आओ सुन्दर गीत सुनाऊं !
गायन उत्कंठित मेरा उर;
बिना साज बिन वादन के ही,
आ, जीवन का गीत सुनाऊं
आओ सुन्दर, गीत सुनाऊं !
धूप कड़ी; फिर छा जाएगी
मस्त पवन; नहिं चल पाएगी
मद मस्ती का समय सलोना,
यह; शायद मैं फिर ना पाऊं।
आओ सुन्दर गीत सुनाऊं !

[क्रमशः]

---

कार्य सम्पन्न करती है।

यदि कई ठण्डे दिनों के पश्चात पानी ठण्डा हो जाए, तो ताप-पम्प मकान की वायु को गरम कर देता है। टंकी के पानी के बचे हुये ताप को ताप-पम्प के चारों ओर की वायु को गरम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इससे पम्प की क्षमता बढ़ जाती है। मकान ठण्डा करने के लिए ताप-पम्प इससे बिल्कुल उलट काम करता है तथा सामान्य वायु-अनुकूलन यन्त्र के सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न करता है। इस अवस्था में ताप-पम्प के बाहरी भाग की वायु को ठण्डा करने के लिए तैरने के तालाब के जल को इस्तेमाल किया जाता है। यह टंकी से आने वाले पानी को ठण्डा कर देता है तथा उससे ताप-पंप के चारों ओर की वायु को ठण्डा कर लिया जाता है। ताप पंप की क्षमता जितनी अधिक हो, उतनी ही कम बिजली की इसे आवश्यकता होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कमरों के फर्श के निर्माण के लिए अजीब किस्म की दुहरी व्यवस्था की गई है। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए फर्श बनाये गये हैं। पहले दोनों फर्शों के बीच के भाग में ठण्डी अथवा गरम हवा प्रवाहित की जाती है। बाद में फर्श के चारों बनी हुई खिड़कियों अथवा छिद्रों के जरिए यह कमर में प्रविष्ट होती है। ठण्डा और गरम करने की विधियों के इस समिश्रण से मकान में सदैव आरामदेह और सुविधाजनक स्थिति बने रहने की आशा की जाती है। इस प्रकार शीत ऋतु में ताप के अभाव की तथा ग्रीष्म ऋतु में ताप की अधिकता की न्यूनतम सभावना की जाती है।

उक्त सूर्य-गृह 'व्यावहारिक सूर्य शक्ति' सम्बन्धी संस्था द्वारा तैयार किया गया है। उक्त संस्था मुनाफा न कमाने वाली एक अन्तर्राष्ट्रीय स्थापत्य-कला सम्बन्धी प्रतियोगिता में गिनियापोलिस (मिनेसोटा) के पीटर आर० ली ने प्रस्तुत किया था।

इस मकान के दो भाग हैं, जिन्हें बीच का अहाता एक दूसरे से पृथक करता है। दोनों भागों को मिलाने के लिए कांच से निर्मित एक कमरा बनाया गया है, जो दोनों भागों को मिलाने वाले मार्ग का काम देता है। मकान के पूर्व और पश्चिम की ओर कंकरीट की बनी दीवारें हैं, जो इसकी शान बढ़ाती हैं तथा मकान की वास्तविक दीवारों को सूर्य की सीधी किरणों से बचाती हैं। मकान की भीतरी छत और दीवारों पर जो ताप-अवरोधक पदार्थ लगे हुए हैं तथा जिनके साथ लकड़ी से बनी हुई इस की छतें भी सम्मिलित हैं; ये ग्रीष्मकालीन सूर्य से मकान की रक्षा करते हैं।

इस मकान की महत्वपूर्ण विशेषता यन्त्रों की एक ऐसी पूर्ण व्यवस्था है, जिससे प्रत्येक कार्य की पूरी तरह पैमाइश हो सकती है। इन यन्त्रों से मकान पर पड़ने वाली सूर्य की शक्ति को मापा जा सकेगा, जिस से यह बात ज्ञात हो सके कि ताप का संग्रह करने वाली चादरों ने कितना ताप सचित किया। साथ ही इनसे घर के भीतर के महत्वपूर्ण स्थानों के तापमान का भी पता लग सकेगा। ताप-पम्प, पानी प्रवाहक यन्त्र तथा पंखे जितनी बिजली इस्तेमाल करेंगे, उनका भी इन यन्त्रों से पूरा पूरा पता चल सकेगा।

## लोहे की गाय ?

अङ्गरेज़ वैज्ञानिकों ने एक ऐसी मशीन तैयार की है जो घास और हरे चारे का रस निकाल कर उसे गर्म करती है। वह रस ठोस पदार्थ में बदल जाता है। यह वही प्रोटीन है जो गाय के दूध में पाई जाती है। दूध महंगा होने से शायद सभी न पी सकें किंतु यह प्रोटीन बहुत कम मूल्य पर उपलब्ध हो सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ★ यह भी खूब रही ! ★

बहुत पुराने जमाने की बात है—उन दिनों सब लोग शाम को ही द्वार बन्द करके सो जाया करते थे, एक थका मुसाफिर शाम के समय सराय के निकट पहुंचा। तब सराय का द्वार बन्द हो चुका था। सरदी का मौसम था। मुसाफिर बहुत थका हुआ था इसलिए सराय के बाहिर रात बिताना बहुत कठिन था उसने द्वार को खटखटाना शुरू किया। अन्दर से चौकीदार बोला कि इस द्वार का ताला सुनहरी चाबी से ही खुल सकता है और वह प्रातः से पहले नहीं मिल सकती अन्यथा मैं द्वार खोल देता। मुसाफिर था बुद्धिमान। उसने चांदी का एक रुपया द्वार की दराड़ मेंसे अन्दर डाल दिया। चौकीदार ने झट द्वार खोल दिया। मुसाफिर झट अन्दर चला गया और चौकीदार से कहने लगा, जाओ सामान उठा लाओ। वह सामान उठाने लगा तो मुसाफिर ने अन्दर से द्वार बन्द कर लिया। चौकीदार ने द्वार खोलने को कहा तो उसने अन्दर से उत्तर दिया कि भई द्वार प्रातः से पहले नहीं खुल सकता और उसे खोलने के लिए सोने की चाबी चाहिये। सिपाही अपने किए पर पछताया और विवश हो वही चांदी का रुपया द्वार की दराड़ में से अन्दर डाल दिया। इस पर मुसाफिर ने द्वार खोल दिया।

## ★ मौला बख्श ★

कमर बाँधे हुए पिटने को हम सब यार बैठे हैं। बहुत मुर्गे बने बाकी जो हैं तैयार बैठे हैं। न छेड़ ऐ मौला बख्श आखिर तुझे क्या वैर है हम से, तुझे अठखेलियां सूझी हैं हम बेजार बैठे हैं। तसव्वर फर्श पर है और सिर है अपना घुटनों पर, गर्ज हम मास्टर से अपने खाके मार बैठे हैं। यह अंगरेजी यह एलजैबरा रियाजी और यह उर्दू ! इन्हें रो पीट कर हम सब के सब यकबार बैठे हैं। हमें मालूम हैं सब कुछ कि वह कितने काबिल हैं, जो अगली बैंचपर दो-४ बरखुर्दार बैठे हैं। जमाइत में किसे छोड़ा है मौलाबख्श ने 'इरशाद' गनीमत है कि हम बाकी यहाँ दो चार बैठे हैं। —एजाज़ इलाही, लाहौर।

## केवल एक 'कौमा' के कारण

कानूनी दस्तावेजों में कई बार केवल एक शब्द का अदल बदल सारी तहरीर का आशय बदल देता है। कुछ वर्ष पूर्व किसी कानूनी मसविदे में जो अमेरिका की सीनेट में पेश हुआ एक कौमा ( , ) के रह जाने से सरकार को तीस लाख रुपये की हानि उठानी पड़ी थी। लाखों रुपयों की सम्पत्ति, वसीयत नामों में कुछ आवश्यक शब्द काट देने या बढ़ा देने से एक व्यक्तिके अधिकारसे हमेशाके लिए निकल कर दूसरे के नाम हो चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वार्तालाप—

# ऐटम बम—जिसमें प्रलय लाने की क्षमता है!

मोहन—नमस्ते सोहन, भैया।

सोहन—नमस्ते, कहो कैसे आना हुआ?

मोहन—आप से ऐटम बम के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ।

सोहन—बहुत अच्छा, तुम प्रश्न किए जाओ मैं उत्तर देता जाऊंगा।

मोहन—ऐटम बम क्या चीज़ है?

सोहन—साधारण बम में बारूद भरी रहती है। इसमें आग लगते ही सब बारूद तुरन्त जल उठती है। परन्तु ऐटम बम में एक विशेष प्रकार का यूरेनियम भरा रहता है। जब यूरेनियम छिन्न-भिन्न होने लगता है तब सब यूरेनियम क्षण भर में ही छिन्न-भिन्न हो जाता है। एक सेर यूरेनियम के छिन्न-भिन्न होने पर १० करोड़ मन कोयले के जलने के बराबर गरमी पैदा होती है। चूंकि इतनी गरमी क्षण भर में ही पैदा होती है इसलिए इससे जो आग निकलती है वह मीलों तक की वस्तुओं को भस्म कर डालती है। सन् १९४५ में केवल एक ऐटम बम छोड़ने से जापान का पूरा शहर हीरोशिमा भस्म हो गया था। जापान की सरकार का अनुमान है कि उस बम से लगभग ६० हजार व्यक्ति मर गए, १ लाख घायल हुए और इनके अति-रिक्त २ लाख व्यक्ति बिना घर हो गए।

मोहन—यूरेनियम के छिन्न-भिन्न होने से क्या मतलब है?

सोहन—जब कोयला जलता है तब आक्सिजन मिल कर कारबन डाइ-आक्साइड नामक गैस में बदल जाता है। परन्तु यूरेनियम जब छिन्न-भिन्न होता है तो वह जलता नहीं है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि हम किसी पदार्थ के कणों को ज्यादा से ज्यादा छोटा करना चाहें तो ऐसा हम एक हद तक ही कर सकते हैं। उसके बाद छोटा करने से वह पदार्थ खत्म हो जाएगा और हम को दूसरे पदार्थ मिलेंगे। उस कण को अणु कहते हैं, जिसको हम बिना पदार्थ के रासायनिक गुण बदले दो खण्डों में नहीं तोड़ सकते। अणु स्वयं कुछ परमाणुओं से बनता है। उदाहरणार्थ पानी का अणु हाईड्रोजन के दो परमाणुओं और आक्सिजन के एक परमाणु के मेल से बना है। अणु इतना छोटा होता है कि अभी तक कोई भी एक-एक अणु को अलग करके नहीं देख पाया है। परमाणु तो और भी छोटा होता है। वैज्ञानिकों का विचार है कि परमाणु स्वयं ठोस नहीं होता। इसके बीच में एक नाभि होती है और उसके चारों ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कई इलेक्ट्रान बड़ी तेजी से चक्कर लगाते रहते हैं। यूरेनियम दो प्रकार का होता है। एक में नाभि का भार हाइड्रोजन नाभि के भार का २३५ गुना होता है, दूसरे प्रकार के यूरेनियम में यह भार २३८ गुना होता है। २३५ वाले यूरनियम से ही ऐटम बम बनता है। जब एक विशेष तौल से अधिक २३५ वाला यूरेनियम इकट्ठा कर दिया जाता है तो वह अपने आप बम की तरह फट पड़ता है। एक सेकण्ड के लाखवें भाग से भी कम समय में इस यूरेनियम के सब परमाणुओं के दो दो टुकड़े हो जाते हैं और इसी टूटने को छिन्न-भिन्न होना कहते हैं। परमाणु को अंग्रेजी में ऐटम कहते हैं। इसी से यूरेनियम वाले बम को ऐटम कहते हैं।

मोहन—यूरेनियम कहाँ मिलता है?

सोहन—यूरेनियम खानोंसे निकलता है।

मोहन—यूरेनियम २३५ भूमि में ही पड़े-पड़े धड़ाके के साथ क्यों नहीं फट पड़ता?

सोहन—यूरेनियम पृथ्वी में विशुद्ध अवस्था में नहीं रहता है। खान से निकले पदार्थ को साफ करने से दोनों प्रकार के यूरेनियम मिली-जुली अवस्था में मिलते हैं। इस के लगभग १०० भाग में यूरेनियम २३५ एक भाग ही रहता है। इसी से उसका विस्फोट नहीं होता।

मोहन—यूरेनियम २३५ को अलग कैसे कर सकते हैं?

सोहन—वैज्ञानिक या तो यूरेनियम को इतना गरम करता है कि वह भाप हो जाए, तब वह एक खास छन्ने से हलके यूरेनियम को छान लेता है, या मिश्रित यूरेनियम की धारा पर वह चुम्बक का प्रयोग कर हलके यूरेनियम को अलग कर लेता है। ठीक उसी प्रकार जैसे ओसाते समय किसान वायु की सहायता से गेहूं से भूसे को अलग कर लेता है।

मोहन—यूरेनियम २३५ से बम बनाने पर बम तुरन्त क्यों नहीं फट पड़ता?

सोहन—हिसाब लगाने से पता चलता है कि कितने यूरेनियम २३५ के इकट्ठा होने पर फटेगा। बम में उसका आधा भाग अलग रहता है और आधा अलग। बम में यन्त्र लगा रहता है। गिराने के निश्चित समय बाद दोनों आधे एक में मिल जाते हैं और तब विस्फोट होता है। इसके अन्य तरीके भी हैं परन्तु सब का ब्योरा अभी प्रकट नहीं किया गया है। अभी तक बराबर खोज जारी है और एक से एक बढ़ कर ऐटम बम बन रहे हैं। अब तो हाइड्रोजन से भी बम बनता है।

मोहन—ऐटम बम बनाना क्या बहुत कठिन है?

सोहन—ऐटम बम बनाना बहुत कठिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जानते हुए भी ऐटम बम बनाने में बहुत रुपया खर्च होता है। अमरीका ने लगभग २ अरब रुपया खर्च करके ऐटम बम बनाने की रीति का आविष्कार किया था। इसमें हजारों वैज्ञानिक लगे थे, तब कहीं जा र सफलता मिली थी।

मोहन--ऐटम बम का विस्फोट कैसा दिखाई पड़ता है?

सोहन—१६ जुलाई १९४५ को पाँच बजे तड़के सबसे पहले ऐटम बम का विस्फोट किया गया था। यह काम ऐल्ब्यूकर्क (अमरीका) की मरुभूमि में किया गया। बम को इस्पात की बनी ऊंची इमारत पर रखा गया और लोग लगभग एक मील की दूरी पर खड़े थे। जब धड़ाका हुआ तो १० मील की दूरी पर स्थित पहाड़ की चोटियाँ चमक उठीं। धड़ाके की आवाज एक मील पर भी ऐसी तेज थी कि जान पड़ता था कि लोग बहरे हो जायेंगे। हवा इतने जोर से चलने लगी जैसे प्रचंड आंधी आई हो। जहां अट्टालिका थी वहां से कई रंगों का घना बादल उठा जो बहुत ऊंचाई तक पहुंच गया। इमारत का कहीं पता न था। वह भाप होकर उड़ गई थी। अन्दाज है कि बम का तापक्रम कई करोड़ डिग्री हो गया। इमारत के स्थान पर एक विशालकाय गड्ढा बन गया था और इस गड्ढे का फर्श कांच का था जो बालू के पिघल जाने से बन गया था।

मोहन—ऐटम बम के फूटने के बाद वायु क्या दूषित हो जाती है?

सोहन—हाँ, ऐटम बम से जो किरणें निकलती हैं उनसे पास-पड़ोस के पदार्थ मीलों तक दूषित हो जाते हैं और उनमें से स्वयं एक्स-रे की तरह की किरणें निकलने लग जाती हैं। इन किरणों से मनुष्य मरने लगते हैं या उनके शरीर पर भयंकर घाव होजाते हैं

मोहन—तब तो ऐटम बम बड़ी भयंकर चीज है।

सोहन—हां; वैज्ञानिकों ने अनुमान अनुमान लगाया है कि अब जब कभी दो बड़े राष्ट्रों में लड़ाई हुई तो दो-चार घण्टों में ही विश्व के दो चार बड़े-बड़े नगर ऐटम बम से जल कर भस्म हो जायेंगे। करोड़ों व्यक्ति मरेंगे और घायल होंगे। कुछ तो यहाँ तक डरते हैं कि संभवतः सारी दुनिया ही नष्ट हो जायेगी। परन्तु जैसे आग से बहुत हानि होने पर भी वह बहुत उपयोगी है (आग से हमारी रसोई पकती है) इसी प्रकार ऐटम बम के अत्यन्त सत्यनाशी होने पर भी आशा है कि उससे इंजन आदि चलाकर बहुत लाभ उठा सकेंगे। आशा है कि एक चुटकी मसाले से हमारी मोटर साइकिल हजारों मील चल सकेगी।

[श्री गोरखप्रसाद लिखित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# मन की बात जानने वाली मशीन तैयार हो गई?

ब्रुसेल्स की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के सोवियत मण्डप में एक बहुत ही दिलचस्प मशीन प्रदर्शित की गयी है। आपके सोचने भर की देर है कि यह मशीनी हाथ आप की इच्छा की पूर्ति कर देगा। अगर आप उस हार को जिस के तार यन्त्र से जुड़े हुए हैं, अपनी भुजा पर लें और सोचें कि 'इस मशीनी हाथ को अपनी मुट्ठी बन्द कर लेनी चाहिए' तो आप देखेंगे कि बिल्कुल वही हो गया है। अगर आप चाहें कि वह अपनी अंगुलियां फैलाये तो तत्काल उसकी अंगुलियाँ फैल जायेंगी। आप को एक शब्द भी नहीं कहना पड़ेगा। आपको तो सिर्फ अपने मन में बात सोचनी है, हाथ खुदबखुद पता लगा लेगा कि आप क्या चाहते हैं और वह टीका लगाने की पिचकारी (सिरिंज) उठा लेगा या बादाम तोड़ देगा, इत्यादि।

मास्को के कई अनुसन्धान संस्थानों ने इस अनोखे यन्त्र को बनाने में सहयोग दिया है। इसका रहस्य क्या है?

जब आदमी कुछ सोचता है तो उसका मस्तिष्क शरीर के अंगों को आज्ञा देता है कि वह चीज पूरी की जाये। उससे स्नायु-कोष में सबसे छोटे विद्युत कणों, अयनों, में कम्पन पैदा होती है। यह 'स्नायुशक्ति' अत्यल्प होती है। लेकिन रेडियो सेट जिन सुदूरवर्ती ब्राडकास्टिंग स्टेशनों के संकेतों को पकड़ता है, वे भी तो बहुत क्षीण होते हैं परन्तु रेडियो के वाल्व उन संकेतों की ध्वनि को काफी बढ़ा देते हैं।

इस नए सोवियत यन्त्र में विद्युत स्नायुस्पन्दनों का पता लगाया जा सकता है और उन्हें इतना बढ़ा दिया जाता है कि धातु के कृत्रिम हाथ को गतिमान् कर दिया जाता है।

इस आविष्कार का व्यावहारिक मूल्य क्या है? फिलहाल योजना यह है कि जो लोग अपने बाजू खो चुके हैं, उनकी इससे सहायता की जाये। यह कृत्रिम अंग असमर्थ व्यक्ति की भुजा का काम दे सकता है। लेकिन यह आरम्भ मात्र है। हालांकि इस समय इस का इस्तेमाल सिर्फ यही है कि वह उस अंग का काम दे जिसे मनुष्य खो चुका हो, लेकिन आइन्दा इसे बहुत सी दूसरी चीजों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। आदमी के तीसरा या चौथा हाथ लगाया जा सकता है। लोहे के हाथ उस स्थान तक पहुँच सकते हैं जहाँ मनुष्य के हाथ नहीं पहुँच पाते जैसे सागर के तल में, उबलती हुई वायुभट्ठी में, ब्रह्माँडीय विकिरण-युक्त अवकाश में आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक वियतनामी लोक कथा

# तब चावल पकाना कोई नहीं जानता था !

[ श्री नरेन्द्र कुमार सहगल, जालन्धर ]

प्राचीन काल में चावल पकाना कोई नहीं जानता था। चावल बिना पकाये ही खाये जाते थे। परन्तु सख्त होने के कारण वे पच नहीं पाते थे। यह कथा उसी काल से सम्बन्धित है। उन्हीं दिनों वियतनाम में एक राजा राज्य करता था। उसकी कन्या अत्यन्त रूपवती थी। राजा को चावल पसन्द थे परन्तु जी भर कर खा नहीं सकता था। वह चावल पकाने की खोज निकालने की चिंता में था कि उसे एक तरकीब सूझी। उसने राज्य भर में घोषणा कर दी कि जो व्यक्ति चावल पकाने का तरीका बताएगा उसे अपनी कन्या ब्याह देगा।

राजकुमारी के अद्वितीय सुन्दरी होने के कारण कइयों के मुह में पानी भर आया। देश के कई विद्वान तथा वैज्ञानिक चावल बनाने का तरीका खोजने में जुट गए किंतु उनमें से कोई सफल न हुआ। सफल हुआ भी तो एक किसान। उसने अपना तरीका राज दरबार में बताया।

किसान ने एक मुर्गी के पेट में से हड्डियां आदि निकाल कर चावल भर दिए और मुर्गी को आग में झोंक दिया। उस काल में वहाँ मुर्गी का माँस इसी प्रकार पकाते थे। जब वह पक गया तो चावल भी उसके साथ ही पक गये। राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उसने किसान को पास बुलाया। अपनी प्रतिज्ञा की याद आते ही उसने किसान की ओर देखा। उस पर मानो घड़ों पानी पड़ गया; कारण कि किसान कुरूप था। राजा, राजकुमारी को उस से ब्याहकर उसका जीवन नष्ट न करना चाहता था! वह अपनी प्रतिज्ञा से फिर गया। उसने घोषणा करवाई कि इस तरीके से बहुत थोड़े चावल पकते हैं और आम जनता इसे प्रयोग में नहीं ला सकती अतः वह उस किसान को कोई इनाम न देगा।

वह किसान निराश होकर घर चला आया। उसने अपने परीक्षण जारी रखे। कुछ ही मास बाद वह फिर राजा की कचहरी में उपस्थित हुआ। उसने वहां जा कर एक लम्बे बांस की मांग की। बांस बीच में से खोखला था। उसने चावलों को भिगो कर बाँस में भर दिया। इसके बाद कच्चे कोयलों को जला कर उन्हीं पर रख दिया। कुछ समय बाद चावल पक कर तैयार हो गए। चावलों को उसने २४ घण्टे पहले ही भिगो रखा था। राजा यह देख कर फिर चिंतित हो गया! इस बार तो इतने चावल पक गए थे कि कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मनुष्यों के लिये काफी थे।

मन्त्रियों से सलाह मश्विरा करने के बाद उसने घोषणा की कि भिगो कर पकाए हुए चावल खाना बहुत कम लोग पसन्द करते हैं। इसलिये यह तरीका भी सन्तोषप्रद नहीं है। अतः कोई इनाम नहीं दिया जा सकता। इनाम उसे दिया जाएगा जो त्रुटिरहित तरीका बताएगा, जिसे आम जनता काम में ला सके।

फिर मंत्रियों से सलाह करके राजा ने सारे देश में घोषणा करवाई कि सब कोशिश करें परन्तु जिसका तरीका अपूर्ण होगा उसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा।

इस बार भी वही किसान तथा उसका एक कुरूप साथी चावल पकाने में सफल हुए। राजा ने जब दूसरे किसान की सूरत देखी तो आग बगूला हो गया क्योंकि वह पहले किसान से भी ज्यादा कुरूप था। राजा ने उन दोनों के तरीकों को अपूर्ण बता कर मृत्यु दण्ड घोषित कर दिया परन्तु मंत्रियों ने कह सुन कर यह आज्ञा रुकवा दी।

राजा ने और ढङ्ग निकाला। उसने दोनों किसानों को एक बहुत बड़ा कड़ाहा पकड़ कर खड़े होने की आज्ञा दी। कड़ाहे में चावल थे फिर उसने राजकुमारी को कड़ाहे के नीचे आग जलाने का आदेश दिया।

आग की तपश को सहने में असमर्थ हो किसानों के हाथ पैर झुलस गए तथा आग में गिर कर जल मरे! राजकुमारी ने सोचा 'चाहे वे कुरूप थे तो भी उन्होंने बहुत बड़ा काम किया है। उनकी मृत्यु से देश को भारी नुकसान होगा।' यह सोच कर राजकुमारी ने उन्हें आग से निकालने की कोशिश की परन्तु उन्हें बचाते २ उसे अपने प्राण गंवाने पड़े।

इस पर राजा को अत्यन्त दुख हुआ। तब से लोगों ने देगची को आग पर रखने के के लिये तिपाई बनाई और उस पर चावल पकाने आरम्भ किये। राजा की ज़िद के कारण तीन व्यक्तियों को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े।

यह रूस है! —०—

# रेलगाड़ी में स्कूल!

रूस में कई ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें अपनी नौकरी के सिलसिले में सारा वर्ष रेलगाड़ी में सफर करते रहना पड़ता है। जहाँ उनके परिवारों की रेल गाड़ियों में रहने की व्यवस्था की गई है वहाँ उनके बच्चों की शिक्षा के लिए किंडरगार्टन स्कूल भी चलती रेलगाड़ियों में ही खोल दिए गए हैं।

है न मजेदार स्कूल?

क्या आप को भी पसंद है ऐसे स्कूल में पढ़ना?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## ★ जादू का खेल ★

**पानी से भरी बोतलको तिनके से उठाना**

पानी से भरी बोतल को क्या एक तिनके मात्र से उठाया जा सकता है? आप कहेंगे कि नहीं। किंतु यह संभव है। मामूली सा तिनका लीजिए और मोड़ कर पानी से भरी बोतल में गले से लगा दीजिए। आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि उस तिनके से बोतल को न केवल बड़े मजे से उठाया जा सकता है अपितु इधर उधर हिलाया भी जा सकता है ऐसा जान पड़ेगा मानो बोतल में पकड़ने के लिए कड़ा लगा हो जो दिखाई न पड़ता हो—आप भी ऐसा करके देख लीजिए!

हास्य व्यंग्य

## राजा जी, मोरे !

### [ पै रो डी ]

[शाँत शास्त्री 'शालिहास'शास्त्री सिरसा]

राजा जी मोरे ! अवगुण चित न धरौ
राजगो-पाला नाम तिहारो अपने प्रण न टरौ।
'इङ्गलिश' को पूजा में राखहु-हिंदी हु दूर करो
अन्तर दोनहुँ का न पिछानौ, ऐनक अन्ध धरौ।
इङ्गलिश की नदिया में मैलो फूट का नीर भरो
हिंदी की सुरसरि जब पाई; क्यों मन मैल धरौ।
हिंदी जन वाणी यह कहावत, जन-अफसर झगरो
अब भारत आजाद ह्वैगयो इङ्गलिश हु बिसरौ।
राजा जी मोरे! अवगुण चित न धरौ॥

## 'जीवन के फूल'

रमेश शर्मा आलमपुर (कांगड़ा)

१. उत्थान के गर्भ से पतन का विष बराबर निकलता है।

२. हजारों मित्रों को कम समझो परन्तु एक दुश्मन को बहुत।

३. जिस काम को औरों से छुपा कर करने की आवश्यकता है उसमें अवश्य गुनाह का बीज है।

४. मूर्खता से बढ़ कर अन्धकार नहीं और ज्ञान से बढ़ कर प्रकाश नहीं।

५. शत्रुओं से मित्रता उत्पन्न करो और गुनाहों से शत्रुता उत्पन्न करो।

६. न सच कह कर किसी का दिल दुखाओ और न झूठ बोलकर किसी को अपनी ओर आकर्षित करो।

७. कुछ पुस्तकें दृष्टि-रंजन के लिये कुछ मनोरंजन के लिए और बहुत थोड़ी आत्म-रंजन से लिए होती हैं।

८. धनीकी दुनियां साथी है और बिगड़ी में अपनी परछाईं भी साथ छोड़ जाती है।

९. मनुष्य अपनी पीड़ा को समझता है, दूसरों के मुख पर पीड़ा के भाव देख कर वह हसता है।

१०. बुराई से दूर रहना प्रत्येक भलाई के कामों की जड़ है।

इन पर अमल करो। [इति]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# बूझिए तो ?

सब को आती है, पर किसीको न भाती है
उसके आगे होना पड़ता है मजबूर,
सब चाहते कि वह रहे दूर ही दूर ।

चाँदी की परात है, देख लो जब रात है,
आस-पास मोती हैं बिखरे देखो-कैसे निखरे ।

सफेद चूहा, हरी पूंछ ।
बताओ नहीं तो पकड़ूं मूंछ ।

लाल गाय, काठ खाय ।
पानी पिए, मर जाए ।

एक चिड़िया ऐसी, खूंटा पर बैसी ।
मुठ्ठी २ अन्न खाए, सो चिड़िया कैसी ?

एक चिड़िया लट, उसके पंख दोनों पट ।
उसकी खाल जल्द उतार, चख मांस मजेदार

# अकबर बीरबल

एक दिन अकबर ने भरी सभा में पूछा — ...ताओ हथेली में बाल क्यों नहीं उगते ?

सभी दरबारी चुप रह गए ।

यही प्रश्न बीरबल से पूछा गया । बीरबल ...तुरन्त उत्तर दिया—'हजूर, आप इन्हीं ...थों से दान देते हैं, इसलिए आप की हथे... पर बाल नहीं उगते ।'

इस पर अकबर ने पूछा—'और तुम्हारी ...ली में बाल क्यों नहीं उगते ?'

'मैं इन से आप का दिया हुआ दान ...ता हूँ इसलिए नहीं उगते' बीरबल ने उत्तर

# गृह विज्ञान

—एड़ियों के छाले ठीक करने के लिए उन पर अण्डे की सफेदी लगाइये बहुत जल्दी आराम होगा ।

—कपड़े पर इस्तरी करते समय ऐसे भागों पर जो गीले न हो सके बर्फ का टुकड़ा रगड़िए ।

—बिजली के बल्ब को साफ रखने के लिये उस पर थोड़ी फर्श की पालिश लगा दीजिए । इसकी दुर्गन्ध से मक्खियाँ नहीं आयेंगी और बल्ब साफ रहेगा ।

क्राकेरी के बर्तनों के नीचे नेल पालिश से नाम लिख दीजिए वह कभी न मिटेगा ।

—शीशे के गिलास में चम्मच डाल कर यदि गर्म पानी डाला जाए तो वह टूटेगा नहीं ।

---

दिया ।

और इन दरबारियों की हथेलियों में हथेलियों में बाल क्यों नहीं हैं ?

अकबर ने फिर प्रश्न किया ।

बीरबल बोला—जब मैं आप का दिया हुआ दान लेता हूँ तब ये द्वेष से हाथ मलने लगते हैं अतः इन के बाल इस लिए नहीं उगते ।

यह सुन कर सब दरबारी अपना सा मुंह लेकर रह गए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## हँसते हँसते जीना !

★ सोहन ने अपने वकील से एक ऐसे व्यक्ति के ऊपर मुकदमा चलाने के लिए सलाह की; जिसने १९४४ में उसे 'ऊदबिलाव' कह दिया था।

वकील—इस बात को अब चौदह वर्ष हो गये हैं। अब क्यों व्यर्थ झगड़ा मोल लेते हो।

सोहन—मुझे अब तक ऊदबिलाव के बारे में मालूम न था। परसों ही तो मैंने 'जू' में जाकर ऊदबिलाव देखा है।

★ एक बड़े व्यापारी ने अपनी सेक्रेटरी से विवाह कर लिया।

हनीमून मनाकर लौटने से पहले व्यापारी बोला—अब मुझे कोई नयी सेक्रेटरी ढूंढनी पड़ेगी।

उसकी पत्नी फौरन बोल उठी—आप को इसकी चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है! मैं ने इस का सारा इन्तजाम कर रक्खा है!

कौन है वह ? क्या नाम है उस छोकरी का ?

अब छोकरी-वोकरी नहीं चलेगी। मैं अपने अनुभव से ही सतर्क हो गयी हूं। अब मेरा भाई यह काम करेगा!

★ राजेन जब शाम को घर लौटा, तो उसने देखा कि उसकी पत्नी मुंह फुलाये हुए आंसू बहा रही है।

पति को देखते ही शिकायत के स्वर में वह बोली—आज तुम्हारी माता जी ने मेरा अपमान किया है।

परन्तु मा तो यहां हैं नहीं तुम्हारा अपमान उन्होंने कैसे किया ? राजेन ने आश्चर्य से कहा।

हाँ, यह सच है कि वे यहां नहीं हैं। पर जरा इस पत्र को तो पढ़ो; जो उन्होंने तुम्हारे नाम भेजा है। इस पत्रके नीचे उन्होंने लिखा है—'बहूरानी; यह पत्र राजेन को जरूर दे देना।' यह उन्होंने कैसे समझ लिया; कि मै तुम्हारे पत्र खोल कर पढ़ लेती हूँ ?'

क्यों कैसी रही ?

## महाभारतके योध्दाओंकीआयु

आचार्य द्रोण की चार सौ वर्ष, पंचाल नरेश द्रुपद की ४०० से कुछ कम, भग दत २०० वर्ष, बल्हिक १८५, भीष्म पितामह एक सौ ६७, श्री कृष्ण की एक सौ १८ वर्ष; द्वैपायन व्यास तीन सौ से अधिक, कर्ण जिसका नाम वास्तव में वसुषेण था—की ७५, युधिष्ठर एक सौ आठ, भीम एक सौ पाँच, दुर्योधन ६९; अर्जुन एक सौ दो, अभिमन्यु की तीस वर्ष, बलदेव की एक सौ अठाईस वर्ष, अश्वथामा की ७०-८० के लगभग थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

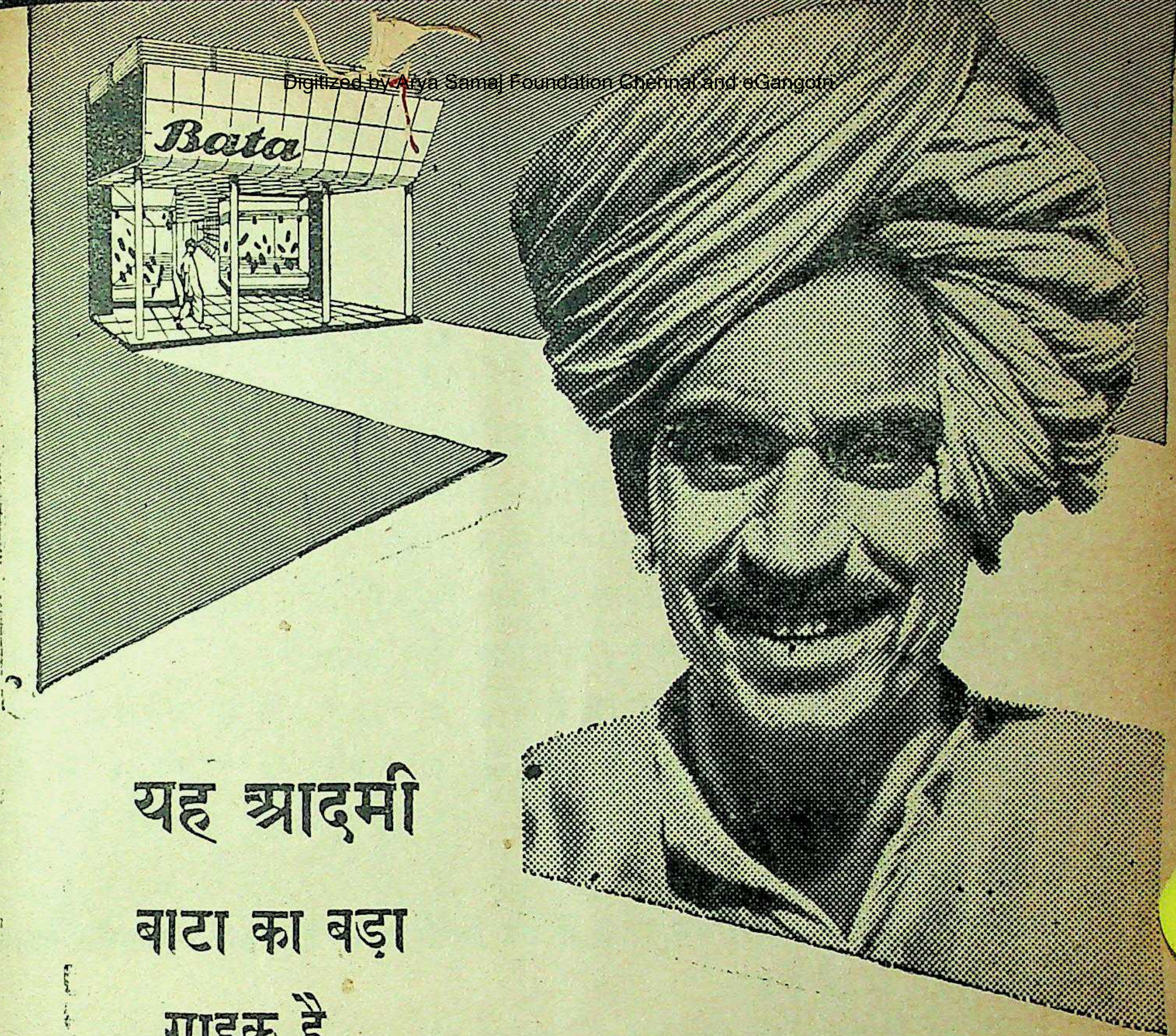



# यह आदमी बाटा का बड़ा ग्राहक है ...

वह इस धरती का पुत्र है—उन करोड़ों में से एक जो इस देश में बसते हैं। वह सूर्य के उदय होते ही घर से निकल पड़ता है और खेत या कारखाने में सारा दिन काम करता है। सूर्य छिपने पर वह अपने प्रिय जनों के पास घर लौट कर आराम पाता है। यदि वह निर्धन है तो बहुमूल्य वस्तुओं के मामलों में अन्यथा भारत का वासी आध्यात्मिक तौर पर सम्पन्न है—जिससे दुनिया आज वंचित है।

उसकी सेवा केलिए बाटा नगरके अलावा डिघा, मोकमेहघाट और फरीदाबाद के कारखानों में जहाँ ६१३५ कारीगर मुलाजिम हैं, बाटा ने ७७६ आधुनिक दुकानें खोल रखी हैं और १८४ एजेंट २८४ डीलर तथा वितरक नियुक्त कर रखे हैं। २६०१ विक्रेता उसकी हर तरह की तसल्ली करने का यत्न करते हैं।

बाटा शू कम्पनी
प्राईवेट लिमिटेड
द्वारा प्रकाशित।

Bata


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ ५३६ **आदर्श बहीखाता** मूल्य ५॥)

लेखक

## श्री मस्तराम एम. ए., एल एल. बी., एडवोकेट, फ़िरोज़पुर शहर

* हिन्दी भाषा में अपनी प्रकार की इस सर्व प्रथम पुस्तक में बहीखाते की विद्या और कला की सिद्धान्तिक तथा व्यवहारिक दृष्टिकोणों से विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है।

* महाजनी और अंगरेज़ी दोनों विधियाँ ऐसे सरल और स्पष्ट रूप में वर्णन की गई और उदाहरणों द्वारा समझाई गई हैं कि नाममात्र हिन्दी जाननेवाला भी बिना किसी गुरु की सहायता के इसको पढ़ थोड़े ही समय में बहीखाता रखना तथा परखना सीख सकता है।

* इसमें रोकड़, कैश बुक, नकल, जरनल, रोज़ानवाँ, और खाता बही के अतिरिक्त १५ प्रकार की अन्य बहियों के अर्थ, आकार, प्रकार और उपयोगिता की विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है और उन्हें नियमानुकूल लिखने की विधियाँ भी बड़े सरल और स्पष्ट शब्दों में वर्णन की गई और उदाहरणों द्वारा समझाई गई हैं।

* लगभग ३५ प्रकार के आवश्यक खातों में नाम लिखी और जमा की जानेवाली कलमों की विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है।

* खाता बही की सत्यता को परखने, भूल-चूक की खोज करने और गलतियों को सुधारने की विधियाँ भी बताई गई हैं।

* इसमें न केवल हानिलाभ खाते तथा आंकड़े के बनाने के लिए आवश्यक क्रियाओं का वर्णन किया गया है बल्कि उसके लिए आवश्यक जमाखर्चों की भी विस्तारपूर्वक व्याख्या की गई है।

* पुरानी बहियाँ बन्द करने और नई बहियाँ लगाने की विधि पर भी प्रकाश डाला गया है।

इन्कम टैक्स और बिक्री टैक्स देनेवालों तथा विद्यार्थियों के लिये सर्वोपयोगी पुस्तक

मिलने का पता —

## दी नया जीवन पब्लिकेशञ्ज़ लिमिटिड,

फ़िरोज़पुर (पंजाब)।

जालन्धर में पुस्तक मिलने का पता —

(१) यूनिवर्सिटी पब्लिशर्ज़, रेलवे रोड। (२) इण्डियन स्टेशनरी मार्ट, सरकुलर रोड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

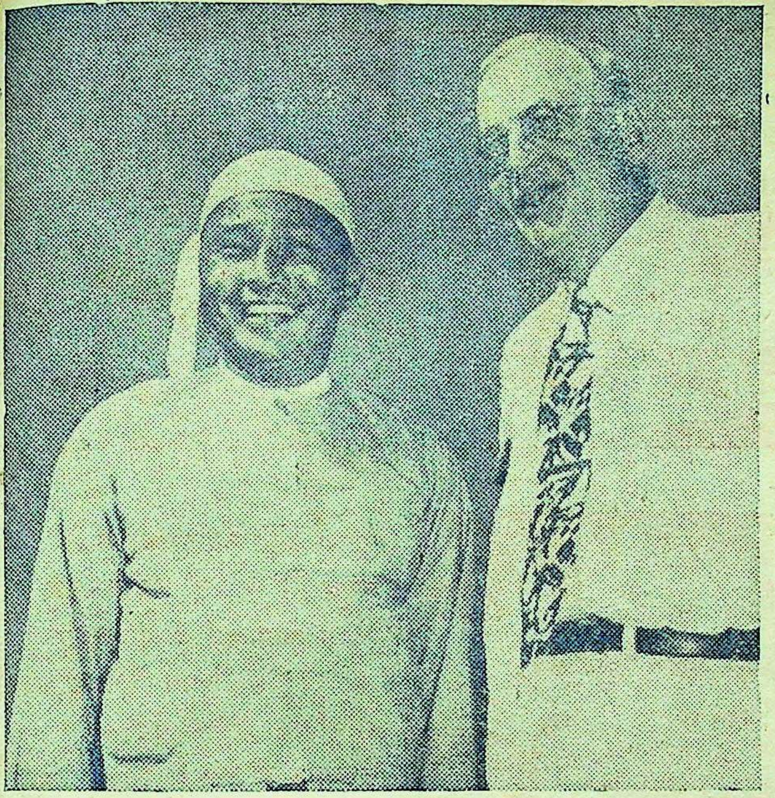

सामने
बर्मा के प्रधान मन्त्री यू नू पिछले दिनों अमेरिका गए थे। उन्होंने अमेरिका के विदेशमन्त्री मि० डलेस से भी भेंट की। यह चित्र उसी अवसर का है।

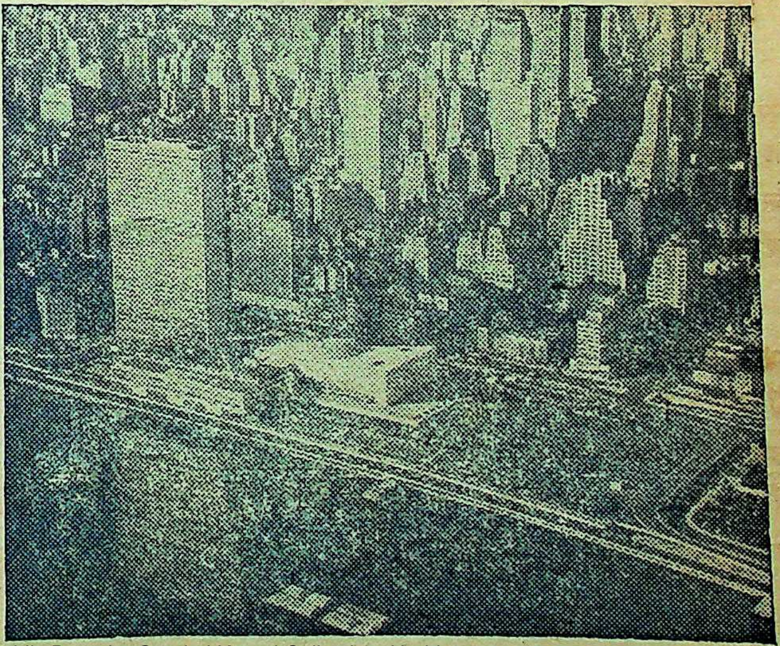

सामने
यह अलमारी जैसी खड़ी दीखने वाली इमारत यू० एन० ओ० की है। न्यूयार्क आने वाले दर्शकों के लिए अपने अन्दर एक विशेष आकर्षण रखती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## सचित्र समाचार

सामने- वस्त्रों के लिए सबसे पहले ऊन, उसके बाद रूई, सिल्क और मलमल ने जन्म लिया।

नीचे- १६०४ में एक बृटिश उड़ाका १८००० फुट की ऊंचाई से बिना पैराशूट के बिना विशेष चोटों के जमीन पर आ गिरा था।

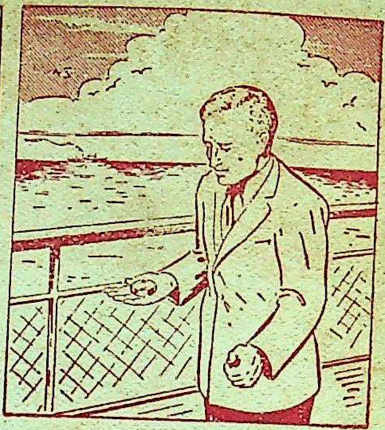

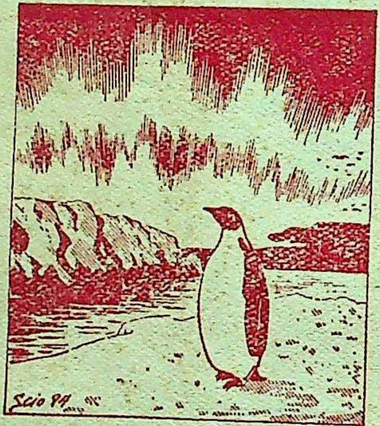

ऊपर- लाँगीच्यूड तथा लैटीच्यूड से रहित पृथ्वी का स्थान अफ्रीका के पश्चिमी तट पर वहां स्थित है जहाँ ग्रीनविच प्राईम मैरीडियन इक्वेटर से मिलता है।

सामने- उ० ध्रुव में केवल पैंग्विन ही पाया जाता है. अन्य कोई जीव नहीं।

सामने बाईं ओर से:-

१. यू० एन० ओ० के ८६ सदस्यों में से एक ने भी इस की सदस्यता नहीं छोड़ी।

२. अमेरिका के पेटेंट आफिस में नए आविष्कारों को पेटेंट कराने के लिए हर रोज ३ सौ आवेदन पत्र आते है।

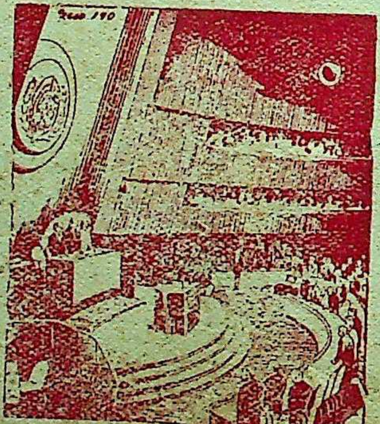

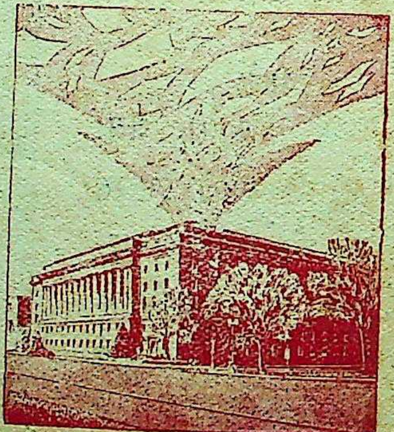

श्री एल० सी० हितैषी द्वारा वीर मिलाप प्रेस जालन्धर में मुद्रित तथा १३७ चहार बाग जालन्धर शहर से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# प्रकाश

तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

वार्षिक मूल्य ७) | [पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका] | एक प्रति १० आने

७; दिसम्बर '५८

सम्पादक

हितैषी श्रलावलपुरी


शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित।

स्वागत है !

जम्मू तथा काश्मीर स्टेट के सदरे रियासत के पंजाब में पधारने पर उनका जनता की ओर से हार्दिक स्वागत किया गया।


THE "Prakash"

Editor: L.C. Hitashi

JULLUNDUR CITY.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने:- सिकोर्स्की १८८९ में कीव (रूस) में पैदा हुए। उनके पिता डाक्टर थे। १२ साल की आयु में हैलिकाप्टर का खिलौना बनाया था।

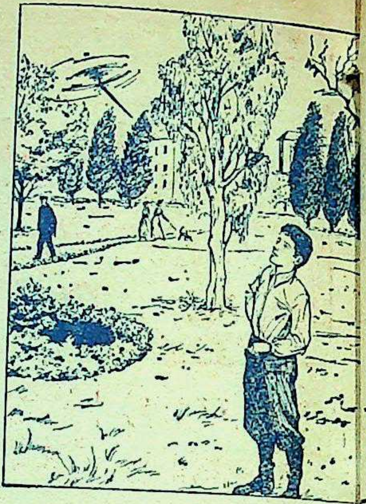

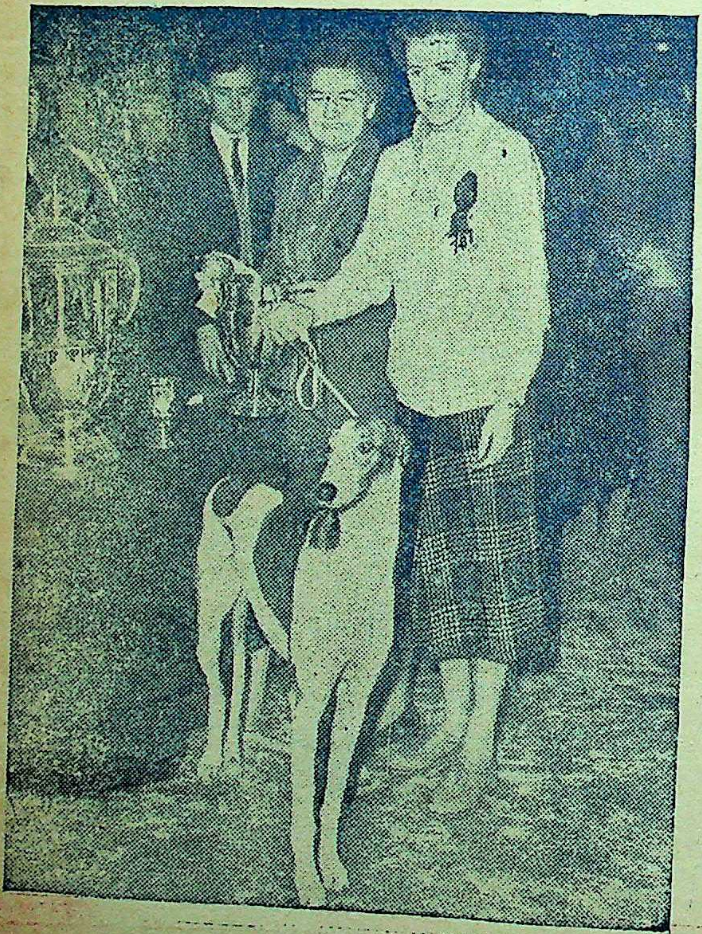

ऊपर:- इगोर सिकोर्स्की जिन्होंने दुनिया के पहले हैलिकाप्टर का निर्माण कर हजारों मानवी जानों की रक्षा सम्भव कर दी है।

सामने:— लन्दन में हुई कुत्तों की प्रदर्शिनी में सर्वोत्तम माना गया कुत्ता 'ट्री-टाप [ग्रेहाऊंड] जो ६४३३ कुत्तों में से चुना गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



पँजाब उत्तर प्रदेश बिहार हिमाचल पैप्सू भूपाल और हैदराबाद के स्कूलों केलिए स्वीकृत

# ★ प्रकाश ★

॥ पञ्जाब की एकमात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका ॥

वर्ष ५३ क्रमांक ५६ | जालन्धर, ७ दिसम्बर '५८ | भाग ६ हिन्दी अँक १२

## कहां क्या है ?

कविताएँ

साथी वह दिन भी आएगा — प्रसाद २६
न हम मुस्कराए — सावित्री ३०
काम हमारा बढ़ते जाना — जगदीश ३५

कहानियाँ-नाटक

मुझे इस तरह न देखो — कु० सुदर्शन ८
प्रथम जौहर (नाटक) — प्रेमी १२

लेख

प्रादेशिक भाषाओं की लिपि देवनागरी ७
परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन कीजिए ११
जीवन तो है किन्तु जीवन का आनन्द नहीं १६
नेहरूका न खरुश्चेवका यह युगहै प्लास्टिकका २१
बड़ों के जीवन से शिक्षा २२
क्या कभी स्वप्न भी सच्चे हुए हैं ? २३
सफलता का रहस्य २४
एक प्याज से २८ रोग दूर भगाओ २७
ज़रा ५ मिनट के लिए साईकल तो देना २६
मानोगे तो घाटे में न रहोगे ३१
हम क्यों हसते हैं ? ३२

स्थायी स्तम्भ : शिक्षा-समाचार, समाचार-सार अपनी बोली'च, फूल और काँटे, सम्पादकीय विचार; यहभी खूब रही, नयआविष्कार तथा अन्य

## ★ नव निर्माण ★

श्रम का सूरज निकलो घरसे निकला श्रमिक किसान
ले कुदाल हल बैल साथ में करने नव निर्माण
श्रम के बलिदानों की भूखी उसे बुलाती धरती रूखी
उसकी श्रम गंगा के जल से उस ही नागर ने बल से
खूब फूलती फलती धरती मूँगा मोती गेहूं भरती
यह उसके उपवनका माली, इसे बुलाती डाली डाली
जिसने अपने साथ किया सारे जग का कल्याण
श्रम का सूरज निकला घरसे निकला श्रमिक किसान
खेतों औ खलियानों में भी देखो तो मैदानों में भी
गेहूँ मटर और चने के दाने झूम रहे कैसे मस्ताने
श्रमकी कोयल कूक रही है मनकी कोयल कूक रहीहै
भर-भर कर दोनों हाथों में बंध २ कर पातों २ में
काट रहे सोने की फसलें स्वप्नों के अरमान
श्रमका सूरज निकला घरसे निकला श्रमिक किसान
देखो धन का ढेर लगा है देखो मन का फेर भगा है
भर २ दोनों हाथ उलीचो अपनी २ आँखें मींचो
लेकर हल बैलों की जोड़ी निकल पडे सब होड़ाहोड़ी
धरतीके अंतरको जानो अपने भावी को पहचानो
अपने ही श्रम के बल बूते करो राष्ट्र निर्माण
श्रमका सूरज निकला घरसे निकला श्रमिक किसान !
लेख कुदाल हल बल साथ में करने नव निमाण॥

—सुरेन्द्र शुक्ल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# समाचार सार

—एक ब्रिटिश कम्पनी ऐसा टैलिप्रिंटर बना रही हैं जो प्रति मिनट ५ लाख शब्द टाइप कर सकेगा।

—मा० गुरबन्तसिंह ने त्यागपत्र दे दिया है जो स्वीकार कर लिया गया हैं।

—इस वर्ष देश में चावल की उपज २८ मिलियन टन होने की आशा है।

—बृटेन; रूस और अमरीका जनेवा में आणविक बमों के विस्फोट बन्द करने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव ड्राफ्ट कर रहे हैं।

—ज्वालामुखी के निकट तेल के और कूएँ खोदे जाएँगे।

—रूस ने अणु शक्ति द्वारा चालित वायु यान उड़ाने के टैस्ट किए है।

—लण्डन की कम्पनियों में ५७ प्रतिशत स्त्रियाँ काम करती हैं।

—पंजाब की भाषा समस्या को हल करने के लिए एक कॉफ्रेंस बुलाए जाने का सुझाव है।

—मिथेल (रोहतक) में न्यूजप्रिंट कागज बनाने की मिल स्थापित करने का सुझाव दिया गया है।

फ्राँस में हो रहे चुनावों में भूतपूर्व ५ प्रधानमन्त्री हार गए है।

—गत मास कैनेडा और नार्वे के प्रधान मन्त्री सरकार के निमन्त्रण पर भारत आए।

रूसी वैज्ञानिकों ने कपास से ऊन तैयार करने में फलता प्राप्त कर ली है।

—युवरानी तथा युवराज कर्णसिंह सदरे रियासत जम्मू तथा काश्मीर पँजाब आए हुए हैं.

—अमेरिका और पाकिस्तान मे परस्पर रक्षा-सन्धि विषयक बातचीत हो रही है।

# शिक्षा समाचार

—बेसिक शिक्षा पर धर्मशाला में एक सेमिनार स्थानीय अध्यापकों के हितार्थ २८ २६ नवम्बर को हुई।

—लोकसभा में शिक्षामन्त्री श्री श्रीमाली के वक्तव्यानुसार तीसरी पंचवर्षीय योजना में निःशुल्क प्राइमरी शिक्षा की व्यवस्था की जाएगी.

—डि० बेसिक तथा वर्नेकुलर टीचर्ज यूनियन के अध्यक्ष के अनुसार लोकल बाडीज स्कूलों के जिन्हें सरकार ने अपने प्रबन्ध में लिया है, ३० हजार में से २८ हजार को पैन्शन के अधिकार से वंचित कर दिया गया है।

पंजाब सरकार अपने २० कालेजों को ४० लाख और प्राईवेट कालेजों को ४ लाख की ग्रांट देती है।

५७-५८ में केंद्र ने पँजाब को ६ लाख ७५ हजार रुपए की शिक्षा-ग्राँट दी। यह लोकल बाडीज के प्राइमरी अध्यापकों के वेतन में की गई वृद्धि के लिए थी।

पँजाब सरकार ने प्लानिंग कमीशन को एक स्कीम भेजी है जिसमें ५७-६१ के लिए प्राइमरी टीचरों पर २७५६६००० और सैकण्डरी टीचरों पर १५८४६००० रुपए व्यय करने का अनुमान लगाया है। उसका सुझाव है कि प्राइमरी अध्यापकों के वेतन का ग्रेड ६०-७५ और सैकण्डरी अध्यापकों का [illegible]०-२५० कर दिया जाए।

केंन्द्रीय सरकार ने पँजाब सरकार को ६० ६१में मिडल तक शिक्षा निःशुल्क कर देनेकी स्कीम पर होनेवाले व्यय को पूरा करने के लिए आर्थिक सहायता देने का निश्चय नहीं किया।

–केरल-शिक्षाबिल राज्य विधानसभामें पासहोगयाहै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# अपनी बोली 'च

## ★ आदमी ते मशीनां ★

जिन्दगी दा संघर्ष ऐना वध गया है कि आदमी मशीन बनदा जा रिहा हैं—पर साइंस नित नवीआँ मशीनां बना के मनुष्य दी लोड़ नूं घटादीं जा रही ए। जिवें इक अजेही मशीन बनाई गई ए जेहड़ी रोगी दी बीमारी नूं ठीक ठीक 'डायगनोज' कर सकदी ए। हार कुफ्फ सालाँ तीक एह मशीन तरक्की करदी करदी डाक्टर दी जगह लै लएगी। ऐसे लई एस मशीन दा नां भी मकेनिकल डाक्टर रखिया गया ए। इक हार मशीन ए जेहड़ी बहुतेआँ २ रकमां दी जरब तकिंडां 'च कर सकदी ए जद कि इक होश्यार हिसाबदाद ओस नूं कई घण्टियां 'च भी ठीक तरस नहीं कर सकदा। इक टैलिप्रिण्टर अजेहा बन चुका ए जेहड़ा इक मिनट विच ३ हजार अक्षर टाईप कर सकदा ए गोया इह मशीन ४८ टाईपिस्टां दा कम कल्ला कर सकदी ए। इस 'च सुधार करके इस दी रफ्तार ५ लख शब्द प्रति मिनट तक ल जान दी कोशिश कीती जा रही है।

साडे रोज दे जीवन 'च बल्दाँ दा ट्रैक्टर बहुतेआँ ते चक्कीआं दा थां मिलां लै चुकीआं हन। मुर्गी दे बच्चे आंडियाँ चों मशीन राही कढ़े जान लग पये ने। गल की हुन मनुखां दा कम मशीनां राहीं होन लग पिया है। ओह दिन दूर नहीं जद कि आदमी बिलकुल निकम्मा हो जायगा। पर किसे इह भी कदे सोचिया है कि नवीआँ २ मशीनां बनन दे नाल २ बेकारी भी वधदी जा रही है। किधरे इह मशीनाँ आदमी आदमी नूँ अपने बस 'च न कर लैन—हुन ताँ आदमी मशीनां नूं चलांदा ए ते फेर मशीनां आदमी नूं चालू करन लग पैन। —भाईया रेलू

# फूल और कांटे

## (पाठकों के प्रश्नों के उत्तर)

प्र०—फ्राँस के चुनावों में ५ भूतपूर्व प्रधान मन्त्री क्यों हार गए? —सुनीतिवर्मा, शिमला।

उ०—इस लिए कि जनता उन्हें देख चुकी है और अब नए उम्मदीवारों को अवसर देना चाहती है।

प्र०—जनरल सिकन्दर मिर्जाको अयूब खाँ ने पकिस्तान बदर क्यों कर दिया? सोम प्रकाश करनाल।

उ०—इस लिए कि एक मियान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं।

प्र०—बर्मा के प्रधान मन्त्री यू नू ने प्रधान मन्त्री पद त्याग कर एक सप्ताह के लिए भिक्षु बनने में क्या लाभ देखा? चिमन लाल रोहतक

उ०—उन पर लगाए गये भ्रष्टाचार के अरोपसे प्रेस्टीज में जो फर्क आगया था वह दूर जाएगा।

प्र०—पाकिस्तान के डिक्टेटर जनरल अयूब खां कब तक टिकेंगे? धनपत राय, पठानकोट।

उ०—जब तक कोई दूसरा सैनिक अफसर 'क्विट पाकिस्तान' कहने का साहस बटोर नहीं पाता।

प्र० अन्न के अभाव के साथ ही यकायक मार्केट में कागज की कमी क्यों आ गई है? सरला हिसार।

उ०-इस के दो कारण हो सकते हैं (१) या तो लोगों ने अन्न के स्थान पर कागज खाना शुरू कर दिया है (२) भारतमें पढ़ने वाले बच्चों की संख्या बहुत बढ़ जाने से कागज की खपत भी बहुत ज्यादा हो गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# सम्पादकीय विचार

## परीक्षा प्रणाली में सुधार

शिक्षा-विशेषज्ञों का कहना है कि प्रचलित परीक्षा प्रणाली दोष-युक्त है इसलिए इसमें उचित परिवर्तन होना चाहिए। निस्सन्देह किसी विद्यार्थी की योग्यता का ठीक अनुमान किसी परीक्षा में प्राप्त अंकों से नहीं लगाया जा सकता। अच्छे र परीक्षार्थी भी कई बार परीक्षा भवन में घबरा जाते हैं और अपनी योग्यता का पूरा परिचय नहीं दे पाते। अत; सुझाव है कि प्रत्येक विद्यार्थी की कक्षा में उसके कामकी वर्ष भर की रिपोर्ट के आधार पर परोमोशन दी जाए। न जाने इस युक्तियुक्त तथा सुन्दर सुझाव को कार्यान्वित क्यों नहीं किया जाता?

## हायर सैकण्डरी सिस्टम

यह कहना अनुचित न होगा कि हायर सैकण्डरी सिस्टम प्रचलित करने में बहुत जल्दबाजी से काम लिया गया है। इसका परिणाम यह है कि ६ मास खत्म होने को आये किन्तु अभी तक कई विषयों की पुस्तकें मार्किट में उपलब्ध नहीं हैं। यूनिवर्सिटी रजिस्टरार के एक वक्तव्य के अनुसार अनुपलब्ध पुस्तकें 'शीघ्र' मिलनी शुरू हो जाएंगी। यदि ऐसा हो भी जाय तो भी प्रश्न यह है कि कोर्स की पुस्तकों की व्यवस्था किए बिना यह प्रणाली प्रचलित क्यों की गई? एक वर्ष के विलम्ब में क्या हानि हो जाती? पुस्तकों की देर से प्राप्ति के कारण विद्यार्थियों को जो हानि होगी उस की पूर्ति कैसे होगी?

## सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

सरकार द्वारा प्रकाशित स्कूली पुस्तकों से अधिक लाभ उठाने के लिए पुस्तक विक्रेताओं ने जिल्दें बांध कर इन्हें बेचना शुरू कर दिया था और जिल्द के दाम वे बाजार दर से अधिक लेते थे। बिना जिल्द के ये पुस्तकें मिलनी असम्भव हो गई थीं। इस चोर बाजारी को खत्म करने के लिए सरकार ने आज्ञा दे दी है कि कोई पुस्तक-विक्रेता इन पुस्तकों को जिल्दें बन्धवा कर न बेचे। यद्यपि इस के उल्लंघन के लिए उचित दँड भी तजवीज किया गया है तो भी हमें सन्देह है कि इस आज्ञा से अभीष्ट सिध्द हो सकेगा क्योंकि दुकानदार पुस्तकें रखते भी 'नहीं हैं' कह चोर बाजारी जारी रख सकते हैं। अच्छा होगा यदि सरकार जिल्दें बन्धवाने की की व्यवस्था भी स्वयँ ही करे।

## रेडियो और फिल्मों द्वारा शिक्षा

उन्नत देशों में शिक्षा के लिए नए नए साधनों का प्रयोग किया जा रहा है और रेडियो तथा फिल्मों से विशेष रूप से सहायता ली जा रही है।

प्रसन्नता की बात है कि हमारे देश में भी इन दो माध्यमों के उपयोग की ओर सरकार का ध्यान आया है। स्कूलों में रेडियो लग रहे हैं और समय समय पर शिक्षा-प्रद फिल्में दिखाने का भी आयोजन किया जाता है किंतु यह आम शिकायत है कि कई स्कूलों में रेडियो द्वारा वे विशेष प्रोग्राम विद्यार्थियों को सुनने का अवसर नहीं दिया जाता जिन का आयोजन 'आकाशवाणी ने कर रखा है।

आशा है कि यह शिकायत सम्बधित स्कूलों के अधिकारी दूर कर देंगे।

### शुल्क भेजिए

जिन ग्राहकों का शुल्क समाप्त हो चुका है वे कृपा करके मनी आर्डर से शुल्क भेज दें। —मनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रादेशिक भाषाओं की लिपि भी देवनागरी ही होनी चाहिए

[ लोकमान्य तिलक के विचार ]

देवनागरी लिपि न केवल समस्त आर्यभाषाओं की ही अपितु राष्ट्रभाषाकी भी लिपि होनी चाहिए, समस्त भाषाओं की एक ही सम्मिलित लिपि हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का अविभाज्य अंग है। समस्त भारत की एक ही सम्मिलत भाषा होनी चाहिए।

भूतकाल में देश के टुकडे हो जानेके कारण राष्ट्रभाषा के भी टुकड़े हो गए थे जिसकें कारण क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति लोगों का विशेष प्रेम हो गया था। जब अंग्रेजी प्रभुत्वमें पुनः राजनीतिक एकता स्थापित हुई तो अंग्रेजी ने भारतीय राष्ट्र-भाषा का पद ग्रहण कर लिया। हमारी स्वराज्य स्वदेशी और बायकाट की योजना में अंग्रेजी का कोई स्थान न होगा और इसका स्थान हिंदी लेगी।

लार्ड कर्जन ने हमें स्टेंडर्ड टाइम दिया। इसी प्रकार हम स्टडर्ड लिपि चाहते हैं। यदि वह हमें राष्ट्रीय आधार पर स्टेंडर्ड लिपि देते तो वे हमारे और भी अधिक सम्मान के पात्र होते उन्हों ने एसा नहीं किया अतः यह काम हमें स्वयं करना होगा और समस्त प्रांतीय भावनाओं और पक्षपात को त्यागना होगा।

बँगाल के लोग स्वभावतः अपनी लिपि पर अभिमान करते हैं। इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं देता। गुजराती भाई कहते हैं कि उनके अक्षर लिखने में सुगम हैं क्योंकि वे ऊपर रेखा नहीं खींचते। महाराष्ट्र के लोग यह कह सकते हैं कि मराठी के अक्षर वही हैं जिन में संस्कृत लिखी जाती है अतः मराठी कें अक्षर ही समस्त भारत की भाषाओं के अक्षर होने चाहिएं साथ ही उनके ही अक्षर क्यों न अपनाएँ वे लिखने में सरल और देखने में सुघड़ होने चाहिएँ साथही उनमें धारावाही रूप में लिखे जाने की क्षमता होनी चाहिए। जिन अक्षरों को आप बनाएं वे ऐसे हों जिनसे विभिन्न आर्यभाषाओं की समस्त ध्वनियों की अभिव्यक्ति हो सके इतना ही नहीं वे द्रविड़ ध्वनियां की अभिव्यक्ति भी सुन्दरता से कर सके। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक अक्षर होना चाहिए देवनागरी लिपिमें ही इसकी क्षमता है।

विभिन्न वर्णमालाओं के परस्पर विरोधी दावों का समाधान रोमनलिपिका अपनाया जाना नहीं है। इस प्रकार का सुझाव मुझे अत्यन्त हास्यस्पद जान पड़ता है। रोमन वर्णमाला और उसके अक्षरबड़े त्रुटिपूर्ण हैं और हमारी ध्वनियों की अभिव्यक्ति करने के लिए अनुपयुक्त हैं। अंग्रेजी व्याकरणों ने भी इन्हें त्रुटि पूर्ण बताया है। युरोप के संस्कृतज्ञों ने घोषणा की है कि देवनागरी की वर्णमाला युरोप की समस्त वर्णमालाओं से श्रेष्ठ और पूर्ण है।

'मेरे लिए समय नाप-तोल के बाटों की अपेक्षा लिपिको स्टेण्डर्ड रूप दियाजाना अधिक आवश्यक है। यह प्रश्न नितॉंत अराजनैतिक है प्रत्येक प्राँत के स्कूलों की किताबों में स्टेंडर्ड लिपि (देवनागरी) में कुछ पाठ अवश्य होने चाहिएँ जिससे आनेवाली पीढ़ी बचपन से ही उससे परिचित हो जाए। यदि बँगाली भाषा की कोई पुस्तक देवनागरी अक्षरों में छपे तो मैं लेखकका अभिप्राय बहुत कुछ समझ सकता हूं क्योंकि सब नहीं तो कम से कम ५० प्रतिशत शब्द संस्कृत से लिए हुए होंगे!' (जीवनी से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



कहानी—

# मुझे इस तरह न देखो !

(कु० सुदर्शन खोसला प्रभाकर)

उसकें होंठ बर्फीली हवा के कारण पत्थर की तरह ठोस हो चुके थे लेकिन उसके मुंह पर एक विचित्र सी कठोरता थी। ठण्ड से बचने कें लिये उसने कमीज का कालर खींच कर गले को ढकने का असफल प्रयत्न किया लेकिन उसका शरीर सुस्त होता गया। वह क्षण भर के लिये रुका—एक तेज हवा का झोंका आया और उसके शरीर का कम्पन तेज हो गया। उसके मुख की दृढ़ता और भी बढ़ गई।

'राज'—!'

किसी ने कोमल स्वर में पुकारा। उसकी दृष्टि पुकारने वाले को खोजने लगी। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो यह आवाज वह कई बार सुन चुका हो। उस के ठण्ड से जमे होंठ तनिक हिले तथा कांपती आवाज में चिल्ला कर उसने पूछ लिया—

'कौन ?'

कुछ क्षणों तक चारों ओर निस्तब्धता रही। राज की दृष्टि गहरे विषाद से भर गई।

'राज—तुम—यहां—!' थिरकती आवाज से कहती हुई पन्द्रह वर्षीया नव युवती राज के निकट आकर खड़ी होगई। उसकी बड़ी २ आँखें आश्चर्य से फैल गई थीं। उसका मुख साँवला तथा गोल था। बाल बहुत बड़े नहीं थे—व अस्त व्यस्त हवा में लहरा रहे थे। उसके शरीर पर एक चादर लिपटी हुई थी जो उसके शरीर से हट कर अब हवा से अठखेलियाँ कर रही थी। हलके पीले रँग की साड़ी का आँचल बड़ी दृढ़ता से पकड़े हुये वह बोली —

'कब आये—?'

राज का जी किया कि वह डांटकर कह दे—'तुझे क्या—तू अपना काम देख !'

लेकिन उसकी जुबान एक दम रुक गई।

'राज—बालिका के स्वर में स्नेह का अनुरोध तथा विनय था।

राज ने घूर कर देखा। बालिका ने सहम कर आँखें मूँद ली थीं—शायद वह उसकी दृष्टि के भार को सम्भाल नहीं सकी थी। उस के साथ ही वह चीख पड़ा—

मुझे ऐसे मत देखो—परमात्मा के लिये ऐसे मत देखो ! वह कुछ बोला नहीं बल्क तेजी से पग-डण्डी का छोर और मुड़ गया।

'राज—' एक कांपती, थिरकती आवाज वह देर तक सुनता रहा—पर वह रुका नहीं।

सड़क के किनारे पहुँच कर राज ने गहरी सांस ली और वृक्षों के झुटपुटे को देख कर उस की आँख भर आई—

दो वर्ष पूर्व—यही बालिका जिसने अपना नाम छन्नो बतलाया था—इसी झुटपुटे के नीचे पड़ी थी। उसकी मैली साड़ी में कई पैबन्द झांक रहे थे। उसकी फैली २ आखों में याचना थी। तब—वह उसके एक दम निकट पहुंच गया था छन्नी की आँखें चमक पड़ी थीं और राज ने तपाक से पूछ लिया था—

पैसा लेगी ?

'नहीं' उसका मुख स्वाभिमान से दमक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रहा था। राज अपने प्रश्न पर स्वयं ही झुन्झला पड़ा था –'तो यह कौन हो सकती है ?' राज का हृदय उसकी करुण कथा सुनेन को व्याकुल हो उठा था। पूछनेपर कहा कि जन्मके विषय में कुछ नहीं जानती, केवल इतना ही जानती है कि उस का पालन एक वृद्ध ने किया ! पर वह भी उसकें युवावस्था तक पहुंचने तक परलोक सिधार गया मरते समय उसके झुर्रीयुक्त मुख पर गहरी व्यथा थी।

'तुम्हें छोड़ते हुए दुख होता है–मेरी बच्ची, काश ! मैं तेरे दुखी जीवन का छोर किसी के सुदृढ़ हाथों में दे जाता।' और उसके बाद वृद्ध की आँखों का अन्तिम पानी अश्रु बन कर कपोलों पर ढुलकने लगा था। फिर वह जीवन की कच्ची डोर तोड़ कर दूर जा चुका था, पर छन्नी निराधार थी–इतनी बड़ी दुनिया में।

छन्नी ने अपनी कहानी का अन्त करते हुए कहा था–

'मुझे सच्ची सहानुभूति तथा प्रेम की जरूरत है रोटी के टुकड़ों की नहीं–इसी लिए ता मैं प्रयत्न करने पर भी भिक्षा नहीं मांग पाई हूं।

उसके इन शब्दों ने राज के दिल की गहराई को छू लिया। छन्नी की आंखें शायद कह रही थीं

'मुझे आश्रय दो मैं भी मानवी हूं।' तब राज की आँखों में आज की सी कठोरता नहीं थी बल्कि करुणा का पानी था।

'क्या मेरे साथ चल सकती हो ?' इतना कह कर राज ने अनुभव किया कि उसका दिल जोरों से धड़क रहा था।

तुम साथ ले चलोगे ? आश्चर्य से छन्नी का मुंह विशाल हो गया था उसके गोल साँवले मुख पर फीकी लालिमा दौड़ गई थी।

राज चला—उसकें पीछे वह टूटी बेल की तरह निर्बल आश्रिता सी। मुड़ कर देखा वह गिर पड़ी और राज ने दौड़ कर उसे सहारा दिया। तब उसका मुंह और भी रक्तिम हो गया था।

कुछ देर बाद राज रुका उस का घर आगया था। वह अपने घर पर अकेला ही था। उस का बूढ़ा पिता दूर के किसी ग्राम में रहता था। उस के लाख प्रयत्न करने पर भी उस के साथ नहीं रहना चहता था। शायद इस का कारण बाप दादा के घर का मोह ही था।

राज ने घर में पाँव रखा–वह भी लजाती हुई भीतर आ गई।

'बैठ जाओ !' राज ने अपने शब्दों में सारी कोमलता उँडेल कर कह डाला। वह बैठ गई––सहमी २ सी !

दिनों के परिवर्तन के साथ २ राज ने देखा कि छन्नी काफी बुद्धिमति है। वह जब भी घर लौटता घर को नये रूप में सजा पाता।

एक दिन जब वह सायँ को लौटा तो भीतर से सुरीले स्वर में वह गा रही थी—

'बच २ कर आना ओ राही !
रोक न ले स्वर मेरा –!

'उफ, कितनी मादक आवाज है।' राज का दिल जोर से धड़कने लगा था—

'यह तो छिपी रुस्तम निकली !' उसने आश्चर्य को बड़ी कठिनता से होंठों में छिपा कर भीतर कदम रखा।

'ओह––तुम––'

छन्नी घबरा गई। राज कुछ बोला नहीं, उसे अपने जीवन की एक पुरानी घटना याद आ गई–

'तब वह कालिज में पढ़ता था। तथा अच्छा गायक था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



एक दिन कालिज में एक संगीत सम्मेलन का आयोजन हुआ। राज ने भी सहर्ष भाग लिया राज के मित्रों को पूरा विश्वास था कि उस सम्मेलन में राज को प्रथम-गायक माना जायेगा राज स्टेज पर आया, सारा हाल तालियों से गूँज उठा। राज की अँगुलियाँ सितार पर नाच रही थीं स्वर लहराता हुआ उठ रहा था। तभी न जाने कैसे सितार का एक तार टूट गया। राज का मादक स्वर सितार की बेसुरी आवाज में डूब गया। उसके बाद भी शायद राज गाता रहता पर-पर-उसकी विरोधी पार्टी ने व्यँगपूर्ण कहकहा लगा दिया तथा-'हा-हो" की ऊँची आवाज में उसका स्वर छिप गया-ओह्-तब वह पानी २ हो गया-लड़खड़ाते कदमों से स्टेज से नीचे उतर आया था। उसके बाद उसे पता ही नहीं लगा कब सम्मेलन समाप्त हुआ और जब उसे होश आया तो प्रधान महोदय कह रहे थे-

'हर्ष के साथ कहना पड़ता है कि इस वर्ष संगीत सम्मेलन में सतीश प्रथम रहा !' और इससे आगे राज कुछ न सुन सका। न जाने क्यों उस दिन से उसके दिल में सङ्गीत से घृणा उमड़ पड़ी थी !'

इस घटना के याद आते ही फिर राज के मुख पर वही पुरानी कठोरता जम गई। वह एक टक छन्नी को ताकता रहा तथा उसकी दृष्टि की कठोरता बढ़ती गई !

छन्नी कांप उठी-मुझे ऐसे मत देखो राज; तुम्हारी दृष्टि से डर लगता है !' छन्नी ने दृष्टि झुका ली थी।

कुछ रुक कर राज ने कहा-

'छन्नी-'

'जी-'

'तुम बहुत अच्छा गाती हो !'

'हूं-मुझे वीणा ले दो राज।'

मुंह में हाथ का अंगूठा डाल कर छन्नी बोली -

'और देखो मैं ने वीणा बजाना सीख लिया है।' छन्नी की यह बात सुन कर राज चौंका—

'किस से—?'

'रमन—',

'रमन-क्या रमन आया था—'बीच में ही राज चीख उठा। ईर्ष्या तथा कठोरता ने उस के मुख को विकृत बना डाला था।

'मूर्ख ! कितनी बार कहा उससे मत बोला करो—'

'क्यों न बोलूं। वह स्नेह से बोलता है निश्छल भाव से मुझे चाहता है-'

'छन्नी-' राज मारे क्रोध के दाँत पीस रहा था !'

'यदि भला चाहती है तो उससे बोलना छोड़ दे अन्यथा' राज के दाँत क्रोध से कड़क रहे थे।

'राज-' छन्नी ने उसे आगे बोलने से रोक दिया तथा रोने लग पड़ी। उस का स्वाभिमान डगमगा गया था।

एक साँय को जब राज घर लौटा तो कमरे के भीतर वीणा का क्षीण स्वर सुनाई दे रहा था। वह भीतर जा पहुंचा-देखा—छन्नी की कोमल तथा लम्बी अंगुलियां वीणा की तारों पर दौड़ रही थीं। उसकी साड़ी का आँचल बेखबर पृथ्वीपर फैला पड़ा था।

'छन्नी—'राज चिल्लाया। वह काँप गई।

'वीणा कहाँ से आई—'

( शेष सफा १६ पर )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन कीजिए !

[ श्री शमसुद्दीन एम. ए. बी. टी. डोंगर गाँव ]

शिक्षा और उससे सम्बन्धित समस्याएं आज के युग के चिंतन के विषय हैं। सरकार तथा जनता अभी इस प्रयत्न में है कि हमारी आधुनिक शिक्षा निर्दोष व अधिक से अधिक कल्याणकारी हो। इसी ध्येय से केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने राज्यों की सरकारों को आदेश दिया कि वे अपनी परीक्षा पध्दतियों में आवश्यक सुधार करें।

परीक्षा की प्रथा प्रथम चीन में प्रारम्भ हुई तथा बाद में संसार के अन्य भागों में फलती गई। १९वीं शताब्दी में पाश्चात्य देशों में इसकी खूब धूम रही। यद्यपि उसी शताब्दी के अन्त तक इसके विरुद्ध प्रतिक्रिया भी प्रारम्भ हो गई। सन १८८८ में वहाँ एक लेख प्रकाशित हुआ जिसमें सैकड़ों प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने परीक्षा-पद्धति का विरोध करते हुए कहा कि यह परीक्षा के लिए शिक्षा का बलिदान है। २० वीं शताब्दी के प्रथम कुछ वर्षों में शिक्षा शास्त्रियों ने सुधारों की बड़ी बड़ी योजनाएं निर्मित कीं। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका ने इस दिशा में विशेष प्रगति की तथा माध्यमिक व उच्च श्रेणी की परीक्षा में बड़े बड़े सुधार किये। विभिन्न नौकरियों में भरती के लिये व्यावहारिक परीक्षाएँ निकालीं। बटलर ऐक्ट (१९४४) के द्वारा इंग्लैंड ने भी अमेरिका के आधार पर स्कूलों में सुधार किए।

भारत में यद्यपि लार्ड कर्जन के समय से ही सुधारों की आवश्यकता महसूस की गई किंतु १९वीं शताब्दी तक स्थिति वैसी की वैसी बनी रही। इस दिशा में कलकत्ता युनिवर्सिटी कमीशन ने भी कई सुधार पेश किए हैं। भारत में शिक्षा सम्बन्धी सुधारों की अधिक आवश्यकता है क्योंकि विदेशी सत्ता के अंतर्गत यहां की शिक्षा-नीति प्रारम्भ से ही दोष पूर्ण रही है। सन १८३४ में लार्ड मकाले के शब्दों में शिक्षा का उद्देश्य ऐसे क्लर्कों या कर्मचारियों को तैयार करना था जो अँग्रेजी शासन को कार्यरूप में परिणत करने में सहायक हो सकें। ऐसे निम्न दर्जे के उद्देश्य को लेकर जिस शिक्षा पद्धति का हमारे यहां प्रारम्भ हुआ वह कहाँ तक उपयोगी हो सकती है? निश्चय ही हमारी आज की समस्याओं की जड़ में यही दोषपूर्ण बीज है जो आज फल और फूल रहा है। आज हमें उन शब्दों को याद करना है जो सात वर्ष पूर्व राधाकृष्णन कमीशन ने कहे थे। यह निश्चय है कि यदि हमें उच्च शिक्षा में कोई सुधार करना है तो वह परीक्षा-पध्दति में सुधार है।

इसका सबसे बड़ा दोष तो यह है कि हमारी सम्पूर्ण शिक्षा परीक्षा हो रही है। शालाओं में साप्ताहिक, त्रैमासिक, छमाही, वार्षिक व अन्य कई प्रकार की परीक्षाएँ होती हैं। इस प्रकार स्कूल कालेजों का सारा समय परीक्षाओं में ही व्यतीत होता है।

इसके सिवा दूसरा दोष यह है कि बाह्य परीक्षाओं पर आवश्यकता से अधिक जोर दिया जाता है। इसी के परिणाम पर छात्रों का नौकरी प्राप्त करना, उच्च-शिक्षा के लिए प्रवेश पाना तथा छात्रवृत्ति प्राप्त करना आदि निर्भर रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ऐतिहासिक रेडियो नाटक

# प्रथम जौहर

[ श्री हरिकृष्ण 'प्रमी' ]

[ गतांक से आगे ]

सैल्यूकस—किन्तु जीते हुए साम्राज्य को सुस्थिर बनाना भी तो विजेता का कर्तव्य है सम्राट! जहाँ तहाँ विद्रोह के चिन्ह दिखाई देने लगे है। इन विद्रोहों को प्रारम्भ में ही कुचल देना होगा।

सिकन्दर—यह सब हम तुम पर छोड़ते हैं—मैं तो अपने साहस के लिए नया क्षेत्र खोजूंगा।

सैल्यूकस—सम्राट ने सोचा क्या है?

सिकन्दर—हम लौटेंगे-किन्तु जिस मार्ग से आए हैं उससे नहीं, जल मार्ग से। हमने राजा पुरु से कहा है, वह हमारे लिए नौकाओं के एक बड़े बेड़े का प्रबन्ध करेगा। हमारी सेना अक्सिनी और उसके बाद सिंधू नदी के जलमार्ग से समुद्र तक जाएगी—उसके बाद सागर के मार्ग से हम फारस जाएँगे।

सैल्यूकस—किन्तु जलमार्ग से जाना सुरक्षित नहीं है। मार्ग में भारत के अनेक गणराज्य हैं वे मार्ग रोकेंगे।

सिकन्दर—नदियों के दोनों तटों पर हमारी पैदल और अश्वारोही सेना चलेगी। और हम तो चाहते ही हैं कि ये गणराज्य हमारा मार्ग रोकें। हमें युद्ध करने का अवसर प्राप्त हो।

सैल्यूकस—सम्राट की इच्छा पूर्ण होगी। मैं समझता हूं, घर पहुंचने की आशा हमारे यूनानी योद्धाओं को भी उत्साहित कर देगी।

सिकन्दर—तीन दिनों के बाद आज मेरा चित्त स्वस्थ हुआ है। तुम आज सुबह ही सेना को हमारा आदेश सुना देना। देवताओं को बलिदान एवँ सूर्य को अर्घ देकर हम शीघ्र ही जल-यात्रा पर प्रस्थान करेंगे। अब तुम जाओ और ताया को भेजो।

सैल्यूकस—जो आज्ञा, सम्राट!

(सैल्यूकस जाता है।)

सिकन्दर—(स्वगत) किन्तु क्या यह मेरी जीत है। छोटे छोटे गणराज्यों से युध्द करने में क्या आनन्द आवेगा मुझे। नन्द की शक्ति का बहुत दबदबा सुना है। काश! उससे लोहा लेने का अवसर मिलता मुझे।

ताया—(आकर) देवपुत्र सम्राट ने ताया को याद किया, इसके लिये धन्यवाद। (मदिरा की सुराही और प्याले रखती है)

सिकन्दर—ताया; सशस्त्र आई हो।

ताया—सशस्त्र?

सिकंदर—सकँदर के प्राणों में बसने वाले दानव से लड़ने के लिए-सुरा, सौंदर्य और संगीत के पैने शस्त्र लेकर।

ताया—किंतु सम्राट विश्व-विजय की आकांक्षा दानवता नहीं है।

सिकंदर—किंतु विश्व-विजय का हमारा स्वप्न टूटा जा रहा है।

ताया—और ताया के जीवन का भी एक स्वप्न था—वह भी टूटा ही रहेगा?

सिकंदर—तुम्हारा स्वप्न मैं पूरा करूंगा

ताया—पहले ढाल कर दो। फिर अपने स्वप्न की बात करो। (ताया प्याले में मदिरा ढालती है। सिकंदर एक दो घूट पीता है।) ताया, मैंने तुम्हारी भयानक से भयानक अभिलाषा भी पूर्ण की है। (फिर एक दो घूंट पीता है।) तुम ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



फ़ारस-सम्राट के राज-महलों में आग लगाने की मुझ से अनुमति माँगी थी, वह मैंने दी। जब वे महल धाँय धाँय जल उठे, तुम पैशाचिक आनन्द से नाच उठी थीं।

ताया—शत्रु के महलों से उठने वाली गगन-चुम्बी लपटों को देख कर सम्राट का दिल क्या प्रफुल्लित नहीं हो उठा था ?

सिकंदर–तुम यूनानी नारी हो, ताया !

ताया–यह तो मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है सम्राट !

सिकँदर–और ढालो (ताया मदिरा ढालती है सिकन्दर पीता है) यूनान सौंदर्य का पुजारी और वीरता का प्रशँसक है। पार्सपुर के राजमहल सौंदर्य और वैभव के नमूने थे-तुम ने उन्हें जला डाला, ताया !

ताया–किंतु फारस के सम्राट ने यूनान की प्रिय नगरी एथेंस में आग लगाई थी–मैंने तो केवल बदला लिया था !

सिकन्दर– प्रतिशोध लेना मानव की दुर्बलता है, ताया ! महानता नहीं।

ताया–देव-पुत्र इसे दुर्बलता कह सकते हैं; ताया जैसी साधारण मानवी नहीं और ताया तो मानवी भी नहीं। सम्राट की प्रेयसी होने पर भी वह–।

सिकन्दर–मदिरा का घूंट लेते हुए, रुक क्यों गई ताया बोलो ?

ताया–जाने दो सम्राट, एक वीराँगना की इच्छाएँ भी क्या मोल रख सकती हैं। सम्राट के युध्द से थकें हुए शरीर का मनोरँजन करना ही उसका धर्म है—व्यवसाय है।

सिकन्दर–तुम बहुत बड़ा अपराध करती हो ताया ! कभी कभी ऐसी बातें कह कर तुम मेरे दिल के तारों को झकझोर देती हो। मैं अपनी कठोरता को भूल जाता हूं।

ताया–क्षमा कीजिए–भूल कर बैठती हूँ–अपनी सीमा लांघ जाती हूं। इस तरह एक टक मुझे न देखिये। यह मदिरा का प्याला आपके होंठों का स्पर्श पाने को व्याकुल है–इसकी प्यास बुझाइए।

सिकँदर–(शराब का घूँट पी कर) लो तुम्हारी आज्ञा का पालन किया–लेकिन सच पूछो तो ताया न मुझे मदिरा से प्यार है न नारी से।

ताया–तो वापिस कर दीजिए प्याला।

सिकँदर–फिर भी ये कड़वे घूँट पीने पड़ते हैं।

ताया—नारी भी कड़वा घूंट है, सम्राट !

सिकँदर—हाँ।

ताया–रुक्साँग, वरसीन और आर्तकामा।

सिकँदर--कहने भर के लिये वे मेरी विवाहिता पत्नियां हैं, वे राजाओं की पुत्रियां हैं और उन का युध्द से गठबंधन एक राजनीतिक आवश्यकता है। सच पूछो तो कोई भी यूनानी प्रेम के लिये विवाह नहीं करता।

ताया--तब किस लिये ?

सिकँदर-- न्याय-सम्मत उत्तराधिकारी पाने के लिए, वह केवल कायाओं का खेल है, आत्माओं का मिलन नहीं। और डालो ताया।

ताया--(मदिरा ढालकर) मेरे मन पर से एक पहाड़ हट गया आज। सत्य की एक किरण ने मेरे दिल के कमल को खिला दिया है।

सिकँदर--किस सत्य की किरण से तुम्हारा दिल प्रफुल्लित हो उठा है ?

ताया--इस बात से कि देव-पुत्र का प्रेम अभी अछूता है।

सिकँदर--(पीते हुए) और तुम उसे छूने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की चाह करती हो।

तायी—चांद तक किस का हाथ पहुंचता है सम्राट।

सिकन्दर—लेकिन चाँद सुन्दर तो लगता है, ताया।

ताया—हाँ।

सिकन्दर—और सुन्दर वस्तु को प्राप्त करने को जी चाहता है, ताया! इधर आओ—और पास आओ।

ताया—सम्राट! अरस्तू ने कहा है—नारी के जाल से बचिए। मैं मदिरा और नारी की अपेक्षा अधिक आनन्दप्रद वस्तु आप को देती हूं।

सिकन्दर— कौन सी?

ताया—संगीत! मैं गीत सुनाऊंगी।

सिकन्दर—आज तुम मुझे पागल बना कर छोड़ोगी। अच्छा गाओ। सचमुच संगीत से मुझे प्रेम है। गाओ ताया—कल से तो फिर शस्त्रों की झंकार में सिकन्दर के दिल की धड़कनें डूब जावेंगी।

ताया—(गाती है।)

पीले; पीने वाले, पी, मैं तुझे पिलाती ज्वाला।
है आग, आग से बुझती
पानी है केवल पानी।
जो मन को मस्त बनाती
वह तो है मस्त जवानी
प्यास भरी आँखों से पी
रूप जवानी का प्याला।
पी ले, पीने वाले, पी, मैं तुझे पिलाती प्याला।
हैं छोटी छोटी लहरें
प्यार मुहब्बत की बातें,
एक नशीले सपने सी
हैं ये मदमाती रातें।
मैं नशा ढालती दिल में
युग युग तक रहने वाला।
पी ले, पीने वाले, पी, मैं तुझे पिलाती प्याला।

(ताया के गीत का अन्तिम संगीत विलीन होता है उस पर राजा पुरु और बज्रपाणि का वार्तालाप उभरता है।)

पुरु—अग्रश्रेणी गणराज्य के महा-नायक बज्रपाणि तुम्हारे चिरशत्रु शिवि गणराज्य से बदला लेने का स्वर्णावसर तुम्हें प्राप्त हुआ है।

बज्रपाणि—महाराजपुरु; तो आप चाहते हैं कि शिवि गणराज्य के विरुद्ध अग्रश्रेणी विदेशी आक्रांता का साथ दें।

पुरु—मैं तो चाहता था कि शिवि भी सिकन्दर की आधीनता स्वीकार कर सर्वनाश से अपने राज्य को बचाएँ, किंतु दुर्भाग्य उनका उन्होंने मेरा प्रस्ताव ठुकरा दिया।

बज्रपाणि—तो आप का अनुमान है कि अग्रश्रेणी स्वाधीनता-प्रेम में शिवियों से गए गुज़रे हैं।

पुरु—अग्रश्रेणियों के साहस और पराक्रम से मैं परिचित हूँ, महानायक! किन्तु महान विजेता सिकन्दर की अजेय सेना से टकराना सर्वनाश को निमन्त्रण देना है, यह भी मैं जानता हूं।

बज्रपाणि—इसका अर्थ यह है कि अग्रश्रेणी स्वेच्छा से पराधीनता के पाश में बंध जावें।

पुरु—सिकन्दर एक आंधी की भांति आया है और बगूले की भाँति ही चला जाएगा—किसी को पराधीनता के पाश में बाँधे रख सकना उस के लिए संभव नहीं होगा। उसका आत्म गौरव दूसरों के मस्तकों को केवल झुकाना चाहता है और जो मस्तक झुकते नहीं हैं उन्हें वह धड़ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अलग कर देता है। काल के अक्षरों को पढ़ो—महानायक एक साथ दो लाभ प्राप्त होंगे—सम्राट से मित्रता और अपने शत्रु शिविगण राज्य से प्रतिशोध।

देवपाल—(प्रवेश करके) अर्थात पराए अपशकुन के लिए हम अपनी नाक कटा लें।

पुरु—तुम ऐसा कहते हो, देवपाल? जो कभी सिकन्दरकी सेना में ऊँचा पद पाना चाहते थे।

देवपाल—महाराज पुरु, वह एक भ्रम था। कोई अग्रश्रेणी युवक विदेशी आक्रांता की सेवा करना स्वीकार नहीं कर सकता। मैं छुप कर आप का संभाषण सुन रहा था। आप अपनी नाक कटा चुके है और चाहते हैं अग्रश्रेणी भी कटा लें।

पुरु—मैं महानायक से बात कर रहा हूँ, देवपाल!

देवपाल—महानायक आपकी भाँति राजा नहीं है। राज्य के प्रतिनिधियों से पूछे बिना वह संधिविग्रह का निर्णय नहीं कर सकते।

पुरु—किंतु प्रतिनिधि क्या महानायक के परामर्श को अमान्य करेंगे।

देवपाल—किंतु महानायक कायरतापूर्ण परामर्श देंगे ही क्यों?

पुरु—तब मैं सम्राट के पास क्या उत्तर ले जाऊँ।

देवपाल—एक दिन आप के पास भी तो यूनानी राजदूत संधि का प्रस्ताव लेकर आया था तब आपने क्या उत्तर दिया था।

पुरु—यही कि इसका उत्तर रणभूमि में दूंगा।

बज्रपाणि—यही तो भारतीय हृदय का सच्चा उत्तर है।

पुरु—तब मैं भी तुम्हारी तरह भावुक था किन्तु भावावेश से ऊपर उठ कर विवेक पूर्वक सोचो।

देवपाल—महाराज पुरु, हमें उस विवेक की शिक्षा मत दो जो कायर बनाता है। हम महाराज के उस अविवेक पूर्ण भावावेश को मस्तक झुकाते हैं जिसने उन्हें सिकन्दर की अजेय सेना से लोहा लेने को रणभूमि में खड़ा कर दिया था—जिसने अपने चारों ओर सर्वनाश का दृश्य देख कर भी साहस नहीं छोड़ा था। सम्राट के मित्र पुरु का मुंह भी नहीं देखना चाहते।

बज्रपाणि—हाँ महाराज! देवपाल ठीक ही कहता है। राजा लोग अपने मस्तक पर राजमुकुट रखने के लिए विदेशी सम्राट के मित्र बनना स्वीकार कर सकते हैं—पर हम तो राजा नहीं हैं। आज जनता ने मुझे नायक बनाया है कल कोई और बनेगा। हमारा अपना कोई हित नहीं; स्वार्थ नहीं। देश का सम्मान ही हमारे लिए सब कुछ है।

पुरु—धन्य हो बज्रपाणि! तुम्हारे शब्दों ने मुझे झकझोर डाला है। मै स्वयं सोचता हूं—वह पुरु कहां मर गया, जो उस दिन वितस्ता के तट पर महाकाल का अवतार बनकर ताँडव नृत्य कर रहा था। वह आज विदेशी आक्रमणकारियों के चरण चूम रहा है। मै जाता हूं बज्रपाणि! मुझे पूर्ण विश्वास है कि अग्रश्रेणी भारत के गौरव की रक्षा करेंगे।

(दृश्याँतर संगीत)

जयश्री—पिता जी, सुना है यूनानी सेना अग्रश्रेणी गणराज्य पर आक्रमण करेगी।

सिंहरण—हाँ, बेटी, विजयगर्व में मतवाला सिकन्दर मार्ग में पड़ने वाली प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



राजसत्ता का मान मर्दन करेगा।

जयश्री—तब तो शिवि भी इस आंच से नहीं बचेंगे।

सिंहरण—महाराज पुरु हमें सम्राट का मित्र बनाने आए थे। वे कहते थे अग्रश्रेणियों से बदला लेने का यह स्वर्णावसर है।

जयश्री-आप ने क्या कहा?

सिंहरण- स्वाधीनता और स्वाभिमान की कीमत पर अपने चिर शत्रु से हम बदला नहीं लेंगे।

जयश्री--किंतु पिता जी, मै तो कुछ और आगे बढ़ने को कहती हूं। इस यूनानी आक्रमण के समय हम भारतीयों के मस्तक पर पराजय के कलक का टीका इसलिए लगा कि हम टुकड़ों में बँटे हुए हैं। जब पुरु लड़ रहा था तब तक्षशिला के महाराजा आँभी ने सिकन्दर का साथ दिया और जब सिकन्दर ने कठों पर आक्रमण किया तो पुरु भी सिकन्दर के साथ था। अग्रश्रेणियों पर आक्रमण होने पर हम तमाशा देखते रहे? परिणाम क्या होगा--अग्रश्रेणियों के पश्चात हमें भी सर्वनाश का ग्रास बनना पड़ेगा।

सिंहरण—और इस तरह एक एक कर पँचनद प्रदेश का प्रत्येक राज्य समाप्त हो जावेगा।

जयश्री- इस लिए मैं कहती हूं कि हमें अग्रश्रेणियों से, चिरकाल से चले आने वाले वैर को भुला कर उन पर आए हुए सँकट में शामिल होना चाहिए--जो वास्तव में अपना भी सँकट है।

सिंहरण--किन्तु क्या शिवि सँघ के प्रतिनिधि इसको स्वीकृत देंगे।

जयश्री—क्यों नहीं, किसी काल में न जाने क्यों शिवि और अग्रश्रेणियों में वैर हो गया था—उसके कारण क्या हम अपनी जन्म-भूमि को विदेशियों द्वारा पद-मर्दित होने देंगे। पिता जी, हम पहले भारतीय हैं पीछे शिवि और अग्रश्रेणी। सम्पूर्ण भारत एक है—इस तथ्य को समझना होगा। सिकन्दर ने एक एक कर पंचनद प्रदेश की सारी राज-सत्ताओं को कुचल डाला। भारत की सभी सत्ताएं एक झँडे के नीचे खड़ी होतीं तो उनकी हुंकार मात्र से विदेशी आक्राँताओं के प्राण कांप उठते।

सिंहरण—तुम ठीक कहती हो, जयश्री! भारत हमारी माँ है। शिवि और अग्रश्रेणी एक ही मां के बेटे है। दोनो गणराज्य जियेंगे तो साथ—मरेंगे तो साथ। मैं आज ही महानायक बज्रपाणि से मिलूंगा। और मैंने सोचा है दोनों राज्यो को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए बज्रपाणि और सिंहरण के वंश अब स्नेह-संबंध में ग्रथित हो जाएँ।

(शहनाई के स्वर उभरते है। और फिर धीरे धीरे विलीन हो जाते हैं।)

(शहनाई के स्वर विलीन होते हैं तो नदी का कलकल नाद सुनाई देता है।)

देवपाल—अन्त में तुम्हें ही नदी के इस पार आना पड़ा जयश्री।

जयश्री—हाँ, तुम जीते, मैं हारी।

देवपाल—नहीं, जयश्री जीती तो तुम। तुमने मुझे पतन के पथ पर जाने से बचा लिया। आज संसार में मुझ से अधिक सुखी कोई नहीं है।

जयश्री—(लम्बी साँस लेकर) हाँ, आज हम सुख की चरमसीमा पर हैं।

देवपाल—तुम्हारा यह विश्वास...।

जयश्री—देवपाल, फूलों के वन में सांप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



की भाँति हमारे सुखसंसार में विपत्ति का अजगर बढ़ा चला आ रहा है।

देवपाल—इसलिए जो थोड़े से क्षण हमें प्राप्त हैं उनका मोल बढ़ गया है। मैं चाहता हूं कि तुम्हें मदिरा की भाँति पी जाऊँ। अपने प्राणों में भर लूँ

(नगाड़े और तुरही का शब्द)।

जयश्री—(लम्बी साँस ले कर) देवपाल युद्ध का मारू राग छिड़ गया है। अब प्रीत का बांसुरी के स्वर विलीन हो जावेंगे।

((नगाड़े और तुरही की आवाज के साथ घोड़ों का हिनहिनाना, टापों की आवाज, रथों की घरघराहट, हाथियों की चिंघाड़, तलवारों की छनछनाहट आदि, युध्द का वातावरण उभरता है जो धीरे धीरे विलीन हो जाता है।)

(युध्द का वातावरण विलीन होता है तो सिकन्दर और तायाका वार्तालाप सुनाई देता है.)

ताया—देवपुत्र आज बहुत थक गए हैं।

सिकन्दर—हां, ताया, आज शरीर थक कर चूर हो गया है—लेकिन हृदय बहुत ही प्रफुल्लित है। सिकन्दर ने युद्ध का वास्तविक आनन्द आज पाया। अग्रश्रेणी और शिवि योद्धा प्राणों का मोह छोड़ कर लड़ रहे थे। उनके पास युद्ध-सामग्री हम से बहुत कम है—किन्तु उनका शौर्य अद्भुत है—मेरा तो जी करता था लड़ना छोड़ कर तमाशा देखूं।

ताया—ऐसे वीर योध्दाओं को क्या क्षमा नहीं कर सकते।

सिकन्दर—मैं भी यही सोचता हूं ताया? किन्तु—

ताया—सम्राट, उधर देखिए, दूर परे भयानक ज्वाला को लपटें और धुएं के बादल।

सिकन्दर—ठीक वैसे जैसे पालपुर के महलों के जलने पर उठे थे।

ताया—उनसे अधिक गहन।

सिकन्दर—हमें मालूम करना होगा—यह बात क्या है। (सिकन्दर जाता है।)

ताया—मैं भी चलूंगी। मुझे भयानक ज्वालाओं के देखने का शौक है।)

(ताया भी जाती है।)

(तेज हवा, ज्वाला की धू धू आवाज)

जयश्री—देवपाल! हमारे चारों ओर भयानक लपटें बढ़ी चली आ रही हैं।

देवपाल—डरती हो जयश्री।

जयश्री—नहीं आज तो हमारी सुहागरात है। हमारी काया की नहीं आत्माओं की, यह जौहर की ज्वाला हमारी आत्माओं को एक कर देगी।

देवपाल—जयश्री!

(तेज हवा का झोंका-धू धू का शब्द बढ़ता है जो धीरे धीरे विलीन होता है सिकन्दर और ताया का वार्तालाप सुनाई देता है।)

सिकन्दर—अद्भुत! राजधानी में आग लगा कर प्रत्येक स्त्री-बच्चाबूढ़ा जवान अग्नि में प्रवेश कर गया है।

ताया—किस लिए सम्राट!

सिकन्दर—इसलिए कि उन्हें पराधीन न कहाना पड़े। अपने आपको देवपुत्र कहाने वाला, विश्व विजय को आकांक्षा रखने वाया सिकन्दर भारत की इन दिवंगत आत्माओं के आगे मस्तक झुकाता है! मैंने भारत का एक कोना इसलिए पाया कि भारतीय विभाजित है अन्यथा जिनके दिलमें स्वाधीनताके लिए ऐसा प्रेम है उनपर कौन दावा हो सकता है। भारतीय यदि एक हो सकें तो एक नहीं हजारों सिकंदर उनसे टकरा २ कर चूर हो जावें। मैं महान् भारतको नमस्कार करता हूं।

—x—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# जीवन तो है किंतु जीवन का आनंद नहीं!

[ श्री विश्व मित्र वर्मा ]

कीटाणुवाद विज्ञान के परीक्षणों से सिद्ध हो चुका है, सारी दुनिया की सरकारें, जनता की स्वास्थ्य-रक्षा के लिए कुएँ तालाबों के जलों में कीटाणु-नाशक दवाएं डालती हैं और शहरों में 'फ्लोरीन' से 'शुद्ध' (?) हुआ जल जनता को नल-द्वारा मिलता है

संसार की आबादी बढ़ने के साथ साथ खाद्य की समस्या बढ़ रही है, उसे मिटाने के लिए 'अधिक अन्न उपजाओ' की योजना सिद्ध करने के उद्देश्य से अब बहुत सी बेकार पड़ी जंगली भूमि का कृषि में उपयोग करने को उत्साहित किया जा रहा है और बैलों की अपेक्षा अब विदेशों से खरीद कर मंगवाए गए 'लौह-बृषभ' (ट्रैक्टरों) द्वारा गहरी जुताई और रासायनिक नाइट्रोजन की शक्करिया खाद भूमि में डाल कर, कुएं-नहरों से पानी देकर साग, फल और अन्न के बड़े रूप पैदा किए जा रहे हैं। कीटाणुओं द्वारा हानि होने के डर से साग-फल अन्न की फसलों पर और दुकानों पर कीटाणु नाशक दवाइयाँ छिड़की जाती हैं।

गाँवों में एक-दो दशक पहले स्त्रियां सुबह चक्कियां चला कर रोज ताजा आटा घर-गुजर के लिए पीस लिया करती थीं। चावल भी रोज ऊखली में कूट लिया करती थीं। अब उन्हें फुरसत हो गयी है। उनका परिश्रम और समय बच गया है! वे अब आराम से सूर्योदय तक सो सकती हैं, पास के बाजार में कुछ बनियों ने गत-महायुद्ध से लाभ उठा कर दो तीन चक्कियाँ लगा ली है। घण्टों का काम मिनटों में करते हैं आटा पीसते है, चावल निकालते है, तेल पेरते हैं, कपास धुनते हैं रुटी काटते हैं, थोड़े पैसों में ग्रामीणों की बड़ी सेवा कर उन्हें सालभर के लिए फुरसत और आराम देते हैं!

बीस साल पहले कोई डाक्टर या दवा-खाना नहीं था। रोज ताजा आटा और चावल खाते, चना, बाजरा, महुआ चबाते और कभी फसली बुखार होता तो वनस्पति काढ़ा पीकर कुछ दिनों में चँगे हो जाते। अब सुबह चाय पीते हैं, बीड़ी की जगह सिगरेट वातावरण में धुआं फैला कर मुफ्त में एक के मुँह से निकलकर दूसरों की नाक से छाती में प्रवेश करती हैं।

लोगों को अब कब्ज होने लगा है, चक्की का आटा बहुत बारीक पिस कर असह्य गरम, जला भुना सा होकर निकलता है, और चावल तो देखने में सफेद, साफ—किंतु स्वाद भूसे-जैसा नीरस लगता है, किंतु अब स्त्रियाँ आटा-चावल रोज पीसने-कूटनेकी कष्टमय आदत नहीं डालना चाहतीं। थोड़े पैसों में सब काम हो जाता है। पुरुष अपने सिर पर एक मन की गठरी दो माल लेकर जा आ कर महीने दस दिन के लिए गृहिणी को फुरसत कर देता है। हां, सरकार ने अब बाजार में एक 'देशी' औषधालय खोल दिया है। जहाँ आयुर्वेदाचार्य 'डाक्टर' साहब, किसी को कोई भी बीमारी होने पर सुई (इँजेक्शन) लगा देते हैं अथवा एम. बी इत्यादि की गोलियों का नुस्खा लिख देते है। कितने ही लोग चाय सिगरेट की नई दोस्ती पाल कर अब कहने लगे है कि बहुत सी दवाइयां खा लेने पर भी उन्हें भोजन का कुछ स्वाद नहीं मालूम होता भूख नहीं लगती. शौच साफ नहीं होता, नींद नहीं आती शरीर में-रोम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


(सफा १० से आगे)

'रमन-' छन्नी का स्वर काँप रहा था।

'नीच—पतिता—' राज बड़बड़ाया और एक ठोकर जोर से जमा दी। छन्नी मुंह के बल गिर पड़ी। चोट लगने से मस्तक पर गहरा घाव हो गया। शायद इस पर भी राज को संतोष नहीं हुआ, उसने वीणा उठा कर पृथ्वी पर पटक दी। ठोकर लगने से वह टूट गई। तारें बिखर गईं।

आहट सुन कर छन्नी ने तेजी से सिर उठाया—वह चीख पड़ी—'राज-यह क्या किया तुमने!'

उसके आंसू टप २ पृथ्वी का उर भिगोने लगे। राज की आंखों से घृणा की लपटें फूट रही थीं—वह आगे बढ़ा।

'ओह—ऐसे मत देखो—राज! तुम्हारी आँखों से डर लगता है।' इन शब्दों ने जादू का काम किया—राज के पांव वहीं जम गये। उसने देखा छन्नी ने अपनी हथेलियों से मुंह ढाँप लिया था।

इस घटना के दूसरे दिन जब सायँ को राज घर लौटा तो द्वार बन्द था, बाहिर से साँकल लगी थी। उसके कदम लड़खड़ा गए। काँपते हाथों से द्वार खोला। कमरा सुनसान था। आशंका ने उसकें हृदय को मसल दिया। उसकी आँखें हर कोने में किसी को ढूँढने लगीं पर उन्हें निराश लौटना पड़ा—

'छन्नी—एक रहस्यमयी लड़की—जो उसके स्वप्न के हर कोने में रम चुकी थी—कहाँ गई—?' उसकी आंखें गीली हो गईं।

कुछ दिनों की खोज के बाद राज को पता लगा कि छन्नी ने अपने दिल का सारा स्नेह रमन पर उंडेल दिया है—वह सुहागवती है—पर उसकी माँग में शायद राज के अरमानों का ताजा रक्त है। पर इसमें दोष किस का है? इस प्रश्न का समाधान वह न कर सका। बल्कि उसके दिल में यह प्रश्न एक घाव की तरह बन गया।

इसकें बाद राज उस ग्राम में न रह सका; अपने पिताके पास चला गया इस आशा के साथ कि शायद वह घाव भरजाए पर घाव भरा नहीं बल्कि और गहरा होता गया-! आज वह जब इस गाँव में लौट कर आ रहा था तो वह फिर उसके मार्ग में क्यों आ गई?'

राज की विचारधारा को एक झटका लगा—

'उसकी दृष्टि कह रही थी वह निर्दोष है क्या यह सत्य है?'

सांझ का अन्धकार बढ़ने लगा। राज उस झुटपुटे को छोड़ कर घर लौट पड़ा लेकिन निराश और थका सा!

कितने दिनों का बन्द द्वार खोलते हुए उसके हाथ काँप गये। कमरे की कोई भी चीज स्पष्ट नजर नहीं आ रही थी। राज आगे बढ़ा। अचानक कोई वस्तु पाँवों से टकरा गई—एक हल्का सा शब्द हुआ—शायद जाना पहचाना था।

'ओह-वीणा-राज बड़बड़ाया।

---

रोम में एक प्रकार की गर्मी मालूम होती है। चलने-फिरने; काम काज में सुस्ती मालूम होती है, दवा या इंजेक्शन लेकर किसी तरह जिंदा है, मौत नहीं आती।' इस इलाज से आदमी की मौत टाली जा सकती है? हां, पर वह सबल स्वस्थ न होकर, नि ल रहते हुए जी सकता है। दवा से 'अनमोल' जीवन मिल सकता है किन्तु जीवन का आनन्द नहीं!'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# नेहरूका न खरुश्चेवका यह युग प्लास्टिकका है!

हमारे युग को प्रायः 'प्लास्टिक का युग" कहा जाता है। इसमें सम्भवतः कोई अत्युक्ति नहीं।

प्लास्टिक आज हमारे जीवन में पूरी तरह ओत-प्रोत है। युग-युग से मनुष्यों के परिचित काष्ठ, धातु, शीशा और पाषाण आदि अति प्राचीन पदार्थों को ये प्लास्टिक धीमे-धीमे मैदान से भगा रहे हैं। इंजिनीयरी की अनेक आधुनिक शाखाओं को इन विलक्षण पदार्थों के बिना सोचा तक नहीं जा सकता है। प्लास्टिक से हमें अनन्त आशाएं हैं।

मशीन की जैटिनाइस प्लास्टिक की बनी गरारी बिल्कुल आवाज नहीं करती है। पोलीथलीन फिल्म में लपेट कर रखी रोटी बहुत दिनों तक ताजा रहती है। हल्के वजन वाले और जंग न लगने वाले पोलीथलीन के नल २० वातावरणों तक का दबाव सह सकते हैं। इस तरह के नल में जब कभी पानी जम जाता है तो ठण्ड से नल को किसी किस्म का नुक्सान नहीं पहुँचता है। तब नल टूटने के बजाय फैल जाता है।

## प्लास्टिक की विशेषतायें

अनेक प्लास्टिक बहुत ही मजबूत हैं। वे न गलते-सड़ते हैं, न उन्हें जंग लगता है और न ही उन पर अम्लों का या क्षारों का किसी तरह का असर होता है। यन्त्र द्वारा प्लास्टिक का आप आसानी से जो चाहे बना सकते हैं, अलग-अलग शक्लों में ढाल सकते हैं, उन पर पालिश कर सकते हैं, उनमें बरमा कर सकते हैं, उनकी वैल्डिंग कर सकते हैं, उन्हें आपस में चिपका सकते हैं; और उन्हें खींच कर उनके रेशे और फीते बना सकते हैं।

प्लास्टिक में बहुत विभिन्न प्रकार के उपयोगी गुण हैं। उदाहरणार्थ, शीशे जैसा पारदर्शक पदार्थ प्लेक्सीग्लास बहुत ही मजबूत और कभी न टूटने वाला होता है। अन्य प्लास्टिकों में लचकीलापन और शीत प्रतिरोध-शक्ति वैद्युत् परिवाहकता और मजबूती, आदि गुण एक साथ ही होते हैं।

इस्पात से अधिक मजबूत और जल से कम भारी; शीशे के समान पारदर्शक और रबर जैसे प्लास्टिक को जो शब्द को बाहर नहीं जाने देते हैं और उष्णता के लिए दुर्वाहक हैं, जिन पर गर्मी तथा अम्लों का कोई असर नहीं होता है; नमूना बनाने वाले इंजिनीयरों की सब आवश्यकताओं में पूरा-पूरा काम देते हैं।

---

'छन्नी, तुम कमरे का हर चीज में क्यों बोलती हो?' राज सिसक कर रो पड़ा मानो उसका सब कुछ लुट चुका हो।

जब उसका रुदन जरा रुका तो उसे ऐसा लगा मानो अन्धकार में से दो सहमी आँखें उस की ओर देख कर कह रही हों–

'ऐसे मत देखो राज! तुम्हारी दृष्टि से डर लगता है!' तथा राजने निर्दयता-पूर्वक अपनी दोनों आँखों को भींच लिया, मानो वह सारी कठोरता को पीस कर पानी बना देना चाहता हो—उस बेदर्द कठोरता को मिटा देना चाहता चाहता हो जिसने उसकी अमूल्य वस्तु उससे छीन ली थी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# * भारतीय बाल सभा *

## बच्चों का भाग

सम्पादक-हितैषी

अध्यक्षा दीदी

## फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्नों के उत्तर]

प्र०—२१ नवम्बर को साढ़े बारह बजे आकाश में उड़ता हुआ एक ऐसा हवाई जहाज़ देखा जिसका शोर अन्य जहाज़ों से सर्वथा कम था और धुआं भी छोड़ रहा था। यह किस देश का और कैसा जहाज़ था ?

—मातूराम बनगांव(हिसार)

उ०—यह अपने ही देश का जैट हवाई जहाज़ होगा। आश्चर्य और डर की कोई बात नहीं है।

प्र०—क्या गाईडों से सहायता लेना उचित है या नहीं ? —सोहनलाल, करनाल

उ०—सहायता किसी पुस्तक से भी लेना बुरा नहीं; बुरा है केवल उस पर भरोसा रख कर मेहनत छोड़ बैठना।

प्र०—यदि कोई परीक्षार्थी मैट्रिक में मैथेमैटिक्स में फेल हो और उसे कालेज में यह विषय न लेना हो तो उसे एक वर्ष के लिए और मैट्रिक की परीक्षा के लिए रोके रखना क्या न्यायसंगत है ? —सावित्रीदेवी अम्बाला

उ०—बृटेन में तो ऐसा विद्यार्थी कालेज में प्रविष्ट कर लिया जाता है। आशा करनी चाहिए कि भारत में भी यह सुविधा दी जाने लगेगी।

प्र०—क्या परीक्षा प्रणाली को सर्वथा बन्द कर देने की कोई तजवीज है ?

—प्यारासिंह, अमृतसर।

उ०—क्या स्कूलों में धर्म शिक्षा भी दी जानी चाहिए या नहीं ?

—कुन्दन लाल लुधियाना।

उ०—धर्म शिक्षा का उद्देश्य है बच्चों में अच्छी आदतें डालना; जैसे—सत्य बोलना, बड़ों की आज्ञा मानना, और उनका सम्मान करना, अपने कर्तव्य का पालन, दूसरोंसे सद्-व्यवहार; बुरे कामों से दूर रहना आदि, यदि इनके संचारका प्रयत्न कियाजाए तो उत्तम हो।

प्र०—रेडक्रास का पहला इनाम किसने जीता है ? —मोहनलाल फीरोजपुर।

उ०—पीर सलूही प्रायमरी स्कूल के छात्र सुदर्शनकुमार ने ५ हजार रु० जीता है। —दीदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बड़ों के जीवन से

### ★महापुरुष दिखावे से दूर रहते हैं

महापुरुष स्वभावतः सीधेसादे और सरल चित्त होते हैं। जब सादगी महत्ता के साथ मिल जाती है तब वह सोने में सुगन्ध का काम करती और महत्ता को अलंकृत कर देती है। जो वास्तविक रूप से महान होते हैं वे चुपचाप अपना काम करते हैं। थोथे और यशके भूखे व्यक्ति ही अधिक शोर मचाते और प्रदर्शन करते हैं।

एक बार महान भारतीय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक बड़े भोज में आमन्त्रित किए गए। वे अपने सादे कपड़ों में ही भोज में सम्मिलित होने के लिए चले गए। द्वार-रक्ष ों ने आवारा व्यक्ति समझकर भीतर न जाने दिया। इसपर विद्यासागर अपने घर लौट गए। घर पहुंच कर उन्होंने बढ़िया वस्त्र धारण किए और पुनः द्वार पर जा पहुंचे। द्वार रक्षक उन्हें बड़े सम्मान के साथ अन्दर ले गए। जब उनके सामने खाना रखा गया तो उन्होंने कोई पदार्थ न खाया और अपना कीमती शाल थाली के पास रख कर वे उसे खाना खाने की प्रेरणा करने लगे।

पहले तो मेहमानों और मेज़बानों ने यह समझा कि विद्यासागर मज़ाक कर रहे हैं। परन्तु उन्हें शीघ्र ही यह पता लगा कि यह बात नहीं है। आश्चर्य में डूबे हुए मेज़बान ने विनयपूर्वक इसका कारण पूछा। विद्यासागर ने कहा 'आप मेरे व्यक्तित्व की अपेक्षा मेरे कपड़ों का अधिक सम्मान करते प्रतीत होते हैं इसलिए मैं अपने शाल को खाना खाने के लिए कह रहा हूं।'

### ★सम्मान पद में है या मानवता में ?

सिकन्दर ने किसी कारण से अपनी सेना के एक सेनापति से रुष्ट होकर उसे पदच्युत करके सूबेदार बना दिया। कुछ समय बीतने पर उस सूबेदार को सिकन्दर के समक्ष उपस्थित होना पड़ा। सिकन्दर ने पूछा—'मैं तुम को पहले के समान प्रसन्न देखता हूँ, बात क्या है।'

सूबेदार बोला—'श्रीमान! मैं तो पहले की अपेक्षा भी सुखी हूँ। पहले तो सैनिक और सेना के छोटे अधिकारी मुझ से डरते थे और इसी कारण वे मुझ से मिलने में सकोच करते थे, किन्तु अब वे मुझ से सम्मति लेते हैं। उनकी सेवा करने का अवसर तो मुझे अब मिला है।'

सिकन्दर ने फिर पूछा—'पदच्युत होने पर तुम्हें अपमान नहीं प्रतीत हुआ?'

सूबेदार ने कहा—'सम्मान पद में है या मानवता में? उच्चपद पर कोई प्रमाद करे दूसरों को सतावे, रिश्वत आदि ले और गर्व

(शेष सफा ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्या कभी स्वप्न भी सच्चे हुए हैं?

अच्छे या बुरे स्वप्न तो सभी देखते हैं। कोई ही ऐसा भाग्यशाली मनुष्य होगा जो बिना स्वप्नों के मीठी नींद सोता होगा। स्वप्न तो आप भी देखते होंगे किंतु कभी आप का कोई स्वप्न सच्चा हुआ है? नहीं, तो कोई हर्ज नहीं हम आपको कुछ ऐतिहासिक सच्चे सपनों का विवरण बताते हैं। तो लीजिए कुछेक महत्वपूर्ण सपने। प्रसिध्द उपन्यासकार चार्लिस डिक्कन्ज के सम्बन्ध में कहा जाता है कि एक प्रातः वह जब प्रातराश करने बैठा तो उसने विगत रात्रि में देखा स्वप्न सुनाया कि उसे कोई लाल शाल पहने मिस नेपियर नाम की एक लड़की मिलने आई है। नेपियर नाम की किसी लड़की को वह नहीं जानता था। किन्तु उसका सपना अगले दिन सत्य सिध्द हुआ जबकि दो स्त्रियां उसे मिलने आईं। उनमें से एक लाल शाल वाली थी और उसका नाम मिस नेपियर था।

(२) ग्रासवाडिंन के बिशप जौसेफ डी लेवी ने एक अत्यन्त उत्तेजनाजनक स्वप्न देखा। उन्होंने इसे नोट कर लिया। बिस्तर पर लेटे २ उन्होंने अपने नौकरों को बुलवाया और बताया कि उन्हें आर्कडयूक आफ आस्ट्रिया हंगरी की भुजाओं के चिन्हों तथा काले बार्डरों वाला पत्र मिला है। जब मैंने उसे खोला तो उसमें एक चित्र खिंचा देखा जो एक गली का था उसमें एक कार खड़ी थी जिसमें आर्कडयूक और उसकी पत्नी बैठे थे। सहसा दो युवक भागे हुए आगे आए और उन्होंने कार पर कई गोलियां चलाईं। अचानक चित्र लुप्त हो गया केवल पत्र पढ़ पाया जिसमें लिखा था—प्रिय डा० लेवी; मैं और मेरी पत्नी सारोजेवो के स्थान पर राजनैतिक अपराध का शिकार हो गए हैं। हम आप से शाँति की प्रार्थना चाहते हैं।

सारोलेवा २८ जून प्रातः ४ बजे। इसके पश्चात दोनों की हत्या की सचमुच सूचना आ गई। ये हत्यायें प्रथम विश्व युध्द के प्रारम्भ का कारण बनीं जिसमें जर्मनी ने बैलजियम की तटस्थता भंग की।

(३) प्रसिध्द जर्मन दार्शनिक शोपन हार का भी एक सच्चा सपना उल्लेखनीय है। उससे एक दिन अपने स्टडी रूम में दवात की स्याही फर्श पर गिर गई। उसने नौकरानी को आवाज दी। नौकरानी ने फर्श पर स्याही गिरी देख आश्चर्य में बताया कि उसने कल रात इसका सपना देखा था और प्रातः दूसरे नौकर से इस का जिक्र भी किया था। किंतु शोपन हार को विश्वास न हुआ। उसने कहा

( शेष सफा २६ पर )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सफलता का रहस्य

[ श्री म. प्र. 'शिक्षा रत्न' ]

[ मेरे छात्र-जीवन के अनुभव ]

सफलता प्रत्येक मनुष्य चाहता है किंतु अधिकतर इससे निराश हो जाते हैं। मानव अपनी ही कमजोरियों से विफल होता है और दोष दूसरों पर मढ़ देता है—'कालहि कर्महि ईश्वरहि मिथ्या दोषु लगांय'। पर सफलता वास्तव में हमारी दासी है—सेवा करने के लिए तत्पर, किंतु हम हैं कि इसे महारानी मान इसकी मिन्नत-खुशामत करते हैं, तब यह हमें ठुकरा देती है। छात्र-जीवन में प्रत्येक चचवा यही चाहता है कि परीक्षा में उसकी स्पृहनीय सफलता हो किन्तु होता क्या है? इसके सर्वथा विपरीत। कई बच्चे तो केवल परीक्षोत्तीर्ण-मात्र में ही अपनी विद्या-सफलता मान लेते हैं। ध्यान रहे उत्तीर्ण होना विद्या की सफलता नहीं, विद्या की सफलता तभी है जब हम विद्या का लक्ष्य प्राप्त कर लें। विद्या लक्ष्य है—तमसो मा ज्योतिर्गमय—अन्धकार से प्रकाश की प्राप्ति; 'विद्याददाति विनयम्'—विनय की प्राप्ति तथा विद्ययामृतमश्नुते—विद्या से अमृतत्व की प्राप्ति। अतः अपनी विद्यक-सफलता मापने के लिए उक्त मापदण्ड को काम में लाइए।

बहुधा मेरे साथी मुझ से प्रश्न करते हैं 'भई ! अपनी सफलता का रहस्य तो बताओ' किंतु मैं यह सुन कर सकुचाता हूं क्योंकि मुझे सफलता ही क्या मिली है परन्तु जब उनका आग्रह है तो मैं भी अपनी सफलता के रहस्य को लिख देता हूं। यद्यपि मैं इन पर पूरा न उतर सका क्योंकि कुछ बातें मुझे ठोकरों ने सिखाईं किंतु यह पूर्ण विश्वास है कि जो कोई भी इन में से किसी बात को जीवन में स्वीकार कर लेगा तो सफलता उसके पीछे-पीछे फिरेगी। ठोकरें आयेंगी किंतु 'ठोकरों से मनुष्य सम्हल कर चलना सीखता है।'

छात्र पाठशाला में प्रविष्ट होते ही एक नए वातावरण में आ जाता है। वहां उसे नए नए साथी मिलते हैं। उनसे वह अपनी मित्रता जोड़ लेता है। बहुधा ऐसा होता है कि इस प्रकार बच्चे अनजाने में बुरा साथी पकड़ लेते हैं फलस्वरूप उस कुसंग से बच्चा बुरी आदतें ग्रहण कर लेता है। ऐसे मौके पर छात्रों के संरक्षकों को अथवा समझदार बच्चों को स्वयं चाहिये कि यदि किसी का कुसंग है तो वह कभी उन्नति नहीं कर सकता। आप पूछेंगे कि बुरे साथी का ज्ञान कैसे हो, ऐसा उपाय बतायें। मेरे विचार में आप यह देख लें कि वह आप को ऐसे काम तो नहीं बता रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


जिसको आप किसी के सामने निस्संकोच न कह सकें अथवा छिपाव करना पड़े यदि ऐसा है तो आप एक दम उसका साथ छोड़ दें। किसी भी नए काम को शुरू करने से पूर्व अपने अभिभावकों की सम्मति लें लें इससे अवश्य आप दुर्गुणों से बच सकेंगे। मुझे याद है कि मेरे छात्र-जीवन की एक कुसंगति ने मुझे इतना पतित कर दिया था कि अब उससे उद्धार होना सम्भव नहीं। यदि मैं सबसे बड़ी हानि समझता हूँ तो यही है। याद रखो 'दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपिसन्।'

छोटी सी असफलता आने पर मनुष्य घबरा जाता है, विश्वास खो देता है तथा निरुत्साह हो जाता है अथवा आगे बढ़ने में उत्साहहीन रहता है। इन बातों का मूल है हम अपने को निराश्रित समझते हैं। इसके लिए हमें ईश्वर को कभी नहीं भूलना चाहिए ईश्वर पर विश्वास रखें। ईश्वर विश्वास से मनुष्य में आत्म विश्वास बढ़ता है जिससे निरुत्साह, निराशा, अधीरता आदि दुर्गुण भाग जाते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को अपनी पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त धार्मिक पुस्तकों का भी अवश्य अध्ययन करना चाहिए इससे उन्हें आत्मिक बल जो सफलता प्राप्ति के लिए महान् आवश्यक गुण है; की प्राप्ति होती है।

दुःसंग से बच कर और ईश्वर में आस्था रख कर यदि अध्ययन किया जाए तो सफलता उसके पीछे पीछे फिरे। छात्रों को याद रखना चाहिए कि गुरुजन से कभी द्वेष न करे क्योंकि गुरुओं का द्वेषी होने पर कभी विद्या प्राप्त नहीं हो सकती। यद्यपि आज कल विद्यालयों में गुरु का आदर नहीं रहा किंतु सफलता चाहने वाले को तो उनका आदर करना ही होगा। दूसरे अपने काम को स्वय करने की आदत डालो, नकल; पूछ कर काम निकालने की न सोचो इससे सफता की प्राप्ति कठिन है। सुना नही आप ने—"अपने हाथ जगन्नाथ।"

लेख का कलेवर विचार से अधिक बढ़ जाने के कारण केवल एक बात संक्षेप में और कह दूं। कई बार मनुष्य कई काम न चाहता हुआ भी कर लेता है, इसका मूल कारण मन की कमजोरी है किंतु मन की कमजोरी भोजन पर आधारित है। अतः भोजन श्रेष्ठ करिये। 'जैसा अन्न वैसा मन'। कहा है—

'आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ
ध्रुवास्मृतिः।'

आहार से अन्तःकरण की शुद्धि तथा निश्चला बुद्धि की प्राप्ति होती है। अतएव बच्चों को बासा, झूठा; नमकीन, चटपटा, मिर्चयुक्त अशुद्ध भोजन नहीं करना चाहिये। माँस, मद्य, प्याज, लहसुन आदि का तो स्वप्न में भी विचार न करें। भोजन करते समय अधिक बोलें नहीं, क्रोध न करें, अपशब्द न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# साथी ! वह दिन भी आएगा

[ श्री महावीर प्रसाद ]

साथी, वह दिन भी आएगा—
जिस दिन व्याकुल आतुर सा मन
निज प्रियतम को पा जायेगा ।। साथी०
सुन रहा करुणस्वर करुणा के,
आकुल मानवता तड़प रही।
बढ़ रहे पाप के पग अबाध,
हिंसक दानवता पनप रही ।।
यह मानवता का क्षीण स्वर;
दानवता को पी जाएगा ।।
लाशों पर यहा महल बनते,
श्वासों पर आशा अटक रही।
विश्वासों पर आघात यहाँ,
आशा सिर अपना पटक रही ।।
आलोक किरण कण दिखता है,
निश्चय प्रकाश भी छायेगा ।।
लज्जा लुट रही लजीली की,
कितने दुःशासन के बल से।
हैं मौन धर्म- जय - नय -न्यायी
निश्छल शंकित है दुश्छल से ।।
पर कृष्ण नहीं तकता पथको,
ना जाने कब आजएगा ।।
हो मत उदास हो मत निराश;
विश्वास करो कुछ आश करो ।
जीवन के तमाच्छन्न पथ में;
आशा का नवल प्रकाश भरो ।।
मत डरो तमिस्रा देख-देख,
तम में आलोक समाएगा ।।

—★—

कहे तथा शीघ्रता न करे इससे पाचन-क्रिया बिगड़ जाती है । इसलिए यथासाध्य अल्प तथा सात्विक आहार करें (सात्विक आहार की परिभाषा श्री गीता के १७वें अध्याय में देखें) । आहार के विषय में कभी प्रमाद न करें । आहार के अन्तर्गत ही मैं शृङ्गार को लेता हूँ अधिक शौकीनी विद्या में बाधक है— 'सादा जीवन उच्च विचार महत्ता की कसौटी है ।

उक्त विचार व्यावहारिक तथा सहज होने से प्रत्येक बच्चों के लिए लाभदायक हैं अतः इन्हें वे अवश्य अपनायें । मैंने अपना रहस्य खोल दिया अब आगे आप की इच्छा ! शिवं भूयादिति ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः ।

(सफा २३ से आगे)

तुमने आज होने वाली घटना को स्वप्न में कल रात कैसे देख लिया ? किन्तु जब उसने नौकर से उसकी सत्यता की जांच करने को कहा तो उसने ऐसा ही किया । उसे आश्चर्य हुआ यह मालूम करके कि सचमुच ही नौकरानी ने अपने स्वप्न की बात उससे प्रातः कही थी इस पर शोपनहार ने अपनी डायरी में अपना यह सपना नोट कर लिया और लिखा कि यह सच्चा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# एक प्याज़ रोज खाओ-२८ रोगों से छुटकारा पाओ

हो सकता है कि नजला जुकाम से छुटकारा पाने केलिए एक कच्चा प्याज चबा जायें तो आप के मुंह से आने वाली दुर्गन्ध को आपके मित्र पसद न करें किन्तु जब परिणाम सामने आ जाता है और कीटाणु नष्ट हो जात हैं तो निस्संदेह दूसरे लोग भी नजला जुकाम होने पर कच्चा प्याज खाना पसन्द करेंगे क्योंकि अब अमेरिका और रूस में रिसर्च के पश्चात ही दुनिया को इस सब्जी के दवा के तौर पर फायदों और शक्ति का विश्वास हुआ है। पश्चिम के लोग और बड़े २ डाक्टर भी रोम के प्राकृतिक चिकित्सा के विशेषज्ञ और लेखक प्लाटनी का मजाक उड़ाया करते थे जिसने लिखा था कि प्याज मनुष्य के २८ विभिन्न रोगों का इलाज है। मगर हमारे पूर्वजों को जो इस सब्जी के सम्बन्ध में बहुत उत्तम विचार रखते थे इसके गुणों के सम्बन्ध में पहले ही पूरा ज्ञान था। अभी २ बक्टेरिया कीटाणुओं को मारने वाली १५० जड़ी बूटियों और पौधों की शक्ति के सम्बन्ध में रिसर्च करते हुए एक रूसी वैज्ञानिक डा० बीटोकन ने यह पाया था कि कच्चा प्याज जरासीम को मारने की सब से अधिक क्षमता रखता है। लहुसन, मूली, सरसों और काली मिर्च से भी अधिक। विभिन्न रोगों के कीटाणु प्रोटोजोर के सभी रूपों और टाईफाईड बुखार को भी प्याज शीघ्र और सरलता से नष्ट कर देता है। इसकी शक्ति का रहस्य उसकी वह अप्रिय ध्वाँस है जो प्याज काटते समय उड़ती है और इसके आंखों में पड़ने से पानी निकल आता है। रिसर्च करने वाले अमेरिकनों ने यह बात प्रमाणित की है कि कच्चे प्याज को ५ मिनट तक चबाने से मुंह में जो तेज और कड़वा रस पैदा हो जाता है वह मुंह और गले के सभी कीटाणुओं को नष्ट कर देता है इसलिए कच्चे प्याज को चबाने से नजला जुकाम और गले के रोगों से छुटकारा मिलता है। चाहे इससे आपके निकटस्थ व्यक्ति बुरा ही मनाएं और आपके मुंह से आ रही बू को पसन्द न करें।

## रूसी डाक्टरों के परीक्षण

अभी २ रूसी डाक्टरों ए० सी फलाटोवा और वी होरो पैस्टोब ने प्याज के इस रस को जले जख्मों पर आज़माने का फैसला किया था। कुछ बड़े २ प्याज काट कर एक पतली प्लेट में रखे गए और उन्हें जले हुए जख्मों के पास १० मिनट तक रखा गया था।

सभी घाव गहरे थे किन्तु पहले ही इलाज से उन घावों में होने वाला दर्द खत्म

( शेष सफा ३० )

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ज़रा पांच मिनटके लिए अपनी साईकल तो देना

[ साईकल तो मैंने भी खरीदा किन्तु........ ]

'क्या आप ५ मिनट के लिए अपनी साईकल दे सकते हैं ?' यदि आप के पास साईकल है तो उपरोक्त वाक्य लगभग रोज ही सुनना पड़ता होगा लेकिन विश्वास मानिए मुझे इन शब्दों से बहुत डर लगता है। ये शब्द सुनकर जैसे मुझे बिजलीका तार छू जाता है। मैं अपने किसी घनिष्ठ मित्र या निकटतम संबंधीकी असामयिक मृत्यु के दुखद समाचार को बड़ी शान्ति से पचा सकता हूं किंतु जब मुझ से साईकल माँगने की प्रार्थना की जाती है तो मेरा धीरज छूट जाता है मेरी सोचने की शक्ति वाब दे जाती है कि मांगने वाले आदमी को बिना नाराज किए साईकल देने से इन्कार कैसे करूं ? दोस्त तो दूर किसी अपरिचित को भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

चार वर्ष पूर्व मैंने अपने खून पसीने की कमाई में से दो सौ रुपये इस पर लगा दिए थे—इसलिए नहीं कि साईकल की मुझे जरूरत थी अपितु इसलिए कि साइकल रखना भी आज कल फैशन हो गया है और दुर्भाग्य वश मैं भी कुछ फैशन परस्त हूँ। मेरे पड़ोसी श्री 'क' के पास दो साईकलें हैं। उनका वेतन भी मेरे जितना है तब क्या हम इतने ही गए गुजरे हैं कि एक साईकल भी न रख सकें। अपने मन की (मस्तिष्क की नहीं) इस जबरदस्त युक्ति के आगे मैंने सिर झुका दिया और एक दिन भारी मन से मैंने दो सौ रुपयों की हत्या कर दी। उस दिन मुझे पता चला कि इसे जो 'गरीबों की सवारी' का नाम दिया जाता है वह गलत है। मेरे एक मित्र ने कहा कि सड़कों की दुर्घटनाओंमें आए दिन जो लोग मरा करते हैं उन में साईकल सवार ही अधिक होते हैं लेकिन मैंने अपने मित्र की एक न सुनी।

साईकल खरीदे अभी दो दिन भी न हुए थे कि मेरे एक परिचित ने डाकखाने में पत्र डालने के लिए केवल दो मिनट के लिए साईकल मांगी। मैं उसे इन्कार न कर सका। कई घण्टों के पश्चात जब वह आया तो कह रहा था— अजी, 'क्या बताऊं मैं बाल २ बच गया।' मेरा दिल डूब गया। उसने कहना जारी रखा—'आप की साईकल है तो बहुत अच्छी किंतु जब मैंने इसे एक ट्रक से बचाने का प्रयत्न किया तो यह एक छाबड़ी वाले पर चढ़ दौड़ी। बस केवल अगले पहिये को थोड़ी हानि पहुँची है।' मेरे अन्दर क्रोध की आंधी उमड़ रहा था किंतु बाहिर से मैं मुस्करा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


रहा था। मैंने निश्चय कर लिया कि भविष्य में मैं किसी को साईकल नहीं दूंगा।

अभी एक सप्ताह भी न बीता था कि एक मुहल्लेदार ने कमरे में थोड़ा सा झांक कर कहा 'देखिए मैं आपकी साईकल लिए जा रहा हूं। मेरा पुत्र बीमार है और मैं डाक्टर के हां जा रहा हूँ।' और पूर्व इसके कि मै हां या न करूं वह पड़ोसी साईकल लेकर चलता बना। मैं एकदम भगवान से प्रार्थना करने लगा कि वह सकुशल लौट आए। मेरी प्रार्थना स्वीकृत हो गई वह तो सकुशल लौट आया किंतु मेरी साईकल! उसका मडगार्ड टूटा हुआ था। 'मुझे इसका बड़ा खेद है' पड़ोसी ने रोनी सी सूरत बना कर कहना शुरू किया और मुझे अपने दिलपर बेहद जबर करके होंटोंपर मुस्कान बनाए रखनी पड़ी। कोई बात नहीं; मैंने कहा बात मामूली है। मैंने साईकल को ताला लगाया और स्टोर रूम में फैंक दिया ताकि उस पर किसी की कुदृष्टि न पड़ने पाए। इस भय से कि इसे देख कर कोई माँग न ले। मैं दफ्तर जाते समय और बाजार जाते समय भी साईकल साथ न लेजाता। मैंने सब लोगों को कह दिया कि साईकल में नुक्स था इस लिए लौटा दी है।

एक दिन चाचा दौलत हमारे घर पधारे उचित तौर पर कहा जा सकता है कि वह कई वर्षों की गुमशुदगी के पश्चात ही पधारे थे। वास्तव में वे उस दिन आखिरी गाड़ी से रह गए थे। वह पास ही के किसी गांव में रहते थे। सर्दियों के दिन थे और हमारे पास कोई फालतु बिस्तर भी न था। इस नई मुसीबत से बचने के लिए मैं ने दौलत चाचा को अपनी साईकल पेश कर दी। उद्देश्य यह था कि वह साईकल पर गांव चले जाएं और चाचा ने मेरा सुझाव बड़ी खुशी से स्वीकार कर लिया तो दिल की धड़कन तेज हो गई।

एक सप्ताह बाद मुझे दौलत चाचा का पत्र मिला कि वह स्वयं तो सकुशल हैं लेकिन साईकल के अंजर पंजर ढीले हो गये हैं, और कि वह एक दुकान पर मुरम्मत के लिये पड़ी है। आशा है कि १५ दिन के अन्दर २ उस की मुरम्मत हो जायेगी।

और जब साईकल लौटी तो उसे देख कर रोना आता था. फ्रेम पर कई जगह टांके लगे थे, पालिश उड़ चुकी थी, मडगार्ड तो पहचाने ही न जाते थे. मैं साईकल को कई दुकानदारों के पास ले गया लेकिन सब ने उसे लेने से इन्कार कर दिया. प्रत्येक दुकानदार ने मुझे परामर्श दिया कि इसे किबाड़ी की दकान पर रख आओ. किबाड़ी की दकान पर रख आया किबाड़ी ३८ रुपये देने को तैयार हुआ। बहुत प्रसन्न दिखाई देने की कोशिश करते हुए मैं ने ३८ रूपये जेब में डाले किन्तु मेरी खुशी का यह दिखावा भी कुछ देर का मेहमान था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यह भी खूब रही !

एक नवाब के हां दावत उड़ रही थी। एक मेहमान के दिल में जो बदनीयती आई उसने चांदी का चम्मच चुपके से उठा कर अपने बायें जूते में रख लिया। इसे एक और आदमी ने देख लिया। उसने उसे मात देने के लिए ऊंचे स्वर में कहा; 'साहेबान; लीजिये एक जादू का खेल देखिए!' उसने एक चांदी का चम्मच जेब में डालते हुए कहा— "मैं यह चम्मच किसी दूसरी जगह से निकालूंगा। यह कह पहले आदमीके पास जाकर बोला 'आप जरा अपना बायाँ जूता खोलिए? उसे मजबूरन जूता खोलना पड़ा और चम्मच उसमें निकल आया। यह देख सभी हसने लगे और जादूगर हसता हुआ घर की ओर चल पड़ा। पहला आदमी अनायास कह उठा —यह भी खूब रही !

( सफा २७ से आगे )

हो गया था और वे शीघ्र ही भरने शुरू हो गए थे। अभी वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में और रिसर्च कर रहे हैं। और वह दिन दूर नहीं कि जब यह कहावत बन जाएगी कि एक प्याज खाने से हमें डाक्टर के पास नहीं जाना पड़ेगा और इसकी दुर्गन्ध को दूर करने का उपाय निकाल लिया जाएगा।

क्योंकि साय की डाक से दौलत चाचा ने मुझे साईकल की मुरम्मत का ४५) रु० का बिल भेज दिया। बिल की अदायगी एक सप्ताह के अन्दर करने की ताकीद की गई थी।

—के. एल. जी.

# न हम मुसकराए !

—सावित्री रस्तोगी

न काँटों में रह कर कभी अश्रु आए
न फूलों की गोदी में हम मुस्कराए
बहारों की बस्ती में खोए हुये भी
न भूले कभी हम मनुज की कहानी
न जीवन की रंगीनियों में उलझ कर,
जमाने के दुख दरद को भूल पाए।
कहा एक दिन जो धरा से किसी ने
स्वयं को मिटा कर तुम्हें क्यों खुशी है?
धरा मुसकराई लजाई सी बोली—
समर्पण में क्या है तुम्हें क्या बतायें
गगन में नई चाँदनी की किरण ने
उषा को दिया स्वच्छ रंग रूप अपना
बड़े प्यार से अंक में भर कहा यह—
बनेगा वही मुश्किलें जो उठाए।
नई जिन्दगी का नया रूप है यह
जली सत्य की एक बाती चिन्तन
यह कंचन सा तन ज्योति पा जगमगाया
डगर में हमारे चरण रुक न पायें।
कि शृङ्गार सब का प्रकृति ने किया है
समय ने सदा एक स्वर में पुकारा
चमन में नया प्यार करने से पहले
सुमन अधखिले कुछ झर न जायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कहा मानोगे तो कभी घाटे में न रहोगे

(श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री जालन्धर)

संसार हर प्रकार की उन्नति कर रहा है किन्तु सदाचार के विचार से गिरता जा रहा है। यूं तो प्रत्येक आदमी मर्यादा पालन से कोसों दूर होता जा रहा है। जिस से पग पग पर हमें नित्य नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है; किन्तु मोटे तने वाले बड़े २ वृक्षों को मोड़ने की अपेक्षा नए निकल रहे पौदों को मोड़ना सरल होता है अतः बच्चों और विशेषतः विद्यार्थियों को मर्यादा पालन की शिक्षा दी जाए तो वह विशेष लाभ कारी सिध्द होगी। एक बूढ़े व्यक्ति को किसी ऊंचे लक्ष्य के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन देना व्यर्थ ही है क्योंकि उस के मुंह से तो आप प्रायः यही शब्द सुनेंगे अब मुझ से यह टंटा नहीं होता। अब मुझ में हिम्मत नही आदि।

विद्यार्थियों की वर्तमान दशा किसी से छिपी नहीं। माना कि अच्छे वस्त्र पहनने अच्छा खाना पीना और ऊंचे दर्जे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए धन की परम आवश्यकता है किन्तु अच्छी आदतों और अच्छे गुणों को सीखने के लिए भी क्या धन चाहिए? सवेरे उठना, नित्य कार्यों से निवृत्त होकर दो घड़ी प्रभु का ध्यान करना, सत्य बोलना, नम्रता का व्यवहार करना, बड़ों की आज्ञा मानना, अपना पाठ याद करना लड़ाई झगड़े से दूर रहना अपने भले बुरे की पहचान करना, बुरी संगत से दूर रहना प्रत्येक काम समय पर करना कर्तव्य पालन की ओर ध्यान देना इत्यादि बातों के लिए धन की क्या आवश्यकता है? सच तो यह है कि जैसे बढ़िया ताँगा बढ़िया गद्दियाँ बढ़िया घोड़ा होने पर भी मर्यादा की लगाम के बिना हमारे बच्चे अपने विद्यार्थी लक्ष्य भ्रष्ट होते जा रहे हैं। माता पिता की क्षमा; दया और झूठे मोह ने उन्हें ढीठ बना दिया है। वे माता पिता से अपनी बात मनवाना तो सीख चुके हैं किंतु स्वयं माता पिता की आज्ञा मानना नहीं चाहते। उन्हें माता पिता अथवा अध्यापक का उपदेश बुरा लगता है। उन्हें तो वह पिता चाहिए जो उन्हें किसी बात से न रोके और उनकी इच्छानुसार काम करने दे। बालक यदि यह कहे 'मेरा जी चाहता है कि आज स्कूल न जाऊं तो अच्छा पिता वह है जो तत्काल यह कहे—अच्छा पुत्र न जाओ।

सभी माता पिता समझते हैं कि उनका बच्चा अच्छा है। यदि कोई उनसे कहे कि आपके बच्चे में यह दोष है तो वे सहन नहीं

(शेष सफा ३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# हम हंसते क्यों हैं ?

हर कोई हसता है—मगर क्यों ? यह शायद हंसने वाला व्यक्ति नहीं जानता। इस प्रश्न का जवाब फ्रायड ने यह दिया है - ज्यों ज्यों बच्चा बड़ा होता है त्यों त्यों उस पर समाज के बन्धन पक्के होते जाते हैं और समाज उससे यह अपेक्षा करता है कि बड़ा होने पर बेसिर पैर की तथा असम्बध्द बातों से आनन्द लेने की अपनी प्रवृत्ति पर सयम रखे तथा स्वप्न लोक से व्यावहारिकता की ओर मुड़े। इस प्रकार बचपन की ये प्रवृत्तियां बच्चे के मन में जबरदस्ती दबा दी जाती हैं लेकिन इन प्रवृत्तियों का निर्मूलन नहीं होता और समय पाकर यह अपना सिर उठाती हैं और तभी हास्य रस का उद्गम है। जिन प्रवृत्तियों का दमन हुआ है हास्य रस उनकी अभिव्यक्ति का साधन है। जो कुछ नियमित रूप से होता है उसे देख कर हंसी नहीं आती किंतु जिस में असम्बध्दता है या उच्छृँखलता है उसीसे हास्य रस का निर्माण होता है। उदाहरण देखियेः—बारह साल की एक लड़की और उसका १० वर्ष का भाई परिवार के सामने खुद का बनाया हुआ एक खेल खेल रहे थे। लड़के ने एक गरीब मछुए का पार्ट लिया था और लड़की ने उसकी पत्नी का। पहले दृश्य में ऐश्वर्य की खोज में मछुआ घर छोड़ कर परदेश में जाता है। दूसरे दृश्य में कई सालों तक बिछुड़े रहने के पश्चात पति पत्नी का मिलन होता है। पति अपनी पत्नी को रास्ते की कठिनाइयों और उन पर पाई विजय का विवरण सुनाता है। फिर पत्नी कह उठती है—मैं ने भी अपने दिन सुस्ती में नहीं बिताए आओ तुम्हें दिखाऊं" यह कहकर वह घर का द्वार खोलती है और अन्दर सो रहे दस बच्चे दिखाती है। ठीक इसी समय श्रोता जोर २ से हसने लगे किन्तु बालकों की समझ में न आया कि इस गम्भीर बात पर हंसा क्यों जा रहा है ?

हम किसी से मजाक क्यों करते हैं ? और लोग इसमें आनन्द क्यों लेते हैं ? शायद ऐसा अपनी बुध्दिमत्ता प्रदर्शित करने और लोक-प्रियता प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रतिकार की भावना से भी हंसी मजाक किया जाता है। उदाहरण के लिए एक अनुभवी वकील को नीचा दिखाने वाला यह मजाक पढ़िए :—बड़े वकील ने कहा—ज्यों ही मुझे पता चला कि उस केस में गन्दगी है, मैंने उस से अपना हाथ निकाल लिया। जूनियर वकीलने मजाक किया—उस हाथ के पंजे में कितना निकला ? दबी हुई कामुकता की अभिव्यक्ति करने वाले मजाक प्रायः किए जाते हैं। एक ने दूसरे मित्र से कहा—मैंने सुना है कि तुम्हारा विवाह कमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# नए आविष्कार

### मकैनिकल डाक्टर

ब्रिटिश इंजिनीयरों ने एक ऐसी मशीन तैयार की है जो एक कुशल डाक्टर की तरह रोगी का निरीक्षण कर उसका रोग कार्ड पर अंकित कर बाहिर निकाल देती है।

### ठोस पैट्रोल तैयार हो गया

सोवियत विज्ञान अकादमी के प्रोफेसर बोरिस लोसेव का एक सपना पूरा हो गया है और वह है पैट्रोल को ठोस रूप में देखने का सफेद, भूरे और पीले टुकड़ों में जो बर्फ या सफेद ईंट जैसे जान पड़ेंगे। उन्होंने आज ठोस पैट्रोलियम सुलभ कर दिया है जिसे चाकू से काटा भी जा सकता है।

### नलों द्वारा कोयला भेजना

यूक्रेन में कोयला ले जाने के लिए नलों की कतार (पाईप लाईन) बनाने की रूप रेखा तैयार कर ली गई है। कोयले का चूरा करके उसे पानी में मिला कर भारी दबाव के साथ पम्पों से इन नलों में भर दिया जाएगा और बड़ी तेज रफ्तार से सीधे खानो से शक्ति केन्द्रोंमें पहुँचा दिया जाएगा।

### इस्पात जितना मजबूत प्लास्टिक

रूस में प्लास्टिक से २००० तरह की चीजें बनाई जाती हैं। प्लास्टिक की एक किस्म पोलिअमिड है जो दैनिक जीवन में कप्रन ... लन आदि कृत्रिम रेशों के रूप में पहचानी जाती है; जिनका प्रयोग वस्त्र, नकली रोएं आदि बनाने में किया जाता है। इस प्लास्टिक से दांतेदार पहिए ढिबरी तथा मशीनों के अन्य भाग बनाए जाते हैं।

### मक्की के डण्ठल से ऐसिड

★ मक्की के डंठल से फुर फुरोल फेनलिक ऐसिड; ऐसटिक ऐसिड तथा सक्रिय कृत कोयले जैसे पदार्थ निकाले जाएंगे।

★ कजाख्स्तान में एम्बा स्थान पर कोल तार की झील का पता चला है।

---

से होने वाला है, उससे तुम्हारा रोमांस चल रहा था न। 'हाँ भई!' लेकिन दोस्त उसकी जुड़वाँ बहिन विमला की शक्ल तो एक दूसरी से बहुत मिलती है। तुम कमला को कैसे पहचानते हो? मैं पहचानने की तकलीफ नहीं उठाता मेरे दोस्त! उसका उत्तर था। मजाक सुनने वाला आदमी मजाक से आनन्द इस लिए उठाता है कि वह असम्बध्द बातें सुनकर अपने अन्दर की बचपन की प्रवृत्तियों को सन्तुष्ट करता है या दूसरे शब्दों में यह उस का उन भावनाओं के प्रति प्रतिकार है जो उस के जीवन के नियमों में जकड़ कर उसे बोझिल बना देते हैं। जो असम्बध्द हैं। जिस जगह होना चाहिए उसे ही देख कर हास्य रस का संचार होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



(सफा ३१ से आगे)

कर सकते। जब बच्चा घर आकर अपने कारनामों की शेखियां मारता है तो वे खुश होते हैं। आज मैं रामू हलवाईको खोटी अठन्नी जड़ आया। दुकानदार को मैंने एक रुपये का नोट दिया मगर उसने भूल से बर्फी के चार आने काट कर ४ रुपये बारह आने लौटा दिए—मैं भी चुप रहा। आज खेत पर किसान नहीं था हम चार साथियों ने खूब गन्ने तोड़ कर चूसे। आज हम एक मुहल्ले से मुर्गी उठा लाए और उसे रैनक बाजार में बेच कर सिनेमा देखा आदि बातें सुन कर मुस्करा देते हैं तो बच्चा अपने आपको तीस मार खां समझने लगता है। और जब वह माता-पिताकी आँखों में ही धूल झोंकने लगता है तब उनकी आंखें खुलती हैं। उचित तो यह है कि वे बच्चे पर सदा कड़ी निगाह रखें और तनिक सी बुराई के लिए भी उसे क्षमा न करें।

एक बात विद्यार्थियोंसे भी कह दूं। कि बिगड़ा विद्यार्थी जितनी हानि अपनी करता है उतनी माता-पिता अध्यापकों तथा अन्य सम्बन्धियों की नहीं करता। वह बे समझी से अपना भविष्य ही खराब कर बैठता है किसी का नहीं। अतः प्रत्येक काम करते समय तथा प्रत्येक पग उठाते समय उसके परिणाम अथवा हानि पर दृष्टि रखो। यदि स्वयं इतने समझदार नहीं हो तो माता पिता और अध्यापक का ... है।

# गृह विज्ञान

१. बर्गद का दूध आँख में लगाने से आंख की पीड़ा दूर हो जाती है।

२. बारह सिंगे का सींग दूध में घिस कर लगानेसे आँखका जाला कुछ दिनोंमें नष्ट हो जाता है।

३. कान को साफ करके नीम के पत्ते उबाल कर रस कान में डालने से कान का दर्द तुरन्त जाता रहता है।

४. बकरी का दूध कान में टपकाने से कान का घाव दूर हो जाता है।

५. बेर की पत्ती पीस कर माथे पर लगाने से नक्सीर तुरन्त बन्द हो जाती है।

---

(सफा २२ से आगे)

में चूर रहे तो वह निन्दा के योग्य है। वह तो बहुत तुच्छ है। सम्मान तो है दूसरों की सेवा करने में कर्तव्य निष्ठ रह कर सब से नम्र व्यवहार करने में और ईमानदारी में, भले ही वह आदमी सैनिक हो या उससे भी छोटा गांव का चौकीदार।'

सिकन्दर ने कहा—'मेरी भूल पर ध्यान मत देना। तुम फिर से सेनापति बनाए गए। कहा मानते चले जाओ—कभी घाटे में न रहोगे।

—अपराधी को क्षमा कर देना ही सब से बड़ा दण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## काम हमारा बढ़ते जाना

तज आलस उद्यम को पाकर,
उन्नति पथ को है अपनाना ।
जरा न रुकना जरा न झुकना;
काम हमारा बढ़ते जाना ।

आपस का सब द्वेष मिटा कर;
सब सृष्टि को एक बनाना ।
दुष्टों को बस रौंद तले में,
इस जगती में स्वर्ग बसाना ।

अणु बम्बों का नाम मिटाकर,
समाधिकार का वर्ग बनाना ।
पंचशील के नियमों पर चल,
सब सृष्टि में सुख बरसाना ।

जो राहों में अड़चन डाले,
उसको हमने मार गिराना ।
जम धरती का चोप लगा कर,
हमने आगे बढ़ते जाना ।

कर प्रचार शिक्षा का जग में;
अनपढ़ता का नाम मिटाना ।
सृष्टि के कोने कोने से,
अन्धकार है दूर भगाना ।

दुनिया में भूले भटकों को,
श्रेष्ठ मार्ग का राह दिखाकर ।
सभी जगत आदर्श बना कर,
काम हमारा बढ़ते जाना ।

—जगदीशसिंह; १०वीं कक्षा जालन्धर

## बूझिए तो ?

★ कड़वे मुख में कड़वा पानी
उलट जाए तो प्रेम निशानी

★ एक सिपाही जग में दौड़े
अपना स्थान कभी न छोड़े

★ कभी छोड़ती साथ नहीं
फिर भी आती हाथ नहीं

★ एक गोरी एक काली नार
उस से प्रीत करे संसार

★ एक छोटी एक बड़ी कहावे
एक सस्ती और एक महंगी आवे

★ खुली रात है मेरी माता हरी घास है
मेरी सेज, मोती सा है बदन मेरा;
पर धूप से है परहेज ।

★ गोलमोल है मेरा चोला,
मानो हो चांदी का गोला ।

★ मामा मामा तुम चिल्लाते
आसमान में जो लख पाते

★ सिर मोटा तन दूबरा खाली जाको पेट
नर-नारी अति चावसे हाथ करें धरिभेंट।

★ वह कौन सी वस्तु है जो सूरज और
रजनी दोनों में पाई जाती है ।

★ चार अट्टर चार बरट्ठ चार सुरमा दानी
उड़ गया नारंगी तोता रह गई खसियानी
वह कौन सी वस्तु है जो सूरज और रजनी
दोनों में पाई जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111515



# हंसते हंसते जीना

★ जार्ज बर्नार्ड शा को एक आदमी रोज पत्र लिखता था जिसमें उनकी रचनाओं की बुराई करता था। तंग आकर बर्नार्ड शा ने उसे उत्तर दिया कि अपनी रचनाओं के बारे में मेरा भी वही मत है जो आप का है किंतु प्रशंसा करने वाले लाखों पाठकों के विरुध्द केवल मैं और आप क्या कर सकते हैं ?

★ मैजिस्ट्रेट (चोर से) तुमने साईकल क्यों उठाई थी ?

चोर जी; वह साईकल श्मशान भूमि के बाहिर खड़ी थी मैंने समझा कि मालिक मर गया है।

★ एक अपराधी ने देखा कि उस के साथी को फांसी देकर जल्लादों ने नदी में फैंक दिया है अतः उसने जल्लादों से गिड-गिड़ा कर कहा कि मुझे मार कर नदी में न फैंकना क्योंकि मुझे तैरना नहीं आता।

★ मां (सरला से) बेटी क्या कर रही है ? सरला—भैया को खत लिख रही हूँ। मां—तुझे खत लिखना कहाँ आता है ? सरला—भैया को भी पढ़ना नहीं आता है।

★ अध्यापक—गधे के कान लम्बे क्यों होते हैं ?

लड़का—जी किसी अध्यापक की मेहर-बानी मालूम होती है।

★ डाक्टर—रोगी से तुम्हें क्या तक-लीफ है ?

रोगी—मुझे खाने के बाद भूख नहीं लगती।

★ एक आदमी रात को साईकल पर बिना लाईट के जा रहा था। पुलिस वाले ने सीटी बजाकर कहा—ठहरो तुम्हारे पास लाईट नहीं।

साईकल सवार ने जवाब दिया—ठहरूं कैसे ब्रेक भी नहीं है।

★ अध्यापक—यदि चने एक रुपये के १६ सेर आयें तो चने की दाल रुपये की दाल कितने सेर आएगी !

छात्र—दाल दुगनी-३२ सेर !

अध्यापक—क्यों।

छात्र—क्योंकि दाल के दाने चनों से दुगने हो जाएंगे।

★ शाम ने राम को पत्र लिखा। उस में केवल मूर्ख शब्द लिख दिया अपना पता न लिखा। राम समझ गया कि यह शरारत शाम की है। उसने पत्र के उत्तर में शाम को लिखी आगे लोग पत्र तो लिख देते थे किन्तु अपना नाम भूल जाते थे। कल मेरे पास एक मूर्ख का पत्र आया है उसने अपना नाम तो लिखा है परन्तु पत्र लिखना भूल गया है।

(संकलित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो मिसरी वैज्ञानिक डा० अब्दुस्सलाम अध्यक्ष इंटरनल मैडिसन डिपार्ट-मैंट तथा कमाल मुहम्मद अध्यक्ष फिजिक्स डिपार्ट-मैंट काहिरा विश्वविद्यालय अमेरिका में अणुशक्ति के शांतिकालीन उपयोग का प्रशिक्षण लेते हुए।

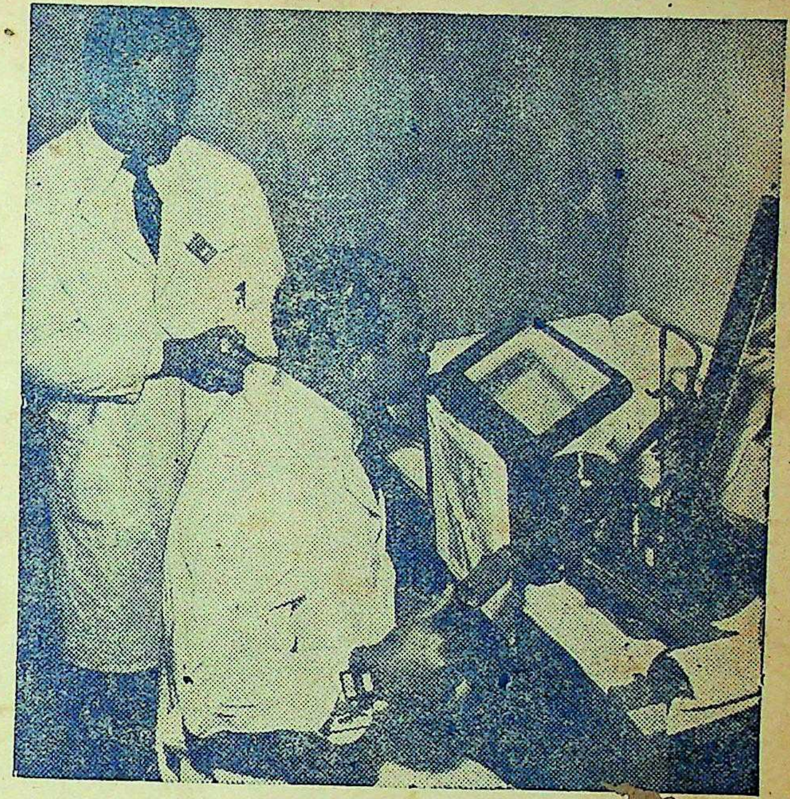

प्रधान आईजनहावर की ओपन-स्काई- डिसार्मामैंट प्लान के सिलसिले में यू० एन० ओ० में अमेरिकी डैलीगेशन ने कैमरों चार्टों और अन्य यत्रों की प्रदर्शिनी की व्यवस्था की। इस योजना द्वारा अमेरिका जितने बड़े देश का वायुयान द्वारा ६ मास में सर्वे हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri रजि० न० पी० ६०

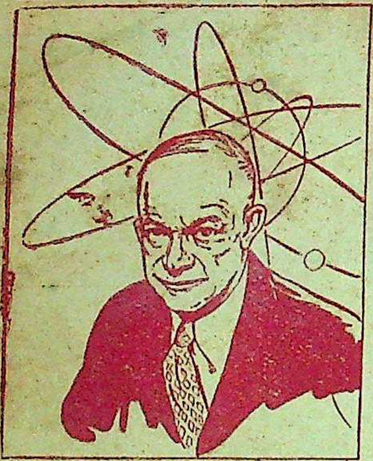

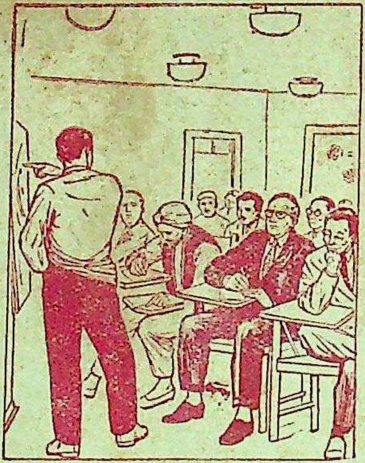

सामने : २० से ज्यादा देशों के छात्र अमेरिका में अणु-शक्ति के विविध प्रयोग की शिक्षा ले रहे हैं।

नीचे :—क्लारा बार्टन ने १८८१ में रेड क्रास आव अमेरिका को जन्म दिया।

ऊपर:—अमेरिका के प्रधान आईजनहावर ने दिसम्बर ५३ में यू० एन० ओ० के सामने सुझाव रखा कि अणुशक्ति का का प्रयोग रचनात्मक कार्यों में किया जाए

सामने। क्लारा बार्टन ने युध्द के बाद फैले भुखमरी और बीमारी में दुखियों की सेवा की।

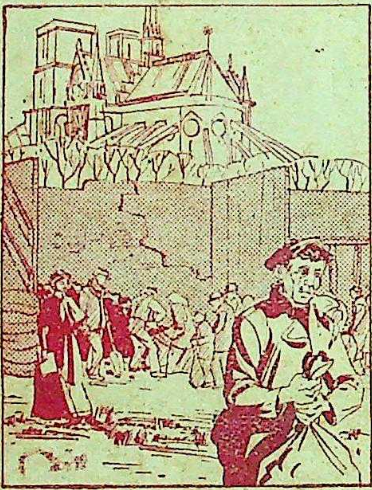

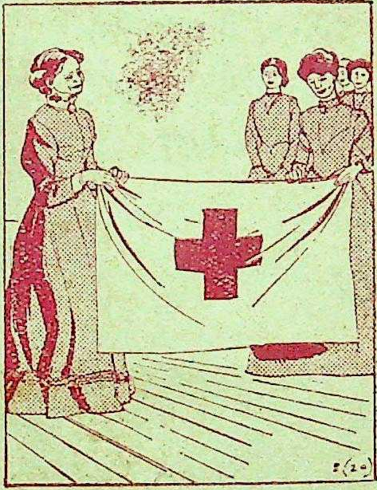

111575

सामने: १ क्लारा बार्टन ने ८६में जनेवामें हुई युध्द के घायलों की सेवार्थ कान्फ्रेंस में अपने देश को स्थान दिलाया। २. अमेरिकन रेडक्रास की संस्थापिका क्लारा बार्टन का रेखा-चित्र।

श्री एल० सी० हितैषी द्वारा वीर मिलाप प्रेस जालन्धर में मुद्रित तथा १३७ चहारबाग जालन्धर शहर से प्रकाशित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar